लेखिका की अन्य रचनाएँ

१. बाल-प्रौढोपयोगी साहित्य

१ उत्तर भारत की लोक-कथाएँ (सचित्र) ३ भाग, प्रत्येक १ २५
२ शेक्सपियर की कहानियाँ (सचित्र) ३ भाग, प्रत्येक १ २५
(बिहार राज्य द्वारा पुरस्कृत)
३ कथा-भारती (सचित्र) १ ५०
४ जगल-ज्योति (सचित्र) १ ५०
(न० ३ और ४ पुस्तको मे १२-१२ शिक्षाप्रद कहानियाँ हैं इनका अनुवाद 'इलिस्ट्रेटेड वीकली' में भी छपा था।)
५ कथा-कहानी (पचतत्र की कहानियाँ सचित्र) ३ भाग, प्रत्येक १ ५०

२. बाल-मनोविज्ञान पर

६ आप का मुन्ना (सचित्र) तीन भाग (पृष्ठ ८००) १३ ५०
(प्रस्तावना-लेखिका—राजकुमारी अमृतकौर, स्वास्थ्य-मन्त्री केन्द्रीय सरकार, नई दिल्ली।)
भाग १—बच्चो का पालन-पोषण ३.५०
भाग २—बच्चो की समस्याएँ ५ ००
भाग ३—बच्चो का शिक्षण ५ ००
(उपरोक्त तीनो भाग उत्तर प्रदेश सरकार, काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा विन्ध्य सरकार द्वारा पुरस्कृत हैं।)

३ सुखी परिवार माला (सचित्र)

७. आदर्श माता-पिता (केन्द्र तथा दिल्ली राज्य द्वारा पुरस्कृत) १ २५
८ कैसे पकायें क्या खायें ? १ २५
९ बीमार की सेवा १ २५

४ अन्य महिलोपयोगी सचित्र पुस्तकें

१० नारी का रूप-शृ गार (पृष्ठ २७५) ६ ००
११. भारतीय भोजन-विज्ञान (पृष्ठ ४२५) ७ ००
१२ दाम्पत्य-मनोविज्ञान (प्रेस में)

नोट—बच्चो के जन्म-दिवस तथा लडकियो के विवाह आदि शुभ अवसरो पर उपहार देने के लिये यह पुस्तकें बहुत ही उपयुक्त हैं।

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

पारिवारिक समस्याएँ

(सचित्र)

लेखिका

सावित्री देवी वर्मा

१९५७

आत्माराम एण्ड सन्स

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

काश्मीरी गेट

दिल्ली-६

दो शब्द

जीवन को सफल और सुखी बनाने के लिये केवल शिक्षा या धन ही आपेक्षित नही है, इसके अतिरिक्त भी कुछ और चाहिये। जीवन को सुखी बनाना एक कला है। जब तक आप इस कला से परिचित नही है, ससार की अनेक नियामते भी आपके जीवन को सुखी नही बना सकती। दिनो-दिन रहन-सहन का माप-दण्ड ऊपर उठ रहा है, उसके साथ ही साथ मनुष्य की तृष्णाएँ भी बढती जा रही है। विज्ञान की उन्नति, शिक्षा का प्रचार, रहन-सहन की सुविधाएँ, आर्थिक और सामाजिक सफलता के लिये परस्पर होडा-होडी आदि भी हमारे पारिवारिक जीवन को अधिक शान्तिमय बनाने मे सफल नही हो सकी है। इसका एक मुख्य कारण यह है कि अधिकाश दम्पति विवाह का सच्चा उद्देश्य क्या है, इसे भूल बैठे है। वे चल-चित्रो के नायक-नायिका के रगीन सपनो को ही अपने जीवन मे सफल होते देखने की कल्पना करते है। विवाह के प्रारम्भिक दिनो मे दम्पति अपने मीठे सपनो मे खोये रहते है, पर शीघ्र ही वास्तविकता के धरातल पर उतर कर उन्हे समस्याओ का सामना करना पडता है। समझदार जोडे परस्पर सहयोग से भरसक यत्न करके इन समस्याओ को धीरज के साथ सुलझा लेते है, पर अधीर और नासमझ दम्पति अपनी असफलताओ के लिये एक-दूसरे को बुरा-भला कहते है, विवाह को एक मुसीबत समझ उससे छुटकारा पाने की कोशिश करते है अथवा किस्मत को दोषी ठहरा कर रोते-कलपते जीवन-यापन करते है। इससे उनका पारिवारिक जीवन तो असुरक्षित और किरकिरा होता ही है, पर साथ ही समाज का स्वस्थ वातावरण भी गँदला हुए बिना नही रहता।

गृहिणी से घर है। अधिकाश स्त्रियो के जीवन-यापन का साधन ही गृहस्थी है, इसलिये महिलाओ पर इस बात की पूर्ण जिम्मेदारी है कि वह पारिवारिक जीवन को सफल और सुखी बनाने के लिए आदर्श गृहिणी, कर्तव्यपरायणा माता, और योग्य सहचरी बनने की योग्यता प्राप्त करे। बिना योग्यता, सेवा और त्याग तथा अनुभव के सुख व अधिकार प्राप्त करने की आशा करना मूर्खता है। अतएव यह वाछनीय है कि युवतियो को

आदर्श गृहिणी, पत्नी और माता बनने की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाये ताकि वे सच्चे अर्थ मे अपने गृहस्थ जीवन को सफल बना सके। अपने बच्चों की आदर्श गुरु बन कर, वह आने वाले युग की अनेक समस्याओ को मनोवैज्ञानिक ढग से समूल नष्ट कर सके। जब बच्चे अपने माता-पिता के उदाहरण से आदर्श नागरिक, पति-पत्नी, माता-पिता बनने का मर्म समझ जायेगे, तो उनका भविष्य अधिक सुखद बन सकेगा, इसमे कोई सन्देह नही। जीने का सलीका सीखे बिना सुखी जीवन बिताना असम्भव है।

देखने मे आता है कि जिस परिवार मे माँ-बाप ने अपने बाल-बच्चो के सग मित्रतापूर्ण व्यवहार रखा और जमाने के परिवर्तन के साथ वे भी बदलते गये तथा अपनी सन्तान के नवीन दृष्टिकोण को समझने की उन्होने कोशिश की, उस परिवार मे परस्पर सहयोग और प्रेम बना रहा है। बचपन मे जो माँ-बाप अभिभावक के रूप मे थे अगर वे ही आगे जाकर परम हितैषी, सलाहकार और मित्र बन जाते है, तो इससे अधिक सुन्दर प्राचीन और अर्वाचीन प्रतीको का सङ्गम भला कहाँ होगा ?

आज घर-घर मे इसी सुन्दर सङ्गम को सफल बनाने की चेष्टा की जानी चाहिये। इससे पारिवारिक असुविधाएँ बहुत कुछ हल हो जायेगी। नवयुवक समाज पहिले आदर्श परिवार स्थापित करने मे सफल होने की चेष्टा करे, बाद मे आदर्श नगर और देश बनते देर न लगेगी। देश के नव-निर्माण से पहिले गृहस्थी का नव-निर्माण होना अधिक जरूरी है। वृद्ध और नवयुवको का जब परस्पर सहयोग होगा, समाज की बहुत-सी कुरीतियाँ भी दूर हो जायेगी। नवयुवको का सहयोग पाकर वृद्ध अपने मे नवजीवन की स्फूर्ति अनुभव करेगे, जबकि अनुभवी वृद्धो के साए मे रहकर नवयुवक गुमराह होने से बच जायेगे। अतएव आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि गृहस्थी का नव-निर्माण तेजी के साथ किया जाय। और समस्याओ को सुलझा कर पारिवारिक जीवन को परस्पर सहयोग से सब प्रकार से पूर्ण और सुखी बनाने की भरसक चेष्टा की जाये। सरोवर के कमलो की तरह स्वजनो का भी परस्पर साहाय्य और सहयोग से ही उत्कर्ष होता है।

कहावत है घर-घर मिट्टी के चूल्हे है। पारिवारिक समस्याओ से कोई घर अछूता नही है। पर बाधाओ से जूझते हुए आगे बढने का नाम ही जिन्दगी है। सुखी परिवार ही, सुखी व समृद्धिशाली समाज का निर्माण करने मे सफल

होते है, पर पारिवारिक जीवन तभी सफल हो सकता है जब कि दम्पति समझदार हो और वे अपने कर्तव्य को निभाने की भरसक चेष्टा करते रहे। आजकल मध्यम वर्ग मे पारिवारिक जीवन की आधारशिला हिली हुई प्रतीत होती है, क्योकि दुर्बल चरित्र, स्वार्थ, असहनशीलता ने उन्हे पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सम्भालने के योग्य ही नही रहने दिया। ऐसे दम्पति विवाह के पवित्र बन्धन को कोसते है, पर देखा जाये तो यह उनके चरित्र की अपनी ही कमजोरी है जो कि उनके वैवाहिक जीवन को सफल नही बनने देती।

पारिवारिक जीवन को सफल बनाने के लिए त्याग, सहनशक्ति, मानसिक प्रौढत्व और समझदारी की जरूरत है। पुरुप और स्त्री एक-दूसरे के पूरक है। इस नैसर्गिक सम्बन्ध को बनाये रखने के लिए समाज ने विवाह प्रणाली को स्वीकार किया। पर इस सम्बन्ध को केवल लोकापवाद के डर से निभाना असम्भव है। दाम्पत्य जीवन की सफलता शारीरिक आकर्पण की अपेक्षा पति-पत्नी के मानसिक और आत्मिक एकरूपता पर अधिक निर्भर है। यदि आप मे मानवोचित गुण है तो आप जिसे अपनाते है, उससे प्रेम करना भी सीख जाते है। प्रेम का दीपक लग्न के साथ जलाया जाता है, उसे वासना-रहित प्रेम मे सीचा जाता है और स्वार्थ, असहनशीलता, अविवेक आदि के झोको मे उसे बडी साधना से, बडे यत्नो से बचाया जाता है, तब जाकर कही वह गृहस्थाश्रम को प्रकाशपूर्ण और आनन्दमय बना पाता है।

केवल शारीरिक आकर्पण की डोर से बँध कर यह सम्बन्ध स्थायी नही हो सकता। ऐसा आकर्पण और प्रेम वासना की क्षणिक चिगारी जरूर पैदा कर देगा, पर आत्मा को आनन्दित नही कर सकता। महात्मा गान्धी ने ठीक ही कहा है कि "विवाह का उद्देश्य पति-पत्नी के हृदय को हीन भावनाओ से शुद्ध करके उन्हे भगवान के निकट ले जाना है। विवाह का आदर्श दो हृदयो की प्रेम भावना तक ही सीमित नही है, यह तो विश्व प्रेम के मार्ग मे एक पटाव मात्र है।"

आजकल समाज मे विवाह के नाम पर एक प्रकार की बेच-खरीद चल रही है। दहेज और स्वय को अर्पण करके स्त्री जीने का सहारा पाती है। इतना कुछ करके कई कन्याओ को रोटी, कपडा और आश्रय तो मिल जाता है, पर जीवन-साथी तब भी नही मिल पाता। मन के मीत के अभाव में उनका जीवन अधूरा, अतृप्त और असन्तुष्ट ही बना रहता है। विवाह के

सच्चे उद्देश्य को भूल कर अर्थ प्रधान दृष्टिकोण अपनाकर लोग भूखे भेड़िये की तरह धन की तलाश मे घूम रहे है, परिणामस्वरूप गृहस्थाश्रम की सुख-शान्ति, सुरक्षा और पवित्रता नष्ट हो रही है। पुरुष यदि केवल भोग-विलास की तृप्ति के लिये और स्त्री आर्थिक सुरक्षा के लिये ही विवाह करती है तो विवाह का उद्देश्य ही गलत हो जाता है। एक विद्वान् का कथन है कि— "विवाह कर लेने से ही कोई जीवन-साथी नही बन जाता। जो पति-पत्नी जीवन-साथी नही बनते, केवल अपनी सुविधा के लिये एक दूसरे के शरीर व मन का भोग करते है, उनका घर घर नही, नरक बन जाता है। घर को स्वर्ग बनाना हो तो पति-पत्नी को परस्पर अनुरूपता प्राप्त करने का यत्न करना चाहिये।"

गृहस्थाश्रम वही धन्य है जिस आश्रम मे आनन्द भरा घर, चतुर सन्तान, प्रियवादिनी स्त्री, अभीष्ट धन, स्त्री मे रति, आज्ञापालक सेवक, अतिथि सेवा, ईश्वर पूजा और सत्सग मिले।

जन्म भर जिस-किस तरह से केवल निभा लेने की भावना गृहस्थ जीवन के सौन्दर्य और आनन्द को नष्ट कर देती है। देखने मे आता है कि नवीनता मिट जाने पर पति-पत्नी एक-दूसरे से जल्द ऊब जाते है। यह शिकायत वे ही दम्पति करते है जो कि विवाह के बाद अपने प्रणय और रोमान्स को सजीव रखने में असफल होते है। इस विषय मे दोनो पर सामान्य रूप से ज़िम्मेदारियाँ है। प्रेम की आधारशिला है सदाचार। यदि पुरुष के लिए ससार मे अपनी पत्नी के सिवाय दूसरी स्त्री नही और स्त्री के लिये पति को छोड अन्य पुरुष नही तो नर-नारी का यह अमिट आकर्षण उन्हे जीवन भर प्रणय में बाँधे रहेगा।

वैवाहिक जीवन की सफलता पति-पत्नी की मनोस्थिति पर निर्भर है। विवाह को सफल बनाने के लिए यत्न करना पडता है, चतुराई से काम लेना पडता है और व्यवहार कुशलता प्राप्त करनी पडती है। जब जीवन साथी के कदमो के साथ मिलकर अपने कदम स्वय उठने लगे, तब जीवन मे सामजस्य आ जाता है और जीवन-यात्रा बेताल और बेसुर होने से बच जाती है।

इस पुस्तक मे इसी सामजस्य को प्राप्त करने के लिये मैंने अनेक व्यावहारिक सुझाव दिये है, जिन बहिनो और भाइयो ने भरोसा कर, मेरी सहानुभूति और सलाह से लाभ उठाने के विश्वास से, अपने जीवन की दुखद

घटनायें, सुखद अनुभूतियो और समस्याओ से मुझे परिचित कराया और उन्हे हल करने मे मेरे सहयोग की सराहना की, उनके प्रति मै बहुत अनुगृहीत हूँ। सच पूछिये तो उनके जीवन-विवरणो और बहुमुखी समस्याओ के आधार पर ही मुझे इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणा मिली और जब-जब इस विषय पर मेरे कुछ लेख पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए तो पाठक-पाठिकाओ ने मुझे यह लिखा भी कि लेख पढ कर उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ कि ये तो उनकी अपनी ही समस्याएँ है, मानो उन्ही के गृहस्थ जीवन की झाँकियाँ उन लेखो मे सजीव उतार दी गई है।

यदि इस पुस्तक को पढकर दम्पति, सास-बहू, माता-पिता अपनी-अपनी समस्याओ को सुलझाने मे थोडा बहुत भी सफल हो सके, तो मै अपने इस प्रयास को सफल समझूंगी।

अन्त मे मै उन विद्वानो के प्रति आभार प्रगट करती हूँ जिनके उद्धरणो से मैने अपने मत की पुष्टि की है। धर्मयुग, सरिता तथा अन्य महिलोपयोगी पत्रिकाओ और पुस्तको के सम्पादको, लेखको के उपयोगी सहयोग के लिये भी मै अनुगृहीत हूँ।

--सावित्री देवी वर्मा

१४, फैज बाज़ार, दरिया गज
दिल्ली-७
६-४-५७

विषय-सूची

पारिवारिक समस्याएँ

१. यह प्रिय बन्धन

विवाह प्रणाली का विकास—

स्त्री और पुरुष परस्पर एक दूसरे के पूरक है। एक दूसरे के विना उनका काम नही चल सकता। सृष्टि के आरम्भ से ही वच्चो की देख-भाल, गृह-प्रवन्ध आदि का काम स्त्री के जिम्मे ही था। पुरुष अपने वल पर शत्रुओ मे लडता-भिडता, भोजन जुटाता तथा स्त्री और वच्चो की रक्षा करता था।

'जिसकी लाठी उसकी भैस' इस सिद्धान्त के आधार पर पुरुष का स्त्री पर अधिकार था। सभ्यता के विकास के साथ-साथ सहूलियत से जीवन सहचरी प्राप्त करने तथा सुरक्षित जीवन विताने के लिए विवाह प्रथा चलाई गई। शनै शनै मनुष्य सामाजिक प्राणी वन गया। समाज मे अपनी मान-मर्यादा वनाये रखने और रोटी की समस्या को हल करने के लिए यह आवश्यक था कि चार आदमियो को साक्षी वनाकर स्त्री-पुरुष अपना घर वसाते। समाज की व्यवस्था वनाये रखने के लिए वैवाहिक जीवन का उत्तर-दायित्व भी मनुष्य ने अपने सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दृष्टिकोण के अनुकूल वना लिया। क्योकि गृहिणी से घर था अतएव घर की व्यवस्था, वच्चो के पालन-पोषण का काम और पति की सेवा का भार उसी के जिम्मे

पडा। पुरुष अपने लिए सहूलियत और अधिकार चाहता था, इसलिए उसने नारी पर बहुत कुछ पाबन्दियाँ लगाई, उसके दायरे को तग किया। परिणाम स्वरूप जहाँ एक ओर अनमेल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बहु-विवाह आदि की स्वाधीनता पुरुषो को मिली, दूसरी ओर कन्या का जन्म तक एक विपत्ति का हेतु समझा जाने लगा। कन्या के माता-पिता की एक मुख्य जिम्मेदारी थी कि किसी तरह इसके हाथ पीले कर दिये जायँ। विवाह के पश्चात् वह अपने पति की सम्पत्ति समझी जाती थी।

शिक्षा के प्रचार के साथ ही साथ स्त्री की दशा भी सुधरी। अब उन्हे अपना साथी पसन्द करने की बहुत कुछ सुविधाएँ है। अब पुरुष द्वारा वह एक सम्पत्ति नही परन्तु सहचरी और जीवन-सगनि समझी जाने लगी है। पुरुष ने इस बात को भली प्रकार महसूस किया है कि नारी को अब अशिक्षित और पर्दे मे रखकर वह स्वय ही घाटे मे रहेगा। प्रगतिशील जमाने मे ऐसी सगनि जीवन-पथ पर बराबर कदम उठाकर नही चल सकेगी और अशिक्षित माता के सस्कार उसकी सन्तान को भी दबा रखेगे। स्त्रियो मे जागृति हुई। सस्कार तो उनमे छिपे ही थे, उन्नति का मार्ग खुलते ही वे तेजी के साथ पुरुषो के साथ जा मिली।

नारी इसकी पवित्रता की रक्षा करे—

अब नारी एक ऐसे स्थान पर आकर खडी हो गई है, कि वह प्रतिक्रियावादी होने के लिए मचल रही है। उसकी यह भूल उसे सर्वनाश की ओर ले जायगी। यदि गृहस्थाश्रम की पवित्रता नष्ट हो जायगी तो नारी अपने आदर्श से गिर जायगी। उसके नारीत्व और मातृत्व के दिव्य सौन्दर्य की कवियो ने जो कल्पना की, ससार मे उसे परमात्मा की सुन्दर सृष्टि की सर्वोत्तम रचना मानकर जो गुणगान किया है, उस स्वर्गीय सौन्दर्य पर सर्वदा के लिए पर्दा गिर जायगा। ससार मे इस समय कठोरता, पिशाचता और निर्ममता ने हाहाकार मचाया हुआ है। अविश्वास और स्वार्थ, समाज मे मनुष्य को निकृष्ट और आदर्शहीन प्रमाणित कर रहा है। फलस्वरूप पारिवारिक सुख अशान्ति और असन्तोष से किरकिरा हो गया है। ऐसे नाजुक समय मे कर्त्तव्य नारी को पुकार रहा है। हे देवि! मेरे मुख की लालिमा बनाये रखो, हाथ पकडकर मुझे उबारो। इस समय मुझे ठुकराना नही। समाज का डूबता पोत हूँ मैं, मुझे खेकर भँवर मे से तुम्ही निकाल सकोगी।

पुरुष पतन की ओर बढा है, उसने नारी को कुचला और पगु भी बनाया, अपनी सम्पत्ति समझ उस पर अत्याचार भी किया। नारी का स्वभाव लचकदार था, वह दबकर भी विद्रोही नही बनी, इसी लिए अत्याचारो की आँधी उसके ऊपर से ही बह गई। आज जागरूक होकर नारी कठोर बन रही है। चारो ओर नारी-जागरण का घोष हो रहा है। परन्तु यह जागरूकता रचनात्मक और कल्याणात्मक हो तभी वाछनीय है। आज का नारी-समाज पुरुषो की समानता मे स्वत्व की रक्षा के लिए होड लगाये हुए है। कुछ गैरजिम्मेदार पुरुष भी चहल-पहल पसन्द, विवेकहीन स्त्रियो को उभार कर तमाशा देख रहे है। ये अदूरदर्शी स्त्रियाँ भी नर और नारी के सघर्ष को मिटाने के लिए तलाक रूपी घातक अस्त्र को ही ठीक समझ रही है।

लडकर लडाई कभी नही मिटी है। क्षण भर के लिए अगर शान्ति हो भी जायेगी तब भी ईर्ष्या, द्वेष डाह आदि अन्दर ही अन्दर सुलगते रहेगे। प्रतिहिसा की ज्वाला फिर धधकेगी और लपटे फिर उभर आयँगी। यह अग्नि तो शान्ति, त्याग और प्रेम के शीतल जल मे ही ठण्डी होगी। आज तलाक का दुष्परिणाम पाश्चात्य देश भुगत रहे है। वैवाहिक जीवन मे सब प्रकार से समता, स्वाधीनता और अधिकार पाकर भी पाश्चात्य नारी सुरक्षा और निश्चिन्तता का अनुभव नही कर पा रही है। मनचाहा जीवन-साथी ढूंढने के बाद भी उनके सम्बन्ध क्षणिक ही है। कोई भी चपल आकर्षक युवति एक प्रौढ नारी का पति चुराने मे सफल हो जाती है। कोई भी सजीला नवयुवक अपने मित्र की नवोढा को बहका ले जाता है। ऐसो की गृहस्थी मे विश्वास, त्याग और स्थिरता भला कहाँ? चाहे तलाक द्वारा उन्हे एक बन्धन मे ऊबने पर शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता है, परन्तु इसमे उनकी समस्याएँ सुलझती नही, उल्टी बढती ही है। क्योकि जहाँ आमरण निभाने की दृढता ही नही, वहाँ दम्पत्ति नये-नये बन्धन जोडकर उन्हे तोडते हिचकते नही। एक मजबूत पक्का मकान बनाकर उसमे स्थायी रूप से निवास बनाकर रहने मे, कच्ची पर हल्की-फुल्की सारहीन सजीली झोपडियाँ बनाकर कुछ दिन रहना और फिर उसे तोडकर दूसरी अस्थायी झोपडी बनाने लगना कहाँ की बुद्धिमानी है?

तलाक से समस्या नहीं सुलझेगी—

किसी बीमारी का इलाज करने के लिए, कडवी दवाइयाँ पिलाना और दुविधाजनक ऑपरेशन करवाने मे यह लाख दर्जे अक्लमन्दी है कि आप

पडा। पुरुष अपने लिए सहूलियत और अधिकार चाहता था, इसलिए उसने नारी पर बहुत कुछ पाबन्दियाँ लगाई, उसके दायरे को तग किया। परिणाम स्वरूप जहाँ एक ओर अनमेल-विवाह, वृद्ध-विवाह, बहु-विवाह आदि की स्वाधीनता पुरुषो को मिली, दूसरी ओर कन्या का जन्म तक एक विपत्ति का हेतु समझा जाने लगा। कन्या के माता-पिता की एक मुख्य जिम्मेदारी थी कि किसी तरह इसके हाथ पीले कर दिये जायँ। विवाह के पश्चात् वह अपने पति की सम्पत्ति समझी जाती थी।

शिक्षा के प्रचार के साथ ही साथ स्त्री की दशा भी सुधरी। अब उन्हे अपना साथी पसन्द करने की बहुत कुछ सुविधाएँ है। अब पुरुष द्वारा वह एक सम्पत्ति नही परन्तु सहचरी और जीवन-सगनि समझी जाने लगी है। पुरुष ने इस बात को भली प्रकार महसूस किया है कि नारी को अब अशिक्षित और पर्दे मे रखकर वह स्वय ही घाटे मे रहेगा। प्रगतिशील जमाने मे ऐसी सगनि जीवन-पथ पर बराबर कदम उठाकर नही चल सकेगी और अशिक्षित माता के सस्कार उसकी सन्तान को भी दबा रखेगे। स्त्रियो मे जागृति हुई। सस्कार तो उनमे छिपे ही थे, उन्नति का मार्ग खुलते ही वे तेजी के साथ पुरुषो के साथ जा मिली।

नारी इसकी पवित्रता की रक्षा करे—

अब नारी एक ऐसे स्थान पर आकर खडी हो गई है, कि वह प्रतिक्रियावादी होने के लिए मचल रही है। उसकी यह भूल उसे सर्वनाश की ओर ले जायगी। यदि गृहस्थाश्रम की पवित्रता नष्ट हो जायगी तो नारी अपने आदर्श से गिर जायगी। उसके नारीत्व और मातृत्व के दिव्य सौन्दर्य की कवियो ने जो कल्पना की, ससार मे उसे परमात्मा की सुन्दर सृष्टि की सर्वोत्तम रचना मानकर जो गुणगान किया है, उस स्वर्गीय सौन्दर्य पर सर्वदा के लिए पर्दा गिर जायगा। ससार मे इस समय कठोरता, पिशाचता और निर्ममता ने हाहाकार मचाया हुआ है। अविश्वास और स्वार्थ, समाज मे मनुष्य को निकृष्ट और आदर्शहीन प्रमाणित कर रहा है। फलस्वरूप पारिवारिक सुख अशान्ति और असन्तोष से किरकिरा हो गया है। ऐसे नाजुक समय मे कर्त्तव्य नारी को पुकार रहा है। हे देवि! मेरे मुख की लालिमा बनाये रखो, हाथ पकड़ कर मुझे उबारो। इस समय मुझे ठुकराना नही। समाज का डूबता पोत हूँ मैं, मुझे खेकर भँवर मे से तुम्ही निकाल सकोगी।

पुरुष पतन की ओर बढा है, उसने नारी को कुचला और पगु भी बनाया, अपनी सम्पत्ति समझ उस पर अत्याचार भी किया। नारी का स्वभाव लचकदार था, वह दबकर भी विद्रोही नही बनी, इसी लिए अत्याचारो की आँधी उसके ऊपर से ही बह गई। आज जागरूक होकर नारी कठोर बन रही है। चारो ओर नारी-जागरण का घोष हो रहा है। परन्तु यह जागरूकता रचनात्मक और कल्याणात्मक हो तभी वाछनीय है। आज का नारी-समाज पुरुषो की समानता मे स्वत्व की रक्षा के लिए होड लगाये हुए है। कुछ गैरजिम्मेदार पुरुष भी चहल-पहल पसन्द, विवेकहीन स्त्रियो को उभार कर तमाशा देख रहे है। ये अदूरदर्शी स्त्रियाँ भी नर और नारी के सघर्ष को मिटाने के लिए तलाक रूपी घातक अस्त्र को ही ठीक समझ रही है।

लडकर लडाई कभी नही मिटी है। क्षण भर के लिए अगर शान्ति हो भी जायेगी तब भी ईर्ष्या, द्वेष डाह आदि अन्दर ही अन्दर सुलगते रहेगे। प्रतिहिसा की ज्वाला फिर धधकेगी और लपटे फिर उभर आयँगी। यह अग्नि तो शान्ति, त्याग और प्रेम के शीतल जल मे ही ठण्डी होगी। आज तलाक का दुष्परिणाम पाश्चात्य देश भुगत रहे है। वैवाहिक जीवन मे सब प्रकार से समता, स्वाधीनता और अधिकार पाकर भी पाश्चात्य नारी सुरक्षा और निश्चिन्तता का अनुभव नही कर पा रही है। मनचाहा जीवन-साथी ढूँढने के बाद भी उनके सम्बन्ध क्षणिक ही है। कोई भी चपल आकर्षक युवति एक प्रौढ नारी का पति चुराने मे सफल हो जाती है। कोई भी सजीला नवयुवक अपने मित्र की नवोढा को बहका ले जाता है। ऐसो की गृहस्थी मे विश्वास, त्याग और स्थिरता भला कहाँ? चाहे तलाक द्वारा उन्हे एक बन्धन मे ऊबने पर शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता है, परन्तु इससे उनकी समस्याएँ सुलझती नही, उल्टी बढती ही है। क्योकि जहाँ आमरण निभाने की दृढता ही नही, वहाँ दम्पत्ति नये-नये बन्धन जोडकर उन्हे तोडते हिचकते नही। एक मजबूत पक्का मकान बनाकर उसमे स्थायी रूप से निवास बनाकर रहने मे, कच्ची पर हल्की-फुल्की सारहीन सजीली झोपडियाँ बनाकर कुछ दिन रहना और फिर उसे तोडकर दूसरी अस्थायी झोपडी बनाने लगना कहाँ की बुद्धिमानी है?

तलाक से समस्या नहीं सुलझेगी—

किसी बीमारी का इलाज करने के लिए, कटवी दवाइयाँ पिलाना और दुविधाजनक ऑपरेशन करवाने से यह लाख दर्जे अक्लमन्दी है कि आप

बीमारी के कारण को ही मिटा दे। दुविधाजनक इलाज की अपेक्षा निश्चित और सरल, सुखद प्रतिकार श्रेष्ठतर है। घर के पास गन्दगी और मच्छरों का निवास-स्थान ही न रहेगा तो मलेरिया के इलाज का प्रबन्ध करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। सेना शाला, आफिसों दुकानों कारखानों और समाज नगर तथा संसार में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए नियमों की पाबन्दी और नीति-चतुरता और व्यावहारिक कुशलता अपनाने का पाठ पढ़ाया जाता है फिर भला गृहस्थाश्रम जिस पर समाज का दारो-मदार है उसमें पति-पत्नी को संयम, नियम, त्याग, प्रेम और चतुराई से निभाने की ताकीद क्यों नहीं की जावे? इसके विपरीत उन्हें विकास का मार्ग दिखा-कर कोमल बन्धनों को काटने के लिए तलाक की छुरी पकड़ाकर एक कागज के सहारे आज़ाद कर भाग जाने की सुविधा देना क्या उचित है? विवाह-विच्छेद गार्गी जी के विचार माननीय है।

कुलीनता की छाप मनुष्य पर अवश्य पडी होती है, अतएव उसकी आदतें जो कि स्वभाव का ही दूसरा रूप है घर के संस्कारो से प्रभावित हुए बिना नही रहती। कुलीनता तथा शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण, आदर्श, विचार तथा ध्येय निर्धारित करने मे बहुत हद तक जिम्मेदार होती है। आर्थिक स्थिति की दृढता भी घर-घराने की सामाजिक मान-मर्यादा द्वारा ही परखी जाती है, अतएव इन सब बातो को परखने का काम बुजुर्ग और अनुभवी माता-पिता पर ही छोडना ठीक होगा। पर एक दूसरे का रूप और अभिरुचि तथा स्वभाव की विशेषता और आकर्षण परखने का मौका वर

और कन्या को अवश्य दिया जाना चाहिये। स्वभाव और गुणो मे कभी-कभी भिन्नता होने पर भी, कई पति-पत्नी बहुत सफल और सुखी दम्पति पाये गये है। कहते है, भिन्नता और नवीनता मे आकर्षण अधिक तीव्र होता है। अगर कोई पुरुष अधिक उद्यमी तथा चुस्त है, उसमे तात्कालीन व्यवहार बुद्धि अधिक है, तो उसका ऐसी स्त्री के संग, जो अपना भार पति पर टाल, लाड-दुलार मे अपने को भूल, एक आज्ञाकारिणी बालिका के सदृश रहना पसन्द करती है, अधिक सफलतापूर्वक निर्वाह हो सकता है।

इसी प्रकार गृह-कार्य मे दक्ष, कर्त्तव्यपरायणा नारी पाकर एक बेपरवाह, काम मे भूला रहने वाला पति अपने को धन्य समझता है। ऐसे पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे के पूरक बन जाते है। पालको को चाहिए कि लडके और लडकी का रूप, गुण, आयु, स्वास्थ्य, रुचि, आदर्श तथा ध्येय को ध्यान मे रखते हुये तदनुकूल ही जीवन-साथी ढूंढने की चेष्टा करे। सन्तान का भी यह धर्म है कि माँ-बाप के अनुभव से पूर्ण लाभ उठाकर अपने जीवन-संगी को परखे। केवल प्रथम आकर्षण से जो प्रेम उत्पन्न होता वह क्षणिक और कामनापूर्ण होता है। ऐसी चकाचौंध से अंधे होकर जो साथी ढूंढा जाता है उसकी कटु असफलता जीवन भर खटकती रहती है। याद रखे आपने न केवल

अपने लिए जीवन-साथी चुनना है परन्तु साथ ही अपना एक रक्षक और स्वामी भी चुनना है तथा अपनी होने वाली सन्तान के लिए योग्य पिता और अपने माता-पिता के लिए एक ऐसा जामाता ढूंढना है जिसे वे अपनी घर की लाज, कलेजे का टुकडा, अपनी प्यारी बेटी सौंपकर निश्चित हो सके। अन्यथा चाहे आप तो अपनी भूल से जीवन भर दुखी रहेगी, परन्तु आपको दुखी देख निर्दोष माँ-बाप का कलेजा भी कसकता रहेगा।

बडो का सहयोग प्राप्त करें--

आजकल कई नवयुवक कहते है कि साथी चुनने का अधिकार केवल हमारा है। हमे अपना भविष्य स्वय निर्धारित करना है, हमे जैसा रुचि-कर होगा वैसा करने से हमे भला कोई क्यो रोके ? अब जमाना बदल रहा है। बाप-दादो की सलाह से हम भला कैसे चल सकते है, हम अब नादान तो है नही, अपनी बुराई-भलाई स्वय समझते है। एक हद तक उनका कहना ठीक भी है। परन्तु अपने दृष्टिकोण को समझाकर माँ-बाप का सहयोग प्राप्त करने मे ही उनकी कुशल है। आखिरकार उनका अनुभव जो उन्होने इतने

वर्षों मे कई ठोकरे खाकर, फिर सँभलकर प्राप्त किया है, बहुत मूल्यवान है। आप पितृकुल के वृक्ष की एक शाखा है। शाखा का पेड से लगे रहने पर ही आपके जीवन की सरसता और हरियाली बनी रह सकती है। अपने वश की शान-आन, मान-मर्यादा, शोभा और कुलीनता बनाये रखने मे ही आपका गौरव है। उच्छृङ्खलता को स्वाधीनता कहना भूल है। अगर मुख्य नदी से

कोई शाखा मर्यादा तोड, दोनो कूलो को तोडती-फोडती, बरसाती जल के उन्माद मे अलग बह निकले, तो थोडी दूर जाकर, कुछ काल बाद, वह शीघ्र ही सूख जायगी। माना कि ससार तरक्की कर रहा है, मनुष्य के दृष्टिकोण बदल रहे है, परन्तु जीवन को सफल और सुखी बनाने वाले मूल सिद्धान्त और सनातन सद्‌गुणो की अवहेलना तो कोई समाज किसी काल मे भी नही कर सकता। सदाचार, शीलता, सभ्यता, सच्चाई, सरलता, कर्तव्यपरायणता तथा त्याग जीवन सर्वदा ही वाछनीय है। प्रथम दर्शन के आकर्षण पर ही अगर प्रेम की सार्थकता सिद्ध होती तो आज पाश्चात्य देश मे ३ पीछे २ विवाह-विच्छेद न होते।

आर्थिक चट्टान—

आर्थिक कठिनाइयाँ आजकल एक समस्या बनी मुँह बाये खडी है। नव-दम्पति के बहुत से सुनहले स्वप्न, इसी चट्टान पर टूटते है। इसी के कारण माता-पिता के अपनी सन्तान को सुशिक्षित बनाने के बहुत से अरमान अधूरे रह जाते है। शारीरिक, मानसिक और सामाजिक उन्नति करने मे असफल रहने का एक मुख्य हेतु धनाभाव भी है। महगी की चक्की सब को पीस रही है। अभाव चारो ओर साकार बन कर खडा है। रुपये की कीमत आज दो आने के बराबर रह गई है। इसको सुलझाने का बस अब एक ही उपाय है। अगर चादर बडी नही हो सकती तो लज्जा ढकने के लिए पाँव समेटने ही होगे। इसके लिये गृहिणी का अपने कर्तव्य की ओर पूर्णरूप से जागरूक रहना होगा। जीवन की आवश्यकताएँ पहले पूरी करनी होगी, मनोरजन का साधन बाद मे जुटाना होगा। आत्म सन्तुष्टि, परस्पर सहयोग और बच्चो की सख्या नियमित रखकर गृहस्थी चलानी होगी। नौकर रखना आजकल धन का अपव्यय है। उसी घर मे नौकर रखना उपयुक्त होगा जहाँ स्त्री भी कम से कम दो सौ रुपया कमा कर लाती हो। अन्यथा घर की सार-सँभाल बच्चो की देखभाल आदि काम ही इतना होता है कि स्त्री अगर उसे स्वय सँभाले तो कम से कम १५० रु० महीने की बचत हो सकती है। घर का रहन-सहन और कार्यक्रम इस प्रकार बनाये कि गृहिणी को दो घन्टे का दोपहर को विश्राम मिल सके। सब काम समय पर और व्यवस्थापूर्ण ढग से होने चाहिएँ। अब पुराने रिवाजो मे कि गृहिणी दिन भर चूल्हा-चक्की लेकर बैठी रहे, सुधार करना होगा। गृहिणी घर की दासी नही अपितु स्वामिनी और

सहचरी है। धन और समय की बचत के लिए कोआपरेटिव संस्था के ढंग पर सम्मिलित पारिवारिक जीवन का नव-निर्माण करना ही श्रेयस्कर होगा।

सच्चे सहयोगी बनें—

वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के लिए स्त्री-पुरुष दोनो की ही ओर से प्रयत्न वाछनीय है। परस्पर नीच-ऊँच, शासित और शासक की भावना आनी ही नही चाहिए। वर्तमान को अतीव सुन्दर बनाने की चेष्टा बहुत सी कठिनाइयो को दूर कर देगी। अभावो का रोना रोने मे, अभाव कम नही होते, बल्कि अपने प्रयत्नो से उनकी पूर्ति करने से ही आप उन्हे सुलझा सकेंगे। न केवल धन, परन्तु रूप, गुण, सुविधाएँ तथा सुअवसर आदि की रही-सही कमी भी सहयोग से पूरी करे। चाहे जैसी स्थिति हो निभाने की चेष्टा करे। क्षमा और
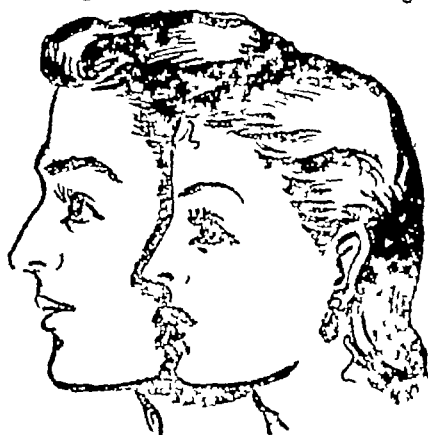
प्रोत्साहन इन दो के सहारे आप एक दूसरे के पूरक तथा पथप्रदर्शक बन जाएँ। अगर कभी जीवन-पथ ऊँचा-नीचा प्रतीत हो आप अधीर होकर निराश न हो। ऊबड-खाबड धरती पर लडखडाता हुआ गृहस्थी का रथ शीघ्र ही समतल भूमि पर आ जायगा, यदि आप उतवलापन छोड कर, दृढता के साथ एक दूसरे का हाथ पकड, दबे-दबे पाँव आगे बढे चलेगे। नही निभी तो तलाक की छुरी से बन्धन काट अलग हो जायँगे, यह विचार ही घातक है। आप आरम्भ मे जीवन सगी चुनने मे सावधानी बरतें, पर एक बार जिसका हाथ पकड लिया उसे आजन्म निभाने का दृढ निश्चय कर गृहस्थी का भार संभाले। अगर आप मे दृढता है, कर्तव्य-निष्ठा है, तो गृहस्थी का सुख-सौन्दर्य और शान्ति आपको आनन्द-विभोर कर देगी। गृहस्थी आपको एक जजाल नही, पर मधुर, आकर्षक और सुखद कोमल बधन प्रतीत होगी। गृहस्थाश्रम त्याग, वीरता और सद्‌गुणो का परीक्षा स्थल है। इसकी मजबूत धुरी पर ही अन्य तीन आश्रमो का दारोमदार निर्भर है। सर्वोत्तम मनुष्यत्व ही देवत्व है। यहाँ आपके इसी देवत्व की परीक्षा है। सिनेमा की दुनिया में वैवाहिक जीवन की झाकी न देखे, वे तो चलचित्र ही है। समाज मे सजीव और सफल चित्रो

का अध्ययन करें, उनसे आप को प्रेरणा मिलेगी। रचनात्मक प्रतिकारो से गृहस्थी की कठिनाइयो को दूर करें, और सामाजिक अड़चनो को सुलझायें।

यथार्थवादी बनें—

प्रत्येक मनुष्य में कुछ न कुछ कमियाँ, बुराइयाँ और दोष होते हैं, बिना इनके मनुष्य मनुष्य नहीं। व्यक्ति की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ मिलकर उस के व्यक्तित्व की विशेषता को बनाती हैं। हम जिससे प्रेम करते हैं, उससे यह भी आशा करते हैं कि मैं जैसा हूँ, उसी तरह वह मुझे कबूल करे, एक मित्र की तरह बुराइयो को हँसकर टाल दे और मुझे अपना जानकर समझाए-बुझाए। जब पति-पत्नी एक दूसरे की कटु आलोचना करने, बुराइयाँ ढूंढने और एक दूसरे को दोषी प्रमाणित करने पर कमर कस लेते हैं तो पारिवारिक सुख, दाम्पत्य-जीवन का आनन्द और प्रेम किरकिरा होजाता है।

आलोचना की प्रवृति बुरी है—

समझदार पति-पत्नी परस्पर मतभेद होते हुए भी लोगो के सामने एक दूसरे का समर्थन करते और अपनी पारिवारिक एकता बनाए रखते हैं। आप एक-दूसरे पर शासन करने अकुश बनाए रखने की भावना को छोड दें। 'मेरे घर में मेरा हुक्म चलेगा', यह भावना बहुत अव्यावहारिक है। हर एक समस्या का हल है। सहन-शक्ति, समझौते और तरह देने से बहुत से खिचाव पैदा करने वाली बातें सुलझाई जा सकती हैं। जब वाद-विवाद का मौका आए तब तरह देकर, बात को टाल कर अपनी अक्लमंदी का प्रमाण देने का मौका न खोवें। 'वाद-विवाद से मतभेदो की खाई और चौड़ी हो जाती है।' क्योंकि, प्रतिस्पर्धागत बात समझने की चेष्टा न करके दोनो अपनी-अपनी बात को पुष्ट करने की दलील देते हैं। हठ और अहं भावना के कारण विरोध बढ़ता जाता है। हमारे एक मित्र हैं, उनका अपनी पत्नी से कभी वाद-विवाद नहीं होता। पति का कहना है कि मेरी पत्नी जब किसी बात के पीछे पड जाती हैं, तो मैं चुप हो जाता हूँ। जब वह सब कुछ कह चुकती है तब मैं उस समय इतना ही कहकर बात समाप्त कर देता हूँ कि 'ठीक है, तुमने जो कहा है, वह विचारणीय है। इस विषय पर सोच-विचार कर जो करना चाहिए, वही करेंगे।' इस से यह फायदा होता है कि उस समय के लिए बात टल जाती है। फिर सोच समझकर जो करना ठीक होगा उस विषय में मैं उसे समझा देता हूँ। पर मैं ऐसा निर्णय कभी नहीं देता, जिसमें केवल अपने

हित या स्वार्थ का ही ध्यान रखा गया हो। उसकी जो बात युक्तिसगत होती है, उसे थोड़ा सुधारकर मान भी लेता हूँ। पर बडे मामलो मे मैं उसका पथ-प्रदर्शन करता हूँ, उसे समझा देता हूँ और समझाने मे वह समझ भी जाती है।

सुधारक न बन बैठें--

कई नासमझ पति-पत्नी एक-दूसरे को जली-कटी सुनाकर मानो एक-दूसरे को सुधारने और चेतावनी देने का जिम्मा अपने ऊपर ले लेते

है। व्यग, कटु आलोचना द्वारा वह अपने जीवन-साथी के मन को छेदते रहते है। इस से मनोमालिन्य बढता रहता है। मनो मे गाठ पड जाती है। सुधारने का यह तरीका गलत है। इसकी अपेक्षा यदि प्यार और मनोवैज्ञानिक ढग से समझाया जाये, तो उससे सचमुच मे अपनी कमियो को दूर करने की प्रेरणा मिलती है। जीवन मे एक दूसरे को सराहने के कई अवसर आते है। यह मानव स्वभाव है कि मनुष्य अपने प्रियजनो की प्रशसा, प्रेम और सहानुभूति का भूखा होता है। विवाहित जीवन मे ऐसे अनेक अवसर आते है जब कि जीवन-साथी की प्रशसा और सराहना अवश्य करनी चाहिए। शिष्टाचार की ये छोटी-छोटी बाते मन को जीतने के लिए काफी है।

कोई भी व्यक्ति अपने मे पूर्ण नही है। मनुष्य कमजोरियो का पुतला है। न्यूनताएँ हर एक व्यक्ति मे होती है। जो पुरुष अपनी पत्नी की सूरत

शक्ल में दोष निकालता है, फूहड़ या अशिक्षित कहकर उसकी भर्त्सना करता है, वह अपनी पत्नी को अयोग्य प्रमाणित करता हुआ मानो अपने सम्मान को ही चोट पहुँचाता है। जो स्त्री पति की सहचरी है, गृहिणी है, बच्चों की माँ है, वह पुरुष के लिए आदरणीय है। इसी तरह जो स्त्रियाँ अपने देवर, बहनोई या सहेलियों के पतियों से अपने पति की तुलना करती और बुराई करती हैं, वे भी निन्दा की पात्र हैं। स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा अधिक निष्ठा और आत्मबल होता है, यदि वे निश्चय के साथ प्रयत्न करें तो पति को प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचा सकती हैं, बुराइयों को छुड़ाकर उसे चरित्रवान और कर्मशील बना सकती हैं। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं, उनको प्रेरणा देनेवाली माँ, बहन, साथी, प्रेमिका, पत्नी के रूप में जरूर कोई न कोई स्त्री ही रही है। किसी योग्य पुरुष की असफलता इस बात की द्योतक है कि उसको अपनी पत्नी से ऐसा सहयोग या प्रेरणा नहीं मिल रही है, जोकि उसे उत्कर्ष के नए मार्ग पर मोड़ दे। दूसरे को परखने के बदले यह लाख दर्जे श्रेष्ठ है, यदि व्यक्ति स्वयं को सफल जीवन-साथी बनाने की चेष्टा करे। इसी में वैवाहिक जीवन की सफलता छिपी है।

बचपन का स्वभाव आदतें बन जाती हैं, वह छूटती कठिनाई से ही है। बाज पुरुष अपनी चीजों को इधर-उधर फेंक देते हैं। सुबह उन्हें काम पर जाने की जल्दी होती है। उस समय उनका 'मूड' भी कुछ ठीक नहीं होता। वे घर के प्रबन्ध या बच्चों की बातों के कारण परेशान किया जाना पसन्द नहीं करते। इस बात को समझकर स्त्री को उस समय उनके भूल-चूक या बेपरवाही की आलोचना नहीं करनी चाहिए। माना कि आप घर की मालकिन हैं और यह चाहती हैं कि घर में व्यवस्था आपकी मर्जी के अनुकूल हो और घर साफ-सुथरा दिखे, पर इसका यह मतलब नहीं है कि पुरुष के लिए वहाँ पाबन्दियों का जाल बिछ जाए। तब तो घर उसके लिए घर नहीं रहेगा।

प्रेम का सौदा फिफ्टी-फिफ्टी का नहीं है। इसमें देना अधिक और पाना कम होता है। विवाह की असफलता का एक कारण यह भी है कि वर या वधू कल्पना के ऊँचे-ऊँचे महल बनाते हैं। सिनेमा जगत के नायक-नायिका के रोमान्सों को अपने जीवन में यथार्थ रूप से घटित होते देखना चाहते हैं। कुछ स्त्रियाँ अधिक भावुक होती हैं। पति ने जरा सा डाँट डपट दिया,

या जल्दी मे जरा रुखाई मे कुछ कह दिया तो उनके प्रेम के सब सपने ढह जाते है। वे सोचती है यह मुझे प्यार ही नही करते, अगर करते होते तो दिल को ऐसी चोट थोडा ही पहुँचाते ? बाज पुरुष भी समस्या पूर्ण होते है। स्त्री पर पुरुष का शासन बना रहना चाहिए इस नीति को अपनाकर वह परिवार पर नादिरशाही शासन करने मे ही कल्याण समझते है। ऐसे निमर्म, घोर चिडचिडे व्यक्ति के सग जीवन व्यतीत करना अन्य लोगो के लिए दूभर हो जाता है। ऐसे व्यक्तियो के चरित्र का विश्लेषण करते हुए एक अनुभवी का कहना है कि—ढूंढने पर ऐसे लोगो के स्वभाव का कारण उनके बचपन में मिल सकता है। असल मे बचपन मे इन लोगो की भावनाएँ विकसित नही हो पाती, इसीलिए बडे होकर वे ऐसा अजीब आचरण करते है। बच्चो की तरह वे दूसरो से तो कुछ पाने की आशा रखते है, पर स्वय किसी को कुछ नही देना चाहते। अपनी बराबरी वालो से या अपने से बडे और श्रेष्ठ लोगो के प्रति तो इनका व्यवहार बहुत

अच्छा होता है पर अपने अधीनस्थ लोगो से इन व्यक्तियो का वर्त्ताव अच्छा नही होता। वे बात-बात मे अपने नीचे रहनेवाले लोगो पर अपना अधिकार जमाते है, उन पर अपनी श्रेष्ठता प्रकट करते है। और ऐसे लोग शादी करते है, तो अपना अधिकार जमाने की उनकी भावना पूरी तरह खुल खेलती है। पत्नी और बच्चे उनके आश्रित है— यह चूंकि वे जानते है, इसलिए चाहते है कि घर भर उनका नादिरशाही हुक्म माना करे। यदि उन्हे कही अपने धन्धे या काम-काज मे थोडी सफलता मिल गयी, तब तो फिर कहना ही क्या है ! फिर तो ऐसे लोग अपने आपको असाधारण रूप से सफल मानने लगते है। और अपनी कोई बात कटना वे बर्दाश्त नही करते।

असफलता के लिए दोनो दोषी—

विवाह असफल होते हैं, इसके लिए स्त्री-पुरुष दोनो ही समान रूप से दोषी है। विवाह के ध्येय को समझने मे भूल करना, बहुत अधिक आशा करना, अर्थ प्रधान दृष्टिकोण रखना, सहानुभूति और सहयोग की भावना न रखना आदि बातें ही वैवाहिक जीवन को असफल बना देती हैं। विवाह
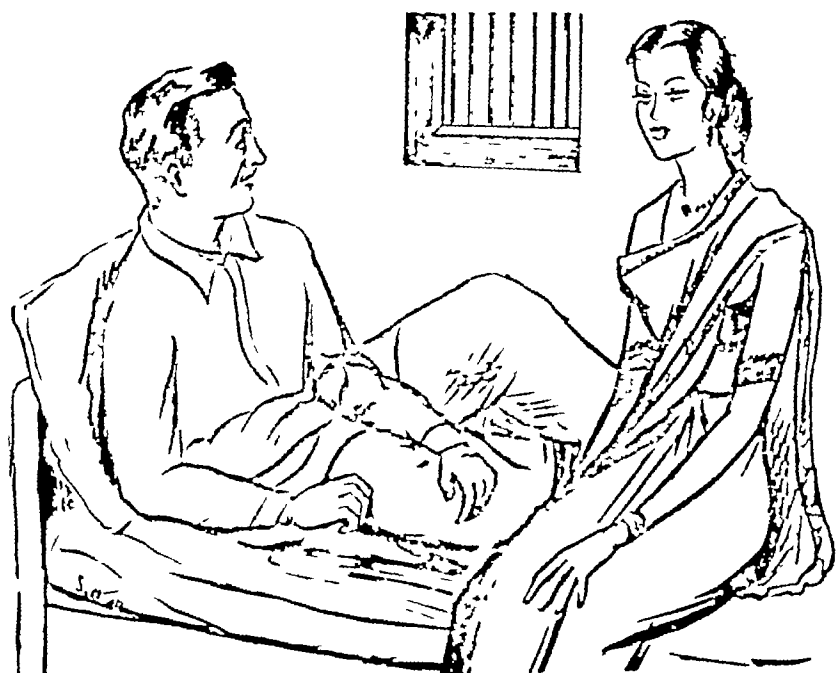
का आधार प्रेम होना चाहिए। ऐसा प्रेम जो कि वासना और स्वार्थ से परे हो, जिसमे मन, शरीर और बुद्धि इन तीनो का सहयोग हो, जिसमे इन तीनो की सन्तुष्टि हो। शारीरिक आकर्षण पर आधारित प्रेम की डोरी कच्ची होती है। मन जिस प्रेम को स्वीकार करले, उसमे आनन्द विभोर हो जाये, बुद्धि जिस प्रेम का अनुमोदन करे, जो हृदय की गहराई तक पहुँचकर आत्मा को छूले, ऐसा प्रेम ही गहरा, स्थायी और कल्याणकारी होता है। ऐसा निर्मल प्रेम अभाव और शिकायतो को मिटा देता है। शारीरिक या आर्थिक शोषण उसके आसपास फटक नही सकते।

एक विद्वान् का कथन है कि 'प्रेम कोई बिजली नही है जो एक बार चमक कर बादलो में ओझल हो जाय। यह तो वह दीपक है जिसे बड़ी लगन

से जलाया जाता है, हृदय के स्नेह से उमे भरा जाता है और आत्मा के प्रकाश से उसकी लौ को प्रदीप्त किया जाता है'।

पर लौ को जला देने से ही प्रेमियो का कर्तव्य पूरा नही हो जाता। दुख, असफलता, प्रलोभन आपत्तियो की आधी के बीच भी इसे बुझने से बचाने में ही प्रेमियो की परीक्षा है। इस परीक्षा मे जो दम्पति मफल होते है उनका ही गृहस्थ जीवन आदर्श माना गया है। देखने मे आता है कि अधिकाश दम्पतियो का प्रेम विवाह के तीन-चार माल तक ही साथ देना है। उनके कल्पना की दुनिया यथार्थ के धरातल पर आकर निराशाओ और लाचारियो के थपेडो से छिन्न-भिन्न हो जानी है और वैवाहिक जीवन उन्हे भार प्रतीत होने लगता है।

याद रखे विवाह का यह प्रिय वन्धन आदर्श वन्धन, कल्याणकारी वन्धन आजन्म तक का है ऐसा समझ कर ही स्वीकार किया जाना चाहिए। यह नाजुक है पर साथ ही त्याग और आदर्श से सुरक्षित किये जाने पर अमर भी है। इसकी उच्चता के मर्म को समझे। इसी के आस-पास प्राचीन और अर्वाचीन के मिश्रण से तैयार आदर्शो की मजबूत शिलाओ का एक नव-गृह निर्माण करे। आज नवयुवक और नवयुवतियो को नवयुग का सृजन करना है, जो धर्मयुग के आगमन का सन्देश लेकर आये और भारत अपने अतीत के गौरव को पुन प्राप्त कर सके।

'विवाह मनुष्य के जीवन मे एक अवर्णनीय माधुर्य लाता है, जिसके अभाव में जीवन नीरस-सा लगता है। दूसरे शब्दो मे विवाह दो स्वतत्र विचरते हुए व्यक्तियो की रिक्तता को भरने का प्रयास करता है और साथ ही समाज को दूषित होने के अभिशाप से वचाता है।'

२. एक से दो भले

विवाह की आवश्यकता—

प्रत्येक नवयुवक और नवयुवती विवाह करना चाहती है। क्यों? इसलिये कि जीवन को पूर्ण बनाने के लिए पति-पत्नी परस्पर पूरक हैं। जीवन-नौका को खेने के लिए केवल दो नहीं चार हाथों की जरूरत है। दो पहियों पर ही रथ टिका हुआ है। सूने आकाश में दो पंछी प्रेम डोर में बंध साथ-साथ उड़ चले जाते हैं क्योंकि एकाकी जीवन अधूरा है, थका देने वाला है। जीवन का सूनापन एक साथी के

बिना दूर नहीं हो सकता। इसी प्राकृतिक मांग को पूरा करने के लिए समाज ने विवाह-प्रणाली चलाई है। यह विवाह-प्रणाली संसार के हित और कल्याण के लिए है। तभी से यह परंपरा सदियों से जीवित चली आ रही है। प्रत्येक दम्पति का यह कर्तव्य है कि वह इस सम्बंध को अपने सफल सहयोग से स्थायी और सुन्दर बनाये। पर विवाह सम्बन्ध केवल शारीरिक आकर्षण पर स्थायी नहीं बना रह सकता। इसको दृढ़ बनाने के लिए पति-पत्नी का आत्मिक मिलन होना जरूरी है।

बेजोड़ विवाह—

संसार में हंसों के जोड़े जो मुक्त होकर साथ-साथ उड़ते, बहुत कम हैं। अधिकांश युगल एक जुए में जुड़े हुए बैलों के जोड़े ही हैं। जिन्दगी को एक साथ चलने में ही कुशलता है, नहीं तो समाज की आलोचना का हंटर पीठ पर पड़ने का डर है, ऐसा दृष्टिकोण रखकर जो निर्वाह किया जाता है

वह वैवाहिक जीवन सौन्दर्य-हीन, एक तरह की कैद है। विवाह का अभिप्राय केवल जिस-जिस तरह से पति-पत्नी के निभा लेने से पूरी नही हो जाता। असल मे दोनो के शरीर और आत्मा का मिलन ही सच्चा विवाह है। केवल निकटता ही वाछनीय नही पर उसमे आन्तरिक सुख की अनुभूति होनी भी जरूरी है।

जीवन साथी के चुनाव का यह तरीका ही गलत है। दो व्यक्तियो के जीवन का सौदा दो परिवारो की आवश्यकताओ का विचार करके तय कर
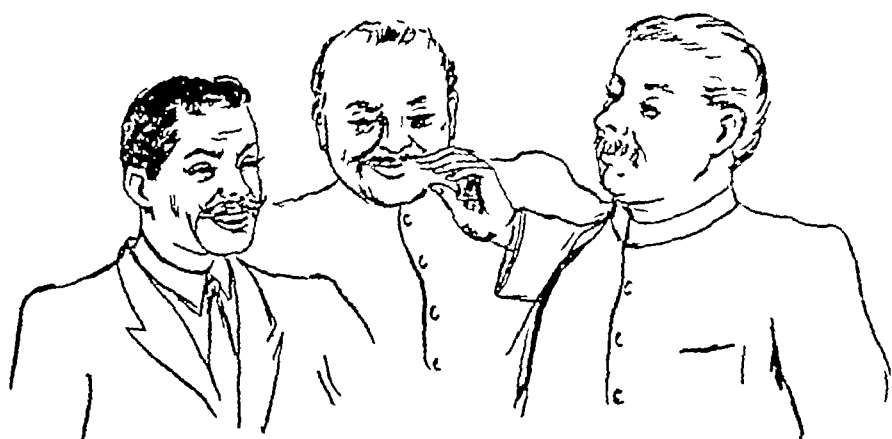
दिया जाता है। हमारे समाज मे विवाह के नाम पर एक तरह की बेच-खरीद चल रही है। लडके का पिता देखता है कि मेरे लायक बेटे की पढाई पर जो खर्च हुआ है उससे दुगना दहेज मिल रहा है, बस वह कुलीनता को धन के रूप में देखता है फिर उसे लडकी के स्वभाव या रूप के विषय मे कोई शिकायत नही रह जाती। लडका पिता के दबाव के नीचे है। वह पढकर निकला है अमीर ससुर के प्रभाव से उसे ऊँची नौकरी मिलने की आशा है। मोटर मिलेगी, नगद भी काफी आयेगा। बस, हाँ करदी जाती है। अमीर घर की लडकी साधारण घर मे व्याह कर आ गई। सोने की जूती सास को भी अच्छी लगती है। बहू का नखरा सिर-माथे है। क्यो न हो बहू जब भी पीहर जाती है नगद, कपडे, फलो और मिठाइयो के टोकरे साथ लाती है। धीरे-धीरे बहू को अपने बाप के पैसे का गुमान हो जाता है। वह ससुराल वालो को अपना दबैल समझती है। पति भी अपनी आर्थिक हीनता के कारण दबा रहता है। नारी स्वभाव है वह उसी चीज के पीछे दौडती है जिसे प्राप्त

करने मे उसे प्रयत्न करना हो। ऐसा दब्बू, सहजप्राप्त, हाँ मे हाँ मिलाने वाला पति पाकर उसकी सन्तुष्टि नही होती। उसे जीवन अधूरा लगता है। पति के रूप मे उसे स्वामी चाहिए था पर यहाँ तो धन का क्रीत दास मिला। भला ऐसे बेजोड विवाह मे आत्म-समर्पण की सन्तुष्टि कहाँ ?

सुशीला बहुत ही सुन्दर है, नृत्य-कला मे बहुत प्रवीन है। साथ ही उसने प्रथम रहकर बी० ए० पास किया। पर उसके पिता एक साधारण औकात के व्यक्ति है। जिस सेठ की दूकान मे वह काम करते है उनका लडका रमेश विलायत मे बैरिस्टर बनकर लौटा है। एक जलसे मे उसने सुशीला का नृत्य देखा, बस वह उस पर मुग्ध हो गया। उसने जिद्द पकड ली कि शादी करूँगा तो सुशीला से। बाप ने बहुतेरा समझाया कि गरीब घर की लडकी क्यो लेता है ? तुझे तो बडे-बडे सेठो की लडकियाँ आयेंगी, पर

रमेश नही माना। शादी हो गई। दो साल तब तो रमेश सुशीला के रूप का लोभी, भौंरे के सदृश उसके आस-पास मँडराता रहा। आमदनी और जेवरो
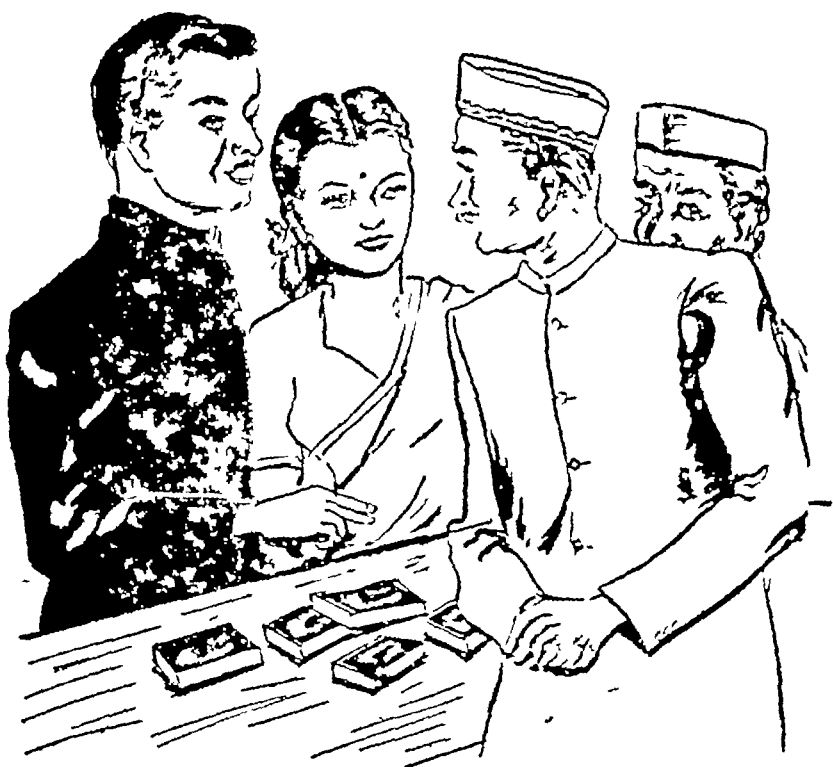
से उसे रिझाता रहा, पर प्रसव के बाद सुशीला का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया, बस रमेश ने अपने मन-बहलाव के लिए कोई और जगह ढूंढ ली। सुशीला रमेश के घर की स्वामिनी है, पर उसके हृदय की नही। लोग समझते है सुशीला बडी सुखी है, पर कोई सुशीला से पूछे। वह अपने एकाकीपन से ऊब उठी है। मन के मीत के अभाव मे उसका जीवन अपूर्ण है।

दाम्पत्य जीवन को सफल बनाने के लिए—

नित्य इसी तरह के अनेक बेजोड विवाहो की कहानियाँ समाज मे सुनने को मिलती है। पुरुप स्त्री के यौवन का शोपण करता है और स्त्री पुरुप के धन का शोपण करती है। जब तक धन और यौवन कायम रहते है सफल वैवाहिक जीवन का नाटक चलता रहता है, पर वास्तविकता कुछ और ही होती है। तो प्रश्न यह उठता है कि विवाहित जीवन को सफल बनाने के लिए क्या करना चाहिए ? उसके लिए तीन बातो की आवश्यकता है, सहिष्णुता, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तथा मित्रता की भावना। तुनुकमिजाजी, मनोवेगो मे अचानक उफान आ जाना, स्वार्थवृत्ति, चिडचिडापन ऐसे दुर्गुण है कि गृहस्थ के आनन्द को किरकिरा कर छोडते है। सच्चे अर्थ मे जीवन-साथी बनने के लिए विचार और हृदय की स्वतन्त्रता होनी आवश्यक है, तभी मित्रता का नाता निभ सकता है। यदि लोक-लाज, भय और लाचार होकर किसी को प्रेम निभाना पडे तो वह दो आत्माओ का मिलन नही कहा जा सकता। वासना और धन की गुलामी से ऊपर उठकर सच्चा प्रेम प्राप्त हो सकता है। सच्चा विवाह तब समझा जाय जब आत्म-समर्पण मे आनन्द हो, न्यूनताओ के बावजूद अपना जीवन साथी प्रिय लगने लगे, जब जीवन-पथ पर साथ-साथ चलना आनन्ददायक प्रतीत होने लगे। तुम सम और न कोई का अनुभव हो। साथी के लिए आत्मा के द्वार खुल जायँ। जहाँ देने मे ही सुख , हार मे ही जीत महसूस हो। जहाँ एक रूप होने मे कोशिश न करनी पडे। जब प्रिय की याद से मन को सुख हो। जब पाने की नही देने की इच्छा अधिक हो, जब अपने से अधिक किसी दूसरे के दु:ख-सुख की चिन्ता हो तब समझा जाय कि दो आत्माओ का सुखद मिलन हुआ है। ऐसा प्रेम दिन पर दिन बढता जाता है, आरम्भ मे वासना की आग मे वह अपनी तीव्रता फूंक नही देता।

जिस प्रकार सन्तोष और सुख को ढूंढने के लिए बाहर नही जाना

पडता, वह तो मनुष्य का अपना दृष्टिकोण है, उसी प्रकार सफल जीवन
बिताने के लिए बाहर से साधन नही बटोरने पडते। दूसरो के लिए
जीने की भावना, आत्मसमर्पण मे सुख और समझदारी, जिन्दगी को सुखी
बनाने की चेष्टा दोनो को मिलकर करनी पडती है। धन, यौवन और भोग
तो सफल जीवन के साधन मात्र है, ध्येय नही। आमतौर पर लोग प्रेम के इस
उच्च स्तर तक पहुँचने की कोशिश ही नही करते, इसीलिए वह प्रेम को
कोसते है, क्योकि प्राय उनका ध्येय केवल शारीरिक सुख प्राप्त करना ही
होता है। जब पति-पत्नी मिलकर अपना घोसला सँवारते है, बच्चो को पालते

है, जिम्मेदारिया निभाने मे एक दूसरे का हाथ बटाते है और एक दूसरे की
परेशानियो को दूर करने मे तत्पर रहते है तभी सच्चे अर्थ मे जीवन-साथी
का कर्त्तव्य पूरा होता है। अगर पति-पत्नी दोनो मे से एक भी अपने कर्त्तव्य
को ठीक से समझता है तो वह दूसरे का हाथ पकड कर विघ्न-बाधाओ को
ठेलता हुआ आगे बढता चला जाता है। पारस के संग लोहा भी तर जाता है।
कोई भी व्यक्ति अपने मे पूर्ण नही है। प्रत्येक पुरुष मे स्त्रीत्व के अंश
होते है और प्रत्येक स्त्री मे पुरुषत्व के अंश होते है। बडे होकर जो अंश
प्रधान होता है उसका विकास हो जाता है। सब से अच्छा जोडा वह है जहाँ
पति मे पुरुषत्व अंशो की प्रधानता हो और पत्नी मे स्त्री अंशो की। यदि इसके

विपरीत है तब भी सन्तुलन बना रहता है। परन्तु यदि दोनो एक ही अग वाले हुए तो सन्तुलन गडबडा जाता है। मानसिक और शारीरिक बल, निष्ठा, दृढ निश्चय पुरुप के प्रधान गुण है। वह क्रोधी, कामी, निर्माता और प्रेमोन्मत्त भी है। उसमे साहसिक कार्य करने की प्रवल इच्छा है। वह उपार्जनशील है। खतरे का मुकाबिला करने को तत्पर है। अपने अधिकार के लिए लड सकता है। अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए वह उतावला रहता है। इसके विपरीत स्त्री का मन स्नेह, दया, कोमलता और सहानुभूति से पूर्ण है। वह सौम्य, सुशील और लजीली है। बुद्धि और वल से वह चाहे पुरुप से कम है, पर व्यवहारिक ज्ञान और आत्मिक वल मे वह पुरुप से वाजी मार गई है। वह अधिक दूरदर्शी तथा धैर्यशील है। उसमे त्याग और सेवा की भावना है। वह सहनशील है। मन और तन दोनो से कोमल है। करुणा
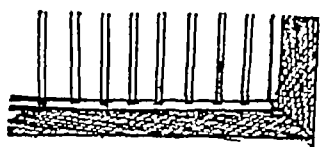
और वात्सल्य से ओतप्रोत है। पुरुप स्त्री का पूरक है और स्त्री पुरुप की। इसीलिए अपने जीवन को पूर्ण बनाने के लिए वह एक दूसरे का सहारा ढूंढते

हैं, एक दूसरे के प्रति आकृष्ट होते हैं। पुरुष स्त्री की रक्षा करता है, उसको शारीरिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। स्त्री उसके पौरुष का सहारा पाकर निश्चिन्त हो जाती है। बदले मे वह पुरुष के तप्त हृदय पर प्रेम और सहानुभूति का चन्दन लगाती है। मित्र की तरह उसको धीरज बँधाती है, दुःख मे उसकी सेवा करती है और सुख मे उसका मनोरजन। ऐसे स्त्री-पुरुष का परस्पर सहयोग उनकी आध्यात्मिक शक्तियो को विकसित करता है। उनको मानसिक स्वस्थता प्रदान करता है। और जब वे माता-पिता बन जाते हैं—उनमे सेवा, त्याग, सहनशीलता, क्षमा आदि दैविक गुण अधिक स्पष्टरूप से विकसित हो जाते हैं।

इसलिए जब वर वधू का चुनाव हो तो स्वभाव के विषय मे अवश्य परखा जाय कि उन्हे अपने साथी मे पुरुषत्व अंश की चाहना है या स्त्रीत्व अंश की। प्रत्येक व्यक्ति का विरोधी तत्वो की ओर आकर्षण अधिक होता है और उसकी जिन्दगी मजे मे कट जाती है। हमारे भारतवर्ष मे विवाह से पहले वर-वधू को एक दूसरे को समझने का मौका तो प्राय मिलता ही नही, परन्तु दो-चार बार एक दूसरे को मिला अवश्य देना चाहिए। सारी जिन्दगी का सवाल होता है। अगर किसी को देखकर प्रथम दर्शन मे ही घृणा हो जाय तो उसे प्यार करने के लिए मन को बाध्य करना कठिन-सा हो जाता है। विवाह सम्बन्ध पक्का करते समय वर और वधू का हित और पसन्दगी का सबसे पहले ध्यान रखा जाये। इस सम्बन्ध से दोनो कुलो को क्या लाभ होगा यह तो बाद की बात है। अनुभवियो का कथन है कि कन्या रूप देखती है, मा कुल और पिता वर के गुण। चलो यह भी ठीक है तीन जनो ने तीन बातो के परखने का ठेका लिया हुआ है। सन्तान का हित माता-पिता से अधिक और कौन सोच सकता है? परन्तु कभी-कभी समझदार माँ-बाप भी सौदे-बाजी करने की भूल कर बैठते हैं। सम्बन्ध ठीक करते समय धन-दौलत की चका-चौंध उनकी आंखो मे छा जाती है। और जो लडकी वाला अधिक कीमत लगा देता है उसकी बेटी की वरमाला लालच युवक के गले मे पड जाती है। इस प्रकार बेजोड विवाहो की सख्या बढती जाती है, फलस्वरूप समाज मे विवाह के जुए के नीचे कराहते हुए दम्पतियो की आहे समाज के वातावरण को भयकर बना रही है। जिन्दगी एक अमूल्य निधि है। गृहस्था-श्रम सब आश्रमो से अधिक सुन्दर, आनन्दप्रद और महत्वपूर्ण है। एक अस-

न्तोगी गृहस्थी अच्छा वानप्रस्थी नही वन सकता। जिन व्यक्तियो को पारिवारिक जीवन से असन्तुष्टि रहती है वे समाज के लिए समस्यापूर्ण व्यक्ति वन जाते है। मनोवैज्ञानिको का कहना है कि ऐसे व्यक्ति समाज के स्वस्थ वातावरण मे विप फैलाने की चेष्टा मे रहते है। यथा किसी के सुखी परिवार मे अशान्ति उत्पन्न कर देना, किसी प्रेमी युगल को लेकर कुछ अपयश फैला देना। प्रसन्न और सुखी दम्पत्ति को देखकर कटु आलोचना करना कि 'ये लोग तो वेशर्म है। इन्हे लैला-मजनू की तरह व्यवहार करते शर्म नही आती।' किसी का पति चुरा लेना या पत्नी चुरा लेनी। स्वय को समाज का उपेक्षित प्राणी समझना। अपने जीवन साथी के सिर पारिवारिक असफलता का सारा दोष मड देना। अपने से भिन्न सेक्स से द्वेप करना, उनकी कटु आलोचना करना आदि इनके लक्षण है।

डाक्टरो और मनोवैज्ञानिको का कहना है कि ऐसे व्यक्तियो की समस्याओ का मूल उनके वचपन की किसी घटना से जुडा रहता है। समस्यापूर्ण
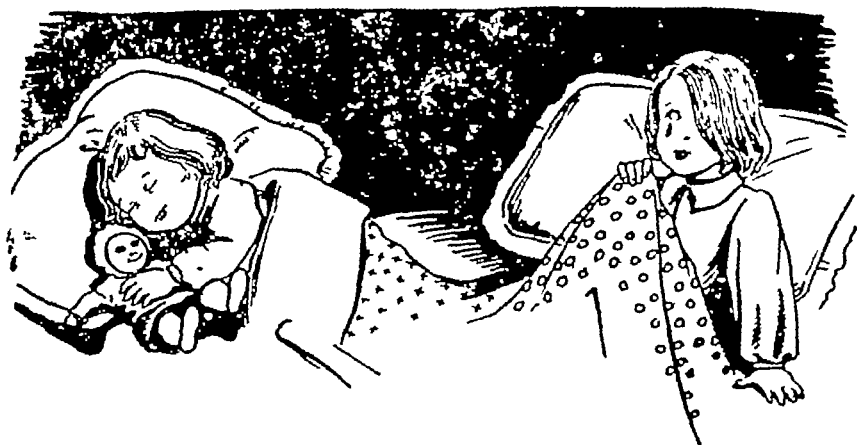
असन्तोपी, अधिक डराये हुए या तिरस्कृत वच्चे ही वडे होकर प्रतिक्रिया वादी जीवन साथी प्रमाणित होते है। जिनका वचपन अपूर्ण रहा उन्ही व्यक्तियो का यौवन-काल भी असफल रहता है। शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही सफल जीवन साथी वन सकते है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन उपयोगी है। हरेक मे कुछ आकर्पण और योग्यता होती है। जो व्यक्ति अपने जीवन साथी के दृष्टिकोण को समझकर सम्मान जनक समझौता करना जानता है, जो लेने और देने दोनो का महत्व समझता है, जिसमे धाँधली

मचाने की प्रवृति नहीं है, जो परिश्रमी और सहनशील है उसका वैवाहिक जीवन अवश्य सफल होगा। परन्तु जीवन-साथी चुनते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि किसी दबाव, डर अथवा लोभ से विवाह न किया जाय। समान कुल और योग्यता वाले लोगों में ही विवाह सम्बन्ध करना उचित होता है। यदि पुरुष केवल आर्थिक लाभ, भोग की सुविधाओं और सन्तान के लिए और नारी आर्थिक सुरक्षा के लिए विवाह करती है तो ऐसे विवाह की आधार शिला कभी मजबूत नहीं हो सकती। अगर पति-पत्नी एक दूसरे को उन्नति के पथपर नहीं लेजा सकें, यदि वह एक दूसरे के पूरक बनकर अभाव को नहीं मिटा सकें तो विवाह बहुत कुछ अंशों में असफल ही रह जाता है।

विवाह मनुष्य के लिये एक आवश्यक बन्धन है। दाम्पत्य जीवन की जिम्मेदारियों से बचे रहने के लिए जो व्यक्ति विवाह करने से इनकार करते हैं, वह अपने प्रति भी अन्याय करते हैं। एक अनुभवी का कथन है कि कुछ दिन के उपवास करने या अल्पाहार की प्रतिज्ञा तो कोई भी साधारण आदमी भी कर सकता है, किन्तु सर्वथा निराहार रहकर जीवित रहने का दम्भ बड़ा से बड़ा संयमी भी नहीं कर सकता। आहार जिस तरह मनुष्य के शरीर और मन का भोजन है उसी प्रकार स्त्री-पुरुष का परस्पर सहवास भी उसका भोजन है। इन स्वाभाविक प्रवृत्तियों का दमन तो हो सकता है, लेकिन उनका नाश नहीं हो सकता।

३. हाथ पकड़कर

विवाह के कुछ साल तक तो वासनामय प्रेम का एक ऐसा खुमार रहता है कि नव दम्पति को एक दूसरे के अवगुण भी गुण ही नजर आते है। वेपरवाही, अल्हड़पन, नादानी भी अवोधता, भोलापन और अदाएँ ही प्रतीत होती है। पर उसके वाद जीवन का सन्तुलन वनाये रखने के लिए यह वाछनीय है कि पति-पत्नी अपने कर्त्तव्य को समझकर काल्पनिक लोक से वास्तविकता के धरातल पर आकर पटरी जमाकर विठाले। परस्पर सहयोग और समझदारी से अपनी गृहस्थी की नैया को खेकर ले चले। सुख-दुख और भाव तथा अभाव मे कधा से कधा भिडाकर खडे रहे। सुनहले सपनो से युक्त निद्रा प्यारी थी, पर भोर का जागरण भी कम कल्याणप्रद नही।

एक दूसरे के विना स्त्री पुरुप अधूरे है। पुरुप मे वल, साहस, और पौरुप है, स्त्री मे कोमलता, धीरता, सौन्दर्य और सेवा-भावना है। दोनो के

इन गुणों का सुन्दर सहयोग और सम्मिश्रण ही दम्पति को जीवन-पथ में सफलता देता है। चारदीवारी को घर नहीं कहते। घर वह है जहाँ परिजनों में परस्पर प्रेम हो। जहाँ थके-हारे पुरुष को निश्चिन्तता से आराम करने की सुविधा, अपने मन पसन्द के ढंग से खाने-पीने, रहने बात-चीत करने और आने-जाने की आजादी मिले। जहाँ स्त्री का मान हो, वह अपने को सुरक्षित समझे। जहाँ परस्पर एक दूसरे के लिए सहानुभूति और प्रशंसा के शब्द हों। एक दूसरे की न्यूनता को भूल जहाँ गुणों की कद्र हो। जहाँ अपना अधिकार और स्वागत हो। जहाँ शासित और शासक की भावना न हो। ऊँच-नीच का भेद-भाव जहाँ किसी को कचोटता न हो।

सच्चे साथी बनें—

गृहस्थी में एक सुखद वातावरण पैदा करने के लिए यह वांछनीय है कि पति-पत्नी में परस्पर मित्रता और समानता की भावना को प्रधानता दी जाय। यह तभी सम्भव है कि स्त्री-पुरुष शिक्षा, स्वास्थ्य, रूप, कुल में जहाँ तक हो सके समान हों, ताकि हीनता की भावना उसे बराबरी का दावा करने से रोके नहीं। अगर किसी बात की थोड़ी बहुत कमी रह भी जाय तो अपने प्रयत्नों से उसे पूरी करने की भरसक चेष्टा करनी प्रत्येक का कर्त्तव्य है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे की पसन्द और रुचि का भी अध्ययन करना चाहिए। अगर पति को कोई रंग विशेष पसन्द है, चतुर स्त्री अपने घर की सजावट तथा अपने वस्त्रों में उस रंग को अधिक महत्त्व दे। अगर आपकी पत्नी को संगीत में रुचि है, आप चाहे स्वयं न गा सकते हों, पर उसके गाने में दिलचस्पी तो दिखा सकते हैं, गाने की प्रशंसा कर उसे गद्‌गद् तो कर सकते हैं। इसी प्रकार एक दूसरे के प्रिय खेल तथा मनोरंजन के विषयों का भी अध्ययन करना चाहिए। एक सच्चे मित्र और सहयोगी के सदृश एक दूसरे की अभिरुचि की ओर सम्मान रखने से परस्पर प्रेम बढ़ता है।

चना करती है। एक सच्ची सहचरी के लिए ऐसा करना भूल है। आखिरकार काम मे परिवर्तन ही वास्तविक आराम है। इस प्रकार के मनोरजन मे

मनुष्य अपनी चिन्ताओ को भूल कर सुख पाता है। इससे उसके मस्तिष्क को आराम और आत्मा को सुख मिलता है।

पति की हौविज मे आप भी दिलचस्पी दिखाइये, उस विषय मे अपनी जानकारी वढाइये, आपके प्रोत्साहन से मनोरजनो द्वारा वह ख्याति और धन तक उपार्जन कर सकेगे। उनके मित्रो का मडल वढ जायगा और वे उस विषय के विशेषज्ञ माने जायँगे। जहाँ तक हो सके ऐसी हौविज की तरफ अधिक रुचि वढाने की चेष्टा करनी चाहिए जिसमे दोनो का दखल हो। इससे एक दूसरे की सगति और सहयोग का पूरा-पूरा लाभ उठा सकेगे। दोनो को अपनी पसन्द और रुचि मे सादृश्यता वनाये रखना वाछनीय है। क्योकि पत्नी पति से अनुभव और आयु मे कम होती है अतएव नये ढग, तरीके तथा विषय आदि सीखने के लिए पति को पत्नी मे उत्साह और रुचि पैदा करनी चाहिए। आलोचना करने और झुझलाने से पत्नी उस विषय को जी का एक जजाल समझेगी। पर आप की प्रशसा पाकर वह शीघ्र ही प्रगति कर लेगी।

गृह-प्रवन्ध और दिनचर्या के विषय मे एक दूसरे की राय से मिल-जुल कर काम करने से घर मे सुन्दर व्यवस्था वनी रहती है। घर का वजट

कैसे बनाया जाय, इस विषय में भी दोनों को एकमत होकर तय करना चाहिए। मित्रों का चुनाव भी, दोनों की व्यक्तिगत स्वाधीनता और मनोभावों की रक्षा करते हुए, परस्पर के सम्बन्धों की मर्यादा का ध्यान रखकर करना बुद्धि-मानी है। बच्चे दोनों के प्रतीक हैं अतएव उनके देख-भाल और शिक्षा के
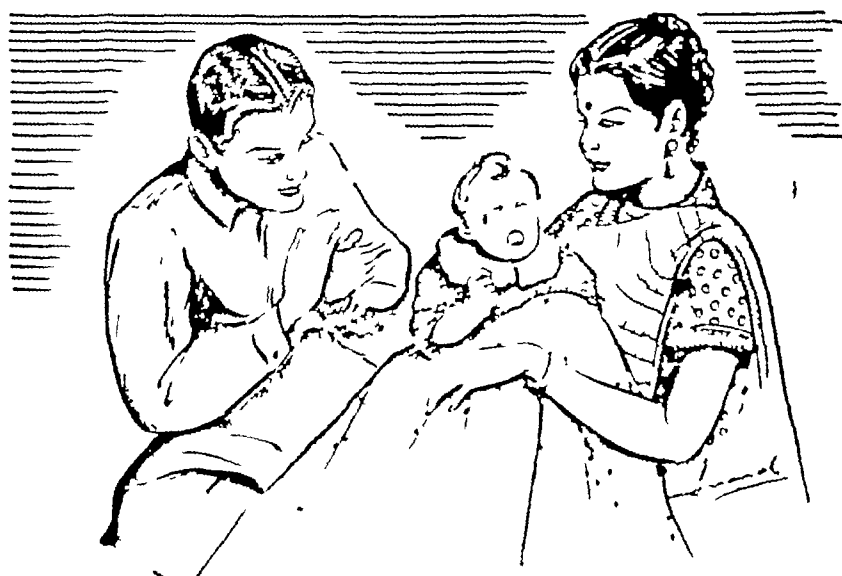
विषय में मतभेद रखना पति-पत्नी के लिए अप्रियकर है। इससे बच्चों के हित को हानि पहुंचेगी। जिससे बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास सुन्द-रता से हो सके, दोनों को एकमत हो कर ही निर्णय करना चाहिए।

मे भी बुद्धि है। विशेष करके उनकी व्यावहार कुशलता को मानकर चलने से, कभी-कभी बहुत से आर्थिक सङ्कट टल जाते है। गृहस्थ मे सुख-दु ख की सङ्गिनी पत्नी की उपेक्षा करके आप उससे सहयोग की आशा नही कर सकते। अगर उसमे भलाई-बुराई को परखने की बुद्धि कम है, आप उसके गुरु और पथ प्रदर्शक बने, पर अपने सम्बन्धियो से उसका अपमान न कराये। कुछ अपराध या भूल होने पर उसे घर से निकल जाने की धमकी या पत्नी को
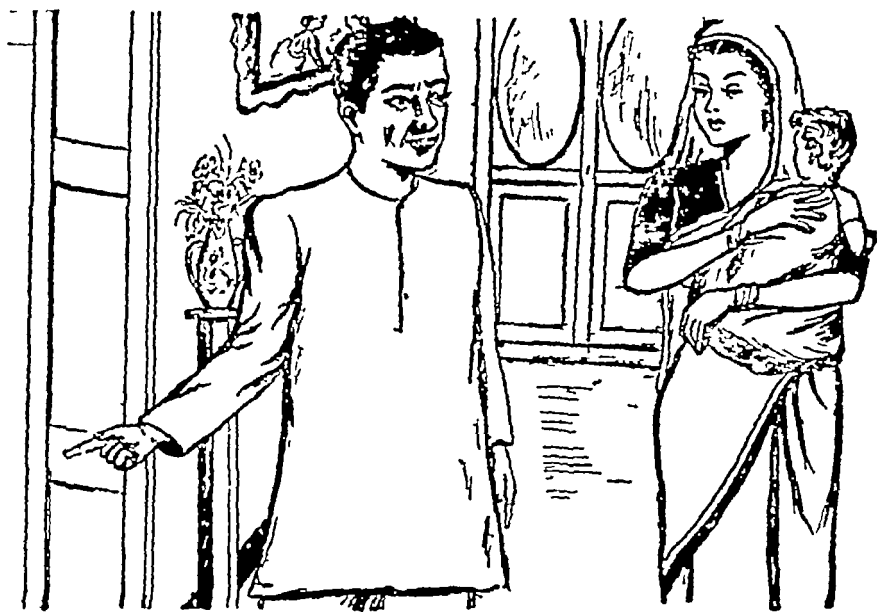
पीहर पहुँचा देने और आजन्म त्याग देने की धमकी देने वाले पुरुष कायर होते है। बुराई से बचने के लिये कई पुरुष आप चुप रहकर स्त्री को लाछनो और आलोचनाओ का शिकार बनने देते है। स्त्री लाचार होकर उस स्थिति का मुकाबला तो करती है, परन्तु इस कायरता से पुरुष उसकी आँखो से गिर जाता है। पति स्त्री का रक्षक और अभिभावक है। प्रत्येक स्थिति मे रक्षा करना उसका कर्त्तव्य है। अगर आप पत्नी की कोई भूल देखते है, उसे गलती सुधारने के लिए बाध्य कर सकते है, पर आपके सम्बन्धियो का उसे बुरा-भला कहना या अपमान करना आपको रोकना होगा। उनका दावा आप पर है। अगर उनकी ओर कर्त्तव्य की उपेक्षा हुई है तब भी आप ही जिम्मेदार है। अपनी पत्नी की सुरक्षा की भावना को कभी भी नष्ट न होने दे।

नारी मे नारीत्व के विकास से पहले बचपन मे ही मातृत्व का विकास हो जाता है। वह अपने गुड्डे-गुडियो के ससार को उसी प्रकार सँभालने की चेष्टा करती है, जैसे अपनी माता को गृहस्थी सँभालते देखती है। कुछ बड़े होकर अपने छोटे बहिन-भाइयो की देखभाल मे अपनी माँ का हाथ बटाती है, अतएव छुटपन से ही उसे घर की देखभाल की बहुत कुछ ट्रेनिङ्ग मिल जाती है। घर के प्रबन्ध के विषय मे गृहिणी की प्रधानता होनी उचित है। पत्नी पति से घरबार, सन्तान, समाज मे स्थान तथा रक्षा पाती है अतएव उसके प्रति अपनी कृतज्ञता और सम्मान प्रगट का सर्वोत्तम ढग यह है कि घर का वातावरण पति की इच्छा के अनुकूल रखा जाय, उसके आराम और सुविधा का ध्यान उसे सबसे पहले बना रहे। मेरी स्त्री तथा बच्चे मेरे पर जान देते है यह विश्वास उसे अपनी स्त्री और बच्चो के लिए अधिक परिश्रम तथा उद्योग करने की प्रेरणा देगा। अधिकाश पुरुष जब उन पर गृहस्थी का बोझ आ पडता है, कर्त्तव्य और यथार्थता की ओर से अनभिज्ञ नही रहते है। अगर मन के अनुकूल गृहस्थी का वातावरण हो तो वे अपनी फुरसत का

समय स्त्री और बाल-बच्चो की सगति मे ही व्यतीत करना पसन्द करते है। सप्ताह मे एक बार गृहस्वामी को एक दिन का अवकाश मिलता है, उस दिन

की दिनचर्या ऐसी वनानी चाहिए कि उसे पूर्ण आराम मिल जाय। कम से कम दोपहर और शाम तो वह अपने ढग से अवश्य गुजार सके। घर के लिए यदि कुछ आवश्यक खरीद-फरोख्त करनी हो तो शनिवार को ही करली जाय। भीड-भाड, सिनेमा-तमाशे मे अगर उनका जाने को मन नही है तो आप उन्हे वाध्य न करे। कई पुरुप शाम को खुली जगह मे वायु सेवन, अथवा अखवार पढना, या रेडियो सुनना अधिक पसन्द करते है। स्त्री को अपने पति की सुविधा देखकर ही छुट्टी का प्रोग्राम वनाना चाहिए। ऋतु सुहावनी हो तो दोपहर को पिकनिक के लिए जाना भी छुट्टी व्यतीत करने का एक लाभदायक और मनोरजक ढग है। कुछ समय निकाल कर मित्रो और रिश्तेदारो के यहाँ भी कभी-कभी छुट्टी के रोज ही जाने की सुविधा होती है, पर इस विपय मे एक दिन पहले ही तय करना ठीक है।

सहनशील बनें—

रिश्तेदारो और मित्रो के विपय मे पति-पत्नी को परस्पर एक दूसरे के सामाजिक सम्वन्धो के प्रति उदारता रखनी चाहिए। अच्छा तो यह है कि एक दूसरे के रिश्तेदारो व मित्रो को निभाने की चेष्टा की जाय। अपनी सुविधानुसार यदा-कदा मुलाकात और उपहारो द्वारा सम्वन्ध को सजीव बनाये रखना बुद्धिमानी है। पुरुपो के प्रति एक आम शिकायत रहती है कि वे अपनी पत्नी के रिश्तेदारो की मजाक उडाते है, उनकी कटु आलोचना करते है। यह बात प्रत्येक स्त्री को नागवार लगती है। चाहे उसमे कुछ यथार्थता ही हो, पर अधे को भी अधा कहना असभ्यता समझी जाती है। अगर स्त्री से कभी कोई भूल-चूक हो जाय तो वच्चो और सम्वन्धियो के सामने डाँट-फटकार नही करनी चाहिए। इसी प्रकार स्त्री का भी सवके सामने झगडा खडा कर, रो-पीट कर सहानुभूति प्राप्त करने की चेष्टा करना-भूल है। आपस के विचारो की वैषम्यता एकान्त मे मिटानी ही समझदारी है। अगर एक को क्रोध आया हुआ है, दूसरा उस समय गम खा जाय। अप्रिय वात का जवाव कटोक्ति से देना भूल है। जहाँ तक हो सके मनोमालिन्य वढने नही देना चाहिए। बुराई से बुराई नही दव सकती। स्त्री-पुरुप के झगडो का वच्चो पर वडा वुरा प्रभाव पडता है। उनका मानसिक और शारीरिक विकास कुठित हो जाता है। पति-पत्नी का सम्वन्ध आजीवन का है, अतएव परस्पर निभाने की भावना और पारिवारिक कल्याण को प्रधानता

देन ही श्रेयस्कर है।

सुनहले सपनो को सजीव रखें—

प्रेम प्रदर्शन मे सामजस्य और सादृशता होनी परम आवश्यक है। इसके अभाव मे जीवन नीरस हो जाने की सभावना है। पुरुष इस विषय मे स्त्री की ओर से उपेक्षा की शिकायत करते है। पर पुरुषो का उतावलापन और स्त्रियो की भावुकता को समझने मे उनकी असमर्थता भी इस विषय मे एक हद तक जिम्मेदार है। स्त्रियाँ दिन भर घर के काम, बाल-बच्चो तथा पुरानी दिनचर्या से थक जाती है। पति को अपनी दिलजोई, सहानुभूति तथा प्रशसा से पत्नी मे रोमास की भावना जाग्रत करनी चाहिए। छुट्टी के रोज दिनचर्या मे नवीनता लाने के लिए पुरुष की ओर से भी प्रयत्न होने चाहिएँ। स्त्री की वेष-भूषा मे दिलचस्पी लेकर, उस दिन विशेष रूप से शृङ्गार और सजावट के लिए उसे प्रोत्साहन दे। आपकी दृष्टि मे प्रेम और प्रशसा का सदेश पाकर उसे विशेष आनन्द होगा। इस प्रकार प्रेम और रोमास की पृष्ठ-भूमि तैयार हो जायगी। स्त्री की सुप्त भावनाओ और चेष्टाओ को जाग्रत करने की कला प्रत्येक जिन्दादिल पुरुष को आनी चाहिए। एक दूसरे को अपने प्रेमालाप से रिझाने तथा गुण और रूप तथा प्रेम प्रदर्शन द्वारा मुग्ध करने की चेष्टा बनी रहनी चाहिए। इस विषय मे सासारिक अनुभव अधिक होने के कारण पुरुष को ही मार्ग प्रदर्शक होना पडता है। अनुराग, प्रेम और सुख से मुग्ध

होकर ही स्त्री इसमे प्रवीणता प्राप्त करती है। परस्पर एक दूसरे के अनुकूल अपने को बनाते हुये सहयोग प्राप्त करने मे एक सुन्दर सामजस्य और सादृशता अपने आप ही आ जाती है। अपने प्रेम को एक दूसरे के प्रति अनु राग, मुग्धता, प्रशसा, आदि द्वारा प्रगट करने मे सकोच नही करना चाहिए। एक सच्चे मित्र के सदृश एक दूसरे के दु:ख-सुख, लाभ-हानि आदि मे सम-वेदना और हर्ष प्रगट करना तथा तदनुसार प्रयत्न करना प्रत्येक पति-

पत्नी का कर्तव्य है। अपने विवाह दिवस, एक दूसरे के जन्म दिवस, तथा माननीय त्योहारो को विशेप उत्साह और प्रफुल्लता के साथ मनाये। परस्पर वातचीत मे हमारा घर, हमारे बच्चे, हमारे मित्र और सम्बन्धी, हमारा धन, इस प्रकार से उल्लेख करना चाहिए। इन विपयो मे 'मेरी' और 'तुम्हारी' सर्वनाम भिन्नता के द्योतक है।

नि:स्वार्थ व्यवहार—

कपडे-लत्ते, जूते, प्रसाधन की वस्तुएँ तथा जीवन की अन्य आवश्यक सामग्री अपने लिये स्वय खरीदकर लाने या उनकी फिक्र स्वय करने मे उतना आनन्द नही, जितना जीवन-सगी के द्वारा उन वस्तुओ को उपहार रूप मे पाने से होता है। जिस घर मे पति-पत्नी परस्पर एक दूसरे की आवश्यकताओ को अपनी आवश्यकताओ से अधिक प्रधानता देते है, वहाँ त्याग और अनुराग का सुन्दर आदर्श शान्ति वनाये रखता है। घर का कोप तो एक ही है, परन्तु प्रेम का तकाजा अपने से पहले प्रिय का ध्यान वनाये रखने का पाठ पढाता है। पत्नी सोचती है, उनकी जरूरते पहले है, मेरा क्या मै तो उनकी आँखो मे प्रशसा और कृतज्ञता देखकर ही निहाल हो जाऊँगी। पति सोचता है अपनी प्रिया को ये वस्त्र-आभूपण पहिने देख मेरा मन गद्‌गद् हो जायेगा उसकी रूप मधुरिमा का पान कर मेरी आँखे छक जायँगी। जहाँ इस प्रकार की हित कामना होती है वहाँ अभाव कभी रह ही नही पाते। अरमान कभी अधूरे ही नही रहते है। एक दूसरे के प्रति गिला रहता ही नही। उल्टा यह तकाजा रहता है, 'परेशानियाँ मेरी उनसे न कहना, सुनेगे तो वे भी परेशान होगे'।
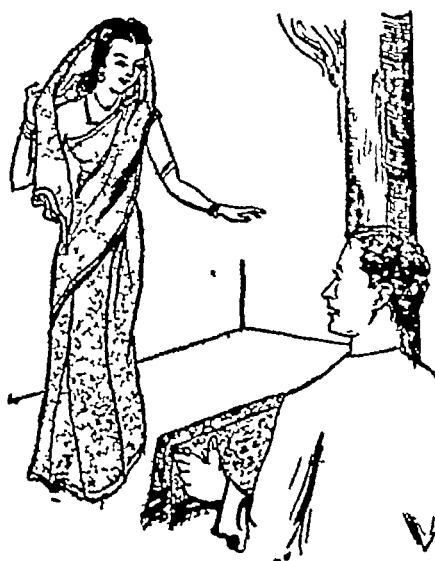
अविश्वास मत करें—

आप एक दूसरे पर विश्वास रखे। निर्मूल शका और अविश्वास प्रेम रूपी अमृत में विप घोल देते है। प्रेम कोई सम्पत्ति नही है जिस पर कानूनी

ढग से अधिकार जमाया जा सके, यह तो दो मन और आत्माओ का सौदा है। एक दूसरे के रूप-गुण और आत्मिक सौन्दर्य पर मुग्ध होकर दो हृदयो का अटूट सम्बन्ध हो जाता है। यह स्थाई प्रेम विश्वास और आदर्श की भित्ती पर ही खडा रहता है। समय के साथ यह और भी मधुर होकर परीक्षा की अग्नि मे तपकर निखर आता है।

पर ससार मे प्रलोभन चारो ओर है। अगर आप कभी भी अपने जोडे को वहकते पाये, अपने आकर्षण के प्रकाश मे उसे सचेत करे, स्नेह के वन्धनो को और जकड ले। साथी का प्रेम से दृढता के साथ हाथ पकड उसे सुरक्षा की ओर ले चले। लाछना की चावुक कभी भूलकर न लगावे। स्त्री पुरुष दोनो मे अगर एक भी समझदार और दूरदेशी है, तो जीवन पथ के ऐसे गढे तो आसानी से लाँघ लिये जाते है।

वैवाहिक जीवन की सफलता इसी मे है कि भिन्नता को भूलकर एक ध्येय, एक उद्देश्य और एक आदर्श लेकर गृहस्थी के कल्याण को सुरक्षित रखना। अपने आपको एक दूसरे मे आत्मसात् करना और दूसरे को पूर्ण रूप से अपना लेना, प्रेम को मधुर और अमर वनाता है। पति-पत्नी का यह सुन्दर सहयोग व विचारो की सादृशता न केवल गृहस्थी के लिये कल्याण-कारी है, वल्कि समाज-कल्याण के लिए भी वाछनीय है।

४. एक दूसरे के पूरक

बहुत से लोगो का ख्याल है कि शायद एक-सी रुचि और स्वभाव वाले लोगो की जोडी अच्छी निभती है। नही ऐसी बात नही है। मनुष्य अपने अभावो को दूसरो के भावो से पूरी करने की चेष्टा करता है। एक खामोश और गभीर प्रकृति वाले व्यक्ति की चचल और फुर्तीले साथी से अधिक पटती है।

मोहनी को लोगो से मिलना-जुलना, क्लब-पार्टियो मे जाना, उत्सवो मे भाग लेना, दावतो का आयोजन करना अच्छा लगता है, जब कि उसका पति भुवनेश जल्दी किसी से हेल-मेल नही बढाता, परन्तु वह है बिजनेस मे, जहाँ कि सामाजिक जीवन की सफलता बहुत महत्व रखती है। बस मोहनी-सी पत्नी पाकर वह बडा प्रसन्न है। अपनी पत्नी के कारण वह मित्रो मे काफी लोकप्रिय है।

कमला को पढने-लिखने का बहुत शौक है। वह एक प्रसिद्ध लेखिका है। अपना समय फिजूल की गप्प-शप्प मारने या शापिग जाने के लिए खराब करना उसे बहुत अखरता है। अगर उसे अवकाश मिलता है तो शाम को अपने पति के साथ नदी के किनारे या किसी बगीचे मे घूमना उसे ज्यादह अच्छा लगता है। पर उसके पति शापिंग करने के बडे शौकीन है। वे खुद ही घर के लिए सभी चीजे खरीद कर लाते है। महिने भर की रसद, रोज की भाजी, फल, गृहस्थी के काम आने वाली अन्य चीजे खरीदने का जिम्मा उन्होने ही लिया हुआ है। हिसाब भी वही रखते है। कमला को इससे बहुत खुशी है। उसका कहना है कि मेरा काफी समय बच जाता है। मुझे पैसा खर्चने की कोई रोक-टोक नही है—जिस चीज की इच्छा प्रगट करूँ मेरे पति उसी समय ला देते है। घर के लिए अच्छी से अच्छी चीज परखकर छाँटकर लाते है।

मै उनकी इस योग्यता की प्रशंसा करती हूँ और गृहस्थी के काम मे उनके इस सहयोग के लिए मै आभारी हूँ। जब वे मुझ से अधिक योग्यता से घर का खर्च चला सकते है तो मै क्यो न यह भार उन पर डालूं ? हाँ घर के अन्दर मेरी हकूमत है। घर का प्रबन्ध करना, बच्चो की देखभाल, पति के आराम सुख की व्यवस्था करनी, यह सब मेरे जिम्मे है। अपने अवकाश के समय बैठकर लेख लिखती हूँ, यही मेरी 'हौबी' और उपयोगी धन्धा है। इससे मुझे साल मे हजार दो हजार रु० की आमदनी हो जाती है। बैंक मे हम दोनो का सयुक्त हिसाब है। अपना पैसा किस प्रकार से इन्वेस्ट किया जाय, घर की व्यवस्था मे क्या परिवर्तन करने है, रिश्तेदारो और मित्रो को क्या लेना-देना है ? बच्चो की पढाई पर कितनी रकम खर्चनी ? ऐसे मामले मे हम दोनो मिलकर तय करते है। अपने पति के इन्श्योरेस, बैंक का हिसाब-किताब रखना, उनके पत्रो के उत्तर ड्राफ्ट करने का सब काम मेरे जिम्मे है। कमला का कहना है इस प्रकार हम दोनो एक दूसरे के स्वभाव की विशेषताओ का पूरा-पूरा लाभ उठाते है।

दोनो ध्यान रखे—

विषमताओ के कारण जीवन कटु नही होना चाहिए। अगर दम्पत्ति समझदारी से काम ले तो विभिन्नता और विषमता के बावजूद भी उनकी पटरी जम कर बैठ सकती है। ज्यादातर जोडे चरित्रहीनता के कारण फूटते है। जब पति या पत्नी अपने जोडे की किसी और से तुलना करे, किसी दूसरे के सग की कामना करने लगे तब हृदय मे अपने साथी के प्रति घृणा की भावना आ जाती है। उसकी न्यूनताएँ अक्षमणीय लगने लगती है, उसका व्यक्तित्व आकर्षणहीन प्रतीत होने लगता है, उसकी अदाएँ बनावटी लगने लगती है और उसकी विनम्रता और त्याग ढोग प्रतीत होने लगते है। प्रिय की ओर से मन फिर जाता है और प्रेम के बन्धन जजीरे महसूस होने लगती है। जीवन भार हो जाता है। एक अनुभवी का कहना है कि विवाहित जीवन की सफलता साथी के चुनाव पर नही, बल्कि विवाह के उपरान्त दोनो की मन स्थिति पर निर्भर है। चुनाव की अपेक्षा प्राकृत सम्बन्ध अधिक स्थायी होते है। यह पति-पत्नी के हाथ मे है कि विवाहित जीवन के आरम्भ के कुछ वर्षो मे जो माधुर्य होता है उसे आगे भी बनाये रखे। दाम्पत्य जीवन के माधुर्य को बनाये रखने के लिए निम्नलिखित बातो का अवश्य ध्यान रखे।

४. एक दूसरे के पूरक

बहुत से लोगो का ख्याल है कि शायद एक-सी रुचि और स्वभाव वाले लोगो की जोडी अच्छी निभती है। नही ऐसी बात नही है। मनुष्य

अपने अभावो को दूसरो के भावो से पूरी करने की चेष्टा करता है। एक खामोश और गभीर प्रकृति वाले व्यक्ति की चचल और फुर्तीले साथी से अधिक पटती है।

मोहनी को लोगो से मिलना-जुलना, क्लब-पार्टियो मे जाना, उत्सवो मे भाग लेना, दावतो का आयोजन करना अच्छा लगता है, जब कि उसका पति भुवनेश जल्दी किसी मे हेल-मेल नही बढाता, परन्तु वह है बिजनेस मे, जहाँ कि सामाजिक जीवन की सफलता बहुत महत्व रखती है। बस मोहनी-सी पत्नी पाकर वह बडा प्रसन्न है। अपनी पत्नी के कारण वह मित्रो मे काफी लोकप्रिय है।

कमला को पढने-लिखने का बहुत शौक है। वह एक प्रसिद्ध लेखिका है। अपना समय फिजूल की गप्प-शप्प मारने या शापिग जाने के लिए खराब करना उसे बहुत अखरता है। अगर उसे अवकाश मिलता है तो शाम को अपने पति के साथ नदी के किनारे या किसी बगीचे मे घूमना उसे ज्यादह अच्छा लगता है। पर उसके पति शापिग करने के बडे शौकीन है। वे खुद ही घर के लिए सभी चीजे खरीद कर लाते है। महिने भर की रसद, रोज की भाजी, फल, गृहस्थी के काम आने वाली अन्य चीजे खरीदने का जिम्मा उन्होने ही लिया हुआ है। हिसाब भी वही रखते है। कमला को इससे बहुत खुशी है। उसका कहना है कि मेरा काफी समय बच जाता है। मुझे पैसा खर्चने की कोई रोक-टोक नही है—जिस चीज की इच्छा प्रगट करूँ मेरे पति उसी समय ला देते है। घर के लिए अच्छी से अच्छी चीज परखकर छाँटकर लाते है।

मे उनकी इस योग्यता की प्रशसा करती हूँ और गृहस्थी के काम मे उनके इस सहयोग के लिए मै आभारी हूँ। जब वे मुझ से अधिक योग्यता से घर का खर्च चला सकते है तो मै क्यो न यह भार उन पर डालूँ ? हाँ घर के अन्दर मेरी हकूमत है। घर का प्रबन्ध करना, बच्चो की देखभाल, पति के आराम सुख की व्यवस्था करनी, यह सब मेरे जिम्मे है। अपने अवकाश के समय बैठकर लेख लिखती हूँ, यही मेरी 'हौबी' और उपयोगी धन्धा है। इससे मुझे साल मे हजार दो हजार रु० की आमदनी हो जाती है। बैंक मे हम दोनो का सयुक्त हिसाब है। अपना पैसा किस प्रकार से इन्वेस्ट किया जाय, घर की व्यवस्था मे क्या परिवर्तन करने है, रिश्तेदारो और मित्रो को क्या लेना-देना है ? बच्चो की पढाई पर कितनी रकम खर्चनी ? ऐसे मामले मे हम दोनो मिलकर तय करते है। अपने पति के इन्श्योरेंस, बैंक का हिसाब-किताब रखना, उनके पत्रो के उत्तर ड्राफ्ट करने का सब काम मेरे जिम्मे है। कमला का कहना है इस प्रकार हम दोनो एक दूसरे के स्वभाव की विशेषताओ का पूरा-पूरा लाभ उठाते है।

दोनो ध्यान रखें—

विषमताओ के कारण जीवन कटु नही होना चाहिए। अगर दम्पत्ति समझदारी से काम ले तो विभिन्नता और विषमता के बावजूद भी उनकी पटरी जम कर बैठ सकती है। ज्यादातर जोडे चरित्रहीनता के कारण फूटते है। जब पति या पत्नी अपने जोडे की किसी और से तुलना करे, किसी दूसरे के सग की कामना करने लगे तब हृदय मे अपने साथी के प्रति घृणा की भावना आ जाती है। उसकी न्यूनताएँ अक्षमणीय लगने लगती है, उसका व्यक्तित्व आकर्षणहीन प्रतीत होने लगता है, उसकी अदाएँ बनावटी लगने लगती है और उसकी विनम्रता और त्याग ढोंग प्रतीत होने लगते है। प्रिय की ओर से मन फिर जाता है और प्रेम के बन्धन जजीरे महसूस होने लगती है। जीवन भार हो जाता है। एक अनुभवी का कहना है कि विवाहित जीवन की सफलता साथी के चुनाव पर नही, बल्कि विवाह के उपरान्त दोनो की मन स्थिति पर निर्भर है। चुनाव की अपेक्षा प्राकृत सम्बन्ध अधिक स्थायी होते है। यह पति-पत्नी के हाथ मे है कि विवाहित जीवन के आरम्भ के कुछ वर्षो मे जो माधुर्य होता है उसे आगे भी बनाये रखे। दाम्पत्य जीवन के माधुर्य को बनाये रखने के लिए निम्नलिखित बातो का अवश्य ध्यान रखे।

एक दूसरे के दु ख-सुख का हमेशा ध्यान रखा जाय। घनिष्टता मे यह मतलब नही है कि पति-पत्नी परस्पर शिष्टाचार का ध्यान रखना छोड दे। एक दूसरे की सुविधा का हमेशा ख्याल रखना, बाहर से आने पर उठकर स्वागत करना, काम कर देने पर धन्यवाद देना, दु ख-तकलीफ मे सहानुभूति प्रकट करना आदि बाते शिष्टाचार की बुनियादी बाते है। आप एक दूसरे की बुराइयो, कमियो और भूलो की कटु आलोचना मत करे। आदते स्वभाव बन जाती है, उन्हे छोडना कठिन होता है। बचपन की समस्याएँ बडेपन मे प्रतिक्रिया दिखाती है। प्रत्येक मनुष्य गुणो और अवगुणो से युक्त होता है न तो कभी कोई पूर्ण रूप से अच्छा ही हो सकता है न बुरा ही, यह बात ध्यान मे रख कर अपने प्रिय की आलोचना मत करे। जीवन-साथी एक दूसरे के मित्र है। जिस प्रकार एक मित्र अपने प्रिय सखा की बुराई और न्यूनताओ के लिए स्वय को एक हद तक जिम्मेदार समझता है और प्यार
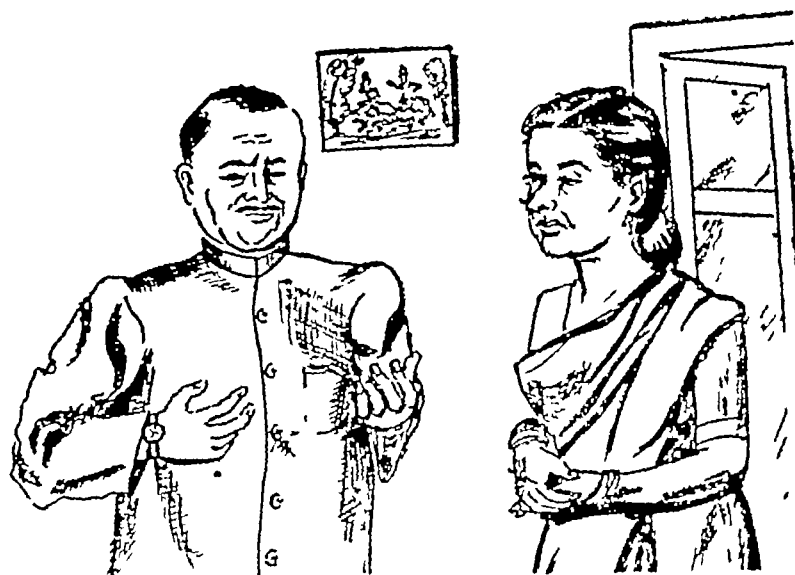
दुलार से, हँसी-मजाक मे सकेत मात्र करके उसे न्यूनता जता देता है, साथ ही कमियो को दूर करने की प्रेरणा भी देता है और अपराध को हँसकर क्षमा कर देता है, ठीक उसी तरह पति-पत्नी का व्यवहार एक दूसरे के प्रति होना चाहिए। अपने जीवन साथी की जो आदत पसद नही आती—उसे ऐसे मौके पर लाड और दुलार दिखाते हुए समझाये कि वह हँसकर कह दे 'अच्छा

लो, तुम्हे खुश करने के लिए हम ने कान पकडा जो आगे से फिर ऐसा कभी कर भी जायँ।' जब आप अपने साथी को अपनी बुराई को छोडने की चेष्टा करते देखे तो उसकी प्रशसा करनी कभी मत भूले। इससे उसे आत्मबल और प्रेरणा मिलेगी। अच्छे प्रयत्नो और सफलताओ पर दिल खोलकर प्रशसा करे। मनुष्य स्वभाव है कि वह अपनी सफलता पर प्रियजनो की दाद चाहता है। इसी लिए दु ख-सुख के समय अपने ही लोगो को याद करके मनुष्य कहता है—'हाय आज के दिन यदि मेरे पति यहाँ होते तो किसी की मजाल थी कि मुझे कोई कुछ कह जाता'। 'यदि आज के दिन तुम्हारी माँ यहाँ होती तो वह इस सफलता पर फूली न समाती'। बदले की भावना घातक है कई पति अपनी पत्नियो को मार-पीट कर, धमकाकर, डराकर अपने मन माफिक व्यवहार करने पर मजबूर करते है। पर उनके इस कठोरता का उल्टा ही प्रभाव पडता है। पत्नी पीठ-पीछे उन्हे बुरा भला कहती है। उनके दुर्व्यवहार का अडौस-पडौस से रोना रोती है। चिढ कर वह पति से झुँझला-झुँझला कर बोलती है, मुँह फुलाये बैठी रहती है, इस प्रकार दिलो मे रजिश, और बढती जाती है 'मै क्यो उनकी परवाह करूँ, कौन-सा मुझे राज पर बिठाया हुआ है' पत्नी सोचती है। पति सोचता है—'कैसी मूर्ख औरत से पाला पड गया है। कसूर करके ऐठती फिरती है। ठीक न कर दिया तो मेरा नाम नही।' बस इसी प्रकार की छोटी-छोटी घटनाएँ भयकर मनोमालिन्य का कारण बन जाती है। पति-पत्नी में शासित या शासक की भावना नही होनी चाहिए। पति यदि कमा कर लाता है तो पत्नी उस कमाई को सार्थक करती है। कोई भी सुघड गृहिणी मुफ्त मे बैठकर नही खाती। एक दूसरे के आत्मसम्मान को ठेस मत पहुंचाइए। यदि किसी दूसरे दम्पत्ति मे आपको कुछ खूबियाँ दिखती है तो अपने जीवन साथी को आकर धिक्कारे नही। यदि आपका विवाहित जीवन अपूर्ण है तो इस के लिए आप दोनो ही दोषी है।

आम तौर पर देखने मे आता है कि पति या पत्नी बच्चो की खूबियो और गुणो के लिए स्वय ही सारा श्रेय लेना चाहते है। पिता कहता है—'यह छोटा लडका मुझ पर पडा है। बडे ने अपनी माँ के खानदान का रग लिया है'। पत्नी भी यह कहने मे नही चूकती 'बडा बच्चा पढने मे तेज़ अपने मामा पर गया है, पर छोटा निरा भौंदू अपने चाचा पर पडा है।' 'मुन्नी झूठ

वोलती है। बिल्कुल तुम्हारी आदत ली है इसने।' 'मुन्ना अपनी आदतो मे बडा वेपरवाह और गदा है ठीक तुम पर पडा है'। इसी प्रकार परिवार मे यदि कोई अच्छी वात है तो उसका श्रेय भी कई लोग अपने जीवन साथी के सग नही वटाना चाहते। "मै यदि इस घर मे एक दिन न रहूँ तो घर मे भूत नाचे। जव मै पीहर चली गई थी सव के मुँह पर मक्खियाँ उडती थी। घर मे धूल की परते चढ गई थी।" "तुम से वच्चे नही सँभलते। मै एक महीने के लिए दौरे पर गया हुआ था लौटकर देखता हूँ वच्चो की पढाई चौपट हो गई। मै यदि देखभाल न करूँ तो वच्चे सव नालायक निकल जायं। तुम्हारी पढाई किस काम की, जवकि तुम से छोटे वच्चो की पढाई तक की देखभाल नही हो सकती ?"

झगडे को मिटाने की कोशिश करे—

आप एक दूसरे की न्यूनताओ की किसी दूसरे से चर्चा मत करे। पारिवारिक झगडो को मिल कर सुलझाये। या फिर कोई ऐसे हितैपी को मध्यस्थ वना ले जो दोनो की भलाई चाहने वाला हो। एक वात खतम हो जाय उसे लेकर दिन भर मत झीके। जो समय एक दूसरे की आलोचना करने और दोप लगाने मे खर्च किया जाता है उसी समय को यदि पति-पत्नी अपने आचरण को सुधारने मे लगाये तो पारिवारिक कलह वहुत हद तक मिट जाय। पति-पत्नी एक दूसरे को गलत और दोपी सावित करने के लिए कमर कस लेते है। नतीजा यह होता है कि गढे मुर्दे खोदे जाते है, भूली वाते याद दिलाई जाती है, तिल का ताल वनाकर दिखाया जाता है, गुणो और नेकियो को भुला कर वुराई और दुर्व्यवहार का कच्चा चिट्ठा खोला जाता है। इसका परिणाम वहुत वुरा होता है। पति-पत्नी के आपसी व्यवहार सकरे ओर कर्कश हो जाते है। जीवन मे कभी मुसकान ही नही आती। वे एक दूसरे पर कुढते और जलते रहते है। जरा-जरा सी वात पर तीखे वाक्य वाण दोनो ओर से चलते है।

ये सव वाते विवाहित जीवन के सौन्दर्य को नष्ट कर देती है। पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति उदासीन हो जाते है। मन मुटाव वढता रहता है। दोनो एक दूसरे के हित और आराम की उपेक्षा करने लगते है। पत्नी अपने भाग्य पर रोती है और पति अपने मनोरजन का कोई और आश्रय

ढूंढ लेता है। पत्नी को जब इसका पता चलता है वह गृहस्थी की पतवार को मँझधार मे ही छोड देती है। जब वेदना असह्य हो जाती है पत्नी आत्म-हत्या कर लेती है या पीहर चली जाती है। पति उसकी छाती पर सौत लाकर बिठा देता है।

पुरुष समझदारी बरतें——

आजकल के जमाने मे जब कि पति-पत्नी के समान अधिकार है और हिन्दू कोड बिल और तलाक का समर्थन हो रहा है, पुरुषो पर और भी अधिक जिम्मेदारी आगई है। अधिकाश स्त्रियाँ अशिक्षित और नासमझ होती हैं। ऐसी सूरत मे पुरुषो को पथ प्रदर्शन करना होगा। गृहस्थी की सुख शान्ति परिवार का सुनाम और बच्चो का कल्याण हो इसलिए पति-पत्नी का सहयोग अत्यन्त वाछनीय है। स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वतन्त्र नही है। सतीत्व और यौवन यही दो उनके सम्बल हैं। नारी स्वभाव से आदर्शवादी और परिवार से प्रेम करने वाली है। उसे अपना पति और सन्तान अधिकतम प्रिय हैं। अतएव इसके लिए यदि उसे कुछ त्याग भी करना पडे तो पीछे नहीं हटना चाहिए।

परिवार मे यदि मनमुटाव हो भी जाय तो एक जना गम खाजाय। रूठे को मना लेने मे भी बडा आनन्द है। मेरी एक सखी ने बताया कि 'जब उनकी माता जी किसी बात पर नाराज हो मुँह फुला लेती तो पिता जी उन्हे देखकर आते-जाते 'बोलो जय सीता राम की' कहते और बच्चो को देखकर मुसकरा भी देते। बच्चे भी इस ताक मे रहते कि देखे माँ कब हँसती है और जब माँ मुँह मोडकर हँसती तो छोटा मुन्नू कह उठता, पिता जी देखिये माता जी हँस पडी। और पिता जी ठठोली करते हुए कहते—"अजी जरा हँसी की चाँदनी इधर भी डालो। हमने क्या कसूर किया है ?" बस इस प्रकार क्रोध के बादल फौरन छट जाते थे। और पिता जी तो कभी गुस्सा होते ही नही थे। उन्हे जब कोई बात बुरी लगती तो गम्भीर हो जाया करते, बस इतने ही से घर भर के लोग चौकन्ने हो जाते। रात को एकान्त मे पिताजी अपना
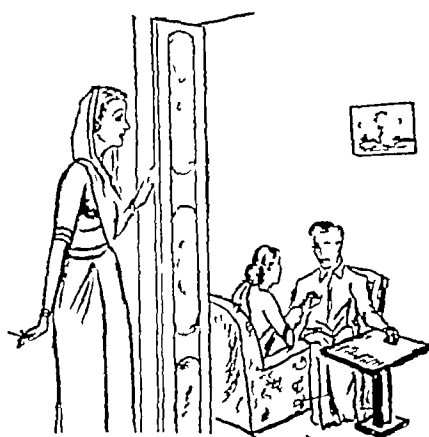
शुरू करदे ।

कई पुरुषो की ऐसी आदत होती है कि स्त्रियो की प्रत्येक सलाह की धज्जियाँ उडा देते है । चाहे अन्त मे उनकी सलाह के अनुसार काम करने से काम सही क्यो न हो जाये पर वे शुरू मे तो उनकी बात काटने मे ही शान समझते है । ऐसा वे ही पुरुष करते है जिनमे हीनता की भावना होती है । घर के दायरे में ही वह अपनी श्रेष्ठता कायम रखने की चेष्टा करते है । एक दूसरे के अहसान को कभी न भुलाये । बेकदरी से मित्रता को बहुत चोट लगती है । स्त्री होने के नाते कोई हेय या असहाय या पुरुष होने के नाते कोई कठोर या उच्छृङ्खल है ऐसी भावना एक दूसरे के प्रति कभी मत रखे । भगवान की सृष्टि मे कोई चीज सौन्दर्यहीन या बेकाम नही है । मानव सुलभ गुण तथा सदाचार दोनो के लिए वाछनीय है । पति-पत्नी एक दूसरे को बराबरी का दर्जा दे । जहाँ मित्रता निभती है वही प्रेम स्थायी रहता है । अपना-अपना दृष्टिकोण और रुचि प्रगट करने की हर एक को स्वतन्त्रता होनी चाहिए और परिवार के सुख-सुविधा मे दोनो का बराबर का हिस्सा है । त्याग और प्रेम पारिवारिक जीवन की आधार शिला है ।

मै इस कथन से बिलकुल सहमत हूँ कि बहुत से लोगो को परिवार-सचालन का सही ढग नही आता । और अपनी कमजोरी को वे अपनी सत्ता की आड मे छुपा लेने का असफल प्रयास करते रहते है । अपने परिवार के सदस्यो की राय को ठुकराकर वे अपनी सत्ता का प्रदर्शन करते है या फिर उनकी राय का उपहास करते है ।

यह भी सम्भव है कि अधिक उम्र हो जाने पर अब आप पहले की तरह अक्सर अपने जीवन-साथी की प्रशसा न करते हो, पर दैनिक जीवन मे खीझ और झुँझलाहट के जो मौके आते है, उन पर विजय पाना ही बुद्धिमानी है । आपके जीवन साथी ने आपके निकट सम्पर्क में आकर अपने चरित्र मे जो सुधार किया है, उसका मुक्त कण्ठ से और पूरी सचाई के साथ प्रशसा कीजिए । यदि आप ऐसा नही करते तो आपके दाम्पत्य प्रेम मे वह गहराई नही आ सकती, जो पति-पत्नी के एक-दूसरे को अच्छी तरह जान लेने पर आया करती है । याद रखिए : जीवन-साथी के चरित्र के विकास मे आपका भी कुछ हाथ है, यह जानने से बडा आत्म-सन्तोष मिला करता है । और जो लोग महसूस ही नही करते कि उनके जीवन-साथी का चरित्र उनके सम्पर्क

मे आने से वदल गया है, वे इस आत्मसन्तोष का अनुभव कैसे कर सकते है ?

व्यक्तिगत विकास का दूसरा कदम उठाइए अपने जीवन साथी की तारीफ कीजिए कि उसने अपनी अमुक-अमुक कमजोरियो पर विजय प्राप्त कर ली है।

अपने पति या पत्नी के प्रति आपके हृदय मे जितना प्रेम और सम्मान है, उसे प्रकट कीजिए। याद रखिए पति-पत्नी का प्रेम एक ऐसी चीज है, जिसे जव-तव तरोताजा करने की जरूरत पडती है।

यह कल्पना करना ही व्यर्थ है, कि स्वय तटस्थ अथवा उदासीन रह-कर भी आप दूसरो का प्रेम प्राप्त कर सकेगे। ऐसा नही हो सकता। स्वय भी प्रेम-प्रदर्शन कीजिए। यदि आप निरुत्साही है तो यह शिकायत न कीजिए कि आपके पति अथवा पत्नी मे अव दाम्पत्य प्रेम के सम्वन्ध मे पहले जैसा उत्साह नही रहा।

५. मिसरी में फाँस

कहावत है जहाँ चार वर्तन होते है, वे कभी न कभी तो खडक ही जाते है, यही वात पति-पत्नी के झगडो के विपय मे भी सही है। पर यदि

उनके प्रेम की आधार-शिला मजबूत है तव तो वडे-वडे झझावात भी उनके प्रेम की इमारत को ढाह नही सकते। आधार-शिला की मजबूती के लिए सदाचार और चारित्रिक वल होना जरूरी है। नही तो प्रेम-वधन टूटते देर नही लगती, और झगडे सुलझाने की अपेक्षा और अधिक उलझते ही जाते है। अहभाव, अभिमान और अदूरदेशी, समझौते की भावना और सहन-शक्ति को नष्ट कर देती है। जव तक पति-पत्नी मे मित्र-भावना नही है वह एक दूसरे के सम्मान का ख्याल नही रखेगे। सस्कार वश पुरुप स्त्री के सामने अपनी गलती या भूल के लिए माफी माँगने मे अपनी हेठी समझता है। इससे स्त्री को ही दवना पडता है। इसकी प्रतिक्रिया होती है। पारिवारिक जीवन मे असन्तोष वढता है।

जरा-सी वात—

झगडा हमेशा छोटी-छोटी वातो से ही शुरू होता है। पत्नी गृह-प्रवन्ध और वच्चो से परेशान है और पति को दफ्तर जाने की उतावली है। उस समय यदि पति की कोई चीज या कागज नही मिलता, तो वह झुझलाता है, डाँट-डपट भी करता है। पत्नी वच्चो को स्कूल के लिए तैयार करने मे, उन्हे नाशता खिलाने मे लगी होने के कारण चिढकर कह वैठती है—'अकेली जान मै क्या-क्या करूँ ? आप अपनी चीजे सभालकर रखा करे। जानते तो है वच्चो वाला घर है। जरूरी कागज दराज मे वन्द कर दिया करे'। पर पति इस सलाह को अपनी आजादी मे वाधक समझता है।

शान्ति के पति मोहन एक स्कूल मे हेडमास्टर है। उनकी पत्नी भी किसी स्कूल मे टीचर है। शान्ति स्वय वहुत व्यवस्था-प्रिय है। वह अपने कागज-पत्र यथास्थान रखती है। जरूरी कागज फाइल मे नत्थी कर देती है। पर उसके पति मोहन वहुत ही वेपरवाह है। वह अपनी कितावे इधर-उधर पटक देते है। लडको की कापियाँ अलमारी मे, खटिया पर, वक्सो के पीछे जहाँ-तहाँ डाल देते है। यहाँ तक कि परीक्षा के दिनो मे जाँची हुई कापियाँ या परीक्षा-फल भी आलमारी के कोने-कचरे मे रखकर भूल जाते है। और समय पर चीज न मिलने पर पत्नी पर विगडते है, मुन्ने के कान खीचे जाते है, पर वह अपनी गलती कभी नही मानते। वस उनका तो एक ही जवाव है—'मेरे कागज जहाँ पडे हो वही रहने दो। कोई छूता क्यो है' ? शान्ति ने कई वार समझाया 'घर छोटा है। मेज पर या अलमारी मे आपकी चीजो के अलावा और भी चीजे पडी रहती है। आप आलमारी खुली छोड जाते है। कई वार आपके चैक, इश्योरेंस की रसीद और रिमाइडर कूडे-कचरे मे चले जाते है, आप इन्हे रखकर खुद भूल जाते है। इससे समय पर काम नही हो पाता। जरूरी कागज खो जाने से नुकसान भी उठाना पडता है। ढूँढने की परेशानी अलग। सो आप ऐसे कागजो को फाईल मे लगाकर दराज मे क्यो नही रख देते ?'

मोहन को पत्नी के यह सुझाव वुरे लगते है, वस वह विगडकर कह उठता है — 'रखो जी अपनी सलाह अपने पास। तुमने वच्चो को सिर चढाया हुआ है। वह हर जगह गडवड करते रहते है। उनको कुछ नही कहती मुझे ही लेक्चर झाडने लगती हो'।

इस प्रकार पति-पत्नी मे प्राय तू-तू मैं-मैं हो जाती है। देखने मे आता है कि बच्चो की बात लेकर भी प्राय दम्पति मे झगडा हो जाता है। पुरुष लडके पर अधिक कडाई रखता है। उसे डाँट-डपट देगा, यदाकदा कान खीच

कर दो-चार थप्पड भी जड देगा। यदि उसकी रिपोर्ट खराब हुई या वह शाम को कुछ देर से घर आया तो इसी बात के पीछे पत्नी को भी दो-चार खरी-खोटी सुना दी जायेगी—'तुमसे बच्चे सँभलते नही। मुन्नू नालायक है, बेवकूफ है, मेहनत नही करता। अगर तुम समझदार होती तो बच्चे भी ठीक निकलते। सब तुम्हारा ही कसूर है।'

अब भला सोचिये, बच्चो के सामने इस प्रकार जलील होकर पत्नी के मन मे पति के प्रति कडवाहट क्यो न बढेगी? मगर सदियो से अपने को श्रेष्ठ समझने के जो सस्कार पुरुष मे बने हुए है, उनके कारण अधिकाश पुरुषो को अपनी पत्नी को बच्चो, परिजनो, नौकर-चाकर, अडौस-पडौस के सामने खरी-खोटी सुनाने मे बुरा नही लगता। इस मे वह स्वामित्व की भावना का अनुभव करते है। 'स्त्री काबू मे रखने की चीज है। सच्चे मर्द स्त्रियो पर हकूमत करते है। अगर स्त्री अपने मन के माफिक नही चले तो मर्दानगी पर धब्बा है' ऐसे विचार रखने वाले पुरुषो का अभाव अभी भी नही है।

कई व्यक्ति 'चित्त भी मेरी पट्ट भी मेरी' इस नीति को अपनाकर चलते है। वह किसी भी हालत मे समझौता करना नही चाहते। ऐसे व्यक्ति अपने प्रति कुछ उच्च भावना का दृष्टिकोण रखने के दोषी पाये गये है। यह सुपिरियोरिटी कॉम्प्लेक्स उन्हे अपनी जीवन-साथी तथा उसके परि-

जनो को निम्न कोटि का समझने की प्रेरणा देती है। ऐसे व्यक्तियो को अपने रूप, अमीरी या योग्यता का बडा घमड होता है और वह अपने जीवन-साथी पर इस सुपिरियोरिटी की धाक जब-तब जमाने से चूकते नही।

जो व्यक्ति बचपन मे बहुत दबाया जाता है या जिसे अपने कैरियर मे असफलता रही, जो यश, प्रशसा और प्रेम का भूखा रहा वह दूसरो की यहाँ तक कि किसी हद तक—विशेषकर जब कि तुलना हो—अपने बच्चो, या पत्नी की भी प्रशसा या सफलता देख-सुनकर प्रसन्न नही होता। ऐसे पुरुष स्वय को अच्छा प्रमाणित करने के लिए अपने, अधीन व्यक्तियो को काला चित्रित करने की कोशिश मे रहते है। दूसरो की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए वह अपने जीवन-साथी की काल्पनिक बेवफाई, निष्ठुरता, फिजूल-खर्ची तथा स्वार्थता की कहानी गढकर लोगो को सुनाने मे आनन्द प्राप्त करते है। उनके ऐसे व्यवहार का जब जीवन-साथी को पता चलता है तो उसका दिल खट्टा हो जाता है। इससे मनो मे दूरी और बढ जाती है।

पुरुषो मे एक यह भावना होती है कि मै घर का मालिक हूँ, बच्चो का बाप हूँ, रोटी कमाने वाला हूँ, इसलिए घर मे सब को मेरा हुक्म मानना, इज्जत करनी ही चाहिए। वे ये भूल जाते है कि इज्जत और प्रेम तभी मिलता है जबकि मनुष्य उसके लायक हो। यदि वह अपनी पत्नी को मारता-पीटता है, उसके सुख-आराम का ध्यान नही रखता, बच्चो के पालन-पोषण और शिक्षण मे दिलचस्पी नही लेता, परिवार के भविष्य को सुरक्षित बनाने की यथा-शक्ति चेष्टा नही करता तो बीवी और बच्चो के दिलो मे उसके लिए सम्मान नही बना रह सकता।

पति का कर्तव्य—

पति को पत्नी का रक्षक और पालक माना गया है। स्त्री की इज्जत और सुरक्षा की जिम्मेदारी पुरुष पर है। जब तक पुरुष इस जिम्मेदारी को निभाने के लायक न हो जाये उसे विवाह करने का कोई अधिकार नही। देखने मे आता है कि जब नवयुवक माँ-बाप के दबाव देने पर या किसी आर्थिक प्रलोभन के वश विवश होकर विवाह कर लेते है तो वैवाहिक जीवन मे कई अडचने, मनोमालिन्य और समस्याएँ पैदा हो जाती है। लाला गिरधारीलाल के बडे बेटे ने ३० वर्ष की उम्र तक विवाह नही किया। बाद मे वह जब इजीनियर बन गया तब उसने अपनी मनपसद की एक लड़की

से विवाह कर लिया। माता-पिता ने इसका यह अर्थ लगाया कि यदि लडके की छोटी उम्र मे ही शादी कर दी जाती तो वह हमारे पास रहती, हमारी अधीनता स्वीकार करती। उसका दान-दहेज हमारे कब्जे मे रहता। अब इस बड़े बेटे-बहू पर तो यह जोर चला नही, इस लिए लाला जी ने अपने छोटे लडके श्याम की शादी, जबकि वह २२ वर्ष का ही था और एम० ए० मे पढ रहा था, कर दी। लडके का ससुर एक नामी व्यापारी था। व्याह के बाद लडके का मन पढाई मे न लगा। दो बार उसने एम० ए० की परीक्षा दी और दोनो बार असफल रहा। हारकर उसने पढाई छोड दी, और बीवी से बोला—"अपने बाप से कहो कि या तो मुझे अपने बिजनिस मे साझीदार बना ले या रुपया देकर अलग दूकान खुलवा दें। "लडकी की दो बहने और चार भाई थे वह बोली—मेरे पिता ने जब मेरी शादी की थी तो उन्हे यह कहा गया था कि लडका एम० ए० मे पढता है और इसी साल वह आई० ए० एम० की परीक्षा मे बैठने वाला है। अब अपने बाप से तुम्हारी नौकरी की सिफारिश और व्यवसाय के लिए रुपये माँगने का मेरा तो मुँह है नही। वह कबीलदार हैं। अपने बच्चो के लिए खर्चेंगे कि जमाइयो के लिए ? उन पर आगे ही काफी जिम्मेदारियाँ हैं।"

अपनी पत्नी की यह साफ बात श्याम को बहुत बुरी लगी। उसने अपनी माँ से इसकी चर्चा की। अब तो सास, ससुर और पति तीनो राधा (बहू) के पीछे पड गये। उसे बात-बात पर परेशान करने लगे। 'तेरे बाप के घर से कुछ नही आया, तू निकम्मी है, तुझे कुछ समझ नही। हमारे भाग्य फूट गये ऐसी बहू घर मे आई कि बेटे की पढाई चौपट हो गई। किसी अफसर की बेटी से विवाह किया होता तो आज के दिन हमारे बेटे को कोई बडी नौकरी मिल गई होती।'

राधा समझदार थी वह बहिन के व्याह पर पीहर गई तो फिर वहाँ कालिज मे दाखिल हो गई। शादी से पहले वह थर्डीयर पास कर चुकी थी।

दो साल लगाकर उसने बी० ए० बी० टी० कर ली। इसी बीच
दफ्तर में श्याम को दिल्ली में एक छोटी-सी नौकरी मिल गई। सयो
भी दिल्ली में ही गर्ल्स स्कूल में हेड मिस्ट्रेस हो गई। राधा अपने
बहुत चतुर थी। दो साल के अन्दर ही उसका स्कूल हाई स्कूल बन
गया, पर श्याम का दफ्तर बन्द हो जाने और काम की रिपोर्ट अच्छी
से वह फिर बेरोजगार हो गया। पत्नी ने घर का खर्च सँभाला हुआ है
बात की तो श्याम प्रशसा करता नही था उल्टा आये दिन पत्नी से झ
करता, उसे जली कटी सुनाता, उसके बाप को कोसता, देर से आने
सन्देह करता, लाछन लगाता।

शुरूआत ठीक होनी चाहिए—

अब यह स्पष्ट है कि यदि श्याम ने शादी अपनी पढाई खतम करने और रोजगार लग जाने पर की होती, तो उसके पारिवारिक जीवन में ऐसी कड़ुवाहट कभी पैदा न होती। इस बात की बहुत जरूरत है कि वैवाहिक जीवन के प्रारम्भिक वर्ष बहुत सन्तोषजनक ढग से बीतने चाहिएँ। पति-पत्नी को एक दूसरे को समझने, सहयोग देने तथा प्रेमपूर्वक रहकर गृहस्थी चलाने का मौका मिलना चाहिए। देखने में आता है कि कई घरो में माता-पिता की गलती से वैवाहिक जीवन की शुरूआत ही गलत ढग से होती है। यह स्वाभाविक है कि विवाह के बाद नव-दम्पति एक दूसरे की सङ्गति में अधिक रहना चाहते है। उन्हे साथ-साथ घूमने-फिरने, खाने-पीने और उठने-बैठने की सुविधा अवश्य मिलनी चाहिए। इसमें जो बाधक होता है उससे उन्हे चिढ होना स्वाभाविक है। इसलिए विवाह के बाद कुछ दिन के लिए पति-पत्नी का 'हनीमून' के लिए कही दूसरी जगह चले जाने का पाश्चात्य देशो में जो रिवाज है वह बहुत ठीक है। सयुक्त परिवार में बहू को एक ओर तो यह सङ्कोच बना रहता है कि गुरुजनो से पहले उठूँ, बाद में सोऊँ। नव-दम्पति को प्रेमालाप करते काफी रात गुजर जाती है। परिजनो व मेहमानो से भरे घर में वह लोग रिलेक्स नही कर पाते। सबकी बातचीत व दिलचस्पी का विषय नव-दम्पति ही होते है, इससे उन पर शारीरिक और मानसिक तनाव काफी रहता है। इन्ही दिनो में बहू के व्यवहार, शील-सङ्कोच तथा स्वभाव के विषय में भी सास-ननद और अडौस-पडौस की औरतें अपने-अपने अनुभव के अनुसार रिमार्क पास करती रहती है। फिर बहू के कान में अपने पीहर वालो के

व्यवहार व लेन-देन के विषय मे जो आलोचना की जाती है उसकी रिपोर्ट भी इधर-उधर से पहुँच जाती है। 'उमीद बहुत थी मिला थोडा। नगद तो नाम मात्र को आया, सास व ननदो के कपडे भी बहुत मामूली है। जेवर बहुत हलके है। बरात की आवभगत भी कुछ नही हुई। हमे क्या मालूम था कि ऐसे सूमडे निकलेगे ये लोग, नही तो हमारे नन्हे को तो बडे-बडे घरो से रिश्ता आता था। नन्हा ही देखकर आया था बहू। जाने किस बात पर रीझ गया। आजकल तो पाउडर लगाकर, होठ-मुँह रङ्गकर सभी सुन्दर लगने लगती है।'

अब जब बहू और लडके के कानो मे ये बाते पहुँचती है तो उनका मन खट्टा हो जाता है। परिणाम स्वरूप या तो बेटा माँ से खिचा-खिचा रहने लगता है या बहू से। धीरे-धीरे दिलो मे गिठाने पक्की होती जाती है। और इन सब का कसूर बहू के सिर धर दिया जाता है। बहू के पीहर वालो को जली-कटी सुनाना, उसे ताने देने, और भाग्य को कोसना, या विवाह के बाद किसी घाटे, मृत्यु या दुर्भाग्य के लिए बहू को कुलच्छनी कहना महा मूटता है। पति का यह कर्त्तव्य है कि वह पत्नी की मान-मर्यादा की रक्षा करे। रोज-रोज के ताने और आलोचनाएँ जीवन को दूभर बना देती है। वैवाहिक जीवन के आरम्भ मे ऐसा कटु अनुभव किसी भी नवोढा को परिवार से विरक्त कर सकता है। फलस्वरूप वह ससुराल के नाम से चिढने लगती है, उन लोगो को अपने सुखद स्वप्न की अनुभूति मे बाधक समझ, उनके सपर्क से बचना चाहती है और यही से पारिवारिक कलह और फूट का आरम्भ होता है।

देखने में आता है कि कमाऊ और आत्मसम्मान का ध्यान रखनेवाले बेटो की बहूओ को सास व ननद मुँह पर कुछ कहने का साहस नही करतीं। ससुराल के धन के लोभी, निकम्मे, हीन भाव से युक्त, दूसरो के दबैल और कायर पुरुषो की स्त्रियो की ही जिन्दगी सम्मिलित परिवार मे दूभर हो जाती है। परिणाम स्वरूप पति-पत्नी की आपस मे भी नही बनती। विवाह के बाद ऐसी परिस्थितियो मे दाम्पत्य जीवन का आरम्भ ही गलत होता है और पति-पत्नी की बाद मे पटरी ठीक से नही बैठ पाती।

पत्नी का कर्त्तव्य—

झगड़े मिटाने मे पत्नी को हमेशा पहल करनी चाहिए। वह घर की

सम्राज्ञी है। वह एक रानी की तरह शान से रह सके इसके लिए परिवार मे व्यवस्था और शान्ति रहना जरूरी है। फलो से लदा हुआ वृक्ष ही झुकता है। जिस तरह राज्य-कर जमा कराते रहने से ही प्रजा को आराम और सुख मिल सकता है, उसी तरह पति-पद की मर्यादा सुरक्षित रखने पर ही वह सम्राज्ञी बनी रह सकती है। स्त्री का चरित्र अपनी विचित्रता और समानुकूल व्यवहार के लिए प्रसिद्ध है। उसमे पुरुष की अपेक्षा अधिक लोच और सहन-शक्ति है। मौका देखकर वह व्यवहार करने मे चतुर है। उसकी खूबियाँ ही उसे पुरुष के हृदय की सम्राज्ञी बनाने मे सफल होती है। जो काम डाँट-डपट और जोर-जबरदस्ती से हल नही हो सकता उसे नारी अपनी अदा और मीठे वचनो से करने मे कामयाब होती है। थोडी-सी सहनशक्ति रखने और तरह देने से अनेक झगडे टल जाते है। यदि आप अपने पति से सच्चा प्रेम करती है तो उसकी मुसीबतो और लाचारियो को समझे, उनको कम करने की कोशिश करे, इससे वह जीवन भर आपका कृतज्ञ रहेगा। एक लिपी-पुती गुडिया-सी तथा मनोरजन करने वाली पत्नी के प्रति पुरुष का आकर्षण क्षणिक होता है, परन्तु एक विनम्र, सेवा परायणा तथा सच्ची सहचरी पर पुरुष हमेशा भरोसा रखता है। उसे अपना दुख-सुख का साथी समझ मित्रवत् व्यवहार करता है।

घर के रोज-रोज के झगडो व अडचनो के लिए पति को परेशान न करके, यदि पत्नी अपने शील स्वभाव और अक्लमन्दी से उन्हे खुद ही सुलझा ले तो पति की चिन्ताएँ बहुत कुछ कम हो जाती है। अगर पत्नी के कारण पति को ताने उलाहने सुनने पडते है या उसकी नाम धराई होती है तो ऐसी स्थिति शोचनीय है। इससे पति मन ही मन पत्नी को भी दोषी समझेगा और चिढकर उसे बुरा-भला भी कह सकता है। नासमझ पत्नियाँ अपने असहयोग और असहनशीलता को दोष न देकर परिजनो, पति की कमजोरी और अपने भाग्य को कोसने लगती है। सास-ननद के झगडो के बीच मे पति को पचायत करने के लिए उकसाने से बहू के प्रति सास-ननद के मन मे अधिक मैल जम जाती है।

ऐसे मौके पर पति को चाहिए कि वह अपने बहन-भाइयो को मनोवैज्ञानिक ढग से पत्नी के अनुकूल बनाये रखे और उनमे तथा पत्नी में प्रेम और समझदारी बनी रहे इस प्रकार की चेष्टा करे। देवर और ननदो की

झूठी शिकायतो से भी सास का मन बहू से फट जाता है। समझदार पुरुष पारिवारिक झगडो व आलोचना की सीधी चोट पत्नी पर नही पडने देते। वह

तटस्थ रहकर, प्यार से माँ और पत्नी दोनो के हित की नीति अपनाते है। इससे सास-बहू का परस्पर लिहाज बना रहता है। आजकल पहले जैसी सम्मिलित पारिवारिक व्यवस्था तो रही नही। वयस्क होकर ही लडके-लडकियो की शादी होती है। और अधिकाश नवयुवक अपने पैरो पर खडे होकर ही विवाह करना चाहते है। इसलिए बहू का ससुराल मे थोडे दिन ही रहना होता है। उन थोडे दिनो मे पति-पत्नी को अपने परिजनो की शिकायत का कोई मौका नही देना चाहिए।

कभी ऐसा भी होता है कि कमाऊ बेटे से माँ-बाप कुछ आशा करते है और न मिलने पर बहू को दोष देते है। इस मामले में भी पति को अपने माता-पिता से स्पष्टीकरण करना चाहिए। पहले पत्नी को सब बाते समझाकर निर्णय कर ले और माँ-बाप को यदि आर्थिक मदद देनी जरूरी है तो खुशी-खुशी अपना कर्त्तव्य समझकर दे। यदि माँ-बाप को आर्थिक कष्ट नही है, केवल अपना हक समझ और उसे पूरा कराने या बेटे-बहू की परीक्षा लेने अथवा परेशान करने के लिए वह उनसे रुपया माँगते है तो रुपये देने न देने का समझौता लडके को अपने माता-पिता से खुद कर लेना चाहिए। यदि बहू के प्रति माता-पिता का प्रेम बना रहेगा, तभी बहू ससुराल में रहना

चाहेगी अन्यथा नहो। किसी के घर मे अनचाहे होकर रहने मे कोई सुख नही है। नासमझ दम्पति मेरे घर वाले और तेरे घर वाले, इस विषय को छेड कर अक्सर एक-दूसरे को बुरी-भली कह बैठते है। पति-पत्नी यदि दोनो अपने को एक इकाई समझे तो मेरे-तेरे का प्रश्न ही नही उठता।

नववधू ध्यान दे—

नववधू को एक बात नही भूलना चाहिए कि प्रत्येक घर का अपना तौर-तरीका, मर्यादा और आदर्श होता है। जो उसके पिता के घर मे होता रहा वही तौर तरीका ससुराल में भी होना जरूरी है, ऐसी आशा करनी भूल है। उसे चाहिए कि नये घर के तौर-तरीको, सभ्यता और विचारधारा को समझे-सीखे। वहाँ की मर्यादा और आदर्शो को निभाये। यदि वह कोई सुधारकरना चाहती है तो वह एक दम से होना असम्भव है। जल्दबाजी मे वह लोकप्रियता खो बैठेगी। धीरे-धीरे परिजनो की सद्भावना से वह घर के रहन-सहन मे सुधार कर सकती है। प्रत्येक व्यक्ति की रुचि और सुविधा को समझकर जो वहू काम करती है उससे सब खुश होते है। कई बहुएँ शुरू-शुरु मे लाड मे आकर पीहर के घर की बहुत-सी बेमतलब की बाते ससुराल वालो से कह बैठती है यहाँ तक कि पति से अपने बचपन की मूर्खता और अल्हडपन की घटनाओ का उल्लेख भी कर देती है। इसका परिणाम बाद मे बहुत बुरा होता है कच्ची जान-पहिचान मे सन्देह और ईर्ष्या का बीज पनपने लगता है। इस-लिए नववधुओं को अपने पति के साथ भी सोच-समझकर बात करनी चाहिए नादानी मे अनावश्यक बाते कह बैठना ठीक नही है। पति के स्वभाव का पता न होने से मामूली-सी नादानी मनोमालिन्य का कारण बन जाती है। जिसका परिणाम उम्र भर भोगना पडता है।

ललिता नाम की एक लडकी सोशल वेलफेयर सेन्टर मे काम करती थी। वहाँ गाँव की स्त्रियो के समझाने के लिए उसे परिवार नियोजन पर भी पर्याप्त जानकारी दी गई थी। उसने इस विषय ने साहित्य भी पढा था। विवाह के बाद प्रथम मिलन की रात्रि मे ही उसने अपने पति से परि-

वार-नियोजन पर वातचीत की। उसने इस वात का भी सकेत किया कि क्योकि अभी वह अपनी पढाई खतम करना चाहती है इस लिए वच्चे जल्द नही होने चाहिएँ। ललिता के पति ने ऐसी ही कुछ वातो से यह धारणा वना ली कि ललिता अच्छे चरित्र की नहीं है और सेक्स सम्वन्धी वहुत-सी वाते जो इसे मालूम है, उनकी जानकारी किसी सच्चरित्र कुमारी कन्या के लिए होनी सम्भव नही। वस वह अपनी पत्नी से खिचा-खिचा रहने लगा। इन्ही दिनो सोशल वोर्ड के एक सहयोगी ललिता से मिलने आये। वह उनसे नि सकोच वाते करती रही। ललिता ने सोशल वेलफेयर वर्क मे सक्रिय भाग न ले सकने मे खिन्नता भी प्रगट की। वस उसके पति का सन्देह पुष्ट होता गया कि ललिता का मन किसी और पर रीझा हुआ है। उन्होने दो-चार व्यग भी कसे। ललिता को उनकी यह अशिष्टता वहुत वुरी लगी। धीरे-धीरे तनाव वढता गया और पति ने पत्नी को दुश्चरित्रता का लाछन लगाकर त्याग दिया। एक सुशिक्षित और इग्लैड मे शिक्षा प्राप्त पुरुष से ललिता को ऐसी सकुचित वृति की आशा नही थी। आत्मसम्मान का ध्यान रखकर वह अपने पति के कटु व्यवहार और शकित स्वभाव के आगे झुक नही सकी। परिणाम यह हुआ कि पति-पत्नी की नही वनी। निर्दोष ललिता
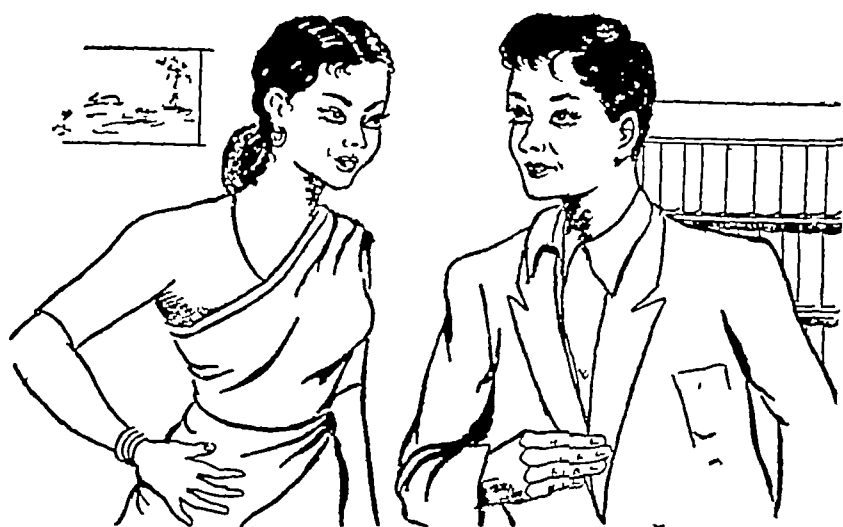
ने अपना जीवन परोपकार मे लगा दिया और उसके पति ने कुछ वर्ष वाद एक अशिक्षित लडकी से विवाह कर लिया। यह सत्य है कि सन्देह प्रेम मे

विष घोल देता है और बात की चोट भी जल्दी भरती नही है।

विवाह के एक-दो साल बाद तक प्रेम मे जो तीव्रता और रोमान्स की विविधता होती है, वह हमेशा नही बनी रहती। हाँ, समझदारी से उनकी आभा और खुमार बाद की जिन्दगी को भी आकर्षक बनाये रखने मे सफल हो सकता है। यदि पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति मित्रभाव बनाये रखने मे सफल होते है तो उनका दाम्पत्य-जीवन सुन्दर और सरल बना रहता है। मित्रता मे कुछ लिहाज और शिष्टाचार का पालन करना जरूरी है। पीठ पीछे निन्दा, स्वार्थ, कटुवचन, असहनशीलता आदि भूले मित्रता नष्ट कर देती है। पति-पत्नी अपने जीवन-साथी को उसकी खूबियो और कमियो के साथ स्वीकार करने और निभाने की नीति अपनाये। गृहिणी यदि एक सुधारक और निरीक्षक की तरह परिजनो के व्यवहार की आलोचना करती है तो घरेलू वातावरण मे तनाव आ जाता है। इसी प्रकार यदि पति अधिकारी और शासक की कठोरता अपनाता है तो परिजन परेशान हो जाते है। ये दोनो परिस्थितियाँ वातावरण के प्रतिकूल है। एक दूसरे के कसूर जताकर, आलोचना करके जो दम्पति जीतना चाहते है वे भारी भूल करते है। घर मे अलोचक की उपस्थिति सुखदायक नही होती।

टू आर्डर देकर जीवन-साथी तो कही नही घडा जाता। विषमताओ के बावजूद भी प्रेम बना रह सकना सम्भव है। आयु, शिक्षा आदि मे काफी अन्तर होते हुए भी यदि मानसिक प्रौढत्व का अभाव न हो तो पति-पत्नी का निर्वाह हो जाता है। आज अनेक परिवारो मे जो कलह मची रहती है, पति-पत्नी के झगडे खतम होने को ही नही आते, उसके मूल मे मानसिक प्रौढत्व का अभाव ही है। ऐसे अपरिपक्व बुद्धि वाले व्यक्ति आयु मे बडे होते हुए भी नादानो की तरह व्यवहार करने लगते है और अपनी जिम्मेदारियो की तरफ से आँखे मूंद लेते है।

झगडो का एक मुख्य कारण यह भी है कि विवाह से पहले युवक और युवतियाँ एक कल्पना-लोक मे रहते है। विवाह के बाद वह अपने जीवन-साथी से बहुत कुछ आशा करते है। पर लेने-देने का सन्तुलन न बना रहने के कारण बाद मे उन्हे बहुत निराशा होती है। दाम्पत्य जीवन की जिम्मेदारियाँ दोनो को मिलकर निभानी चाहिएँ—इस विषय मे सरिता से एक अनुभवी भाई के विचार मै विस्तारपूर्वक उद्धृत करती हूँ—

विवाह से आशाएँ--

विवाह के बाद प्रारम्भ होने वाले जीवन के विषय मे युवक और युवती--दोनो मे काफी भ्रामक धारणाएँ है। जब एक युवक से, जो कि कमाऊ है और अकेला है, लोग यह कहते है कि भाई, तुम अब विवाह करलो, कम

से कम कमरे मे झाड़ू तो लग जाया करेगी, ठीक समय पर रोटी तो मिल जाएगी, तो वे अनजाने मे ही उसके मन मे इस धारणा को परिपुष्ट कर देते है कि घर की सफाई का उत्तरदायित्व उस पर नही, बल्कि पत्नी पर है। और ठीक समय पर रोटी उसके मुख मे डालने का उत्तरदायित्व भी पत्नी पर है। उधर लडकी अपने वैवाहिक जीवन की कल्पनाएँ कर रही होती है। माता-पिता के नियन्त्रण मे तो वह 'शहनाई' और 'खिडकी' नही देख पाती, पर अपने पति के साथ तो वह मनचाहा फिल्म देखने को स्वतन्त्र होगी और विवाह होते ही उसे पति की जेब उधेडने का और लिपस्टिक, रूज

तथा पाउडर लगाने का लाइसेंस भी मिल जायगा।

इस बात की कोई गारटी नही है कि विवाहित जीवन मे आपकी वे आशाएँ पूर्ण हो जाएँगी, जो आप अपने जीवन-साथी के विषय मे विवाह से पूर्व किया करते थे। जब आप कोई व्यापार या अन्य कोई साझे का कार्य करने लगते है, तो प्रथम ही उसकी कठिनाइयो और विफलताओ के विषय मे सोच लेते है। इसी प्रकार विवाह के पश्चात् होने वाली कठिनाइयो का ध्यान पहले ही करना आवश्यक है। पुष्प-शय्या पर चढने से पूर्व उसमे यत्र-तत्र छिपे काँटो को देख लेना ही बुद्धिमत्ता है।

विवाहित जीवन मे दम्पति के आपसी मनमुटाव के मुख्य कारण है आर्थिक कठिनाइयाँ, शारीरिक कमियाँ तथा मानसिक उलझने। इनके अतिरिक्त परिस्थति के अनुसार अन्य कारण भी हो सकते है।

आजकल जबकि चारो ओर से महँगाई की मार पड रही है और वस्तुओ का अभाव परेशान किए हुए है, एक औसत दर्जे के गृहस्थ के मन पर बहुत बोझ और खिचाव पड रहा है। उसके मन की विनोदप्रियता, सहज बुद्धि तथा प्रसन्नता धीरे-धीरे उसका साथ छोडती जा रही है। वह अपने मानसिक सन्तुलन को खो बैठा है, वह परेशान है, उसकी समझ मे नही आ रहा है कि वह अपनी, अपने बच्चो की, अपनी पत्नी की स्थिति को कैसे बनाए रखे। वह यह चाहते हुए भी कि उसकी पत्नी तथा बच्चे हर समय स्वस्थ तथा प्रसन्नता से चहकते रहे, उनके लिए कुछ नही कर पाता। यदि ऐसी अवस्था मे उसमे उत्साह की मात्रा और प्रेम की गरमी कुछ कम होगई है, तो यह कोई आश्चर्य की बात नही।

मान लीजिए कि घर मे सायकाल को कुछ मेहमान आने वाले है। पति महोदय साइकिल पर बोरी और थैला बाँधकर राशन की दुकान पर पहुँचे, पर पता चला कि दुकान पर राशन समाप्त है, कल मिलेगा। अब यदि पत्नी उस पर झुंझलाने लगे तो यह व्यर्थ ही नही, अपितु मूर्खतापूर्ण भी है। इस से सिवाय इसके कि आपस मे मनोमालिन्य बढे और कुछ नही होगा, कम से कम आने वाले मेहमानो के लिए तो कोई प्रबन्ध नही हो सकेगा।

पत्नी को पति की इस अवस्था पर सहानुभूतिपूर्ण विचार करना चाहिए और इसे समझना चाहिए। पति के हृदय मे दहकती आर्थिक तथा अभाव-जन्य चिता की आग को पत्नी अपनी प्रेम-भरी मुसकराहट की एक बौछार

से ही शात कर सकती है। उसे पति के सामने केवल वही आवश्यकताएँ रखनी चाहिएँ, जिनके विना कार्य न चल सके।

शारीरिक कारणो के विपय मे सोचते हुए यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह कारण वहुत महत्त्वपूर्ण है और इसका गृहस्थ-जीवन पर व्यापक प्रभाव पडता है प्राय देखने मे आता है कि विवाह वधन मे पडने वाले लडके तथा लडकी की आयु, कद, सुन्दरता, मोटापन, पतलापन आदि का ध्यान रखा जाता है, फिर भी अनेक सम्बन्ध देखने मे आते है जो अनमेल होते है। हो सकता है कि पुराने व्यक्ति इन वातो की ओर ध्यान न देते हो और एक 'कनक छुरी-सी कामिनी' का विवाह किसी मोटे, लव-तडग और धनी व्यक्ति से करके यह समझते हो कि वे दोनो अपनी गृहस्थ-जीवन की गाडी को सफलतापूर्वक ले-जाएँगे। परन्तु आजकल जव कि शिक्षा के विकास के कारण महिलाएँ अपनी शारीरिक तथा मानसिक विशेपताओ के प्रभाव और महत्त्व को समझने लगी है, ऐसे विवाह केवल मानसिक असतोष और मनमुटाव ही पैदा करते है, जिसके कारण गृहस्थ की गाडी विनाश के गर्त्त मे जा गिरती है।
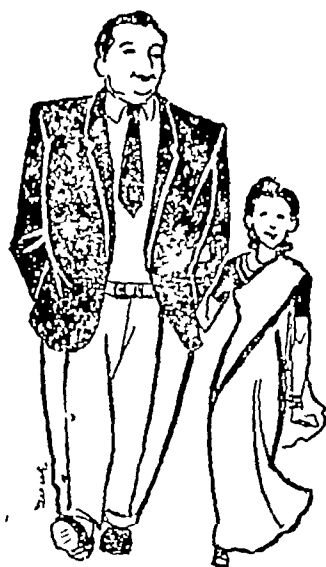
यह एक आम धारणा है कि प्रेम के मामले मे पुरुप ही पहल करता है स्त्री पुरुप के प्रेम को स्वीकार करने वाली होती है, क्योकि स्त्री प्रकृति से लज्जाशील होती है परन्तु कई वार यह देखने मे आता है कि कई युवक महिलाओ की उपस्थिति मे अपने को वहुत परेशान-सा अनुभव करते है और स्त्रियो से वात करने में वहुत लज्जा तथा सकोच का अनुभव करते है। प्रेम में पहल करना उनके लिए हिमालय पार करने के समान हो जाता है। यदि ऐसे किसी युवक का विवाह किसी ऐसी लडकी के साथ हो जाय, जो उसके समान ही हो और यह समझ कर कि प्रेम मे पहल करना तो पुरुप का ही कार्य है वह चुपचाप वैठी रहे, तो उनका गृहस्थ-जीवन सदा उस सुप्त ज्वालामुखी के मुख पर समझिए, जो किसी भी समय फट सकता है।

एक-दूसरे का अध्ययन—

ऐसी अवस्था मे स्त्री को पुरुष के स्वभाव का अध्ययन करना होगा और उसके अनुसार आचरण करना होगा। कई स्त्रियाँ यौन सम्बन्ध मे पति के साथ ऐसा व्यवहार करती है मानो वे कोई पाप कर रही हो। किसी सीमा तक उनकी लज्जा पति का कुतूहल तथा उत्सुकता बढाने वाली होती है, पर हर वार उसका प्रयोग पति के प्रेम को धीरे-धीरे शात करके पत्नी से विमुख कर देता है, तब पत्नियाँ यह शिकायत करती है कि पति उनसे प्रेम नही करते।

प्रेम का उत्तर प्रेम से ही मिलना चाहिए, लज्जा या सकोच से नही। इसमे कोई सन्देह नही कि भारतीय पत्नी के प्रेम मे केवल कामेच्छा ही प्रधान नही होती, पति के लिए सम्मान, श्रद्धा आदि अनेक भाव होते है, परन्तु साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पत्नी के हृदय मे पति के प्रति चाहे कितना ही प्रेम क्यो न हो, यदि वह पति के सामने अपने उस प्रेम का प्रदर्शन उचित रूप मे नही कर सकेगी, तो विवाहित जीवन मे आनन्द की आशा कम ही समझिए। इसका यह तात्पर्य नही कि प्रत्येक पत्नी अपने पति के सामने नाचती फिरे, परन्तु यह पति के स्वभाव पर निर्भर है कि पत्नी कैसा व्यवहार करे। यदि पति प्रेम व्यवहार मे आगे बढने वाला है, तो उसे पत्नी स्वय उसी तरह आगे बढकर, उसका साथ देकर ही उसे तृप्त कर सकती है।

आधुनिक युवक प्राय ऐसी पत्नी ही पसन्द करते है जो उनके प्रति अपने प्रेम का उचित प्रदर्शन कर सके। इसमें हावभाव, शृगार, नृत्य, सगीत आदि का सीमा के अन्दर उपयोग किया जा सकता है। हो सकता है कि कई स्त्रियाँ इसको केवल वेश्याओ के अधिकार ही मानती हो पर यह उनकी भूल है। इन कार्यो की गणना चौसठ कलाओ मे की जाती है और पुराने समय के कई उदाहरण ऐसे मिलते है, जिनसे विदित होता है कि सद्गृहिणी का इनमे निपुण होना आवश्यक समझा जाता था। यहाँ एक वात और भी स्पष्ट कर देना उचित है कि प्रेमालाप व प्रेमालिगन मे सव कुछ केवल पति के ऊपर छोड देना और स्वय निष्क्रिय पडे रहना भी अतृप्ति तथा असन्तोष उत्पन्न करता है, जिसके वहुत वुरे परिणाम होते है। इसीलिए नीतिकारो ने पत्नी को उपदेश देते हुए लिखा है 'शयनेषु रभा'—'सोते समय वेश्या की

तरह पति को रिझाए' और यह सर्वथा ठीक है।

यौन-तृप्ति—

कई पत्नियाँ स्वभाव से प्रेम तथा यौन सम्बन्ध मे उग्र होती है, पर उनके पति सदा ठढे रहते है। ऐसे दम्पति भी कभी सुखी नही रह सकते। हो सकता है कि दुकान या आफिस की अथवा किसी अन्य चिता के कारण वह पत्नी के प्रति अपने प्रेम का उचित प्रदर्शन न कर पाते हो, पर यह किसी भी दशा मे उचित नही। पति को अपनी इच्छाओ से पूर्व अपनी जीवन-सगिनी की इच्छाओ का ध्यान रखना चाहिए। उसे अपनी हजामत, बालो तथा वस्त्रो का ध्यान रखना चाहिए। अपना स्वास्थ्य तथा शारीरिक आकर्षण सदा बनाए रखना चाहिए और यथाशक्ति यह प्रयत्न करना चाहिए कि उसके रहन-सहन अथवा व्यवहार से पत्नी को अपनी सहेलियो के सामने लज्जित न होना पडे।

इन विषयो मे पत्नी की आकाक्षाओ की पूर्ण तृप्ति होते रहना आवश्यक है। जिन आकाक्षाओ को पति पूरा न कर सके उन्हे पत्नी के सामने स्पष्ट रूप से रख देना ही उचित है। पत्नी को भी परिस्थिति समझनी चाहिए स्त्री स्वभाव से ही लज्जाशील है। उसकी लज्जा कई बार उसकी यौन अतृप्ति को प्रकट नही होने देती। इसका परिणाम यह होता है कि हर रात्री को पत्नी का असतोष और क्षोभ बढता जाता है और हर दिन को जरा-जरा सी बात पर पति-पत्नी के झगडे भी बढते जाते है। फिर एक दिन आता है कि वह सुन्दर और शरमीली पत्नी, जिसे पति बडी उमग से घर मे लाए थे, पति से दूर रहने की माँग कर बैठती है और उसका नारा होता है—'मुझे मायके भेज दो।'

यदि कही पत्नी मे इतना साहस नही कि वह अपने हृदय का क्षोभ प्रकट कर सके, तो उसकी अतृप्त कामेच्छा हिस्टीरिया के दौरो का रूप ग्रहण कर लेती है फिर पति महाशय उसकी चिकित्सा के लिए वैद्यो तथा डाक्टरो की बेचो की शोभा बढाते है। अच्छा तो यह होगा कि पत्नी के स्थान पर वह स्वय अपनी चिकित्सा कराएँ, अपने मानसिक अथवा शारीरिक रोग की खोज करे, जिसके कारण वे अपनी पत्नी को अतृप्ति की आग मे तडपता हुआ छोडकर स्वय नाक से बाँसुरी बजाते हुए सुख की नीद सो जाते है। क्या ऐसे पति को पत्नी क्षमा करेगी ? चाहे वह कुछ भी न कहे, परन्तु उसके

नाजुक दिल मे जो विक्षुब्ध ज्वालामुखी जल रहा होता है, वह समय आने पर अपनी लपटो मे सारे गृहस्थ-जीवन को भस्म कर देता है।

मनुष्य का जीवन सघर्षमय है। विवाह भी उसी का एक अङ्ग है और विवाहित जीवन मे सघर्ष की सभावना इसलिए और भी वढ जाती है, क्योकि पति-पत्नी ज्यादातर साथ-साथ समय विताते है तथा एक-दूसरे की कमजोरियो और भूलो से परिचित हो जाते है। इस सघर्ष को गृहस्थ-जीवन से टालने का अथवा इसकी कडुआहट मिटाने का स्वाभाविक उपाय है प्रेम।

परन्तु क्या प्रेम चुवन, आलिगन आदि शारीरिक सम्वन्ध से उत्पन्न होने वाली भावनाओ का ही नाम है अथवा केवल एक-दूसरे के प्रति अपने उत्तरदायित्व को ही पूर्ण करने की भावना का नाम है ? वास्तव मे प्रेम एक-दूसरे को समझने मे है। एक-दूसरे की आवश्यकताओ को समझने मे है और एक दूसरे के लिए कष्ट सहने मे है। जहाँ आप एक-दूसरे की कमियो को समझ लेते है, वहाँ एक-दूसरे की खूवियो को भी समझना चाहिए और उन्हे वढाने के लिए प्रोत्साहन तथा सहायता देनी चाहिए।

यह कभी न समझिए कि पत्नी अथवा पति से कोई त्रुटि या भूल नही होगी। मनुष्य भूलो ही से वना है। मानव जो कुछ आज है वह भूलो और उनसे प्राप्त होने वाले अनुभवो का ही परिणाम है। भूले और कमियाँ स्वाभाविक है, चाहे वे इतनी छोटी हो कि पत्नी दाल मे नमक डालना भूल जाती है अथवा इतनी वडी हो कि पति महोदय दूसरी लडकियो को घूरने मे आँखो का सदुपयोग करते है। इन भूलो को यो ही नही छोडा जा सकता और वार-वार नही होने दिया जा सकता। इनको सुधारने का उपाय अवश्य ही होना चाहिए। परन्तु वह उपाय यह नही कि भूल पर भूल की जाए अर्थात एक-दूसरे पर लाछन लगाए जायं, एक दूसरे की निन्दा की जाय, तीन दिन तक वात न की जाय और चौथे दिन पति यह धमकी दें कि मै सन्यासी हो जाता हूँ और गृहलक्ष्मी अपनी सिसकती आवाज मे कहे कि मुझे मायके भेज दो।

इस झगडे को दूर करने के लिए पहले यह अच्छी तरह समझ लीजिए कि मनुष्य से भूल होना स्वाभाविक है। इसलिए भूलो को क्षमा करते हुए समझौते की भावना से उनका उपाय सोचना चाहिए। एक-दूसरे को अच्छी तरह समझने का प्रयत्न कीजिए। भूल किस परिस्थिति मे हुई इसे भी देखना न भूलिए। निज को भी टटोलिए, कि आपके अन्दर तो कोई कारण

नही जिससे दूसरे को भूल करने का अवसर मिलता हो। कोई भी उपाय आप क्यो न करे उसमे सदा समझौते की भावना का रहना अनिवार्य है। मनोवैज्ञानिक बताते है कि गृहस्थ-जीवन के झगडो को दूर करने का एक सफल उपाय यह भी है कि दम्पति अपने मन मे समझौते की भावना को सदा जीवित रखे। किसी भी झगडे के बाद यह सोचकर कि जब पहले दूसरा बातचीत आरम्भ करेगा तभी मैं बोलूँगा, मुँह फुला लेना और अकड जाना समस्या को और भी बिगाड देता है। झगडे के कारणो को समझते ही और झगडा समाप्त होते ही यथापूर्व एकदूसरे से बोलते रहना चाहिए। साथ ही पति अथवा पत्नी को इसे अपनी जीत नही समझनी चाहिए कि दूसर ने बोलना पहले आरम्भ किया है। झगडे के पश्चात् होन वाला यह झूठा अभिमान विवाहित जीवन के लिए भयानक विप है, इसमे सदा सावधान रहना चाहिए।

६. दुखड़ा मैं कासे कहूँ....?

स्त्री पुरुष का साथ—

जिन वहिनो ने पत्र द्वारा अपनी परेशानियाँ मुझे वतायी है उनसे मेरी पूर्ण सहानुभूति है। कई वहिनो की कहानी तो सचमुच मे वहुत ही दर्दनाक है। सामाजिक कुरीतियां पुरुषो की डिक्टेटरशिप की भावना तथा स्त्रियो की आर्थिक समस्याओ ने नारी समाज को काफी दवाया हुआ है। वे मूक वेदना मे तडप रही है। परिणाम स्वरूप अपनी माताओ और वहिनो को अत्याचार के नीचे इस प्रकार सिसकते देख उनके मन मे प्रतिक्रिया की भावना प्रवल हो उठी है। अव तक स्त्रियाँ सहनशील थी अतएव वह ढक्कन सदृश वैवाहिक जीवन की असफलताओ को ढाके हुए थी। उससे पुरुषो की न्यूनताएँ भी छिप गयी थी। मेरी यह सलाह है कि स्त्रियाँ वदले की भावना छोडकर पुरुषो को ऊपर उठाने की चेष्टा करे। विना समझे-वूझे पाश्चात्य सभ्यता की अन्धाधुन्ध नकल करना मूर्खता है। एक के लिए जो अमृत है, दूसरे के लिये वह विष हो सकता है। भारतीय दृष्टिकोण पाश्चात्य से भिन्न है। अपने देश में सनातन काल से चले आये कल्याणकारी आदर्शो को पुनर्जीवित करना हमारा कर्त्तव्य है। पुरुषो पर अगर आपका वश नही चलता, पर पुत्रो पर तो चलता है। पालने मे ही उन्हे आदर्शो की लोरी सुनाएँ। कन्याएं तो आप का ही प्रतिरूप है, वे तो आपका अनुकरण करेगी ही। वस नवयुग की सर्जनहार आप ही है। अगर प्रगतिशील ही वनना है, विद्रोह करना है, तो सद्मार्ग की ओर मुडकर करे। अकेला पुरुष समाज अपने को असहाय पायगा। लज्जित हो, अपनी भूल समझकर वह आप से समझौता करेगा। आप भी सम्मानजनक समझौता करने मे पीछे न रहे। मेल मे ही गृहस्थी का कल्याण निहित है। फूट विनाशकारी है। स्त्री-पुरुष का सहयोग असम्भव को

भी सम्भव बना देगा। पुरुषो की यह भावना कि हम पुरुष है, स्त्रियाँ हम पर आर्थिक रूप से निर्भर है, अतएव हम जो भी करे, सब ठीक है, गृहस्थी के लिए कल्याणकारी नही, पचवटी की इन पक्तियो मे आज नारी समाज पुकार उठा है—

"नरकृत शास्त्रो के सब बन्धन,
है नारी ही को लेकर
अपने लिए सभी सुविधाएँ
पहिले ही कर बैठा नर!"

भक्षक नही रक्षक—

सच है पुरुषो ने अपनी सुविधा के लिए नियम आदर्श तथा धर्म और कर्त्तव्य के पाठ केवल स्त्रियो तक ही सीमित रखे, और अपने लिए पूर्ण स्वतन्त्रता की सुविधा बना छोडी। परिवर्तनशील ससार मे चाक घूमने पर जब नारियाँ प्रकाश की ओर पहुँची, उन्होने प्रतिक्रियारूप मे विद्रोह करना आरम्भ किया। पुरुष तो थे ही गैरजिम्मेदार अब अगर स्त्रियाँ भी ऐसी बन जायँगी तो बच्चो का क्या होगा? विनाश तो उनका है। समाज मे अराजकता फैल जायगी। इसलिए पुरुष समाज से मेरा यह अनुरोध है कि अगर उनके अत्याचार के नीचे कोमलागिनियाँ कुचली जा रही है, तो अपने पुरुषार्थ की आन रखने के लिये, अपने इन नन्हे बच्चो के भविष्य के कल्याण को सोचकर वे अपनी भूल को सुधारे। स्त्रियो के प्रति सहानुभूति रखे। समाज ने उन्हे स्त्री का स्वामी, अभिभावक तथा रक्षक बनाया है। रक्षक होकर भक्षक बनना भला उन्हे कैसे फबेगा? अगर घर मे स्त्री की दशा एक दासी के सदृश है, तो मनुष्य स्वामी के स्थान से च्युत होकर एक दास मात्र ही रह जाता है। अगर उसने स्त्री को घर की रानी बनाया है, वह स्वय ऊँचा उठता है और घर का राजा और पूजनीय बन जाता है।

उदार दृष्टिकोण—

कई स्त्रियाँ अपने पति के क्रोधातुर स्वभाव तथा मारपीट की आदत से बडी परेशान है। ऐसे पुरुष अपनी स्त्री को सहचरी या जीवन-सगिनी न समझकर एक सपतिमात्र समझते है। अपने पौरुष, धन और पदवी के गर्व मे उन्होने साध्वी, कर्त्तव्यपरायण पत्नी की कदर ही नही समझी। बडे घमण्ड और शान के साथ वे उसके मुँह पर कह देते है कि तेरे से भी लाख दर्जे

अधिक सुन्दर और सुघड स्त्रियाँ मुझे मिल सकती है। अपने भाग्य को सराह कि मेरा-सा पति तुझे मिल गया।

ठीक है, स्त्री, खैर, नही मनायेगी तो जायेगी कहाँ? अगर जरा-सा भी साहस कर उसने पुरुष के अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई तो चारो ओर से लाछना की आवाजे आयेगी—"हाँ, हाँ, ठीक है, क्यो सहोगी, हिंदू कोड-बिल आ रहा है, दे देना तलाक, देखे कौन तुम्हारा गाहक मिलता है"। ऐसी वाते सुनना ही एक महिला के लिए क्या कम अपमानजनक है? सह-योग प्राप्ति की चेष्टा क्या स्त्री के लिए इतना गुरुतर अपराध है? क्या उसके कोमल तन्तुओ को काट कर पुरुष स्वय तलाक के मुख में उसे नही धकेल रहा है? अतएव अनेक स्त्रियाँ जीवन के प्रति उदास हो, निरादर, अपमान, दुख, असुविधाएँ तथा अभाव को अपनी किस्मत का फैसला समझ, चुपचाप पुरुषो की धाधली सहने मे ही अपनी कुशल समझती है।

मनमुटाव ठीक नहीं—

ऐसे अविवेकी पुरुषो से मै यह पूछती हूँ कि क्या उन्होने कभी यह समझने का कष्ट किया है कि इस जीत मे ही उनकी हार है। वैवाहिक जीवन का सच्चा सुख, सहचरी का विश्वास, एकता, आत्मसात होने की सुखद अनुभूति और अपनत्व आदि, वे सभी खो चुके है। उसकी कठोरता और निर्दयता ने स्त्री के मुख पर ताला भले लगा दिया हो, पर जिस स्त्री के दुख-सुख की अनुभूति पुरुष ने नही की उसके हृदय तक उसकी पहुँच कैसे हो सकती है। ऐसे पुरुष की स्त्री तो घर की देखभाल करने वाली एक मैनेजर तथा उसकी विषय-वासना शान्त करने की एक साधन मात्र है। नौकर-चाकरो के सामने डाँट-डपट, वच्चो के सामने मारपीट सम्वन्धियो के सामने लाछित करके पुरुष न केवल अपनी स्त्री ही की, परन्तु साथ मे अपनी ही मान-मर्यादा को मिट्टी मे मिलाता है। अव इस स्थिति मे नौकर-चाकर गृहिणी का कहना भला क्यो कहना मानेगे, वच्चो पर उसका क्या डर रहेगा, सगे सम्व-न्धियो मे उसकी क्या इज्जत रहेगी? कुछ उसके मुँह पर वुरा भला कहेगे, कुछ पीठ पीछे गृह-स्वामी की मजाक वनायेगे। गृहस्वामी तटपता-गरजता घर आता है। जितनी देर वह घर रहता है, सव अपनी जान की खैर मनाते है। विल्ली के आने पर चूहो की जो गति होती है, वैसे ही सव इधर-उधर छिपते फिरते है। सव ढोग और स्वाग रचकर वास्तविकता को छिपाने की

चेष्टा करते है। घर की पोलपट्टी, नौकरो की वेईमानी, वच्चो की उच्छृङ्खलता, पत्नी की लाचारी और पडोसियो की मजाक का भला उसे क्या पता। वह समझता है कि घर मे मेरा खूब रौब है। मेरे घर की व्यवस्था एक मशीन के सदृश चल रही है। पर उसके घर से जाते ही, नौकर काम अधूरा छोड छूमन्तर हो जाते है, वच्चे माँ की उपेक्षा कर ऊधम मचाने को निकल जाते है और गृह-स्वामिनी वेचारी अन्दर ही अन्दर घुटती हुई, दुख के आँसू पीकर रह जाती है। वह अपनी लाचारी, अपनी असफलता, और एकाकीपन पर घुलती रहती है। वडी लडकी माँ की मूक वेदना समझकर, मन-ही-मन प्रण करती है कि मै भावुकता और त्याग का पाठ नही पढूंगी। आज मेरी माँ इसी के कारण प्रतिक्रया करने से लाचार है। मै दृढता के साथ पुरुष समाज से इस अत्याचार का वदला लूंगी। गृहस्वामी की इस मूर्खता से नई पीढी की गृहस्थी मे अशान्ति की नीव पड गई। इस प्रकार बुराई और अविवेक की कडी शृखलावद्ध होती चली जाती है।

कई पुरुष ऐसे है जिन मे हीनता की भावना होती है, वे अपने को नवयुवक मडली मे मुकावले मे न्यून पाते है, अगर ऐसो का विवाह किसी रूप-गुण-सपन्न, जिन्दादिल स्त्रियो से हो जाय, तो उनका गृहस्थ-जीवन अनायास ही दु खी हो जाता है। गृहस्थ जीवन को सुखी वनाने के लिए यह परम आवश्यक है कि समान रूप, गुण और कुल मे विवाह हो, अन्यथा पुरुष को हीनता की भावना कचोटती रहती है। अपनी पत्नी को अपने से रूप-गुण में श्रेष्ठ पाकर, तथा वच्चो मे उन गुणो के होने का श्रेय पत्नी को जाता देख, पति का मन असतोप से भर जाता है। वह जहाँ तक होता है, उन गुणो की अवहेलना करने लगता है। यह पुरुषो की असहनशीलता है। उन्हे चाहिए कि अन्य वातो मे स्त्री से श्रेष्ठतर होने की चेष्टा करे। साथ-ही-साथ गुणग्राहिकता दिखाते हुए अपनी पत्नी के गुणो की सराहना भी करे। इससे दो लाभ होगे। स्त्री उत्साहपूर्वक उन गुणो को चरितार्थ करेगी, साथ ही साथ पुरुषो के अन्य गुणो की श्रेष्ठता को सहज ही स्वीकार कर लेगी।

पति गुरु-पद की मर्यादा को निभाये—

हमारे देश की वालिकाएँ, विवाह के वाद ही 'सेक्स' से परिचित होती है। इस मामले मे पति ही उनके गुरु और मार्ग-प्रदर्शक होते है। कई पुरुष आरम्भ मे अपने वल और मर्दानगी का रौव नवविवाहिता पत्नी पर

डालने के लिए विपय भोग मे अति कर जाते है। पाँच-सात वर्प वाद आयु की अधिकता के कारण जब पुरुष धीमा पड जाता है तो पत्नी की भूख वढ गई होती है। वस फिर स्त्री अपने पति को हारा-थका, दुर्वलता और वुढापे से ग्रस्त समझ कर उनसे निराश-सी हो जाती है। पत्नी मे 'सेक्स' के विपय में ऐसी भ्रांति उत्पन्न करने की भूल पुरुप प्राय करते है। यदि वह प्रारम्भ मे ही अपनी पत्नी को दाम्पत्य सुख का सुन्दर दिग्दर्शन कराये, शारीरिक मिलन के साथ ही आत्मिक मिलन का भी महत्व जता दे तो आगे जाकर इतनी गलतफहमी नही हो सकती।

पति-पत्नी की आयु मे ५-७ वर्ष का अन्तर तो वाछनीय ही माना गया है। आयु, शिक्षा, साधारण ज्ञान और सामाजिक जीवन के अनुभव मे पति का पत्नी से श्रेष्ठ होना स्वाभाविक ही है। अतएव इस श्रेष्ठता और गृहस्वामी होने के नाते उस पर गुरुपद का भार सहज ही आ पडता है। उस पद की मर्यादा निभाने की योग्यता के अभाव मे पति की स्थिति वडी हास्यास्पद प्रतीत होने लगती है। ससुराल मे सहानुभूति, मार्ग-प्रदर्शन तथा रक्षा के लिए पत्नी अपने पति का ही सहारा ढूंढती है। अव यदि पति आत्मनिर्भर नही है, आर्थिक रूप मे पराधीन है तो वह स्वामी, रक्षक, और गुरुपद के कर्त्तव्य को ठीक से निभा नही पायेगा। यदि नारी स्वय को अस-हाय, पीडित तथा लाचार समझकर दु ख सहती है तो इससे उसका आत्म-गौरव नष्ट हो जाता है। स्वेच्छा से प्रेमवश किया हुआ त्याग या सेवा से जो आनन्द व गौरव प्राप्त होता है वह किसी की दासता करने के लिए वाध्य होने से नही हो सकता।

किशोर दम्पति—

हमारे देश मे अधिकाश नवयुवक और नवयुवतियो के लिए विवाह करना केवल इसलिए अनिवार्य समझा जाता है कि वह जवान हो गये है। पर सोचने की वात है कि कोई जवान हो गया है केवल इसीलिए वह विवाह के पवित्र वन्धन को निभा सकेगा या उसकी जिम्मेदारियाँ सभाल सकेगा ऐसी वात तो नही है। भारत मे ९० प्रतिशत स्त्रियो के जीवननिर्वाह का साधन है विवाह और अधिकाश पुरुपो के पारिवारिक जिम्मेदारियो को सभालने वाली, चूल्हा-चक्की, घर-वार की व्यवस्था करने वाली सखी, सहचरी और प्रेमिका की स्थान पूर्ति करने वाली है पत्नी। इसीलिए हमारे समाज

मे विवाह करना आवश्यक हो जाता है। धर्म प्रधान सस्कृति होने के कारण, गृहस्थाश्रम मे त्याग, सेवा, परोपकार, सदाचार का पालन करना अनिवार्य है, नही तो दाम्पत्य जीवन सफल नही हो सकता।

जब दम्पति मे से एक की भी नीयत खराव हो, वह असहनीय हो उठता है। उसे अपने जीवन-साथी की तिल-सी वुराई भी ताड जैसी वडी दीखने लगती है। परिणाम-स्वरूप जो गलतियाँ और भूले पहले हसकर टाल दी जाती थी, जिनमे अल्हडपन का सौदर्य झलकता था, अब वे ही खटकने लगती है। पास वैठना अच्छा नही लगता, साथी की कोई सीख और सलाह नही सुहाती। इन सब के मूल मे वेवफाई की नीयत छिपी रहती है। नजरे वदल जाती है और अपने अनाचार को छिपाने के लिए अपराधी व्यक्ति अपने वेकसूर जीवन साथी मे हजार वुराइयाँ ढूंढने और उसके सिर सब विफलताओ का कसूर थोपने की ताक मे रहता है।
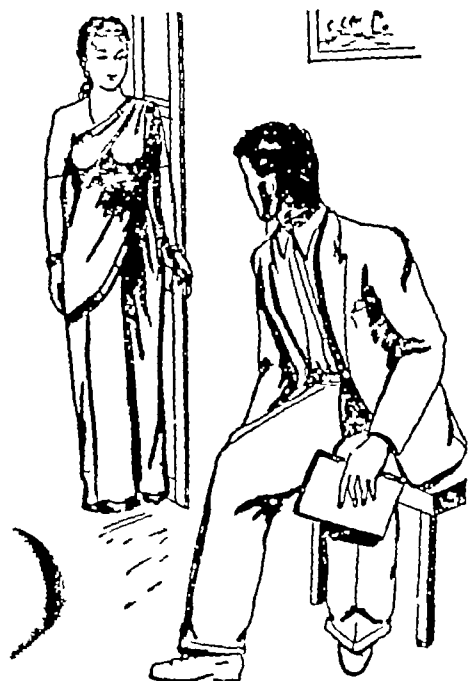
एक अनुभवी व सफल पति का कहना है कि —

पत्नी अर्द्धांगिनी है। वह पुरुप की सवसे वडी दोस्त है उससे वडा मित्र पुरुप का और कोई नही हो सकता। अगर पति-पत्नी में मित्रता का भाव ही अधिकाश समय रहे, तो यह असम्भव है कि पति-पत्नी मे प्रेम न वना रहे। जो पति पशु की भाँति वर्ताव करने के लिए ही विवाह करते है, और जिन के मन मे कोई उच्च भावना नही रहती, उनकी अपनी पत्नी के साथ गहरी मित्रता कैसे हो सकती है? जव आपके मन मे अपवित्रता भरी है तो द्वेप, घृणा और ईर्ष्या आपको कैसे न सताये और आप कैसे न पत्नी के अन्दर पचासो दुर्गुणो की कल्पना कर वैठे? ऐसी स्थिति मे भला प्रेम कहाँ से आपके मन में आ सकता है?

हमने अपने तजुर्बे से देख लिया है कि अगर पत्नी अच्छी हुई, तो पति काफी ऐबी रहने पर भी वह पति को कभी भी गलत रास्ते पर जाने नही देगी और सव दोप दवा देगी। अच्छी पत्नी का सग पाकर काम-धधे की ओर मन दौडेगा। पत्नी की सहानुभूति और उत्साह से मन को वहुत वल मिलेगा। वुद्धिमान पत्नी से जितनी आत्मनिर्भरता मिलती है, उतनी और किसी से भी नही। पति की आँखे खुल जाती है और पति को पत्नी से श्रद्धा हो जाती है और श्रद्धापूर्ण प्रेम वहुत फल देता है।

जव आप और आपकी पत्नी इतने अच्छे प्रेमी हो, तो आपके वच्चे, इसमे रत्ती भर भी शक नही है, हीरे के टुकडे होगे।

आत्मनियन्त्रण--

सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करने वाले पति-पत्नी मे आत्मनियन्त्रण रखने और मानव स्वभाव को समझने और मनोवैज्ञानिक रूप से समस्याएँ सुलझाने की योग्यता होनी जरूरी है। यदि पति-पत्नी वात-वात पर आपस मे उलझ पडते है, अपनी गलत वात को भी सही प्रमाणित करने के लिए वहस करने लगते है, एक दूसरे का अपमान करते है, एक दूसरे पर वे वात के झल्लाते है तो उनकी प्रीत की लडी दिन मे वार-वार टूट कर कच्ची पड जाती है। यह माना कि जीवन भर का साथ होने के कारण कभी-कभी खटपट हो जानी स्वाभाविक है पर अक्लमन्दी इसी में है कि जव एक तेजी मे हो तो दूसरा अपने पर नियन्त्रण रखे। दोनो मे जो समझदार होगा वह अपनी समझदारी का प्रमाण आत्मनियन्त्रण द्वारा प्रगट करेगा। और इसे एक नैतिक जिम्मेदारी समझेगा कि शान्ति मे झगडे को मिटा दिया जाये।

पुरुषो के लिए यह लज्जा की वात है कि यदि वह 'मै गृहस्वामी और रोटी कमाने वाला हूँ' इस भावनावश धाधली मचाते है। यदि घर मे उनकी कोई वात काटता है या परिजन उनके आराम और सुविधा के विपय मे हरदम चौकस नही रहते तो वह सव पर विगडने लगते है। ऐसे व्यक्तियो के चरित्र की व्याख्या एक अनुभवी ने इस प्रकार की है।

वे चाहते है कि घर के सभी लोग उन्हे इज्जत की नजर से देखे, उनसे प्रेम करे और उनकी प्रशसा वीच-वीच मे करते रहे। और यदि परिवार के लोग उनकी तरफ इतना ध्यान न दे सके, जितना कि वे चाहते है, तो वग वे घर भर को सुना-सुना कर यह कहने लगते है कि उन सव लोगो को उनका

एहसान मानना चाहिए, क्योकि वे ही तो सबका पालन-पोषण करते है। वे इस तरह अपनी मेहरवानियो का ढोल पीटने लगते है, जैसे परिवार की सुख-शान्ति और व्यवस्था मे घर के दूसरे किसी व्यक्ति का कोई हाथ ही न हो। पत्नी यदि यदा-कदा अपने मनोरंजन के लिए अपनी सहेलियो के साथ कही चली गयी, तो ऐसे महोदय पत्नी के लौटते ही फौरन उस पर अपनी कटु बातो के तीर बरसाने लगते है। वे कहने लगते है—"घर की तुम्हे क्या फिक्र है ! तुम तो जाओ अपनी सहेलियो के साथ मौज करो। मै ही फालतू हूँ जो दिन भर आफिस की चक्की मे पिसूँ और लौटकर घर सँभालूँ ! " आदि-आदि। पर आप अगर इनसे यह पूछ ले कि—"भाई साहब, रोज तो ऐसा होता नही कि आपकी पत्नी आपको छोड कर कही निकल जाती हो। एकाध दिन और वह भी आपकी सम्मति लेकर, अगर वह बेचारी कही निकल ही गयी, तो इतने खफा होने की क्या जरूरत है ?" तो यो समझ लीजिए कि गजब हो जायगा। ये भाई साहब अपनी बीबी को छोड कर (भले ही वे आपकी बहन लगती हो, या भाभी साहिबा, क्योकि और किसी पति-पत्नी के झगडे मे बोलने तो आप जाएँगे नही।) आप पर ही बरस पडेगे।

पुरुष की सहानुभूति—

अपने गुणो की दूसरो पर छाप डालना तथा प्रशसा सुनना सब को प्रिय है। फिर स्त्रियाँ इसका अपवाद कैसे हो सकती है। अपनी स्त्री की रुचि का आप अध्ययन करे तथा उसमे सहयोग दे। सगीत, नृत्य, चित्रकारी, सामाजिक सेवा आदि कामो मे अगर उसकी रुचि है, आप भी उस विषय मे प्रोत्साहन दे। प्राय देखने मे आता है कि विवाह से पहले माता-पिता कन्या को कलाओ मे निपुण बनाने की चेष्टा करते है, पर विवाह के बाद उन कलाओ के प्रति पति की उदासीनता, उनके सीखे-सिखाये हुनर को भी भुला देती है। पुरुषो को यह समझना चाहिए कि विवाह के पश्चात् स्त्री को अपनी हर प्रकार की उन्नति करने का सुझाव और सुविधाएँ देना उनका कर्तव्य है। पत्नी की रुचि, आदर्श तथा विचारो का मान रखते हुए अपने आदर्शो के साथ सहज सामजस्य स्थापित करने की चेष्टा करनी ही बुद्धिमानी है। इसी प्रकार के आदान-प्रदान मे ही तो आनन्द है। उसकी जिन्दादिली की दाद दे, प्रेम-प्रदर्शन मे निपुणता प्राप्त करे, आपकी दिलजोई,

विनोदप्रियता, वाकपटुता तथा भावुकता उसकी खिल-खिल खेला को सजीव रखेगी। रोमांस और प्रेम मे पुरुष को ही प्रधानता रखनी चाहिए। पत्नी

को रिझाये रखना, उसकी मादकता को बनाये रखना, पति को गौरव प्रदान करता है। घर-गृहस्थी के झंझटो, बाल-बच्चो के तकाजो और नखरो तथा सम्बन्धियो की उलझनो मे स्त्री परेशान हो जाती है। ऐसे अवसर पर अगर बुद्धिमान पति दो शब्द सहानुभूति के कह कर जरा सहयोग का रुख दिखा दे तो स्त्री की हिम्मत बढ जाती है। वह अपने को अकेला महसूस नही करती। पति का आगे बढकर यह कहना—'अधीर मत हो, सब ठीक हो जायगा, लाओ मैं हाथ बटा लेता हूँ, मैं प्रबन्ध कर दूंगा या मैं निपट लूंगा', पत्नी के लिए डूबती को सहारे के सदृश प्रतीत होता है। ऐसे ही पुरुष-सिंहो की पत्नियाँ उनकी अनुपस्थित मे ऐसा कहते सुनी गई है—"आज वे यहाँ होते तो मिनटो मे काम बन जाता। वे तो बिगडी बात बना लेते है। उनके यहाँ न

होने से मुझ पर यह मुसीबत आज टूट पडी है, उनके सामने किस का साहस था, आँखे दिखाने का ? उनके जैसा लाड-चाव किसने करना है, अजी, उनकी बराबरी कौन कर सकता है ? वे तो बस वे ही है।"

दृढ़ कर्त्तव्य-पति—

आप पत्नी को घर मे अधिकार और सुविधा दे, परन्तु अपने रिश्तेदारो के प्रति स्वय ही जिम्मेदार बने रहे। उनके व्यवहार, आवश्यकताओ तथा शिकायतो की आप तटस्थ होकर जाँच करे। कान के कच्चे न बने। अधिकाश पुरुपो मे यह दोप होता है। विशेप कर जिस घर मे विमाता का राज्य हो, पुरुप की यह दुर्वलता स्त्री के पहले बच्चो के लिए बहुत अहितकर प्रमाणित होती है। समाज इसी विपय मे विमाता को दोपी ठहराता है, जब कि गृहस्वामी ही वास्तविक दोपी होता है। भला उसने अपने चरित्र मे यह दुर्वलता क्यो आने ही दी कि पहली पत्नी के बच्चे जो कि एक समय पिता के गले का हार बने हुए थे, अब युवती पत्नी के कान भरने पर बुरे लगने लगे। गृहस्वामी का अपने पहले बच्चो के हको की ओर से उदासीन हो जाना, तथा अपनी सुविधा के लिए तटस्थ रहना, उसके चरित्र की दुर्वलता है। मनुष्य स्वभाव को परखने और दृढ निश्चय मे वह विफल रहता। अगर वह अपने कर्त्तव्य को दृढता के साथ करे तो उसकी न्यायवृत्ति और सत्यप्रियता मे प्रभावित होकर विमाता भी बुराई से मुँह मोड लेगी।

सतति-कामना—

स्त्रियो की एक-दो विशेप दुर्वलताओ की चर्चा करना उपयुक्त होगा। वे अपनी सन्तान का हित सबसे पहले सोचती है। केकैयी, शकुन्तला, गाधारी आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण है। अगर पति सन्तान के हित की उपेक्षा कर, धन का अपव्यय चाहे, अपने पर ही करे, तो भी पत्नी उसका प्रतिरोध करेगी। अतएव पुरुप ने पहले सन्तान की आवश्यकताओ का ध्यान रखकर तब आमदनी की बचत को मनोरजन, धर्मार्थ तथा सम्बन्धियो पर खर्च करना चाहिए।

स्त्री को सन्तान की बडी कामना होती है। बिना माँ बने उसे अपना नारी-जीवन विफल-सा प्रतीत होता है। इस विपय मे असफलता मिलने पर प्राय स्त्री ही दोपी मानी जाती है। परन्तु मैडिकल रिपोर्ट से यह प्रमाणित हो चुका है कि ५० प्रतिशत पुरुप भी इस असफलता के जिम्मेदार है।

अगर ऐसी वात हो तो पुरुष को चाहिए कि स्ववश के किसी योग्य वच्चे को गोद ले ले। अगर गोद लेने की सुविधा न हो तो किसी गरीव सम्वन्धी के वच्चे का पालन-पोपण का भार अपने ऊपर लेले। इससे वच्चे का लाड-चाव

करने का अरमान पूरा हो जायगा। सन्तान के अभाव का दोप स्त्री के मत्थे मढना, उसे ताने-उलाहने देना, दूसरे विवाह की सोचना आदि वाते मूर्खता पूर्ण हैं। अन्य वच्चो मे दिलचस्पी लेने से तथा पति-पत्नी मे परस्पर एक समझदारी होने से, सन्तान का अभाव नही खटकता। किसी अभाव के कारण गृहस्थ-सुख को विगाडना मूर्खता है।

परस्पर आकर्षण—

जिस प्रकार पुरुप यह कामना करते है कि स्त्री आकर्पण वनाये रखे, उसी प्रकार स्त्रियाँ भी यही चाहती है कि हमे पुरुप मे आकर्पण और नवीनता दीखे। सुघडाई, चतुराई, वाकपटुता, वातचीत मे रस, पहनने-ओढने मे वाँकपन तथा शिष्टाचार न केवल स्त्रियो के लिए, पर पुरुपो के लिए भी वाछनीय हैं। पति की गन्दी आदतो, वेहूदी हरकतो, चिल्लाकर जोर से हँसने और वात करने, फूहडपन से छीकने, खखारने और डकारने से स्त्रियो को वडी चिढ है। वे इन वातो को वारीकी से परखती है।

नारी-स्वभाव विचित्र है। वे सहजप्राप्य वस्तु मे सतुप्ट नही होती।

अतएव आप प्रेम प्रदान मे ऐसी चतुराई रखे कि पत्नी को आप के प्रेम का खजाना असीम प्रतीत हो। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब कि आप को अपनी पत्नी का प्रशंसक, गुरु, प्रेमी और सच्चा मित्र बनना भी आता हो। उसको उन्नति करने के लिए प्रोत्साहन दे, उसमें आत्मविश्वास तथा आत्म-निर्भरता की भावना भरे, उसकी परेशानियो को हल करे, उसके सभी अभावो को सरल बनाने की चेष्टा करे, उसकी निराशा और असफलता की तीव्रता को सहयोग और सहानुभूति से कम करे। तब स्त्री आप की योग्यता पर मुग्ध और चकित होकर, आपका प्रेम, सहयोग, सहारा, विश्वास, भरोसा तथा सहवास अधिक-से-अधिक प्राप्त करने की चेष्टा करेगी।

दुर्व्यसन से दूर—

अगर आप गृहस्थ सुख के इच्छुक है तो ऐसा व्यसन न लगाये जिस से घर के धन, मान और सुख-शान्ति का नाश हो। जुआ, शराब, परस्त्री प्रेम, आदि ऐसे दुर्व्यसन है कि अनेक घर इन्होके कारण बर्बाद हो गये है। अगर आप इसके दण्ड से बच भी जाये, आप की संतान को इसका दुष्परिणाम
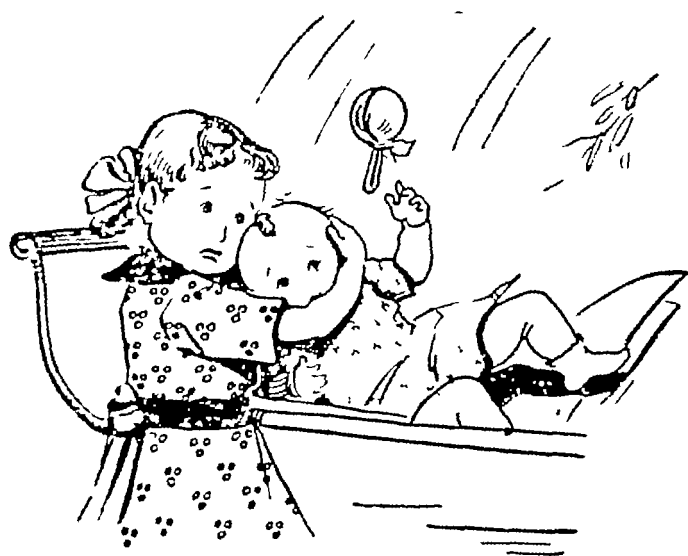
अवश्य भोगना होगा। व्यसनी मनुष्य छल, कपट, झूठ तथा टालमटोल का आसरा लेता है। पत्नी को जब उसकी इन दुर्बलताओ का पता चलता है, घर मे अशान्ति तथा असतोष छा जाता है। वह अपने कर्तव्य और धर्म से च्युत होकर घर और समाज मे लाछित तथा तिरस्कृत होता है।

जो गृहस्वामी अभिभावक न वन कर केवल जेलर वनते है, वे परिजनो का विश्वास और प्रेम प्राप्त नही कर सकते। पत्नी की उपेक्षा करके अनजाने मे उसकी जगह-जगह हँसाई कराकर या उसे नीचा दिखाकर, जो पुरुष भला वनना चाहते है उनका गृहस्थ-जीवन कभी सुखद नही हो सकता। घर के मामलो मे गृहिणी की ही प्रधानता रहनी चाहिए। आप अपनी सलाह और सहयोग द्वारा एक सामजस्य स्थापित करने को तत्पर रहे। स्त्रियो मे मातृत्व का प्रादुर्भाव वचपन से ही हो जाता है, वह अपने भाई वहिन, घर के पालतू पशु-पक्षी तथा गुडियो के प्रति उसी प्रकार का व्यवहार करती है जैसा अपनी माता को वच्चो के प्रति करते देखती है, अगर पुरुष अपने भोजन और देख-भाल का भार स्त्री पर छोड दे और इस विपय मे एक वच्चे सदृश उस पर अपनी निर्भरता जता दे, तो स्त्री का मातृत्व उसके प्रति पिघल उठेगा। इसी मे पुरुष की सुविधा और स्त्री का सन्तोष निहित है।

पत्नी की प्रशसा करें—

प्रत्येक व्यक्ति मे कुछ न कुछ प्रशसनीय गुण होते है, अपने रूप, गुण तथा सेवा की प्रशसा पति के मुख से सुनने की प्रत्येक स्त्री की लालसा होती है। चतुर पुरुष स्त्री की सुघडाई, सुव्यवस्था, वाक्चातुर्य, व्यवहार आदि तथा वेशभूषा आदि की प्रशसा का अवसर पाकर वडाई करने से नही चूकते। इस से स्त्री को प्रोत्साहन मिलता है अपने पति मे प्रशसक, प्रेमी और रक्षक का समन्वय पाकर वे कृतकृत्य हो जाती है। पत्नी के मनोरजन और सुविधा का ध्यान अगर पति रखता है तो पत्नी को यह भरोसा वना रहता है कि उनके रहते मुझे कोई भी तकलीफ नही हो सकती। मुझे कष्ट मे देख उन्हे सन्ताप होगा। उनके कारण मुझे यथेष्ट सुविधा और अवकाश मिल जायगा। मेरी अडचनो और परेशानियो को वे ही सुलझा सकते है। ऐसा भरोसा और विश्वास जिस पुरुप ने अपनी स्त्री को दिला दिया है वही सच्चा गृहस्वामी रक्षक तथा अभिभावक है।

अपनी मान-मर्यादा के अनुकूल स्त्री की वेशभूषा और शृङ्गार के प्रसाधन आदि जुटाने मे पति को दिलचस्पी रखनी चाहिए। इस विपय मे पति के सुझाव, नये ढग तथा तरीके और रुचि का मनन करके, शृङ्गार करने मे पत्नी को विशेष स्फूर्ति मिलेगी। शृगार करना स्त्रियो का जन्मसिद्ध अधिकार है। एक अस्त-व्यस्त फुलवाडी को अगर आप सँवारकर क्यारियो मे सजा

दे, उसका मनोहर रूप निखर आयेगा। एक स्वस्थ नारी अगर थोड़ा-बहुत सज ले तो साधारण होती हुई भी वह मनोहर प्रतीत होगी। चाहे आपकी पत्नी सुन्दर न हो, पर अगर आप उससे प्रेम करते है, आप उसे सुहावनी बना सकते है। पर आपकी कटोक्तियाँ, आलोचनाएँ, तथा उपेक्षा से उसकी अच्छी भली सूरत भी मुहर्रमी बन जायगी। पति का आदर स्त्री का आधा शृङ्गार और सौंदर्य है। अपनी पत्नी को उससे वंचित करके उसे रूपहीना बनाने के आप ही दोषी है। पति से आदर पाकर, स्त्री के मुख पर प्रेम और आत्मविश्वास की एक चमक आ जाती है। स्वामी को रिझाने के लिए उसके मन मे बनाव-सजाव का चाव पैदा हो जाता है। एक उमग उसके मन मे हिलोर मारने लगती है। अगर पति की उपेक्षा से स्त्री का मन ही मर गया, रूपवती युवती होते हुए भी वह आकर्षणहीन दीखने लगती है। ऐसी दशा मे मन मारने का दोष पति के सिर ही आता है।

वासनारहित प्रेम—

पुरुषो के विषय म जो एक आम शिकायत सुनने मे आई है वह है गर्भावस्था या किसी अन्य बीमारी म स्त्री के प्रति उनकी उपेक्षा और नीरसता। विशेष करके गर्भावस्था म स्त्री की शारीरिक और मानसिक दशा बडी नाजुक हो जाती है। जरा-सी थकावट होने से या मन मे ठेस लगने से वे उदासी और निराशा से भर जाती है। ऐसी दशा मे पति की ओर से ममता

और दिलचस्पी मे कमी उन्हे बहुत अखरती है। वे चिडचिडी हो जाती है। अपने स्वास्थ्य की ओर बेपरवाही करने लगती है। पुरुष मे वासनारहित प्रेम का अभाव पाकर स्त्री उसे स्वार्थी तथा निर्मोह समझने लगती है। कई पुरुष भी ऐसी नाजुक अवस्था मे स्नेह और लाड द्वारा स्त्री को शात रखने के बदले, उल्टा रुखाई मे पेश आते है। कई तो मनबहलाव के लिए गुमराह तक हो जाते है। जब स्त्री को पुरुष के इस विश्वासघात का पता चलता है, घर मे एक अशान्ति छा जाती है। पुरुष लज्जित होने के बदले डाँट-डपट से स्त्री को

चुप रखना चाहता है। क्रोध ईर्षा, द्वेप, शोक, आदि मनोविकारो का शिकार होकर स्त्री अपने प्रति निराश-सी हो जाती है। मानसिक आघात अधिक तीव्र होने पर गर्भपात तक होने का डर है। वच्चे तक इस मानसिक विकारो के शिकार वन जाते है। चचल वृत्ति वाले इन नासमझ पुरुपो को अपनी भूल का उस समय पता चलता है, जवकि वे काफी खो चुकते है। घर की अशाति, स्त्री के स्वास्थ्य का नाश, वदनामी और वैवाहिक जीवन की असफलता इन सभी के मूल मे उन्ही की भूल होती है।

कई पुरुष अधिक दभी तथा उद्दण्ड भी होते है। वे पर-स्त्रियो से देवर या वहनोई का नाता जोडकर खुली मजाक करने मे या अपने पूर्व रोमासो का उल्लेख करने मे लज्जा का अनुभव नही करते। वेचारी स्त्री इसी विश्वास पर सतोष करती है पहले जो हुआ सो हुआ, उसमें इनका अपराध नही था, यह तो उनके आकर्षण का दोष था कि नारियाँ उन पर मरती थी परन्तु अव तो वह केवल मेरे ही है।

पर कितने पुरुष ऐसे है कि वे लडकपन मे अनजाने और नासमझी मे हुई अपनी पत्नी की भूल को क्षमा कर देंगे ? अगर किसी रूपहीन पुरुप की अति रूपवती स्त्री के प्रति कोई पुरुष अनुग्रह दिखाये या उसकी प्रशसा करदे, वस पत्नी कुलटा, फ्लर्ट, निर्लज्ज आदि उपाधियो के उपयुक्त समझी जाती है। भला आप एक फूल की, एक वच्चे की, एक सुन्दर चित्र की प्रशसा करते है, तव तो आप प्रशसक को वुरा नही कहते, एक रूपवती स्त्री की प्रशंसा करने मात्र से कोई पुरुप आपकी ईर्षा का पात्र या वह स्त्री अपराधिनी क्यो मान ली जाती है। निरर्थक सन्देह प्रेम मे विप घोल देता है। आप प्राकृतिक आकर्षणो को एक स्वस्थ दृष्टिकोण से देखे। युक्तिसगत निर्णय करने की वुद्धि रखे। अधिकाश स्त्रियाँ मानवी ही है देवी नही, ससार के प्रलोभन स्त्रियो पर भी अपना प्रभाव दिखा सकते है। मानव होने के नाते क्षमा और दया उन्हे भी मिलनी चाहिए। आप अभिभावक, अधिक अनुभवी है, नाव की पतवार आप ही के हाथो मे है, ठीक रास्ते मे नाव को खेकर ले चले। अपने चरित्र का सुन्दर आदर्श, एक प्रेमी की-सी निपुणता, सासारिक अनुभव और आत्मविश्वास का सहारा लिए हुए पत्नी के पथ-प्रदर्शन और रक्षक वने। दक्षता के साथ उसे कुदृष्टि और प्रलोभनो से वचाये, दूरदर्शिता से विगडती वात वना ले। गिरते हुए साथी को धक्का मत

दे, उल्टे दृढता के साथ पकडकर, सँभालते हुए, सुरक्षित स्थान पर ले चले। नारी भीरु और ममतामयी है। बाल-बच्चे तथा गृहस्थी की ममता, समाज का डर, लोक-लाज तथा कुल का नाम ये सभी उसे बाँधे हुए है। वह पथभ्रष्ट तभी होती है जब पति उससे विश्वासघात करे, उसे निराधार छोड दे, अपमानित और तिरस्कृत कर घर से उसे निकाल दे या सुधार का मौका ही न दे।

मेरी तो यही कामना है कि घर-घर सती सीता और सावित्री हो। सभी पुरुष कवि-हृदय रखते हुए स्त्री के सतीत्व और मातृत्व को परखना जाने। उसके नारीत्व की रक्षा और सन्मान करे। स्वय ढाल बनकर उसे आपत्तियो से बचाये और कितना कल्याणकारी हो कि पत्थर न होकर वे काष्ट हो, जिससे भवसागर से अपने साथ अपनी धर्मपत्नियो को भी पार ले जायँ। परन्तु सोचने की बात है कि कितने पुरुष ऐसे साधु-हृदय तथा आदर्शपूर्ण दृष्टिकोण रखते है कि नारी का रूप उसके अङ्ग मे न देख कर अन्तरग मे ही अवलोकन करने की योग्यता का दावा करते हो ? स्त्री अपने जीवन की सार्थकता मातृत्व के विकास मे ही समझती है। परन्तु पुरुष का सहयोग उसे मिले तभी न उसका समझना कार्यान्वित होगा। नवयुवको से पूछिये उन्हे कैसी बीबियाँ चाहिएँ। जो अप्सरा हो, जिसमे सोलह कलाये हो, जो [illegible] हुई, फटकती हुई, बल खाती हुई हो, खट्टी भी हो, चटपटी भी हो, मीठी भी हो, नमकीन भी हो, और तिक्त भी हो यानी खटरसपूर्ण हो। जिसमे विकसित नारीत्व हो, तत्पश्चात् (विवाहोपरान्त) मातृत्व का सुन्दर विकास कर, सती सीता और राधा का आदर्श रख, वह कल्याणकारी गृहिणी बने।

नवयुग के निर्माण के लिए ऐसी नारियो की कल्पना वाछनीय और कल्याणकारी है। पर सती सीता-सी नारियो का हाथ क्या सहस्र पटरानियो के प्रभु कामी रूपलुब्धक रावण सदृश पुरुषो के हाथ मे थमाना युक्तिसगत होगा ? नारीत्व और मातृत्व को गौरवशील बनाने वाली सीता और राधा के आदर्श तक पहुँचने मे असमर्थ उन महिलाओ को जिन्हे जमाने की रफ्तार अपने साथ एक स्वाभाविक ढग से खींचे लिए जा रही है, पिछडी हुई कहकर जिन्हे आगे बढता हुआ नवयुवक समाज बढे आने के लिए ललकार रहा है, क्या साधु समाज आलोचनाओ और लाछनाओ मे ढक देगा ?

जमाने को किसने पकडा है। परिवर्तन ही जीवन है। समाज का जो आधुनिक रूप है उसी मे महाजनो के पदचिन्हो का अनुकरण करने की चेष्टा

करते हुए, समयानुकूल सुधार कर, हमे कोई युक्तिसगत हल निकालना होगा। स्त्री और पुरुष दोनो को अपनी भूलो को सुधारना पडेगा। सासारिक सघर्ष का सफलतापूर्वक मुकाविला करने के लिए, अपने सामाजिक तथा धार्मिक कर्त्तव्यो को भली प्रकार निभाने के लिए और गृहस्थ के कल्याण की रक्षा तथा सतानहित को सुरक्षित रखने के लिए, स्त्री और पुरुष दोनो ने परस्पर पूर्ण सहयोग रख, गृहस्थी के रथ को महापुरुपो की वनाई हुई लीक पर से ले जाना होगा। अन्यथा एक अरवी घोडा, दूसरा अडियल टट्टू जोतने से गाडी की जो दशा होती है वही दुर्दशा गृहस्थाश्रम की होगी, अगर केवल वेटियो को आदर्श का पाठ पढाया गया और बेटो को प्रगति और अधिकार की ओट मे उद्दण्ड छोड दिया गया। एक अनुभवी भाई का यह कहना सच है कि अव वह जमाना गया जव कि पति-पत्नी को दासी समझता था और ताडन का अधिकारी भी मानता था अव पति और पत्नी विवाहित जीवन मे वरावर के हिस्सेदार है। यदि पति कमाकर देता है, तो पत्नी घर को ठीक तरह से चलाने और वच्चो को सँभालने मे परिश्रम करती है। यदि पत्नी ने उसे रहने को घर और जीवन के अन्य साधन दिए है, तो उसने भी पति के लिए अपने दुलार भरे घर को सदा के लिए छोड दिया है। यदि पति अपनी कामेच्छा की तृप्ति पत्नी से प्राप्त

करता है तो पत्नी का भी यह स्वाभाविक अधिकार है कि वह भी पति से अपनी तृप्ति प्राप्ति करे। पति-पत्नी एक-दूसरे के मालिक या आज्ञाकारी दास नही, बल्कि जीवन-साथी और मित्र हैं। नारी के बिना नर आधा ही है। किसी कवि की उक्ति है—

"जो पै ये न होय रानी राधे को रकार हू तो
मेरे जानी राधेश्याम आधेश्याम रहते।"

साधु दीनबंधु एड्रूज ने भी एक बार इसी भावना से कहा था—"यदि मैं विवाह कर लेता तो मेरा जीवन अधिक पूर्ण होता"।

७. सुनहले सपनों को मिटने न दें

पत्नी ध्यान रखे—

शादी के कुछ साल बाद पति-पत्नी एक दूसरे की इतनी उपेक्षा करने लगते है कि वे अपने कपडे, लत्ते और शृङ्गार के प्रति भी उपेक्षित हो जाते है। विशेष करके स्त्रियाँ घर के काम-धधो और बच्चो मे ऐसी लीन रहती है कि यह भूल ही जाती है कि वे किसी की पत्नी, और प्रियतमा भी है। वे बाहर जायेगी तो खूब पहन-ओढ-कर जायेगी, पर घर मे वही फटे हाल और गदी बनी रहेगी। हीग और मसाले की बास भरे कपडे, रूखे बिखरे हुए बाल, फटे हुए हाथ, चिरी हुई एडियाँ, ऐसी दुर्दशा बनाकर वे रात को शयन कक्षन मे घुसती है। वर्षा के काले बादल उनके हृदय मे गुदगुदी नही मचाते। बसन्त उनको रोमाचित नही करता। कहने को वे युवति है, पर मन उनका मरा-मरा-सा रहता है।

पति की रसिकता और नारी का शृङ्गार और प्रेम-प्रदर्शन दाम्पत्य-जीवन के सुनहले सपनो को सजीव रखने मे बहुत हद तक समर्थ है। पति कोई पोशाक पहनकर सजला है तो आप उसकी प्रशसा करे। उसके सजीलेपन पर कोई ठठोली करे। उसकी अच्छी बातो की दाद दे। उसकी सफलता पर प्रोत्सा-हन दे। यदि कोई फरमाइश करनी हो तो दुलार दिखाकर, प्रेम भरी अदा से अपनी इच्छा प्रकट करे। बाहर से जब पति आये तो उल्लास से भरकर दर-वाजा खोले। मुसकराकर स्वागत करे। यदि कोई बोझ हाथ में हो तो थाम ले। गर्मी के दिन हो तो बैठ जाने पर पखा करे। पानी के लिए पूछे। यदि उन्होने जल्दी वापस जाना हो तो उनका काम जल्दी मे निबटा दें। जिस चीज की उन्हे जरूरत हो वह जुटा दे। जब कि जाने की जल्दी में हों तो जाते-जाते कोई काम याद दिला कर रोके मत। अपने काम का तकाजा मत करे।

अपने दुख-दर्द, फरमाइश की बात जब वह स्वस्थ हो कर बैठे हो तब एकान्त मे कहे। पारिवारिक कठिनाइयो के लिए आप उन्हे दोष मत दे। 'हाय! इस घर मे व्याही आ कर मेरे तो कर्म फूट गये। जब मे आई हूँ कभी एक नया छल्ला भी नसीब नही हुआ। मेरी किस को परवाह है। एक लौडी से भी बदतर मेरी जिन्दगी है। यहाँ आकर न कभी अच्छा खाया न पिया, आप से इस प्रकार का उलाहना सुनकर पति का मन बुझ जायगा। सोचिये तो सही पारिवारिक मुसीबतो से वह भी तो परेशान है। वह क्या नही चाहता कि उसकी पत्नी और बच्चे भी सुखी रहे? अगर आप दिन भर घर के काम मे पिसती है तो वह भी दिन भर दफ्तर या दूकान के काम मे व्यस्त रहता है। आप दोनो के कन्धे पर गृहस्थी का बोझ है। उसे यदि आप हँसी-खुशी सँभाले रहेगी तब इतना नही अखरेगा। आप घर की व्यवस्था और अपनी दिनचर्या मे सुविधा अनुकूल परिवर्तन कर ले। जिसमे आपको समय और आराम मिल सके। इससे खर्च की बचत ही होगी। घर की सफाई एक सिर दर्द मत बना ले। पति पर उठने-बैठने की ऐसी पाबन्दी भी मत लगाये कि वह बेफिक्री से घर मे न रह सके। 'गलीचे पर कौन गन्दे पाँव ले आया? तकिये पर तेल के दाग किसने डाल दिये? चीजो की व्यवस्था किसने बिगाडी? फूलदान किसने उठाकर इधर से उधर कर दिया? मेरे तौलिये से हाथ कौन पोछ गया? बाल्टी मे हाथ किसने डाल दिया? गिलास पानी पीकर यहाँ कौन रख गया?' इस प्रकार की कैफियत हर दम न माँगे। अगर घर मे इस प्रकार की पाबन्दियाँ लगी रहे तो रहने का सुख ही चला जाये। पति और बच्चो के लिए वहाँ चैन से रहना दूभर हो जाये। बात-बात पर चिल्लाना, झुँझलाना ठीक नही है। नीति मे लिखा है गृहस्थी का सबसे बडा सुख है—'प्रियच भार्या प्रियवादनो च' अर्थात् पत्नी ऐसी हो जो कि अपनी प्रिया हो और साथ ही वह मीठे वचन बोलने वाली हो। सुन्दर से सुन्दर स्त्री भी पति को अप्रिय लगने लगती है यदि वह जली-कटी और ताने भरी बाते सुनाती रहे। कर्कशा नारियाँ पारिवारिक कलह की जड है। ऐसी स्त्रियाँ सुन्दर होते हुए भी कुरूप प्रतीत होने लगती है। उनका चेहरा कठोर और अशील प्रतीत होने लगता है।

पति को एक बच्चा मत समझें—

मौके पर अपने पति का दुलार करे। क्योकि अच्छी पत्नी माता की

तरह सेवा करने वाली, बहन की तरह शुभचिन्तक, मित्र की तरह सलाह देने वाली और प्रियतमा की तरह मनोरजन करने वाली मानी गई है। पर आप हरदम अपने पति को एक असहाय बच्चा ही न समझे। सब मित्रमडली के आगे आपका ऐसा कहना उचित नही—'हटिए आप से यह काम नही

सँभलेगा। लाइये मुझे दीजिये। आप तो बच्चो की तरह कर रहे है। मै चली जाती हूँ तब तो मेरे बिना इनका बहुत ही बुरा हाल हो जाता है। घर-बार और खाने-पीने की कोई सुध ही नही रहती। हुलिया बिगडा रहता है।' कई स्त्रियाँ पति के हर एक काम मे दखल देती है। मानो उनके पति को कोई अक्ल ही नही। उन्हे स्वतत्र रूप से निर्णय ही करना नही आता। लोग उन्हे ठग लेते है। अगर आपको कुछ सलाह देनी हो तो पहले या बाद मे

दे। या सकेत से जता दे कि निर्णय फिर बता दिया जायेगा, पर आपका सब के सामने यह कहना कि ये तो सीधे है इन्हे क्या पता कि क्या ठीक है और क्या गलत। लाइये मुझे दिखाये मे बताऊँगी कि क्या कहना और करना चाहिए— आपकी स्त्री सुलभ-शीलता और पति के सम्मान पर चोट करती है। हमारे पडोस मे एक बगाली परिवार रहता था। पति उसका एक बडा सफल बैरिस्टर था पर पत्नी के आगे वह मेमना बने रहने मे ही अपनी खैर समझता था। उसकी पत्नी थी तो बडी पटु-गृहिणी, पर पति पर कठोरता के साथ शासन करने के कारण उसकी बडी जगहँसाई होती थी। लोग उसे मजाक मे बैरिस्टर साहब की 'वाईफा' कहा करते थे। सच जानिये इस प्रकार की 'वाईफा' से सब पुरुष घबराते है। यह तो गले पडा ढोल है जो बजाना पडता है। स्त्री अपनी लज्जा और शीलता से ही सुन्दर और प्यारी लगती है। उसकी बुद्धिमता और व्यवहार कुशलता पुरुषो को ललकारने या नीचा दिखाने के लिए नही होनी चाहिए। मत्री जिस प्रकार मौका देखकर विनम्रता से राजा को सलाह देता है उसी प्रकार पति पद की मान-मर्यादा बनाये रखकर चतुर पत्नी को सचिव का कर्तव्य निभाना शोभा देता है।

पति को अपने अहसान के नीचे न दबायें—

आप अपने पति की सेवा करे, उसकी सच्ची सहचरी बने, उसके बच्चो की आदर्श माता बने, एक सफल गृहिणी बने, परन्तु इन सब का अहसान पति पर लादने की कोशिश मत करे। कोई भी समझदार व्यक्ति यदि अपना फर्ज करने मे सफल होता है तो यही क्या कम इनाम है? 'तुम्हे मेरी जैसी पत्नी या तुम्हारे बच्चो को ऐसी माँ न मिली होती तो राम जाने तुम लोगो की क्या दुर्दशा होती! अपने भाग्य को सराहो जो मै इस घर मे आ गई'। आपका इस प्रकार कहना ओछेपन का द्योतक है। आप लक्ष्मी बनकर घर मे आई है तो इसमे आपके पति और बच्चो का भी भाग्य है। वे आप से प्रेम करते है। आप का सम्मान करते है। यही उनका कृतज्ञता ज्ञापन है। बार-बार अपने गीत गवाने मानो अपनी सेवाओ का अहसान स्वीकार कराने के लिए नाक मे लकीरे निकलवाना है। यह बात नही कि पति देवता कभी भूल-चूक नही करते। अगर आपको उनकी कोई बात बुरी लगती है, आप उनकी किसी बेपरवाही से परेशान है तो मुँह फुलाने की जरूरत नही है। उन्हे ढग से समझा कर सीधे रास्ते पर लाये।

एक समझदार वाल-सखी ने मुझे वताया कि जव वह अपने पति की अधिक सिगरेट पीने की आदत से परेशान हो जाती थी तो उस दिन वह जरा खामोश रहती। जो वात वह पूछते उसका ठीक से जवाव देती। आदर सत्कार मे और दिन से भी अधिक तत्पर रहती। वस उसके पति ताड जाते कि आज जरूर कोई वात है कि पत्नी के चेहरे पर रोज जैसी वह खिलावट नही है।

एकान्त पाकर वह पूछते—"क्यो वात क्या है ? आज चन्द्रमा मुस्करा नही रहा" ?

पत्नी—'आप तो हृदय मे वसते है। फिर भी क्या आप को वताना होगा कि मुझे क्या वात अच्छी लगती है, क्या वुरी ? खैर, आप को मै दोष क्यो दूं ? मेरे मे ही कुछ कसर है जो आपका प्रेम पाने मे कमी रह गई। नही तो भला अपने प्रिया के लिए पति क्या अपनी आदते नही सुधार सकता" ?

इस प्रकार के प्रेम-भरे उपालम्भो को सुन कर पतिदेवता पानी-पानी हो जाते। आखिर को उन्हे अपनी आदत छोडनी ही पडी।

श्यामलाल को घुडदौड मे पैसा लगाने की वुरी आदत थी। जिस दिन वह घुडदौड मे १००-५० फूंक आते पत्नी से छिपा नही रहता। उनकी पत्नी ने सत्याग्रह का एक नया तरीका निकाला। जिस महीने श्यामलाल घुडदौड मे पैसा खराव कर आते तो शेष महीने पत्नी घर में दूध और फल का खर्च चौथाई कर देती न आप दूध-फल खाती न वच्चो को देती, केवल पति को परोस देती। यह देख कर श्यामलाल ने इसका कारण पूछा। पत्नी वोली—"अव आप के घुडदौड के लिए पैसे कहाँ से आयेगे, हमारा पेट काटकर के ही तो ? अगर यही हालत वनी रही तो रोटी-कपडा नसीव होना भी वन्द हो जायगा। अगर कोई गृहस्थी इस प्रकार के मनोरजन मे पैसा फूंकेगा तो वालवच्चों का ही तो पेट काटेगा ? यदि आप ने हमे इसी दशा को पहुँचाना है तो फिर केवल कुछ दिन दूध-फल खाकर अपनी आदतें क्यो विगाडे ?" पत्नी के कथन का श्यामलाल पर वडा असर पडा। इस सत्याग्रह का वह मुकाविला नही कर सका और फिर उसने रेसकोर्स की ओर भूलकर भी मुंह नही किया।

प्रेम का प्रदर्शन—

अपने प्रेम का प्रदर्शन करना न भूलें। कई स्त्रियाँ इसको अनावश्यक समझती हैं परन्तु यह उनकी भारी भूल है। हर एक व्यक्ति अपने प्रिय से यह सुनने की लालसा रखता है—'तुम मुझे प्राणों से प्यारे हो। तुम्हारे बिना मेरा जी नहीं लगता। तुम आँखों के सामने होते हो तो मेरा मन-मयूर नाचता रहता है। तुम्हारे चले जाने से घर सूना हो जाता है।' प्रेम का प्रदर्शन विश्वास और स्फूर्ति देता है। उससे परस्पर आकर्षण बढ़ता है। प्रेम-दृष्टि, वचन, हाव-भाव, आलिंगन और चुम्बनों से प्रगट होता है। पत्नी को पति की सब तरह से सन्तुष्टि करनी चाहिए। इस मामले में झूठी लज्जा और संकोच या शीतलता प्रदर्शन उचित नहीं। पति जब परदेश जाये उसे प्रेम-पत्र लिखने चाहिएँ। कभी-कभी का वियोग भी प्रेम को तरोताजा कर देता है। उसमें तीव्रता ले आता है। परस्पर हास-परिहास, ठठोली, किसी बात को लेकर छेड़खानी तथा चिढ़ाना भी प्रेम को सजीव रखता है। कभी-कभी रूठ जाना या मना लेना भी दाम्पत्य-जीवन की चुहलबाजी है।

जीवन में नवीनता बनाये रखें—

एकरस जीवन से मनुष्य ऊब जाता है। दिनचर्या, खानपान और पहनावे में परिवर्तन करती रहें। आठवें दिन जरूर कुछ नया प्रोग्राम बनायें। कभी बच्चों को संग लेकर घूम-फिर आयें। मित्रों के संग पिकनिक और सैर-सपाटे को निकल जायें। तीज त्यौहार पर मित्रों और सम्बन्धियों के यहाँ जायें और उन्हें बुलायें। अपने पति के जन्मदिन या अपने विवाह-दिवस पर विशेष आयोजन करें। ऐसे मौकों पर पति की सुविधा और रुचि का खास तौर पर ध्यान रखें। आयु के संग शरीर में चाहे परिवर्तन आ जाये पर मनुष्य का मन बूढ़ा नहीं होता। बल्कि सफल दम्पति के प्रेम की चाशनी गाढ़ी होकर और भी अधिक मीठी हो जाती है। अपने विवाह-दिवस के

रोज या कोई नये दूल्हा-दुलहिन को देखकर उन्हे अपने विवाह का दिन याद हो आता है। अतीत जीवन की मधुर झाँकियाँ सजीव हो उठती है। आप पति के मनोरंजन का हमेशा ध्यान रखे। उनके मनवहलाव का समय अवश्य निकाल ले। शाम को या भोजन के वाद उनके पास बैठकर प्रेम से वातचीत करे। उन्हे प्रसन्न करे।

अपने यौवन और सुन्दरता की रक्षा करें—

स्त्री का सवसे बडी शक्ति है उसका रूप और उसके व्यक्तित्व का आकर्षण। देखने मे आता है कि विवाह से पहले युवतियाँ अपने रूप-श्रृङ्गार का विशेष ध्यान रखती है। पर विवाह के वाद वे उस ओर से वेपरवाह हो जाती है। स्वास्थ्य वनाये रखने के लिए यह जरूर है कि आप की दिनचर्या नियमित हो। भोजन सन्तुलित हो ताकि जरूरत से ज्यादह चर्वी आपके वदन पर न छा जाये। अधिक स्थूलता व्यक्तित्व को आकर्पण-हीन कर देती है। वदन मे फुर्तीलापन नही रहता और औरत की चाल विगड जाती है। वच्चे होने के वाद भोजन और व्यायाम सम्वन्धी असावधानी रखने से स्त्रियो की काया प्राय भद्दी हो जाती है। यह धारणा-गलत है कि

वच्चे होने के वाद यौवन चला जाता है। वात ठीक इससे उल्टी है। एक-दो वच्चो की माँ वनकर स्त्री का यौवन निखर जाता है। यदि वह सावधानी रखे तो उसका लावण्य प्रौढावस्था तक वना रहता है और वृद्धावस्था मे भी उसका व्यक्तित्व भव्य और आकर्पक प्रतीत होता है। कव्ज और आलस्य सौन्दर्य के दो वडे भारी दुश्मन है। जो स्त्रियाँ काम नही करती, वैठे-वैठे गरिष्ठ भोजन करती है उन्हे अपच और कव्जियत प्राय रहती है। इसमे उनकी आँतो मे एक प्रकार का विप जमा रहता है। जोकि उनके जोडो की स्वाभाविक लोच को नष्ट कर देता है, फलस्वरूप उनके पेट, घुटनो, ठोटी के और कोहनियो पर मास चढ जाता है। दुर्वलता भी शरीर की कान्ति हरन कर लेती है। इस लिए यदि वीमारी या जचकी के वाद दुर्वलता वनी हुई

है तो डाक्टर को दिखाकर इलाज करवाये, पौष्टिक भोजन खाये। ब्रह्मचर्य से रहे। साफ हवा, धूप और पानी का पूरा लाभ उठाये। नियम से वायु-सेवन के लिए जाये। आम तौर पर स्त्रियाँ अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा करती है। रोगो को छिपाये रखती है। नतीजा यह होता है कि रोग बढ कर भयकर रूप धारण कर लेता है और शरीर कमजोर हो जाता है। रोगी और दुर्बल पत्नी पति के जीवन का सारा आनन्द और उत्साह किरकिरा करके धर देती है। उसकी सारी कमाई इलाज मे ही फुक जाती है। कई घरो मे तो दाम्पत्य-जीवन इसी कारण से नीरस हो जाता है।

वेशभूषा—

हमारे देश मे निम्नवर्ग के लोग भी दहेज मे गोटे, सिलमे, सितारे और जरी के कपडे देते है जो कि बाद मे सन्दूको मे तहा करके रख दिये जाते है। और केवल विवाह-शादी के मौके पर पहनने के लिए उनकी तह खोली जाती है। पडा-पडा वह कपडा गल भी जाता है। कितना अच्छा हो कि उनके स्थान पर रोजमर्रा काम आने वाली सुरुचिपूर्ण पोशाके दी जायें। इससे बहू-बेटी को एक तो यह लाभ होगा कि वे उन्हे काम मे ला सकेगी, दूसरी बात घर मे कपडो की किल्लत के कारण वह दो साडियो से महीना गुजारती है वह मुसीबत भी दूर हो जायगी। वेशभूषा के विषय मे एक बात और ध्यान रखने योग्य है। काम-काज के समय एक रगीन सूती साडी पहन ली जाय पर काम से निबटकर हाथ-मुह भली प्रकार धोकर साफ साडी पहन लेनी चाहिए। हाथ पोछने हो तो तोलिये या झाडन से पोछे। अपनी साडी से झाडन का काम मत ले। कई एक बहिनो का जब कि वे घर के काम मे लगी रहती है हुलिया बिगडा रहता है। यह ठीक नही है। सुबह उठकर मुह-हाथ धोकर बाल सवार ले और टीका लगाये। पति के सामने स्त्री को श्रीहीन नही प्रतीत होना चाहिए। उसे यह ग्लानि नही होनी चाहिए कि मेरी पत्नी बिना शृङ्गार के बडी बदसूरत प्रतीत होती है। शृङ्गार पति के सामने बैठकर करने की जरूरत नही। पति-पत्नी मे थोडा-सा पर्दा, थोडा-सा रहस्य बने रहने मे आकर्षण बना रहता है। शाम के समय पति के आफिस से लौट कर आने से पहले आप पर साफ-सुथरा रखे। बच्चो को नहला कर तैयार कर छोड और अपनी वेशभूषा भी स्वच्छ रखे। उनके आने से पहले रसोई का आधा काम निबटा लेना चाहिए, ताकि पाँच मे

लेकर सात वजे तक आप को पति के सग गप्प-शप्प करने, वाहर जाने का

अवकाश मिले। यह न हो कि शाम को तैयार होने मे ही घन्टो लगा दे। दो मिनट मे तैयार होती हूँ, ऐसा कह कर पति को घन्टा भर इन्तजार करवाये। इस से पति का मूड विगड जाता है और सम्भव है वह आपसे चिढ भी जाये।

कहावत है—'खाये जो मन भाये, पहने जो जग भाये'। अपनी वेशभूषा मे पत्नी को पति की रुचि, सामाजिक मर्यादा और अवसर का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। हर समय तडक-भडक कपडे पहनना या फैशन मे अन्धानुकरण करना शोभा नही देता। जो वस्तु एक पर सजती है, हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति उसमे हास्यस्पद प्रतीत हो। छोटे कद पर वडे फूलो वाली या चौडे वार्डर वाली साडी शोभा नही देती। जो महिलाएँ लम्वी नही है उन्हे साडी और व्लाऊज एक ही रग का पहिनना चाहिए। जिनका पेट निकला हुआ है वे यदि एक इच ऊँची एडी की सैन्डल पहन कर चले तो उनकी चाल ठीक रहेगी। दिन के समय हलके रग पहनना शोभा देता है। विशेप सजावट रात मे ही अच्छी लगती है। भडकीले-चमकीले कपडे पहनकर शॉपिग के लिए या सिनेमा और खेल-तमाशो मे जाना ठीक नही है। आभूपण नारी की शोभा तभी वढाते है जव कि वे सुरुचिपूर्ण ढग से पहने गये हो। वनारसी साडी, जरी का व्लाऊज और घर में जितने जेवर हो सव लाद लेना ऐसा प्रतीत होता है मानो कोई स्त्री जेवर और कपडो की स्टेड वनी हुई हो। हाथ-पांव फटे हुए, प्रत्येक हाथ मे चार-चार अँगूठियां भरी हुई और गले मे गुलुवन्द, जजीर और कठी कसी हुई, कानो मे चाहे वे फटे जा रहे हो पर भारी-भारी झूमके लटकाये हुए, तेल से चीकट सिर, दो भिन्न-भिन्न छीटो के व्लाऊज और साडी पहनकर, फटी चप्पल पांव मे डाल कर, कुछ स्त्रियां

अपना हुलिया बिगाड लेती है। और जब वे किसी विवाह-शादी मे शरीक होती है तो अपने जेवरो का प्रदर्शन इस भौडे ढग से करती है कि बस पूछिये मत। वहाँ जाकर भी उनकी आँखे आई हुई सहेलियो के जेवर-कपडो ही को परखती है, उनकी दिलचस्पी जेवर कपडो तक ही सीमित रहती है। ऐसी फूहड नारियाँ व्याह-शादियो से लौटकर अपने पतियो को जेवर के तकाजो के मारे परेशान कर देती है। उनके पति जब अपने मित्रो की पढी-लिखी पत्नियो को सफेद साडी मे सुरुचिपूर्ण ढग से सुसज्जित हुए और हाथो मे केवल दो

चूडियाँ और कान मे टाप्स पहनकर आकर्षक ढग मे बातचीत करते देखते है तो उन्हे अपनी पत्नियो की वेशभूषा और बातचीत की तुलना उनसे करके

बडी निराशा होती है।

रूप शृङ्गार का महत्त्व—

देखने मे आता है कि हमारे देश मे विवाह के बाद बहुत कम स्त्रियाँ इस बात का महत्त्व समझती है कि पति को रिझाये रखने के लिए उन्हे अपने शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक आकर्षण को बनाये रखने की जरूरत है। इस विषय मे पाश्चात्य महिलाएँ बहुत सचेत है। वह इस बात को भली प्रकार अनुभव करने लगी है कि एक नारी के लिए उसका रूप, आकर्षण, मिठास और व्यवहार-कुशलता बहुत महत्त्व रखता है। इसी के बल पर वह परिवार और समाज मे इज्जत और प्रशसा प्राप्त करती है और अपने दाम्पत्य-जीवन को सफल बना सकती है। इस लिए वे वृद्धावस्था तक भी रूप-शृगार के महत्त्व को भुलाती नही।

पर हमारे देश मे स्त्रियाँ जहाँ एक-दो बच्चो की माँ बनी कि वे अपने रूप की सार-सँभाल करना छोड देती है। सन्तुलित भोजन न करने से तथा नियमित दिनचर्या के अभाव मे उनकी काया बेडौल हो जाती है। पेट निकल आता है। स्तन ढलक जाते है, गर्दन और कूल्हो पर अनावश्यक माँस चढ जाता है। इस बेपरवाही से उनको अच्छी भली काया बेडौल बन जाती है और प्रौढावस्था मे ही वे बूढी दीखने लगती है। इसका बुरा परिणाम उनके दाम्पत्य-जीवन पर भी पडता है। शौकीन तबियत का पुरुष जब अपने मित्र की पत्नी को सुरुचिपूर्ण ढग मे वेशभूषा धारण कर सजी-सँवरी देखता है और उस अनुरागपूर्ण आकर्षक नारी की अपनी नीरस और आकर्षणहीन पत्नी से तुलना करता है तो उसे अपना जीवन सूना लगने लगता है। वह अपनी पत्नी से कहता है—"सुनो जी! तुम लबडधौ क्यो बनी रहती हो? अब तुम्हारा विवाह से पूर्व का रूप कहाँ चला गया ? देखो हमारे पडोसी मित्र की पत्नी तुम से दो साल उम्र मे बडी ही है पर उसने अपने रूप-यौवन को अभी तक कायम रखा हुआ है। पर एक तुम हो कि न तो ठीक से बाल बनाती हो, न नहाती-धोती हो। तुम्हारे कपडे सन्दूक मे पडे सड रहे है। प्रसाधन सामग्री इधर-उधर बिखरी फिर रही है, तुम्हे किस बात की-कमी है ? जो इस तरह का हुलिया बनाये रहती हो ?"

अपने रसिक पति की बाते सुनकर पत्नी तुनक कर ईर्ष्या से भर कर बोलती है—"हाय ! हाय ! अब मै तुम्हे बुरी दीखने लगी हूँ ! पडोसियो

को घूरते तुम्हे शर्म नही आती। उसने तो शर्म बेच खाई हे। चार-चार बच्चो की माँ है पर हारसिगार लगाकर पति के सग सेर-सपाटे को निकल जाती है। भला सोचो यह क्या नारी को शोभा देता है? अब क्या मुझे व्याह करना है जो दिन भर रूप को सँवारने मे लगी रहूँ ? सजने-सँवरने की उम्र गई। बच्चे हो गये। अब दिन पर दिन बूढे ही तो होना है"।

हमारे देश मे अधिकाश स्त्रियाँ इसी प्रकार से सोचती है। समय से पहले ही वे बूढी हो जाती है। वे इस बात को भूलती है कि रूप नारी का बडा भारी बल है। अब जमाना करवट बदल रहा है। लोगो की रुचि परिष्कृत हो रही है। उनकी सौन्दर्य-प्रियता बढ रही है। अपने पारिवारिक जीवन मे सुख और सौन्दर्य बिखेरने के लिए स्त्री को अपना बाह्य और आन्तरिक दोनो प्रकार के सौन्दर्य की रक्षा करने की चेष्टा करनी होगी। माना कि आयु का प्रभाव यौवन पर अवश्य पडता है परन्तु यदि आप अपने स्वास्थ्य और आकर्षण को बनाये रखेगी तो वृद्धावस्था मे भी मधुर और भव्य प्रतीत होगी इसमे कोई सन्देह नही।

शारीरिक और मानसिक स्वच्छता—

समझदार महिलाये अपने शरीर की स्वच्छता और गध का भी विशेष ध्यान रखती है। यदि किसी महिला के दाँत गदे है या उसका हाज़मा खराब है तो उसके मुँह से बात करते समय गध आयेगी। उसका पति उसकी ओर मुँह करके नही सोयेगा। याद रखे मुँह और पसीने की गध बहुत ग्लानि पैदा करने वाली होती है। अपने सब अङ्गो को साफ रखे। गर्मियो के दिनो मे दो बार स्नान करे। बालो को सप्ताह मे दो बार धोकर रोज कघी काढे। उन्हे तेल और मैल से चीकट न कर छोडे। केवल ऊपर के वस्त्र ही नही अपितु पेटीकोट और चोली भी साफ रखे। फटे हुए और मैल से पटे हुए हाथ और पैर कुरूपता को बढाते है। अपनी आदत भी साफ रखे। नाक साफ करके दीवार से न पोछ दे। बच्चो को जहाँ-तहाँ न सुसुकारे। कचरा-कूडा यथा स्थान डाले। इधर-उधर मत थूके-खखारे। खाते समय सुघडाई से खाये अपने विचारो को पवित्र रखे। मनोवेगो पर नियन्त्रण रखे। किसी पर एक दम से न बरस पडे। मुँह बनाकर, हाथ नचा कर अपनी ही न हाँकती जायँ। दूसरे का दृष्टिकोण भी समझने की चेष्टा करे। किसी के विषय मे अपने विचार नग्नता से मत प्रगट करे।

कई स्त्रियो को पर निन्दा सुनने-सुनाने की आदत-सी होती है। वात का वतगड बनाकर दूसरो की कीर्ति पर कीचड़ उछालने मे उनको आनन्द आता है। इससे दूसरो का चाहे कुछ न बिगडे पर उनकी मानसिक कालिमा अवश्य झलक आती है इस तरह स्त्री पति की नजरो मे गिर जाती है। अपनी पत्नी की यह मानसिक गन्दगी उसको कुठित कर देती है। वह चिढ जाता है। ईर्ष्या, द्वेष, किसी को देखकर जलना-कुढना, षड्यन्त्र प्रियता, झूठ बोलना, अपना कसूर दूसरो के सिर मढ देना ये सव मानसिक अस्वस्थता के चिह्न है। ये स्त्री के व्यक्तित्व को घटिया किस्म का वनाते है और दाम्पत्य-जीवन मे कटुता पैदा कर देते है। अनेक प्रौढ दम्पति एक दूसरे की व्यवहारिक और मानसिक गन्दगी से ऊबकर एक-दूसरे को प्रेम के स्थान पर घृणा करने लगते है। युवावस्था मे जो घृणा मन मे दबी छिपी पडी थी, प्रौढावस्था मे आकर वही एक-दूसरे की आलोचना और कटु शब्दो मे प्रगट होने लगती है। इससे कलह बढती है। पति विरक्त होकर सोचता है—'इस स्त्री को इतनी वार समझाया, इतने साल इसे मेरे साथ रहते हो गये पर यह अपनी आदतो से वाज नही आई।' पत्नी पछताती है—'हाय! जब मै जवान थी, तब मेरी अच्छी-वुरी सव आदते इन्हे भाती थी, पर अब मै फूहड, नासमझ, सकुचित हृदया बन गई। अब पता चला कि इनका प्रेम झूठा था।'

क्योकि पत्नी गृहलक्ष्मी है, वह परिवार का मेरु दण्ड है। उसी की चेष्टा से परिवार मे सुख-शान्ति और बरकत रहती है, इसलिए उसका सर्वांग सुन्दर होना जरूरी है। अपने विचारो, वृतियो और चेष्टाओ से परिवार को शिव, सुन्दर और सत्य की पावन गगा लहरी से सीच कर नारी दाम्पत्य और पारिवारिक जीवन को सफल बनाती है।

८. जरा साजन की भी सुनो

हमारे देश मे अधिकाश स्त्रियो की भरण-पोषण की समस्या विवाह द्वारा ही हल होती है। विवाह ही मानो उनका 'कैरियर' होता है। अब इस
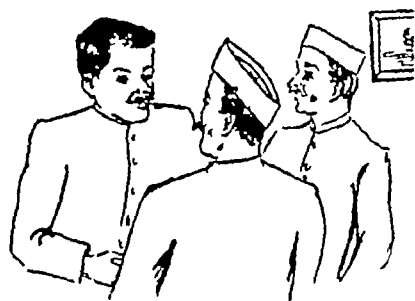
कैरियर को सफल बनाने के लिए, स्वय को सफल गृहिणी, आदर्श माता और सच्ची सहचरी प्रमाणित करने के लिए कितनी बहने सच्चे अर्थ मे योग्यता प्राप्त करने की चेष्टा करती है ? सच्ची बात तो यह है कि अधिकाश बहनो को अच्छा घरबार व योग्य पति मिलते है रूप और पिता के धन के बल पर। पर यदि वह स्वय मे थोथी है तो कुछ दिनो बाद ही वह अपने फूहडपन, बेपरवाही और नासमझी से अपने दाम्पत्य तथा पारिवारिक जीवन मे ऐसी उलझने पैदा कर बैठती है जिससे न केवल उनका पर उनके पति का सुख भी किरकिरा हो जाता है।

बचपन की आदते ऐसी जड पकड लेती है कि वह छुटाये नही छूटती। कहने को ये होती है मामूली बाते, पर नमक की तरह वे मधु के स्वाद को बिगाड कर रख देती है। यथा कोई स्त्री फिजूलखर्ची या बेपरवाह होती है तो उसका पति उसकी इन आदतो से परेशान होकर उसके हाथ मे पैसा खर्चने को नही देता। तग आकर घर का प्रबन्ध वह अपने हाथ मे ले लेता है। इससे स्त्री की कद्र घट जाती है। बाज स्त्रियाँ समय पर काम करने का महत्व ही नही समझती, इससे उनके पति को काम पर जाने और अपने अवकाश के समय का सदुपयोग करने मे बडी परेशानी होती है। कुछ स्त्रियाँ चीजो की सार-सँभाल करने का महत्व ही नही ज्ञात, नतीजा यह होता है कि उनके घर मे वक्त पर काम के समय कोई चीज ही नही मिलती। कई स्त्रियाँ अपनी बातचीत तथा पहनने-ओढने मे बहुत फूहड होती है इससे उनके घर वालो को काफी शर्मिन्दगी उठानी पडती है। कई बहने अपने कर्कशा स्वभाव के कारण घर की शान्ति नष्ट कर देती है।

अपनी गृहस्थी को ठीक से चलाने के लिए पुरुष स्त्री का सहारा ढूंढना है। स्त्री का यह कर्तव्य है कि वह पुरुष की रुचि सुविधा और आराम का पूरा-पूरा ध्यान रखे। उसकी मेहनत की कमाई को सार्थक करे। उसके घर की व्यवस्था ठीक से करे। उसके बच्चो का पालन-पोषण इस सुन्दर ढग मे करे कि पुरुष पर उसकी योग्यता की छाप बैठ जाये। यदि स्त्री पुरुष के प्रेम और सहयोग को सेवा, सहनशक्ति और त्याग से प्राप्त करने की चेष्टा करती है तो पुरुष उसका दास बन जाता है। जो महिलाएँ लड-झगड कर, घर मे कलह मचा कर, छल-फरेब और रौब डाल कर पति को जीतना चाहती है वह भारी भूल करती है। ऐसी पत्नी के आगे पति चाहे लाचारी मे हार मान भी ले, पर मन ही मन वह उससे कतराता और दूर ही रहना चाहता है।

ऐसी समस्यापूर्ण स्त्रियाँ परिवार के लिए सिर दर्द बन जाती है। इस विषय मे कुछ भुक्त-भोगी भाइयो ने मुझे पत्र लिखे है। कुछ समस्यापूर्ण पत्नियो के व्यवहार का मै नीचे उल्लेख करती हूँ।

एक भाई लिखते है—'मुझे यह सूचित करते बडा दु ख होता है कि मेरी पत्नी मे चोरी करने की बडी बुरी आदत है। वह एक रईस घर की लडकी है। उनके पीहर का मकान एक मोहल्ले मे है। बचपन से ही अपने चटोरपन को सन्तुष्ट करने की उन्हे बहुत सुविधा मिलती रही। माता और बडी बहिनो का दृष्टान्त उनके सामने था। खोमचे वालो को बिठाकर दो-चार रुपये की चाट खाना और खिलाना तो उनके लिए मामूली बात है। पर मै बच-पन से ही बाजार की बनी चीजो मे नफरत करता रहा हूँ। विवाह के पश्चात् श्रीमती जी की लत और भी जोर पकड गई, क्योकि मै आरम्भ मे अपनी सारी तनख्वाह तीन सौ रुपया उनके हाथ ही थमा देता था। जब मै अकेला था तब सौ रुपये मे मजे मे गुजारा हो जाता था, दो सौ बचा लेता, पर उनके आने पर तीन सौ रुपये मे महीना चलाना कठिन हो गया। जब मुझे उनके चटोरपन का पता चला, घर का खर्च मै खुद करने लगा, बस उन्होने मेरी जेब से पैसे चुराने शुरु किये। यही तक सीमा होती तब भी खैर थी। पर जो मेहमान हमारे यहाँ आकर ठहरते, उनके बटुओ की भी सफाई होने लगी। यात्रा मे, सभा मे, किसी के घर जहाँ भी उन्हे मौका मिलता हाथ सफाई करने से न चूकती। रिश्तेदारो मे हमारा घर बदनाम हो गया। कई बार मुझे

अपनी श्रीमती की इस हरकत के कारण बहुत शर्मिन्दगी उठानी पडी है। जब इस बात की शिकायत उनके माँ-बाप से की तब बेटी के सिखाये जाने पर उन्होंने उल्टा मुझे ही बदनाम किया कि 'यह डिक्टेटर है, कजूस है, पैसे-पैसे दमडी-दमडी को तरसाता है। मेरा जीवन ऐसा दु:खी बन गया है कि शादी करके पछता रहा हूँ'।

सच है सुनने मे इस भाई की कहानी चाहे अजीब लगती हो परन्तु जिसके पाँव मे जूता काटता है वही जानता है कि दर्द किधर है। अगर चौकीदार ही चोर बन जाय तो खजाना सुरक्षित कैसे रह सकता है? जब स्त्री ही पैसे चुरा-चुरा कर फिजूलखर्ची करने लगेगी तो भला गृहस्थी की व्यवस्था कैसे बनी रह सकती है? मितव्ययता, सुगृहिणी का प्रशसनीय गुण है। जिस स्त्री मे इसका अभाव है वह कभी भी एक सफल गृहिणी नही बन सकती। उसके कारण गृहस्थी की आर्थिक दशा हमेशा शोचनीय बनी रहेगी धनोपार्जन करने की अपेक्षा धन का सद्व्यय करने मे अधिक बुद्धि व चतुराई की आवश्यकता है।

अपनी माताओ को छुटपन मे छल-कपट और छिपाव-दुराव करते देख लडकियो मे भी चोरी की वृत्ति आ जाती है। ऐसी तो अनेक बहने मिलेगी जो पति को घर के हिसाब का ब्योरा देते समय कई झूठे-सच्चे खर्च गिना देती है। कई बहने घर की रसद बेचकर पैसे बटोरती है और इस प्रकार सचित धन को पीहर जाकर जेवर और कपडे बनाने मे खर्च कर देती है। पूछे जाने पर यह बहाना बनाते उन्हे देर नही लगती कि अमुक जेवर व कपडे मुझे पीहर से मिले है। उनके बच्चे भी अपनी माताओ को इस कुसस्कार से प्रभावित हुए बिना नही रहते। बडे होकर वे भी चोरी करना सीख जाते है। विद्यार्थी जीवन मे झूठा-सच्चा हिसाब देकर बाप से अधिक पैसा मँगाने की उनकी आदत-सी पड जाती है। इस छल-फरेब के परिणामस्वरूप उनमे कई दुर्व्यसन भी पड जाते है।

कई फैशनेबुल स्त्रियो को शापिग करने का बडा शौक होता है। पर धनाभाव के कारण वे गिरह से पैसे खर्चने मे अपने को असमर्थ पाकर हाथ-सफाई की तरकीब ढूंढ निकालती है। अपने बाल-बच्चो को लेकर वे किसी शानदार दूकान मे घुस जाती है जबकि स्वय दूकान मे इधर-उधर चक्कर काट भाव आदि पूछती है। बच्चो को जो-जो चीजे उडानी होती है उसकी

ताक मे बैठा देती है। जब तक दूकानदार बातो मे उलझा रहता है बच्चे हाथो-हाथ चीज पार कर निकल जाते है। शाम को जब वे घर वापस लौटती है, जूते, छाते, ऊन तथा अन्य फैसी चीजो का काफी ढेर उनके साथ होता है। किस प्रकार से हाथ सफाई मे किस-किसने क्या-क्या सहयोग दिया इस विषय की मनोरजक चर्चा के साथ उन चीजो का बाकायदा बटवारा होता है। ऐसी शिकायते और घटनाएँ बडे-बडे शहरो मे अधिक सुनने मे आती है। बडी दुकानो मे जहाँ शो-रूम खूब सजा हुआ हो दूकानदार किधर-किधर नजर रखे? फिर फैशनेबिल श्रीमतियो को बिना प्रमाण कुछ कहने का दुस्साहस भी कौन कर सकता है?

अगर बच्चा पकडा गया तो दिखावटी डाँट-डपट देकर उसे वहाँ से भगा दिया। परन्तु किसी ने सच कहा है कि सौ दिन चोर का एक दिन साह का। बदकिस्मती से जब ऐसी महिलाएँ रगे हाथो पकडी जाती है, पति के नाम और इज्ज़त सब पर पानी फिर जाता है।

कई स्त्रियो की आदत छल-कपट की बडी होती है। अपराध होने पर अपनी गलती को भविष्य मे सुधारने की चेष्टा न करके, वे अपनी भूल को पहले तो छिपाने की कोशिश करेगी, झूठ बोलकर, हेर-फेर कर वह दूसरे के मथ्थे दोष मँढेगी। अगर उसमे भी असफल रही तो व्यर्थ की बहस करके जो उन्होने किया उसे ठीक प्रमाणित करने की चेष्टा करेगी। काम में व्यस्त तथा सत्यप्रिय पुरुष के लिए स्त्री का यह व्यवहार असहनीय हो उठता है। बार-बार समझाने पर भी जब वह हठ नही छोडती तब वह क्रोधित होकर डाँट-डपट पर उतारू हो जाता है। बस कई घरो मे ऐसी नासमझी ही कलह और अशान्ति का कारण बन जाती है।

कई स्त्रियाँ ईर्ष्या-डाह की बडी शिकार होती है। अगर किसी ऐसे घर मे जहाँ सास-फूहड और ननद अशिक्षित हो, कोई सुन्दर-सुघड बहू आ

जाये और ससुर तथा अडोस-पडोस उसकी प्रशसा करने लगे, वस सास और ननद की ईर्ष्या और डाह का पारावार नही रहता। स्वय तरक्की करने के वदले वे उन गुणो को ही दूपती है। 'भाड चूल्हे मे गई पढाई-लिखाई, धोवी के कपडे तक तो पूरे लिखने नही आते, जव से वहुरिया ने कपडे लिखने शुरू किये है, मेरे कई कपडे खो गये है'। 'खाना क्या पकायेगी, दो घन्टे तो रसोई की सफाई ही करती रहती है। सजा हुआ गोदाम हो, पूरी सफाई हो तव तो रसोई बनाती है। हर एक वात मे नखरा। जैसे इतने दिन हम ढोर की तरह ही रहते आये थे?' 'वडा रूप का घमड है, ऐसा तो रग है मानो कोढ फूटा हो।' अपने पलँग पर किसी को पाँव रखकर वैठने नही देती। मानो घर के वच्चे सब अछूत हो।'

इसी प्रकार कई वहुएँ भी निन्दा चुगली करके अपनी ईर्ष्या और डाह प्रगट करती है। परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने की एक प्रतिस्पर्धा-सी मच जाती है। सास-वहू, देवरानी-जिठानी, ननद-भावज आदि की लडाई घर-घर सुनने को मिलती है। ढोग, आडम्वर द्वारा प्रत्येक स्त्री यह प्रमाणित करने की चेष्टा करती है कि मै ही सब काम करती हूँ, अन्य सव निकम्मी वैठी रहती है। मै नेक हूँ वह वुरी है। दोप उसका है, मै निर्दोप हूँ। वह वडी चालाक चट है, मै भोली-भाली हूँ इसीलिए मै घाटे मे हूँ। इस लडाई-झगडे, और पारिवारिक कलह का प्रभाव पडता है घर के पुरुपो पर। दिन भर के थके हारे वे दोनो ओर की कलह की कहानी सुनते-सुनते परेशान हो जाते है। घर मे धन-दौलत, सुख-सम्पत्ति सव कुछ होते हुए भी परिजनो के लिए घर मे अशान्ति मची रहती है। वच्चो पर भी इस अस्वस्थ
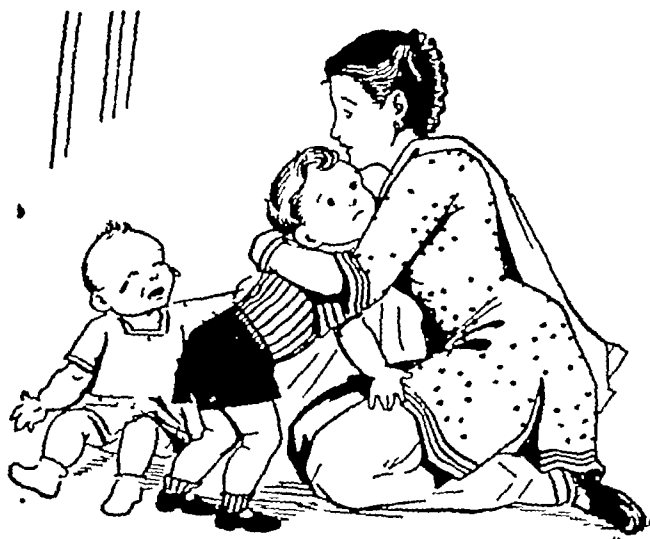
वातावरण का बडा बुरा प्रभाव पडता है। वे डरे हुए, सहमे हुए रहते है। यदि बच्चे वडे हुए तो दलवदी मे वे भी जुट जाते है और उनके चरित्र पर भी इन कुसस्कारो की छाप पडती है। वस घर मे जिसकी चलती है, वह छल-वल से दूसरे को वदनाम करने की चेष्टा मे जुट जाता है। एक दूसरे पर झूठी तोहमते लगाई जाती है, वहकाने, फुसलाने गुमराह होने और हिसा के दोपारोपण किये जाते है। झूठे षड्यत्र रचे जाते है। गुप्त मत्रणाएँ होती है। कई घरो मे स्त्री-चरित्र के रहस्यो की अनेक विचित्र कहानियाँ और घटनाएँ सुनने मे आती है। विचारे पुरुष प्राय कठपुतली गवर्नमेट से चुपचाप कहे अनुसार हाँ मे हाँ मिलाते रहते है, अथवा गृहस्थी को सव दुखो का मूल समझ भगोडे वीर सदृश इस सघर्ष से दूर ही रहने की चेष्टा करते है। पारिवारिक कलह के कारण वहुत से पुरुष इतने अधिक परेशान है कि उनके लिए घर सुख और आराम का ठौर न होकर एक मुसीवत की जगह वनी रहती है। तङ्ग आकर वह अधिकाश समय घर से वाहर रहने की चेष्टा करते है। अपने मित्रो के सुखद पारिवारिक जीवन की झाँकी देखकर उन्हे अपनी किस्मत पर अफसोस होता है। तग आकर ऐसे कई पुरुष व्यसनो के शिकार हो जाते है।

अनेक स्त्रियाँ ऐसी है जो अपनी भूल समझती है, पर उन्नति करने मे अपने को असमर्थ पाती है। अपनी भूल स्वीकार कर, सुधार करने का वह यत्न ही नही करती। न्यूनताएँ उनके स्वभाव का अग हो गई है। अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए वे सहानुभूति प्राप्त करने के लिए काल्पनिक वीमारी, अथवा दुर्वलता का ढोग रचती है। किसी कर्तव्यशील, चतुर स्त्री की गृह-व्यवस्था और रूप-गुण की प्रशसा सुन वे खिसिया सी जाती है और अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए सिर दर्द का वहाना, हिस्टेरिया का फिट आदि का ढोग रच लेती है। परिजनो को आनन्द-प्रमोद मनाते देख और स्वय को उनकी खिल-खिल खेला मे भाग लेने मे अयोग्य समझ, वे अपने पति का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए, अचानक वीमारी का दौरा अथवा कोई चिन्ता का वहाना ढूंढ निकालेगी। उनकी गैर जिम्मेदारी की आलोचना करने लगेगी। ऐसी 'मूडी' स्त्रियो का रुख कव अचानक विगड जाय इसका पता लगाना कठिन है। और प्राय वह ऐसे अवसर पर ही विगडता है, जव कि सवका आनन्द किरकिरा करके उन्हे सन्तोष मिल सके।

कई पुरुष अपनी पत्नी की निर्मूल सन्देह करने की आदत से वडे तङ्ग-

आये हुए है। ऐसी स्त्रियो ने अपने पति को किसी महिला की रूप, गुण,कर्म, बोलचाल, पहिनावा, स्वभाव, योग्यता किसी बात की भी प्रशंसा करते सुना नही कि बस उनके मन मे सन्देह का विष उफनने लगता है। वह प्रशंसित निरपराधिन स्त्री उनके कोप और आलोचना की अकारण ही पात्र बन जाती है और वे उसकी हरेक बात सन्देह की दृष्टि से देखने लगती है।

कोई भी व्यक्ति दबाव डाल कर, बराबर परेशान करके, अथवा लड़-झगड या तकाजा करके प्रेम नही प्राप्त कर सकता। प्रेम के विषय मे पूर्ण विश्वास और धीरता रखनी चाहिए। जिस मे गुण और सुन्दर स्वभाव का आकर्षण होगा उसके प्रति प्रेम बना रहना स्वाभाविक ही है। छिपकर किसी की बात सुनना, दूसरो के जरिये यह पता लगाने की चेष्टा करना कि वे कहाँ गये थे, जिसके पास गये थे, किस लिए गये थे आदि बाते बडी नादानी की है और खिन्नता पैदा करने वाली है। कई स्त्रियो को ऐसी आदत होती है कि अपने पति के पत्रो को वह चोरी से पढती है। सबूत पकडने के लिए उनकी जेबो और दराजो की तलाशी लेने से भी नही चूकती।

इस विषय मे हमारे पडोस मे एक मजेदार घटना हुई। हमारे घर के पास ही मेरी दूर की एक भावज रहती थी। एक दिन शाम को जब हम अचानक पहुँचे, तो देखते क्या है, भाभीजान का रोने के बाद मुंह तन्दूर सा लाल हो रहा है और थके-मादे भैया बिना कुछ खाये-पिये उदास बैठे है। भाई से इस कोप-लीला का कारण पूछा तो वह खिन्न से हो कर बोले—"मुझे तो कुछ पता नही चलता, आधे घन्टे से आया हुआ हूँ बस चुपचाप यह तमाशा देख रहा हूँ। अच्छा-भला छोड गया था रोने-गाने का कुछ कारण मेरी तो समझ मे आ नही रहा है।

बहुत मिन्नत-आरजू के बाद मानलीला का जो कारण पता चला, वह भी मूढ़ता का एक प्रमाण ही था। भैया परसो दोपहर को दफ्तर से अपने किसी मित्र के यहाँ खाना खाने गये थे। खाना खाने के बाद उन्होंने वहाँ गन्ना चूसा। दाँत मे गंडेरी का कुछ अंश फँसा रह गया था, उसको निकालने

के लिए उन्होने पास की मेज पर पडा एक हेयर-पिन उठा लिया। दाँत कुरेदने के बाद रुमाल के लिए जेब मे हाथ डाला, हेयर पिन जेब मे ही छूट गया। आज दोपहर को धोबी को कपडे देते समय भाभी साहब के हाथ वह हेयर-पिन लग गया। क्योकि भाभी हमेशा चोटी करती है, अतएव इस हेयर-पिन का सम्बन्ध उन्होने भैया की किसी प्रेमिका से जोडकर सन्देह का जो विष घोला, उसके फलस्वरूप, बेवफा, बेशरम, निष्ठुर, दगाबाज, अविश्वासी आदि न जाने कितने तो टाइटिल भैया को मिले और रो-रोकर भाभी की आँखे अलग कौसवी बनी।

ऐसी स्त्रियो से मेरा कहना है कि प्रेम-अधिकार, लडने और दोहाई देने से नही मिलता। वह तो सहज आकर्षण और उत्तम स्वभाव से मिलता है। किसी ने ठीक कहा है—

"उत्तम स्वभाव मेरा दुश्मन का मन रिझावे
वह देखते ही कह दे, तुम प्यारे के लिये हो।"

अगर जीवन-साथी कभी प्रलोभनो की ओर झुकता नजर आये प्रेम के वधनो से आप उसे और जकडे। आकर्षण को अधिक सजीव तथा मादक बनाये। अपने अभावो की भरसक पूर्ति करे, ताकि पुरुष मकडी के जाले के सदृश आपके गुणो के आकर्षण मे उलझा रहे और गुमराह होने से बचा रहे। इस कला मे निपुणता प्राप्त करना प्रत्येक स्त्री का कर्तव्य है। पति के गुप्त प्रेम का पता लगाने के लिए उनके खतो को पढना, छिपकर मित्रो की बातें सुनना, उनकी हरकतो और हलचलो का जानकारी के लिए खुफियागिरी करना, अथवा उनके जेबो की तलाशी लेना और अडोस-पडोस और सखी-सहेलियो से इस विषय मे सहयोग प्राप्त करना, बडी मूर्खता है। ऐसी बातो से कभी-कभी तो लेने के देने पड जाते है। अन्य पुरुष आपकी मूर्खता, भूल और

वैवाहिक जीवन की पोल-पट्टी को जानकर झूठी सहानुभूति दिखा, आपको गुमराह करने की चेष्टा करेंगे। पता लगने पर आप अपने पति का विश्वास

खो बैठेगी। ऐसी नासमझ स्त्रियाँ ही दूसरो की बातो पर झट विश्वास कर लेती है। यात्रा, खेल-तमाशो मे परिचित, दो-दिन के मुलाकातियो से घरोपा स्थापित कर अपनत्व दिखाने के लिए अपने घर के दुखडो का कच्चा चिट्ठा खोल बैठती है। लोगो की सहायता करनी और उन्हे नेक समझना बुरा नहीं है पर याद रखे अनावश्यक भेद खोलने और चर्चा करने की आदत अच्छी नही। इससे घर की इज्जत जाती है और आपका शील टूटता है।

बिना सोचे-समझे नकल करना, जेवर, कपडो की बेहद हवस, देखा-देखी मेले-ठेलो मे पैसे खर्चना नासमझी है। किसी अक्लमद का कहना है कि अगर किसी चीज की अधिक मशहूरी चाहिए, आप किसी स्त्री को उसे एक बार सस्ती बेचदे, उसकी देखा-देखी आपकी चीज मोहल्ले की सभी स्त्रियाँ खरीद लेगी। कोई चीज खरीदने से पहले अपनी जेब, आवश्यकता तथा समयानुकूलता अवश्य देखे। पहनना-ओढना तथा खाना-पीना और रस्मो-रिवाज अपनी आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और मानमर्यादा के अनुसार ही शोभा देते है। इस विषय मे भेडचाल चरितार्थ करना भूल है।

शिक्षा का यह अभिप्राय है कि पढ-लिखकर स्त्रियाँ स्वय को एक कर्तव्यपरायणा गृहिणी, और सहचरी बनाकर गृहस्थ-जीवन को सफलता-पूर्वक निभा सके। पति जो उपार्जन करे, उसका सदुपयोग करे, उसे जीवन मे प्रगति करने की प्रेरणा दे, अपने बाल-बच्चो की देख-भाल और पालन-पोषण ममता और कर्तव्य-निष्ठा की भावना रखकर करे। समाज मे अपनी मर्यादा बनाकर स्वय को यथाशक्ति उपयोगी नागरिक प्रमाणित करे। घरेलू जीवन की स्वतत्रता की ओट मे, किसी भी नागरिक को गृह-कलह और बुरे उदा-हरण द्वारा सामाजिक गदगी फैलाने का अधिकार नही है। स्त्रियो के ऊपर इस विषय की विशेष जिम्मेदारी है। अगर माता सच्चरित्रा है तो सन्तान सहज ही पवित्र आचरण वाली बन जाएगी। माता के चरित्र की छाप सन्तान पर पडनी अवश्यम्भावी है। इसीलिए नीतिशास्त्र मे कहा है कि व्यभिचारणी माता के सदृश सन्तान का अहित करने वाली और कोई नहीं है। चरित्र-हीनता मे निर्लज्जता, कर्तव्यहीनता, आलस, कलह-प्रियता, द्वेष-भाव, हिंसा-भावना, सकुचित मनोवृत्ति, छल-कपट, झूठ आदि सभी दोष आते है। इन सभी दुर्गुणो से चरित्र का पतन होता है।

स्त्रियो के प्रति असहनशीलता की भी बडी शिकायत सुनने मे आई

है। कटोक्ति द्वारा वे शत्रुता और कलह को बढाने की प्रायः मूर्खता करती है। अगर वे छिद्रान्वेषी वृत्ति को छोड कर, अनधिकार चेष्टा न करे, तो गृहस्थी की शान्ति वहुत कुछ बनी रहे। बात बढाकर कहना, चुगलखोरी करना, किसी की गुप्त बात का भण्डाफोड करना ऐसी मूर्खता करके स्त्रियाँ प्राय मुसीबत खडी कर लेती हैं। जो स्त्रियाँ निठल्ली रहती हैं वे ही ऐसे कारनामो के लिए प्रसिद्ध होती हैं। देखने मे आया है कि जहाँ चार

स्त्रियाँ मिलेगी या तो व एक दूसरे की निन्दा, चुगली और किसी का वहू-बेटी की आलोचना करेगी अथवा जेवर-कपडो की वाते छेड वैठेगी। अगर किसी नेक स्त्री ने कोई रचनात्मक कार्य करने के लिए कोई नारी-मण्डल या क्लब खोला है, वहाँ भी उसके साथ सहयोग देने के वदले, उल्टा उसकी आलोचना कर वना काम विगाडेगी। इसलिए स्त्रियाँ रचनात्मक कार्य मे तथा सामाजिक सेवा मे पूर्ण रूप से सफलता प्राप्त ही नही कर पाती। ऐसी नुकताचीनी करने वाली प्राय वे ही स्त्रियाँ होती है जिनमे हीनता की भावना होती और जो दूसरे की प्रशसा सुन और सफलता देख ईर्ष्या से जलती रहती है। उनके आपस के इन झगडो का कुफल पुरुषो को भी भोगना पडता है, उनके ऐसे कुसस्कार, असहनशीलता तथा कलह-प्रियता के कारण वे भी अपनी मित्र-मण्डली मे अप्रिय वन जाते है। व्यवहार मे ऐसी असावधानी मे ही घर की शान्ति नष्ट होती है।

इसके अतिरिक्त स्त्रियो मे विनोद-प्रियता का अभाव भी वहुत खलता है। अगर आप के चरित्र मे वल है, आप स्वय को धोखा नही देती, दूसरो के

मान सम्मान का ध्यान रखती है, तब किसी की मजाल नही कि आपसे अश्लील मजाक कर जाय। अगर कोई बेहूदा आदमी आस्तीन मे छिपा सॉप निकल भी जाय, आप समय रहते उसके दॉत उखाड डाले। याद रखे इस विषय मे अपने पति से छिपाव-दुराव नही होना चाहिए, यही आप की सच्चाई का प्रमाण है। साँच को आँच नही आती। किसी की झूंठी सहानुभूति या डरावे मे आकर अगर आपने पति से छिपाव-दुराव रखा फिर आप का आत्मबल चला जायगा। अपने पति से छिपाकर किसी से घनिष्टता न बढाये। पति-पत्नी दो शरीर होते हुए भी आत्म और मन के एक हो तभी प्रेम का सुखद, मोहक तथा अमरत्व रुप का अनुभव होता है। विचार की विषमता, आदर्शो तथा ध्येय की विभिन्नता आदि इस अमृत मे विसर्जन हो जाते है। आप दोना एक दूसरे के पूरक बन जाये। अगर आप की किसी न्यूनता अथवा भूल से आप के जीवन-सगी को झुँझलाहट या लज्जा उत्पन्न होती है, तो यह भी प्रेम की अधिकता का प्रमाण ही समझे। हम उसी व्यक्ति के लिए परेशान होते है और उसी की कमियो को देख लज्जित होते है जिससे हमे प्रेम हो, जिस के लिए हमे हमदर्दी हो, जिसे हम अपना समझते हो। फिर भला अपने हितैषी की बात का बुरा क्यो मानना ? मन मे गिठान क्यो पडने देनी ? कही-सुनी हो जानी स्वाभाविक है, पर मन मे मेल इकट्ठा न होने पाये, नहीं तो नासूर बन जायगा।

बहिनो से मेरा यही कहना है कि पति स्त्री का सर्वस्व है, प्रेमी है, मित्र है, अभिभावक है, रक्षक है, शृगार और सौभाग्य है, गुरु और पथ-प्रदर्शक भी है, अगर उसने कुछ ज्यादती भी की है, वह गलती पर भी है, आप मानवी से देवी बन उसको क्षमा करे। सोचे यह वह व्यक्ति है जिसको आपने सहर्ष अपना तन और मन समर्पण किया है। जिससे प्रेम और आदर पाकर आप आनन्द-विभोर हो उठी है। वह आप के प्यारे बच्चो का बाप है। ऐसे व्यक्ति को चाहे वह अपराधी भी क्यो न हो, प्रेम का तकाजा है कि आप को क्षमा करना ही पडेगा। परमात्मा की सृष्टि की सर्वोत्तम रचना है नारी। जो स्त्री अपने नारीत्व का अभिमान करती है वह कठोर हो ही नही सकती। क्षमा, दया और सेवा तथा सत्य यही उसकी चतुर्भुजा है। अगर किसी स्त्री की मूर्खता तथा कठोरता के कारण किसी नेक सदाचारी और कर्तव्यपरायण पति का जीवन दुखी बन रहा है, तो उस स्त्री का जीवन निष्फल है। रूप,

विद्या, धन तथा अधिकार पाकर भी उसके सदृश दिवालिया और कोई नही है।'अपना नारीत्व, पत्नीत्व और मातृत्व लुटाकर आज वह कगालिन है। आजकल गृहस्थ-जीवन की कठिनाइयो और सामाजिक सघर्षो तथा महंगी की भयानकता को देखते हुए जीवनयापन दुरुह हो गया है। इस समय प्रत्येक नारी का यह कर्तव्य है कि सिहावलोकन कर अपनी पिछली भूलो को सुधारे, भविष्य को प्रगतिशील और सुन्दर बनाये। पालने का बालक कल का नागरिक है, उसका उत्तरदायित्व उसी पर है। गृहस्थी मे निराशा, अभाव, तथा असफलता नारी के ही प्रयत्न से दूर होगी। कर्तव्य की ओर नारी के जागरुक होने से ही गृहस्थाश्रम प्रगतिशील होगा।

महात्मा गाधी के शब्दो मे—'स्त्री पुरुष की अपेक्षा किसी भी रूप मे कम श्रेणी की नही है, परन्तु केवल इसी कारणवश वह यदि पुरुषो की समानता करना चाहेगी तो उसे अपने स्त्रीत्व को भूलना पडेगा। स्त्रियो को पुरुषो की बराबरी करना यानी प्रकृति द्वारा वितरित मातृत्व के कर्तव्य को भूलना नही चाहिए।

स्त्री का जीवन त्याग पर उभरा है। वह जितने सहज रूप से त्याग कर सकती है, उतना पुरुष नही कर सकता है। कौमार्य अवस्था मे वह माँ-बाप की सेवा करती है, तरुण अवस्था मे पति की और वृद्धाकाल मे पुत्रो की। सेवाधर्म मे स्त्री की बराबरी कोई पुरुष नही कर सकता। कल के आने वाले ससार मे—भविष्य मे—स्त्री ही अधिक प्रभावशाली होगी।'

६. हार में जीत

पुरुष के जीवन मे हलचल मचाने वाली, उसको पद-पद पर प्रेरणा देने वाली और महान बनाने वाली शक्ति यदि कोई है तो वह है स्त्री। पुरुष

और स्त्री पारस्परिक उदारता और सहनशीलता से अपने परिवार को स्वर्ग बना सकते है। देखा गया है कि नारी वधू बनने से पहले स्वप्नो की दुनिया मे खोई रहती है और विवाह के कुछ साल बाद ही वह ऊब जाती है, आए दिन उसकी अनबन रहा करती है और वह घर को नरक बना देती है।

विवाह के कुछ साल बाद ही जब प्रेम का प्रवाह एक स्थिर गति मे चलने लगता है तो अधिकाश पत्नियाँ प्रेम के तीव्र खुमार के दूर होने पर निराशा से भर जाती है। उनके मन की उमगे एक असन्तोष और खिन्नता

से दब-सी जाती है। और उनकी यह आम शिकायत होती है कि पुरुष में प्रेम की सजीवता और आवेग क्षणिक है। अब उनमे पहले की-सी बात नही, वे मुझ से कुछ रूठे से, कुछ खिचे से रहते है। अब उनका वह चुहलपन और भावुकता सब सपना हो गई। मेरी ओर ध्यान देने की भी उन्हे फुरसत नही मेरे मन मे ठेस लगा कर उन्हे इसका ख्याल भी नही होता। कभी-कभी बिना बात अचानक रुखाई से उत्तर दे देते है। बस वे तो कह कर जल्दी मे चले जाते है, चाहे यहाँ हम दिन भर भुनते रहे। हमारा दर्द किसने समझा है ? जिन्दगी बहुत दु खी है, इत्यादि शिकायते पत्नी की इकट्ठी होती जाती है। शनै -शनै यह मैल इकट्ठा होकर एक नासूर बन जाता है और बीबीजान का नाजुक मिजाज सप्त सुर पर ऐसा तन जाता है कि मामूली-सी बात को वह बतगड बनाकर लडने लगती है। अपनी भूल और गलती के कारण ही उनकी हार होती है, बस वे रोना शुरू कर देती है।

आये दिन घरो मे इस प्रकार की अनबन हो जाती है। भावुक और नाजुक-मिजाज स्त्रियाँ यह भूल जाती है कि पुरुष वास्तविकता को अधिक पसन्द करता है। हमेशा सुनहले सपनो मे खोये रहना उसके लिए सम्भव नही। उसके सामने रोटी की समस्या है। वह विवाह करके केवल खेलने के लिए एक गुडिया ही नही लाया, परन्तु दु ख-सुख समझने वाली एक सहचरी लाया है। वह आपसे यह उम्मीद करता है कि सामाजिक मान-मर्यादा बनाये रखने मे आप उसे पूरा सहयोग दे। एक चतुर गृहिणी के कर्तव्य को समझती हुई, गृहस्थी की चिन्ताओ से उसे दूर रखे। एक मित्र के सदृश उचित परामर्श देकर उसी की मुसीबतो को सुलझाये। एक प्रेमिका के सदृश उसका मनोरजन करे। पुरुष विवाह करता है, जीवन को सुखी और सफल बनाने के लिए। पत्नी और बाल-बच्चो के सुख के लिए यथाशक्ति वह अधिक उपार्जन करने की चेष्टा करता है। पत्नी की आर्थिक समस्या को वह भरपूर सरल बनाता है। पति से बाल-बच्चे, घरबार, धन-दौलत, मान-मर्यादा पाकर भी अगर स्त्री अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक नही होती तो फिर भला वैवाहिक जीवन कैसे सुखी हो सकता है ?

आप अपनी ही शिकायतो की गठरी अकारण ही बडी करती जा रही है, क्या कभी उनके मलाल को समझने की भी चेष्टा की है ? गृहस्थ-जीवन को सुखी बनाने का श्रेय और कटु बनाने का दोष दोनो ही पत्नी को जाते है।

अगर कर्तव्यशील पुरुष का जीवन दुखी है, तो इससे अधिक लज्जा की बात स्त्री के लिए हो ही नही सकती। ऐसी असफल गृहिणी अपने मन को टटोले कि क्या उसने अपने कर्तव्य की उपेक्षा कर अपने स्वामी के हृदय को ठेस नही पहुँचाई ? क्या उसने इस बात को जानने को चेष्टा की है, कि उसके पति की रुचि किस ओर है ? उनको किस ढग से पहिनना, ओढना, बातचीत करना पसन्द है ? उनका आदर्श तथा उद्देश्य क्या है ? वे किस विचारधारा के है ? कौनसा रङ्ग, कौनसा कवि या लेखक, किस प्रकार की सजावट, कौन सी कला, कैसा भोजन आदि उन्हे रुचिकर है ?

आप यह याद रखे पुरुष स्त्रियो से अधिक मितभाषी, साथ ही एक हद तक अधिक उदार है। वे एक दो बार तो सकेत से आपकी गलती जता देते है। अगर आप समझदार है आपको दोबारा कहलाने का मौका ही नही आयेगा। दो-चार बार कहने पर भी जब वे देखते है कि आप उनके दृष्टि-कोण को समझने की चेष्टा न कर असहयोग ही दिखाती है, तब सम्भव है कि वे कहना ही छोड दे, फलस्वरूप मनमुटाव बढता जायगा।

आप सोचती है, मै इतना काम करती हूँ दिन भर सेवा मे तत्पर रहती हूँ, यहाँ तक उनके आने पर भी मेरा काम खत्म नही हो पाता, तिस पर भी उनकी त्योरियाँ चढी रहती है, भला क्यो ? चौबीस घन्टे गृह-कार्य मे व्यस्तता आपके लिए गौरव की बात होगी परन्तु उनको इससे चिढ है। वे जब आपके काम को इतना बिखरा हुआ देखते है, इसके विपरीत अपने मित्र की पत्नी को जिसके पास दो बच्चे भी है गृहकार्य को समय पर समाप्त कर पति के सग घूमते-फिरते देख, आपके पति आपको फूहड और निकम्मी गृहिणी समझते है। हरेक काम का समय होता है, अति हरेक बात की बुरी होती है।

शाम को जब कभी भी पति के मित्र सपत्नीक आपके यहाँ आते है, आप गुसलखाने या चौके मे अस्त-व्यस्त वेशभूषा मे बैठी रहे फिर भला आपको वहाँ बुलाने मे उन्हे सकोच नही होगा ? बार-बार समझाने पर भी आप मे सुथराई और सुघडाई का अभाव देख वे आप से विरक्त हो जायँगे। आपके फूहडपने मे उनकी मान-मर्यादा भग होती है। आपके पास सन्दूकों कपडे भरे पडे है, उन्होने शृगार-साधन जुटाने मे कोई कसर नही रखी, फिर भी आपकी वेशभूषा मे हमेशा न्यूनता रहे, फिर भला उन्हे आप से भला

क्यो न होगा ? वे आपको देख नाक-भौं क्यो न सिकोडेगे ?

आपकी नाजुक मिजाजी—

वात यही नही खत्म होती, आपका नाजुक मिजाज एक और काटा है जो हमेशा चुभता रहता है। किसी ने जरा भी मजाक की कि आप तुनक पडी। गुणहीना स्त्रियो मे हीनता की भावना उन्हे ऐसी कचोटती रहती है कि किसी की प्रशसा सुनी नही कि उनका मन मुरझा जाता है। चाहे कोई आम चर्चा ही क्यो न हो, वे उसे अपने ऊपर किया गया आक्षेप ही समझेगी। विनोद-प्रियता की भावना का अभाव होने के कारण न तो उन्हे अपनी ही वात-चीत से किसी का मनोरजन करना आता है, और न ही दूसरे के खिल-खिल-खेला की वे दाद ही दे सकती है। उनकी कुढन और नाजुक-मिजाजी पति के जीवन को नीरस वना देती है। वेचारा पति क्या करे ? अगर चुप रहे तो उसे निष्ठुर, नीरस, उदासीन आदि उपाधियाँ मिलती है अगर कुछ वोले तो उल्टा मन-मुटाव वढता है।

इसलिए देखने मे आया है कि कई एक विवाह इस नाजुक-मिजाजी के कारण भी असफल हो जाते है। प्रसन्न-वदना, सुहासिनी, प्रियवादिनी, पत्नी एक सफल सहचरी है, अगर यह वात प्रत्येक स्त्री की समझ मे आ जाय तो उसकी वहुत सी न्यूनताएँ छिप जायँ।

कई स्त्रियाँ अपने पति के विषय मे दस जनो के वीच मे यह वात वडे गौरव से कहती है कि अगर मै उनकी देखभाल न करूँ तो मालूम नही इनका क्या हो, ये वडे वैसे वेपरवाह, गन्दे, भुलक्कड, सुस्त, भोले न जाने क्या-क्या है।

मनुष्य छुटपन मे माँ की, कुछ वडे होकर वहिन की, और विवाह के वाद स्त्री की देख-भाल का सहारा ढूंढता है। समझदार स्त्री इसे अपना सहज कर्त्तव्य समझती है और इस मे उसे आनन्द आता है। सुविधा पाकर मनुष्य अपनी देखभाल का भार स्त्री पर ही डाल देता है, पर उसका यह मत-लव कभी नही है कि मनुष्य अपनी देखभाल करने मे नितान्त असमर्थ है। अगर स्त्री सेवाभाव को छोड कर एक सुधारक का रुख अख्तियार करती है तो यह उसकी भूल है। आदते मनुष्य का स्वभाव वन जाती है। उनका छोडना जरा कठिन हो जाता है। विशेषकरके वडे होकर। अगर स्त्री कडाई के साथ पुरुष की किसी आदत की आलोचना करती है तो वह अपने कार्य मे

कभी भी सफल नही हो सकती। पुरुष सोचता है यह मेरा घर है कि का रिफार्मेटरी स्कूल। वह अपनी बुराइयो को छोडने के बदले प्रतिक्रिया स्व और दृढता से उन्हे दोहराता है। स्त्री खिसियानी होकर उसकी उपेक्षा करती है। बस घर की शान्ति नष्ट होते देर नही लगती।

चतुर पत्नी आलोचना न करके बुरी टेव को छुड़वाने मे सहयोग देती है, उनकी चेष्टाओ को देख प्रशसा से प्रोत्साहित करती है। आप माता-सी उदारता दिखाएँ, पुरुष एक बालक के सदृश अपने बल और अधिकार को भूल आपका आज्ञाकारी बन जायगा। समय देखकर उनकी बेपरवाही पर

आप एक प्रेम-भरी झुँझलाहट दिखाये, एक मीठी झिड़की देकर पीठ पर थपकी मार, एक अदा के साथ निहोरा देकर कहे—'जाओ हमे अच्छा नहीं

लगता, इतनी बार कहा आप फिर भी समझते नही, भला इतना भी क्या परेशान करना ! जाने दो अब नही कहेगे।' आपका इतना कहना होगा कि वह लपककर आप को मनाने उठेगे—'अच्छा अब की माफ करदो। अब फिर ऐसा नही करूँगा। भूल हो गयी, आदि खुशामद-भरी वाक्यो की झडी लगा देगे। आँख मे आँख डालकर आप कहे—'अच्छा याद रखना अब के माफी नही मिलेगी।' और हँसकर चाहे चपतियाँ तक दे पर मजाल है वे गुस्सा कर जावे। सच मानिये पुरुषसिह इसी प्रकार काबू आते है।

यथाशक्ति चेष्टा करने पर भी अगर आप से कोई काम बिगड गया है अथवा कोई कमी रह गई है, उस समय अगर उनको क्रोध आ जाय, आप विनम्र हो जायँ, अपराध को छिपाने के लिए छल-कपट के जाल मे मत उलझे न ही अपनी बात को सच प्रमाणित करने के लिए बहस करे, इन बातो को पुरुष पसन्द नही करते। गलत रास्ता पकड अपने आपको और भी मुसीबतो मे डाल देगी।

अपने पति की बुराई और परस्पर के लडाई-झगडो की चर्चा अपने सगे-सोई या सहेलियो मे करना भूल है। पति-पत्नी के बीच तीसरे व्यक्ति का आना सन्देह उत्पन्न करता है। अगर कभी समझाने-बुझाने का अवसर आये भी, तो ऐसे व्यक्ति को बीच मे डालना चाहिए जिस पर आप दोनो को भरोसा हो, जो आपका सच्चा हितैषी हो, साथ ही पूर्ण सहानुभूति और पक्षपात रहित ढग मे दिया हुआ जिसका निर्णय आप दोनो को मान्य हो। अधिकाश स्त्रियाँ कानो की कच्ची और सिखावट मे जल्द आने वाली होती है। कई मूर्ख पडोसिने दूसरो के घर मे लडाई कराने का समय ही ढूँढती रहती है। अगर आपके पति को आपका किसी मे मिलना-जुलना नागवार लगता है, उनसे छिपकर अपनी मेल-मुलाकात मत बढाएँ। आप दूसरे पुरुषो की प्रशसा करते समय अपने पति की उनसे तुलना करके पति को हीन प्रमाणित करने की भूल कभी भी न करे। इससे पति के आत्म-सम्मान को चोट पहुँचती है। और सभव है उस मनुष्य की ओर आपका आकर्षण उन्हे फूटी आँख न सुहाये और अकारण सन्देह उत्पन्न करदे।

इस प्रकार जब आपके प्रति किसी अन्य स्त्री के गुण और रूप की प्रशसा करते है, आप ईर्ष्यालु न हो उठे, इसके विपरीत प्रतियोगिता की भावना लेकर आप भी उन गुणो मे श्रेष्ठ होने की चेष्टा करे। स्त्री का

आकर्षण उसका स्त्रीत्व है। अपनी सुरुचिपूर्ण वेशभूषा, वाक्यपटुता, गृहकार्य-दक्षता, शीलता, विनम्रता, सच्चरिता और उदारता आदि गुणों से एक मामूली स्त्री भी एक रूपगर्विता नारी को प्रतियोगिता में सहज ही पछाड सकती है। कोई स्त्री अति रूपवती होकर साथ ही सोलह कला पूर्ण भी हो ऐसे उदाहरण बहुत कम देखने को मिलते है। रूप नाशवान है जब कि गुण स्थायी है। रूप का आकर्षण क्षणिक है। पति गुणों का दास हो जाता है। आप उसके बच्चों की माँ है, उसके दुख-सुख की साथी है, एक ही पथ

के आप दोनों पथिक है। उसकी जीवन-सगिनी, गृहिणी, सखी, इज्जत, आबरू सभी कुछ आप ही है, यह बात कोई भी समझदार पुरुष नहीं भूल सकता। एक कर्तव्यपरायणा, सुरुचिपूर्ण मधुर-भाषिणी स्त्री का अपमान कोई पति करता है, उसके सदृश ससार मे कोई अभागा नही। यह सरासर घर पर आई लक्ष्मी के अपमान करने के सदृश है।

प्रेम-प्रदर्शन मे आप निपुणता प्राप्त करे प्रत्येक माता का कर्तव्य है कि इस विषय मे अपनी कन्या को पटु बनाए। अवसर पर पुरुष प्रदर्शन का

इच्छुक है। अपने हाव-भाव, स्पर्श और वाक्यपटुता से पति के मन को रिझाए रखे। जिससे आपके रमणी-रूप का सुन्दर आकर्षण उसे विमुग्ध करने मे सफल हो सके और आपके प्रेम की तीव्रता, उष्णता, आवेग और स्निग्धता उसे जिन्दा-दिली का अनुभव कराती रहे। जीवन मे नवीनता, रोचकता तथा आकर्षण बनाये रखना आपका कर्तव्य है। मनुष्य कभी भी वृद्धत्व और उदासीनता अनुभव नही करता, अगर पत्नी उसके सुनहले सपनो को साकार बनाये रखने मे क्रियाशील रहे। उसे उन्नति पथ की ओर बढाने के लिए स्फूर्ति और उत्साह की आवश्यकता है। वह आप से इस प्रोत्साहन की उम्मीद करता है। सफल और ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक, चित्रकार, कलाकार वैज्ञानिक, राजनैनिक, त्यागी और वीर देशभक्त जितनी भी महान विभूतियाँ ससार मे हुई है उन सब के जीवन मे उनकी पत्नी अथवा प्रेमिका का प्रोत्साहन और प्रशसा ही प्रेरणा का स्रोत रहा है। प्रत्येक मनुष्य प्रशसा का भूखा है। अगर पुरुष को अपनी स्त्री या प्रेमिका से यह सजीवनी मिल जाय तो उसकी परम सतुष्टि होती है, इस बात को एक चतुर पत्नी हमेशा याद रखती है।

भगवान ने स्त्रियो को एक तात्कालिक निर्णय करने और किसी स्थिति को भाँप कर उसके अनुसार ही काम करने की सहज-बुद्धि और व्यावहारिक कुशलता दी है, अगर कोई नारी इसका सदुपयोग करना जानती है तो उसे अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाने में कभी भी असुविधा नही होगी। जब कभी आपका मन असतोष और असफलता की कटुता से भर जाय, आप विवेक का सहारा लेकर दूरदर्शिता से काम ले। अपनी समस्याओ को शान्त मन से सुलझाने की चेष्टा करें। सारा दोष पति के सिर डाल देने से कठिनाइया हल नही होगी। अपने व्यवहार की भी पक्षपातरहित आलोचना करे, अगर आप की ओर से न्यूनता हो, कर्तव्य की उपेक्षा की गई हो तो अपनी भूल को सुधारे। मनुष्य के जीवन मे सीखने और तरक्की करने की सर्वदा गुजाइश रहती है।

जब दो दिल मिले हुए हो, परस्पर का मलाल एक दूसरे से छिपा नही रहता। मैं क्यो मनाऊँ, कसूर तो उनका है, हमेशा ही दबाते रहते है, यह अन्याय है, आदि दलील देकर चाहे आप अपना सतोष कर ले, पर इससे बात सुलझती नही है। अगर आप का दोष नही है तब भी आप ही

दब जायँ। क्षमाशील ही महान होता है, नमनेवाली और लचकवाली डाली ही दो टूक हो जाने से बच जाती है। स्त्री भगवान की सृष्टि की सर्वोत्तम रचना क्यो मानी गई है—अपने गौरवशाली त्याग और सेवा के कारण ही। आप बच्चो की माँ है, गृहिणी है, यही आपका सबसे बडा बल और अधिकार का आधार है।

अगर वे अकारण ही रूठ गये है तब भी आप ही मना ले। जब उनका कोप शान्त हो चुका हो, प्रतिक्रिया रूप मन खिन्नता और अवसाद से भरा हो, उस समय बहस करनी व्यर्थ है। भोजन करने के पश्चात्, दिनभर के काम की चिन्ताओ से मुक्त जब वह स्वस्थ चित्त हो, आपने अपनी सेवाओं से उन्हे उस दिन विशेष रूप से अनुगृहीत किया हो, आप सस्नेह उनकी पीठ पर एक हाथ रखकर और दूसरे हाथ मे उनका हाथ लेकर आँखो मे प्रेम और करुणा भर पूछे—'क्यो रूठ गये साजन' ?

वे उलाहना देगे, आप को अपराधी प्रमाणित करने की चेष्टा करेंगे, आप सुने, चुपचाप सुनें। जब वे सब कुछ ;कह कर अपना दिल हलका कर चुके हो, सक्षेप मे अपना दृष्टिकोण उनके सामने विनम्रता से रखे। सच मानिये, चाहे दोनो मे से विजय किसी की भी हो, परन्तु समझदार व्यक्ति सच्चाई के आगे घुटने टेके बिना नही रह सकता। रात की निस्तब्धता में तारो की छाया में, दो दिलो मे गाँठ देर तक पडी नही रह सकती। आप की चतुराई से यह मान-लीला कुछ देर मे ही समाप्त हो जायगी। नये आवेश और प्रफुल्लता से भर कर दो दिल फिर जल्दी ही मिल जायेंगे। इसी मेल मिलाप और समझदारी मे ही गृहस्थी का कल्याण व्याप्त है। आपकी विनम्रता चतुराई गृहस्थी की सुख-शान्ति बनाये रखने मे समर्थ होगी। याद रखें आपकी इस सुन्दर हार मे ही जीत छिपी है।

१०. साँझ भई घर आवो, साजन !

पुरुष स्त्री को घरबार और समाज मे मान-सम्मान देता है। पत्नी न केवल उसकी कमाई पर, परन्तु उस पर भी आधिपत्य जमा लेती है। पति उसे अपने दिल की रानी, अपने बच्चो की माँ और घर की मालकिन बनाता है। पत्नी को अपना सब कुछ सौपकर बदले मे वह भी तो कुछ चाहता है, इसको समझने और उस अनुसार करने की चेष्टा करना प्रत्येक पत्नी का धर्म और कर्त्तव्य है। पुरुष दिन भर दफ्तर, कारखाने अथवा दूकान या खेत पर काम करता है। मानसिक एव शारीरिक परिश्रम करके वह थककर चूर-चूर हो जाता है। जीवन-सघर्ष मे उसे मान-अपमान सभी सहना पडता है। अपने अफसर की डाँट और धाँधली को वह इसलिए चुपचाप सह जाता है कि उसकी नौकरी पर ही उसके बच्चो का पालन-पोषण और स्त्री का आराम निर्भर है।

थका-हारा, मानसिक चिन्ताओ से चूर मनुष्य जब घर की ओर कदम उठाता है, वह सोचता है—'मेरा घर! मेरा प्यारा घर, जहाँ मेरी प्यारी पत्नी जो मेरे आराम का ध्यान रखती है, मेरे लिए इन्तजार कर रही होगी। दिन भर के कामो से वह भी परेशान होगी, पर अपनी तकलीफ भूलकर, बच्चो को किसी प्रकार सन्तुष्ट कर, फुसलाकर बाहर भेज, द्वार पर खडी वह मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी। मुझे देखते ही वह मधुर मुस्कान से मेरा स्वागत करेगी। हाथ बढाकर मेरे छाते और फाइलो के बडल को लेकर एक ओर रख देगी। पखा लेकर झलेगी, मेरी थकावट को दूर करने के उपाय करेगी। चाय-पानी पीने के पश्चात्, जब मै कुछ स्वस्थ होऊँगा और दिन भर

की आप बीती कहानी सुनाऊँगा, वह सहानुभूति और सान्त्वना देकर, मुझे ढाढस बँधायेगी, एक सच्चे मित्र के सदृश कुछ सलाह भी देगी, अन्त मे हास्यविनोद म चिन्ता के ये बादल उड जायँगे और फिर

माता की-सी सेवा, बहिन की-सी कल्याण-कामना, और मित्र की-सी सहानुभूति तथा प्रेमिका की सी लग्न जिस पुरुष को अपनी स्त्री मे मिल जाय उसके भाग्य पर तो ससार के सभी सौभाग्य न्यौछावर है। स्त्री का आकर्षण पुरुष के लिए बहुत तीव्र है। बडे-बडे ज्ञानी और पराक्रमी तथा धनी इसके आगे हार मान गये है। अगर यह आकर्षण अपनी पत्नी की ओर हो तो गृहस्थ-जीवन स्वर्ग सदृश है। अगर नारी अपने आकर्षण का सदुपयोग करना जानती है, वह पुरुष को अपने रूप-गुणो से विमोहित कर अपना दास बना सकती है। पुरुष पर विजय प्राप्त करने का सहज तरीका है, सेवा और प्रेम से उसे अपने वश मे करना। आप इस की परीक्षा कर देखें। वह हाथ बाँधे आपकी कृपा की चाहना करेगा। पर यह याद रखें पुरुष आपको दासी के रूप मे नही स्वामिनी के रूप मे देखने का इच्छुक है। आप दिन भर घर के धधो में ही फँसी हुई या बाल-बच्चो मे ही उलझी हुई है, आपकी वेशभूषा आपके फूहडपन का द्योतक बन, आपके स्वाभाविक रूप को भी छिपाये हुए है, आपके कपडो से हीग और मसालो की गध ही आ रही है। आपको ऐसी दशा में देख पति एक उसास खीचकर एक ओर मुँह फेर लेगा। आपके हाथ के बने सुस्वादु भोजन को खाते समय उसके नेत्र कृतज्ञता और प्रेम का सदेश लिये आपकी ओर नही उठेगे। शाम को भी आपको रसोई या बच्चो मे व्यस्त देख, वह सुहावनी सध्या मे भी सूनापन अनुभव करता हुआ, सडक पर सजी हुई, मदयौवना युवतियो के साथ जाते हुए पुरुषो को देखकर उदास हो जायगा। उसे उन प्रेमी दम्पतियो के भाग्यो पर ईर्ष्या होगी। अपने अधूरे अरमान

उसे कराहते हुए लगेंगे। इस सबके लिये आप ही दोषी है।

क्योकि प्रत्येक पत्नी के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने पति की रुचि, आवश्यकताएँ, ढग तथा आदर्शों को समझने की चेष्टा करे। एक पुरुष को शाम को क्लब जाना रुचिकर लगता है, जबकि दूसरे को नदी के किनारे प्राकृतिक दृश्यो की शोभा निहारने तथा पत्नी के सग घूमने मे आनन्द आता है। जिस मनुष्य को दिन भर शारीरिक परिश्रम करना पडा है उसे शाम को जलपान करने के पश्चात एकान्त मे आराम-कुर्सी पर बैठकर अखबार पढना अच्छा लगता है। चतुर गृहिणी पति के घर वापिस आने से पहिले बच्चो और घर की सफाई तथा नाश्ते का प्रबन्ध करके, अपनी वेशभूषा सुधार, बच्चो को बाहर भेज, स्वय पति के स्वागत के लिए उत्सुक रहती है। थका-हारा पुरुष बच्चो का कोलाहल और स्त्री की शिकायते सुनने के लिये तैयार नही होता। जब तक पति स्वस्थ न हो जाय, उसका रुख अनुकूल न हो, घर की शिकायतो और तकाजो से उसे कभी परेशान न करे।

पति का मनोरजन करना आपको आना चाहिए। अगर आपको गाना
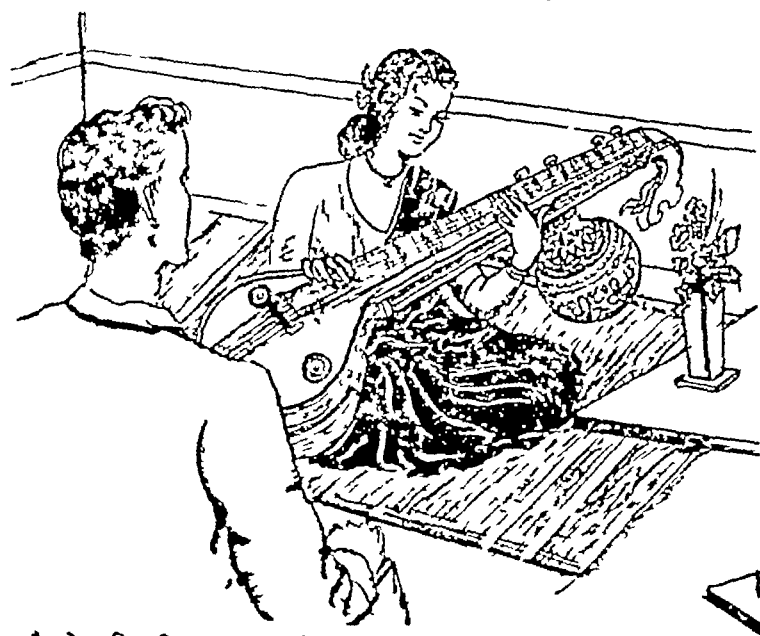
आता है तो पति की थकावट और उदासी को दूर करना आपके बायें हाथ का खेल है। उमरख्याम की तरह कितने ही पुरुषो ने यह सुखद कल्पना की है—'काश इन रगीन सुहावनी सध्या मे, किसी पेड के नीचे, कुछ खाने-पीने

की सुविधा जुटा, अपनी प्रिया के साथ कुछ काव्य-चर्चा करने का सुअवसर मिलता ! क्या ही अच्छा होता अगर इस सन्नाटे मे वह मधुर रागिनी गाकर मेरे हृदय की सोई हुई तन्त्रियो को झंकृत कर देती, तब तो इस भूतल पर ही मेरे लिए स्वर्ग उतर आता ।'

क्या आपने कभी इस रगीन सपनो को सजीव बनाने की चेष्टा की है ? आपकी बातचीत का ढग, आपकी भाव-भगिमा, वेशभूषा, आपका सुखद स्पर्श सभी इन सपनो को सजीव बनाने मे क्रियाशील होने चाहिये । पुरुष कभी भी बूढा या हारा हुआ सा अनुभव नही करता, अगर कोई उसे प्यार करके बढावा देने वाला हो जिससे उसमे जिन्दा-दिली बनी रहे । तभी न किसी ने ठीक कहा—'जिन्दगी जिन्दा-दिली का नाम है ।' पर पति को जिन्दादिल बनाये रखना पत्नी पर निर्भर है ।

जीवन सघर्ष से चूर, निराशा और अवसाद से भरे पति के मन मे नवजीवन सचार करना पत्नी का ही कर्तव्य है । अगर आपके पति को ताश, कैरम अथवा चौसर या कोई अन्य खेल खेलने का शौक है, आप भी खेल मे निपुणता प्राप्त करे । अगर बागवानी अथवा पशु-पालन मे उसकी अभिरुचि है तो आपका सहयोग मिलना बहुत आवश्यक है । सच्ची जीवन-सगिनी आप तभी है जब उसके प्रत्येक कार्य मे आप हाथ बटा सके ।

अगर सुबह काम पर जाते समय वे आप से कह गये है कि आज अमुक जगह शाम को जाना है, तैयार रहना, आपको चाहिए उस दिन सब काम जरा जल्दी ही निबटा कर, यथा समय तैयार हो जायँ । उनके आने पर यह समस्या न खडी हो कि कौन सी साडी पहनूँ ? ब्लाउज और जूते साडी मे मैच करते हुए नही है । मै कैसे जाऊँ ? क्योकि पहिनने लायक कोई पोशाक ही मेरे पास नही है । आपकी वेश-भूषा साफ सुथरी और रुचिकर होनी चाहिये, तडक-भडक वाली नही । आप जहाँ जायँगी आपका व्यक्तित्व तथा वाकपटुता और शीलता से समाज प्रभावित होगा । तडक-भडक और शोखपन, अभद्रता और ओछेपन का द्योतक है । अपने वस्त्रो, जेवरो के कारण पति को कभी परेशान न करे, विशेष करके जब कि वह कही जाने की जल्दी मे हो या थका हारा बाहर से आया हो । प्रियवादनी, प्रिय भार्या को पति से कुछ भी प्राप्त करना कठिन नही है, पर अवसर देख कर फरमाइश करनी चाहिए ।

पति के मित्रो का आप घर आने पर उचित सम्मान करे। शाम को अगर वह अपने मित्रो को साथ मे ले आये हैं, आप अचानक आये मित्रो को देख माथे पर त्योरी न डाले। घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं, ऐसे अकस्मात् प्रबन्ध मे न्यूनता क्षमनीय है। आतिथ्य सत्कार मे खान-पान के विषय मे कुछ कमी भी हो तो मधुर वचनो मे उसकी पूर्ति की जा सकती है। अधिकाश मित्र मान के भूखे होते है, खान-पान के नही। स्त्री की व्यवहार-कुशलता पर ही पति की लोकप्रियता निर्भर है।

पति घर से ऊब क्यो गये है ?—

कई स्त्रियो की शिकायत होती है कि उनके पति काम पर से सीधे घर ही नही आते, अगर आते भी है तो शाम बाहर ही गुजारते है। इस विषय मे बहुत अशो मे स्त्रियाँ ही दोषी है। उनमे आकर्षणशक्ति कम है। जब उनके पति अपने मित्रो की पत्नियो से अपनी पत्नी की तुलना करते है, वे उन्हे बहुत पिछडी हुई पाते है। सिखाये जाने पर भी वे कोई नई बात सीखने की चेष्टा ही नही करती। उनकी बातचीत, वेशभूषा, भाव-भगिमा सभी फूहडपन की द्योतक है। उनका घर गन्दा, बच्चे गन्दे, वे स्वय गन्दी। व्यवस्थाप्रिय पति उनकी ऐसी अव्यवस्था देख चिढ जाता है। शाम को

प्रायः-हारा वह घर जाने की अपेक्षा किसी होटल मे ही चाय पीना पसन्द करता है। बचा हुआ समय भी वह किसी क्लब या मित्रो के सग गुजारता

अच्छा समझता है। घर मे उसके लिए क्या है? कुछ भी तो नही। मुँह सुजाकर जली-कटी सुनाने को तैयार वीवी और आपसमे लडते-झगडते वच्चे! समय पर उसे अपना तौलिया या साबुन भी नही मिलता। पायजामे या धोती का पता नही कि कपडो के किस ढेर के नीचे दबे पडे है। चप्पल का एक पाव है, एक गायब। अगर वह अपनी स्त्री को इस बेपरवाही के लिए कुछ कहने को मुँह खोलने का साहस करता है, फौरन जवाब मिलता है 'बडे धनकुबेर आये है जिनके लिए द्वार पर लौंडी बन कर खडी रहूँ! एक तुम्ही काम करके नही आरहे हो, हम भी यहाँ दिन भर गृहस्थी की चक्की मे पिसते रहे है। सिर अलग दुख रहा है, हमारा दुख-सुख किसने समझा है।' एक बार उनकी यह बडबड शुरू हुई कि फिर जल्द बन्द ही नही होती। बेचारा पति इस छत्ते को न छेडने मे ही अपनी कुशल समझता है। अपने से भी कम आमदनी वाले मित्रो के घर की सुव्यवस्था देख उसे अपनी किस्मत पर रोना आता है, घर उसके लिए एक बवाल है। थका-हारा पति का हृदय,
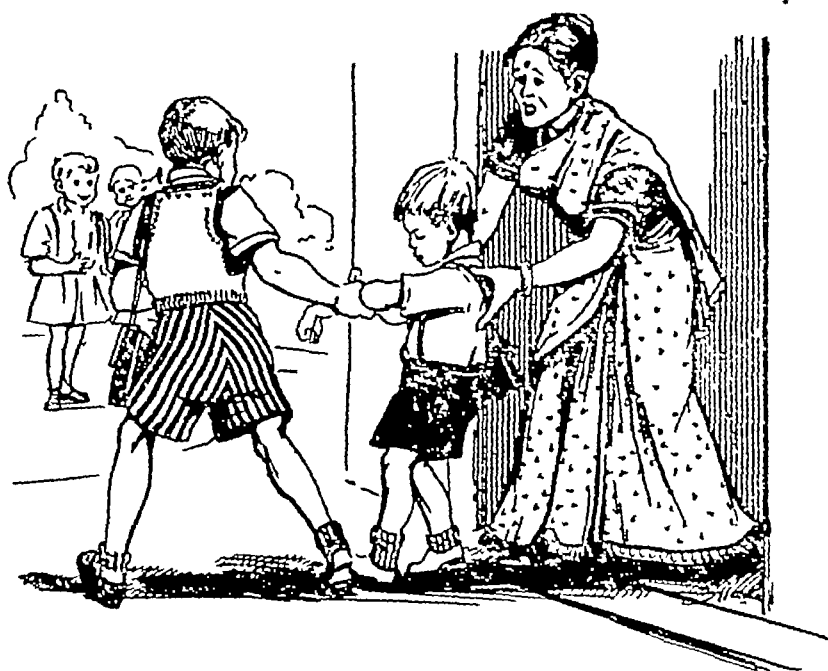
स्त्री के इस निर्मम और कर्कश व्यवहार की कटुता से घुनता ही रहता है। उसका मन उदासी से भर जाता है, भोजन रुचिकर नही लगता। पत्नी से

बात करने का उसका मन नही करता, बच्चे उसके मन को खिलाते नही। वह सोचता है क्या मैं इन्ही के लिए दिन भर मरता हूँ ? अपने जीवन और स्वास्थ्य का बलिदान क्या इस स्वार्थी स्त्री और निकम्मे बच्चो के लिए करना भूल नही है ? देखता हूँ कि पढाई की सब सुविधायें जुटा देने पर भी पढने मे किसी की रुचि ही नही है। माँ बच्चो की देखभाल ठीक से नही कर पाती। धकेल-धकेल कर उन्हे स्कूल भेजा जाता है। घर मे अशान्ति और अव्यवस्था फैली हुई है। जिस दिन से ब्याह हुआ है जान मुसीबत मे फस गई है। पर इनसे छुटकारा कैसे ? यह तो गले पडा ढोल है, बजाना ही पड़ेगा। लाचारी ! हाय लाचारी !

इसके विपरीत समझदार पत्नी अपने थके-मांदे पति का स्वागत कर, अपनी चतुराई से उसकी सुनहली सध्या को सुहावनी बनाती है। रातें उनके लिए प्रेम का सन्देश लेकर आती है और दिन चहकता हुआ उत्साह भरता है। नई उमग और प्रेरणा से पुरुष दिन के सघर्ष के लिए तयार होता है। स्फूर्तिदायी, मधुर मुस्कान से पत्नी उसे विदा करती है। गृह-कार्य मे लगी वह दिनेश को विश्राम के लिये अस्ताचल की ओर जाते देख, अपने प्रिय के अनुराग मे रजित हो, अपने साजन की प्रतीक्षा मे गुनगुनाती है—
'सांझ भई घर आवो, साजन !'

११. सहचरी कि कन्धें का बोझ ?

सच्ची सहचरी—

स्त्री पुरुष की सहचरी और मित्र कहलाती है। परन्तु दो समान दृष्टि-कोण तथा रुचि वाले व्यक्तियो की ही मित्रता और सगति भली प्रकार निभ सकती है। स्त्री जब पुरुप के साथ कदम उठा कर चलने के अयोग्य प्रमाणित हो, तब पुरुप को उसकी सगति मे आनन्द नही आता। वह समाज मे सम्मानपूर्वक स्थान पाकर अपने अडोस-पडोस का विश्वासी तथा सहयोगी बन सके—इसलिए भी पुरुष को स्त्री का सहारा ढूंढना पडता है। कमाऊ होने मात्र से ही कोई पुरुप समाज मे प्रतिष्ठा नही पा लेता, उसके लिए गृहिणी का सफल सहयोग परम वाछनीय है।

जो पुरुष घूमने-फिरने बाहर अकेले जाते हैं, उन्हे एक तो एकाकीपन अनुभव होता है, दूसरे, वे अपने सपत्नीक मित्रो मे घनिष्ठता नही प्राप्त कर सकते। अतएव प्रत्येक पुरुष की यह इच्छा होती है कि उसकी पत्नी सही अर्थ मे सहचरी और मित्र का कर्त्तव्य निभा सके। वह उसे अपने साथ बाहर ले जाने मे गौरव और सम्मान का अनुभव कर सके।

भी साथ चलूंगी—

कुछ स्त्रियो की यह शिकायत है—'वे मुझे अपने साथ कभी बाहर नही ले जाते, खुद तो जहान मे घूमते-फिरते है, खेल-तमाशे देखते तथा दावते उडाते है, हमे चाहारदिवारी मे बद-सा किया हुआ है। बस हम सडा करे यहाँ। हमारे नसीब मे तो बस गुलामी ही बदी है। दिनभर नौकर-चाकर, बाल-बच्चो और घर के धन्धो से हमारा भी तो जी ऊब जाता है। न कही आना, न कही जाना। अगर कहे तो जबाब मिलता है, किसने रोका हुआ है। गाडी जुतवाओ और चाची को साथ लेकर-घूम फिर आओ। भला क्या घूम-फिर आवे ? हमारा भी तो जी करता है तुम्हारे साथ जाने को। देखो न हमारे

देवर को देवरानी के बिना कही घूमने-फिरने नही जाते। यहाँ तक कि कार चलाकर देवरानी ही आफिस छोड आती है। आये दिन उनके घरो मे दावत और पार्टी होती है। यहाँ तो हिसाब ही दूसरा है। आदमियो की मजलिस अलग, औरतो का जमघट अलग। अगर हम भी चार अक्षर पढ जाते, गिट-मिट करना सीख जाते तो हमारी भी जिन्दगी भार न होती। हम भी हाथ मे हाथ डालकर बाहर निकलते।'

भगवान गजे को नाखून नही दे, इसी मे उसकी भलाई है, नही तो खुजा-खुजाकर सिर घायल कर मारे। यही दशा कई स्त्रियो की है। पुरुष इन्हे बाहर साथ नही ले जाते, मित्रो से परिचय नही करवाते इसी मे उनकी इज्जत बनी हुई है। उनके अवगुण, अयोग्यता तथा फूहड़पने पर पर्दा पड़ा हुआ है। स्त्री अगर पुरुष की सहचरी तथा मित्र बनने का दावा करती है तो उसे चाहिए कि अपने गुण-स्वभाव, वेशभूषा, सुरुचि तथा चरित्रबल द्वारा इस बात का विश्वास दिला दे कि वह समाज मे पुरुष की प्रतिष्ठा और सुनाम को न केवल बनाये रखेगी अपितु उसे गौरवान्वित भी करेगी। जिनमे इस योग्यता का अभाव है उनके लिए चहार दिवारी मे रहना ही उपयुक्त है।

हमारे देश की स्त्रियाँ अभी तक पुरुषो के लिए न केवल आर्थिक रूप मे ही भार बनी हुई है, परन्तु उन्हे बाहर लेकर निकलना, यात्रा करना, किसी सभा-सोसाइटी, सिनेमा, मंच आदि मे ले जाने मे भी पुरुष की बहुतसी सुविधाएँ नष्ट हो जाती है। उन्हे चौबीस घन्टे इसी बात की चिन्ता बनी रहती है कि कही श्रीमती जी को कोई तकलीफ तो नही, कोई मर्द उन्हे घूर तो नही रहा, वह पुरुषो के बीच असुविधा तो नही अनुभव कर रही?

झुँझलाहट होती है। उस शिक्षित महिला की सादी, पर स्वच्छ वेशभूषा, समयानुकूल सुरुचिपूर्ण शृङ्गार और सभ्य व्यवहार को देखकर वह अपनी

किस्मत पर कटकर रह जाता है। सामने की महिला अपने पति की बगल मे बैठकर सहजरूप से धीरे-धीरे यदा-कदा अपना दृष्टिकोण अथवा विचार प्रगट करती है, जब कि इनकी श्रीमती लज्जा का नाटक करती हुई, अपने पति की ओर से घूंघट काढ अथवा पीठ मोड, पर पुरुषो की ओर मुँह कर, बकरी के सदृश पान चबाती हुई व्याख्यान या खेल न देखकर आसपास के लोगो को कौतूहल से देखती हुई, बैठी रहती है। बीच-बीच मे अपने नन्हे को जिन्हे कि उन्होने जमीन पर मूंगफली के छिलको से खेलने छोड दिया था, एक-दो धप्प भी जमा देती है। मिट्टी से सना हुआ, नाक चाटता हुआ नन्हा जोर से चिल्लाकर रो उठता है। अन्य व्यक्ति अपने मनोरजन मे खलल पडते देख दवी-सी आवाज मे कहने लगते है, 'समझ मे नही आता कि ऐसे स्थानो में ये व्यक्ति वच्चो को लेकर क्यो निकलते है'। पति महाशय लज्जित से होकर नन्हे को गोदी मे उठा, पत्नी पर झुँझलाते हुए वाहर निकलने मे ही कुशल समझते है। न तो ऐसी स्त्रियो को स्वय वाहर जाकर व्यवहार करना आता है और न अपने वच्चो को ही वाहर ले जाने लायक वना सकती है।

यात्रा के समय भी आधी गृहस्थी साथ बाँध कर चलती है और पैकिंग भी ऐसी वढिया होती है कि वस फूहडपन और दरिद्रता की द्योतक। पन्द्रह

पुलिन्दे, अट्ठारह गठरियाँ और बाइस सदूकचियाँ तथा डोलचियाँ बाँधेगी। अगर अपना सामान लेकर ठीक से यात्रा पूरी करले, तो खैर ही समझिये। इसके अतिरिक्त गाडी पर चढते समय, 'ए लल्ला ! ए मुन्ना ! अरी भाबी ! ओ वे पल्टू किधर है' आदि जोर-जोर की आवाजे लगाती है। पति देवता को भी कुछ 'प्रसाद' मिल जाता है। 'अजी तुम्हे कुछ फिक्र ही नही, हम यहाँ तक-लीफ मे है, फलानी गठरी नही मिल रही नन्हे को अपने पास बिठा लो। 'अगले स्टेशन से पूरियाँ ले देना, मथुरा के पेडे लेना न भूलना और हाँ, आगरे से दाल-मोठ भी लेना' आदि फरमाइशे गाडी मे बैठते ही शुरू हो जाती है। रास्ते भर खाना तथा खरीद-फरोख्त जारी रहती है। छिलके, दोने, पानी आदि से सारा कम्पार्टमेट गन्दा हो जाता है। अगर कोई भली स्त्री टोक दे तो तो बैठे-बिठाये की लडाई मोल ले ली। 'तेरे बाप की गाडी है, क्या तूने ही किराया दिया है, हमने नही ? निपूती न हो आस औलाद हो तभी न बच्चो को देखकर खुश हो। खबरदार जो ज्यादा बोली तो जीभ खीच लूंगी। जाती है गार्ड बाबू को बुलाने। तेरा कुछ लगता होगा जो उसकी धमकी दे रही है। जा बुला ले उसे, हम भी देख लेगे, हमारे साथ भी मर्द है।'

इतने मे दूसरे स्टेशन पर गाडी रुकती है और पति देवता बार रूम मे अपनी कर्कशा बीबी की परिचित आवाज सुन तपाक से कम्पार्टमेट मे और आते है और उनके कारनामो को सुनकर लज्जित हो, उस भली स्त्री से क्षमा मागते है। श्रीमती जी यह देखकर और भी जल-भुन जाती है और गाडी चलने पर बड-बड करती हुई व्यग कसती है। 'आजकल की यह चिकनी-चुपडी फैशनेबिल औरते आखो-आंखो मे मर्दों पर जादू डालती है।'

अगर किस्मत से कोई उनके जैसी ही मिल गई तब तो आनन्द दिखाने की भी सीमा नही रहती। घरबार, कुटुम्ब, परिजन, धन-दौलत आदि से लेकर पति-पत्नी तक के रहस्य की चर्चा सब कुछ हो जायगी। रास्ते भर मे धर्मबहिन भी बन जायँगी। गोपनीय बातो तक का उल्लेख कर देगी। घर के लडाई झगडे तक बता देगी। यहाँ तक की जेवर और कपडो तक की फरमा-इशे कर बैठेगी अथवा भेजने की जिम्मेवारी ले बैठेगी।

-कराते ड्योढे दामो पर सौदा टूटता है। बस अपने मोल-तोल की योग्यता वह कनॉट प्लेस तथा अन्य एमपोरियम मे भी अजमाने से नही चूकती। यहाँ तक कि सभ्य दूकानदारो को भी, 'तुम लूटते हो, क्या अधेर मचा रखा है' आदि अपशब्द सुना देती है।

शाम को घूमने-फिरने अथवा दोस्तो के यहाँ साथ चलते समय इनकी वेशभूषा तथा चाल देखने लायक होती है। जाडे के दिनो मे कुडती, कमीज, वास्कट, उस पर से फतूही या स्वेटर से लदकर, शाल-दुशाले से सिर और मुँह ढककर, फटे मोजे, टूटी चप्पल पहिन जमीन पर पाव घिसती हुई ये पति देवता के पीछे चल देती है। नाखून मैले, कपडो से हल्दी, हीग की वास आ रही, अव्वल तो कघी दो-दो दिन तक नही काढती, अगर काढी भी तो वालो मे तेल चुपडकर सिर चिकना बना लेती है। मोटा-मोटा काजल, उस पर से पानो से रगे पपडी पडे होठ, एक अजीव ही हुलिया होता है इनका। गर्मियो के दिनो मे यह हाल कि वदन पर पतला जम्पर और विना पेटीकोट के धोती, जिनमे से पाव और टाँगे झलकती है। शरीर की लज्जा चाहे न निवारण हो पर घूंघट अवश्य खिची होती है। पढे-लिखे, नौजवान पति को इस वेशभूषा से अलकृत पत्नी को बाहर ले जाने मे सकोच अनुभव होना स्वाभाविक ही है।

इनमे विनोदप्रियता का या तो सर्वथा अभाव होता है अथवा वह अपनी सीमा को भी पार कर जाती है। वात का वतगड वना लेगी। अपनी कटूक्तियो के दुष्परिणाम-स्वरूप झगडे कर लेगी। इन स्त्रियो की वातचीत का विषय व्यक्तिगत चर्चा अथवा पर आलोचना तक ही सीमित होता है। हीनता की भावना इनमे इतनी अधिक होती है कि अपने को अच्छा प्रमाणित करने के लिए दूसरे की निन्दा तो अवश्य ही करेगी।

अव अर्द्ध शिक्षिता तथा अधिक फार्वर्ड स्त्रियो का भी हाल सुने। उनके लिये की भी कम परेशानियाँ नही है। अर्द्धशिक्षित स्त्रियो के विषय मे "अधजल गगरी छलकत जाय" यह कहावत भली प्रकार चरितार्थ होती है। मौलिकता तो इनमे होती ही नही। मोर के पख लगाकर कौवे के सदृश वे अपने समाज से भी वहिष्कृत होती है। साथ ही सुरुचिपूर्ण महिलाओ मे भी इनकी नही जमती और बहुत फार्वर्ड स्त्रियाँ तो इनकी मजाक उडाने मे भी नही चूकती। अन्धाधुध नकल इनका विशेष दुर्गुण है। नये फैशन, नये रिवाजो को विना सोचे-समझे अपना लेती है। चटक-मटक, शोखपन इनकी

स्वाभाविक लज्जा पर भी पानी फेर देता है। इनका 'मेकअप' तो बस देखने ही लायक होता है। काले रग पर सफेद पाउडर, उस पर रूज थोपा हुआ इनके मुख को जामुनी रङ्ग का बना देता है। सुर्ख, लाल-चौडी फैली हुई लिपस्टिक, मैले-काले नाखूनो पर क्यूटैक्स पोता हुआ इनके गदे हाथो की कुरूपता बढाता है। दिन के समय गहरे रग की साडी के साथ बेमेल ब्लाऊज तथा जूते पहन कर, लम्बे-लम्बे बुन्दे लटका कर जब ये बाहर निकलती है तो लोगो को शृगार और शिक्षा दोनो से अरुचि-सी हो जाती है।

ऐसी पत्नियो के कारण पति भी समाज मे चर्चा का विषय बन जाते है। मैच या सिनेमा देखने जायँगी तो इतनी जोर से चर्चा और 'रिमार्क' पास करेगी कि आस-पास के लोगो को भी नागवार लगने लगता है। हिन्दी बोलना इन्हे अच्छा नही लगता बात-बात मे अंग्रेजी की टाँग तोडने मे ही गौरव अनुभव करती है। कुछ रटे-रटाये वाक्य मुँह चढे होते है, उन्ही को एक खास लहजे के साथ दोहरा देती है। किसी की प्रशसा या उन्नति उन्हे नही सुहाती। इसी कारण से इनके पति समाज मे अप्रिय बन जाते है।

ये तितलियाँ—

अधिक फार्वर्ड या मार्डन तितलिया भी अपने-अपने पतियो के लिए एक समस्या बनी हुई है। घर से साथ लेकर चार कदम निकलने की देर है कि मित्रमडली श्रीमतीजी को आकर घेर लेती है। पति महाशय अनुचर बन जाते है और पत्नी जी अग्रचरी बनी हुई मित्रो की बाँह मे बाह डाल इठलाती मटकती, किलकारियाँ भरती चल देती है। इनका शोखपन राह चलतो को पुकारकर कहता है कि देखो हमे, हमारी वेशभूषा तथा शृगार को देखो, हमारे यौवन पर आखे सेको। इनकी मजाक पुरुषो के मुँह पर ताले लगा देती है। शीलता और लज्जा तो उन्हे छू भी नही गई। दुनिया मे भला उन्हे किसकी परवाह और किसका लिहाज।

अब अगर पुरुष स्त्रियो को बाहर साथ ले जाने मे हिचकिचाते है तो इनमे उनका क्या दोप ? मै यह नही कहती सभी स्त्रिया ऐसी है, पर उपर्युक्त शिकायते कुछ स्त्रियो के विपय मे सुनने मे आती भी है।

हमारे देश मे अनेक सुसस्कृत, शीलवान, व्यवहार-कुशल स्त्रिया भी है उनके पति उन्हे अपने साथ आग्रहपूर्वक ले जाते है। वे एक दूसरे के पूरक है। उनकी वेशभूपा,सुरुचिपूर्ण शृगार और मर्यादापूर्ण हाव-भाव सभी उनके चरित्रवान तथा योग्यता के द्योतक है और दूसरो को प्रभावित किये बिना नही रहते। ऐसी नारियाँ ही पुरुपो को समाज मे लोकप्रिय बनाती तथा उन्नति मे सहायक सिद्ध होती है।

विवाह के पूर्व कन्याओ को इस बात की भी शिक्षा अवश्य दी जाये कि बाहर जाकर चार आदमियो मे किस प्रकार व्यवहार करे तथा समयानुकूल वेशभूपा और शृगार करने का ज्ञान रखे। अन्यथा पत्नी की मूर्खता के कारण पुरुष को समाज मे बहुत लज्जित होना पडता है।

प्रसाधन का यह अभिप्राय नही है कि आप जो नही है वह प्रतीत होने लगे। प्रसाधन जरूरत से अधिक और कम दोनो ही नारी के आकर्पण को फीका कर देता है। सुरूचिपूर्ण प्रसाधन और वेशभूपा नारी के व्यक्तित्व को उभारती है। उसमे उसकी शिक्षा, कुलीनता और सस्कृति का पता चलता है।

सजने-सवरने में किन बातो का ध्यान रखें—

प्रसाधन सामग्री का उपयोग रूप-रग के दोपो को छिपाने के लिए न करके उनकी रक्षा के लिए ही करना उपयुक्त है। अतएव उनके उपयोग और चुनाव के विपय मे निम्नलिखित बातो का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

१ प्रसाधन सामग्री का उपयोग अपनी आयु, स्वास्थ्य, सामाजिक स्थिति, प्रतिप्ठा तथा अवसर के अनुकूल करना चाहिए। अगर कोई प्रौढ या अधेड स्त्री गहरे रग की लिपस्टिक और सुर्ख रूज लगाती है तो लोग उसकी अवश्य हसी उडायेगे। इसी प्रकार अगर कोई रोगी स्त्री गालो को रगकर सेव बना ले तो बहुत ही अस्वाभाविक लगेगा। केवल मुँह को लीपने-पोतने मे ही कोई आकर्पक नही बन जाता। प्राय देखने मे आता है कि सौ रुपये मासिक पाने वाले बाबू के पाँवो मे साबुत जूता भी नही होता, परन्तु

उनके पीछे-पीछे चली आती श्रीमती जी ने रेशमी, चटकीले कपड़े पहने हुए तथा मुंह पर पाउडर और लिपस्टिक तथा क्यूटेक्स का उदारता के साथ दुरुपयोग किया हुआ है। बेचारा पति हजामत बनाने के लिए भी पैसे नही बचा पाता, परन्तु पत्नी गली मे फेरीवालो से सस्ते-सस्ते प्रसाधन खरीदकर अपने चेहरे को लीप-पोत कर एक अजीब हुलिया बना कर बाहर निकलती है।

पाश्चात्य देशो मे रात्रि के भोजन पर या क्लब अथवा नाच समारोह पर अथवा विशेष गार्डन पार्टी पर जाते समय ही भड़कीले ढग से शृङ्गार करने का रिवाज है। अन्यथा वे अपने रग और होठो से मिलता-जुलता स्वाभाविक प्रतीत होने वाला केवल थोड़ा पाउडर तथा लिपस्टिक ही लगाती है। हमारे देश की स्त्रियाँ इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ है। वे सौदा (शापिंग) को जाते समय भी चटख लिपस्टिक लगा कर और गुलाबी कपोल करके जायेंगी। उनका बनाव-शृङ्गार उनके ओछेपन का द्योतक होता है। उनकी इस प्रकार की बनाव-शृङ्गार-प्रियता उनका स्वाभाविक रूप भी नष्ट कर देती है। उनका सहज आकर्षण भी नष्ट हो जाता है। शिक्षा का अभाव तथा फैशन की अधाधुन्ध नकल उनके सौन्दर्य, शील स्वास्थ्य और धन सभी के लिए घातक सिद्ध होती है।

२ अपनी त्वचा और रग के अनुकूल प्रसाधन-सामग्री खरीदे। जिन की त्वचा सूखी और खुरदरी होती है, उनके लिये साबुन का उपयोग वर्जित है। रात्रि मे क्रीम मलकर प्रात काल बेसन से मुंह धोने से उनकी त्वचा मुलायम और चमकदार रह सकती है। इसी प्रकार पाउडर के बदले स्नो का उपयोग अधिक उचित होगा। जिन महिलाओ की त्वचा अधिक 'आर्जी' होती है अगर वे अपने मुख पर क्रीम आदि चिकनाई का उपयोग करती है तो उनके चेहरे पर मुहासे और फुंसियो का निकलना बढ जाता है। ऐसे स्त्रियो के लिए साबुन से मुंह धोने के पश्चात् भली प्रकार चेहरे को पोछकर हलका पाउडर लगाना ही पर्याप्त होगा।

स्त्रियाँ सफेद पाउडर पोत कर, ऊपर से गालो पर सुर्खी मल लेती है। काला सफेद तथा लाल रग मिलकर उनका चेहरा जामुनी रग का दिखने लगता है। उस पर सुर्ख रग के होठ ऐसे प्रतीत होते है मानो हब्शिन चली आ रही हो। सुन्दर दिखने के बदले वे और भी भयानक दिखती है। काले रग पर सफेद पाउडर बहुत ही भद्दा दिखता है। उसके स्थान पर अगर वे अपनी स्वस्थ त्वचापर 'स्नो' या 'लारोला लोशन' लगाये तो उनके मुख की चमक बनी रहे। साफ रग पर भी थोपा हुआ पाउडर भद्दा दिखता है। पाउडर लगाने से पूर्व चेहरे पर कुछ 'बेस' अवश्य लगाना चाहिए। लारोला या वेनिशिंग पौंड क्रीम इसके लिये उपयुक्त है। 'बेस' को भली प्रकार चेहरे पर मल कर, तब रुई या पैड से थोडा-थोडा पाउडर लगाने के पश्चात् धीरे-धीरे मल देना चाहिए। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि चेहरे पर पाउडर के धब्बे न रह जायँ। भौहो या सिर के बालो मे भी पाउडर फँसा न रहे। कानो के पीछे तथा गर्दन तक पाउडर सब जगह बराबर मल कर पोछ देना चाहिए ताकि ऊपर का फालतू पाउडर झड कर चेहरे का रग एक-सा दिखने लगे।

३ लिपस्टिक लगाते समय पहले होठो को भली प्रकार पोछ लेना चाहिए, बाद मे होठो के आकार की बाह्य रेखा बना कर तब होठो पर लिपस्टिक लगाये। फिर होठो को परस्पर मिलाकर, टिस्यू पेपर से होठ धीरे-धीरे थपथपा दे। ताकि फालतू रग टिस्यू पेपर पर निकल जाय। दिन के समय बहुत हल्की लिपस्टिक लगानी चाहिए।

४. यह याद रखे प्रसाधन-सामग्री का उपयोग रूप की रक्षा के लिए ही किया जाय। उनका उपयोग उतनी मात्रा मे ही करे जितने से आप के रूप की स्वाभाविकता बनी रहे। बनावटी लाली या पाउडर की सफेदी लगाने से कोई सुन्दर नही दिखती। शृगार ऐसा करना चाहिए, जिससे आप की सुरुचि का पता चले, तथा जो आप के रूप-रग मे खप जाय।

५ केवल क्यूटैक्स लगा लेने से ही हाथ सुन्दर नही दिखते। आप हाथो को साफ रखें। खुरदरे तौलिये से उन्हे रगड कर, कुछ क्रीम या लोशन लगायें। नाखूनो को भली प्रकार काटे, उन्हे साफ रखे तथा नर्म कपडे से उनको धीरे-धीरे रगडकर चमकाये। अगर क्यूटैक्स लगाने का शौक हो तो उन पर नेचेरेल रग का क्यूटैक्स लगाये। प्राय देखने मे आता है कि स्त्रियाँ

बडे-बडे नाखून रखती है। उनमे मैल फँसी रहती है। उनकी उँगलियो के पोरो मे मैल की लकीरे पडी होती है। और नाखूनो का आधा कटूटेवस निकला रहता है। ऐसे हाथ देखने मे बहुत गन्दे तथा कुरूप दिखते है।

६ आँखो मे काजल इस प्रकार लगाना चाहिए कि वह इधर-उधर न फैले। काजल की मोटी चिकनी तह बहुत भद्दी लगती है। आँखो की चमक बनाये रखने के लिए ठडे जल के छींटे मारने के पश्चात् बोरिक लोशन से भी उन्हे कभी-कभी धोना चाहिए।

७ केशो को सीकाकाई या आवले तथा रीठे से धोकर जडो मे थोडा-थोडा शुद्ध नारियल का तेल लगाना चाहिए।

गन्दे बालो मे नित्य हेयर क्रीम या सुगन्धित तेल चुपड कर पानी लगाकर बनाने से उनकी जडे कमजोर हो जाती है। साथ ही उनकी स्वाभाविक चमक भी चली जाती है। [illegible] मे तेल की कुछ बूंदे [illegible] भली प्रकार मालिश करने से यदि परिचालन भली प्रकार होता है, साथ ही बालो की [illegible] भी [illegible]।

८ सुगन्ध, [illegible] प्रत्येक की अपनी-अपनी रुचि है। परन्तु इस विषय मे एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि गंध अति तीव्र न हो। भीनी-भीनी सुगन्ध ही प्यारी और सुन्दर प्रतीत होती है। प्रत्येक मनुष्य की गध उसकी स्मृति को बनाये रखती है। गंध विशेष से मनुष्य को अपने प्रिय-जनो तथा प्रिय घटनाओ की याद ताजी हो जाती है।

के आनन्द-प्रमोद का मूड विगड जाता है।

दूसरी बात यह भी ध्यान रखने की है कि जब आप पति के साथ कही बाहर जाये चाहे कुछ घन्टो के लिए या कुछ दिनो के लिए आप की चेष्टा उस अवकाश के समय को सफल बनाने की होनी चाहिए। 'हाय चावी तो वाहर ही रह गई। कही नौकर कुछ चुरा न ले'। 'घर पर मुन्नू रो रहा होगा'। 'बेबी को कौन सभालेगा ?' 'मेरे पीछे घर की व्यवस्था राम जाने कैसी हुई होगी ? पीछे से नौकरो ने बहुत बेपरवाही की होगी' इस प्रकार की काल्पनिक चिन्ताएँ मत खडी करले। यदि परदेश मे थोडी बहुत असुविधा हो तो उसकी शिकायत करके छुट्टी का आनन्द किरकिरा मत करे।

यह तो मानी हुई बात है कि बाहर जाकर थोडी बहुत असुविधा और खर्च हो ही जाता है। केवल इसलिए यह कहना कि 'इससे तो लाख दर्जे अच्छा था कि घर मे ही रहते, इतना अधिक खर्च हो गया और आनन्द कुछ खास आया नही' ठीक नही है। सामाजिक-जीवन मे लोगो से मिलना-मिलाना, व्यवसाय और साहित्य के विषय मे चर्चा करना, उनके कैरियर को सफल वनाने मे वहुत हद तक सहयोग देता है। इसे समय या पैसे की बरबादी समझ कर व्यर्थ मत समझे। पति आप को साथ इसलिए ले जाते है कि सच्चे अर्थ मे सहचरी का पार्ट अदा करके उनके सामाजिक-जीवन को सफल वनाये और एकाकीपन को दूर करे। अगर आप ये दोनो कार्य करने मे असफल है तो वाहर जाकर आप अपने पति के कन्धे का वोझा बन जाती है फिर भला सोचिये आपको अपने साथ ले जाने से वह क्यो नही कतरायेंगे ?

यदि साथ चलना है—

पति के साथ वाहर जाने के लिए उतावली होने से पहले, या "मुझे अपने साथ क्यो नही ले जाते ?"—यह गिला करने से पूर्व यदि आप निम्नलिखित बातो पर ध्यान देने लगेगी, तो उसकी नौवत ही नही आएगी।

जहाँ जाना हो उसका प्रोग्राम पहले ही मे वना ले। यह न हो कि जाने के समय वेशभूषा या घर का धधा अथवा वच्चो की चिन्ता के कारण आप वहाँ

जाकर न तो स्वय प्रसन्न हो और साथ ही अपनी चिन्ताओ से पति का आनन्द भी किरकिरा करे। अतएव कही मैच, सिनेमा या मित्र के यहाँ जाने से पूर्व ऐसी व्यवस्था कर जाएँ कि आपको बेफिक्री रहे। सभी स्थानो पर बच्चो को सग ले जाना ठीक नही। इससे आपकी परेशानी बढती है और बच्चे भी तग आ जाते है।

दिन के समय यदि सार्वजनिक स्थानो मे जाना हो तो अपनी वेशभूषा सादी तथा स्वच्छ रखे, शृगार भी सुरुचिपूर्ण हो। चटक कपडे या अधिक बनाव-शृगार रात्रि के प्रीतिभोज अथवा विवाह शादियो पर ही शोभा देता है।

समाज, काल तथा मर्यादा के अनुकूल व्यवहार करे। आप अगर पर्दे या छुआछूत की पक्षपाती है, तो ऐसे स्थानो पर मत जाएँ जहाँ आपका व्यवहार और एतराज अन्य लोगो को असुविधाजनक अथवा हास्यास्पद प्रतीत हो।

जोर-जोर से हसना अथवा अपने जेवर या वेशभूषा का प्रदर्शन करना या पान चबाना या नदीदो के सदृश खाना आदि बाते सब अशोभनीय है। स्त्री का सौन्दर्य उसके शील तथा नम्रता मे है। ऐसा व्यवहार भूल कर भी न करे जिसके कारण आप बेहूदी या फूहड़ लगे।

आप अग्रेजी मे बातचीत नही कर सकती या काटे-छुरी से खाना नही जानती, तो दूसरो के सामने इसकी चेष्टा भी न करे। मुहावरेदार हिन्दी बोलने तथा हाथ से खाने मे आप किसी प्रकार की भी हीनता का अनुभव न करे। जिस मे आप का आत्मविश्वास बना रहे वैसा ही व्यवहार करने मे बुद्धिमानी है। आपकी बातचीत मजेदार तथा मीठी हो। कटाक्ष और आलोचना करने वाली स्त्रिया बहुत अप्रिय बन जाती है।

बाहर जाकर नागरिकता के नियमो का पालन करे। रास्ता को गन्दा करना या फूल तोडना, अथवा बस या रेल के डिब्बो मे कचरा और गन्दगी फैलाना मूर्खता है। साथ के लोग आपके व्यवहार से आपकी शिक्षा तथा कुलीनता का अन्दाजा लगाते है।

पास के लोगो का ध्यान सहज ही आप की ओर आकृष्ट हो जायगा।

यात्रा मे अनावश्यक सामान बाध कर साथ मत ले जाएँ। अनेक गठरी-मुठरियो को सभालना बहुत असुविधाजनक होता है। बेबात को परेशान न हो, न ही दूसरो को परेशान करे। समय पर ही खाना चाहिए। प्रत्येक स्टेशन पर या बाजारो मे पत्ते चाटना स्त्रियो के लिए शोभनीय नही है।

बाहर जाकर छीकना, खासना, जभाई लेना या हसना अथवा अपने भावोद्रेक प्रकट करने मे सावधानी बरते। ऐसा करते समय आसपास के लोगो का ध्यान आकृष्ट न करे।

बहुत जल्दी किसी से घनिष्टता न बढा ले। इसी प्रकार बिना बात के झगडा मत मोल ले बैठे। भीड मे घुस कर आगे बढने की चेष्टा करना भी मूर्खता है। ऐसे अवसरो पर अपने पति के पीछे चलना ही ठीक है।

अगर कभी ऐसा हो भी कि भीड मे से कोई बेहूदा आवाज कसे या घूर कर देखे, तो यही उचित है कि आप उस ओर ध्यान ही न दे। अच्छा तो यह है कि ऐसी जगह जाएँ ही मत। अगर मौका पड ही जाए तो बात को अनसुनी कर देना चाहिए। वह अपने आप ही चुप हो जाएगा। अगर आक्षेप स्पष्ट है, तो अपने पति से कहे, वह स्थिति सभाल लेगे। पर अपने पति को बेबात के दूसरो से भिडाकर तमाशा मत बनाये।

जब आप अपने पति के साथ बाहर जाएँ, तो मित्रो के सग वार्त्तालाप मे इतनी लीन न हो जाएँ कि पति की उपस्थिति का भान ही न रहे। मित्र-मडली मे बातचीत इस प्रकार की होनी चाहिए कि सभी को उस में भाग लेने का अवसर मिले। अपनी प्रधानता से पति को पीछे डाल देना उचित नही है। बातचीत मे विनोद-प्रियता की भावना रखे, साथ ही द्वि अर्थक तथा अशिष्ट शब्दो का कभी भूल कर भी प्रयोग न करे।

पति के साथ खरीददारी के लिए जाएँ तो मोल-तोल के लिए बहस या वस्तु की आलोचना करके अभद्रता मत प्रकट करे। जो चीज खरीदनी हो उसकी सूची घर मे बनाकर चले। उसके लिए रुपयो की व्यवस्था भी शापिग जाने से पहले ही कर ले। दूकान पर जाकर अधिक कीमती चीज लेने की हठ करके, और पति से अधिक रुपये खर्चने के लिए बहस करना मूर्खता है। आपस का हिसाब-किताब घर आकर करे। आपके पास मेरे इतने रुपये

जमा है, या आपने मुझ से अमुक दिन इतने रुपये उधार लिये थे वे अब दे दें, इस प्रकार की बातचीत दूकान पर अच्छी नही लगती। यदि किसी दूकान से कुछ खरीदना नही है तो उसकी चीजो की निन्दा करके या तुम्हारी चीज महगी है ऐसा कहकर मत उठे। चीज दिखाने के लिए शुक्रिया करके या फिर किसी दिन आयेगे, ऐसा कह कर वहाँ से चल दे।

मार्ग मे यदि कोई सहेली या पिहर के रिश्तेदार मिल जाय और वह केवल आपको साथ ले जाना चाहे तो पति की उपेक्षा कर उनके साथ जाने की हामी मत भर बैठे।

बाज ईर्ष्यालु स्वभाव की स्त्रिया किसी दूसरी स्त्री को सजी-सवरी या अधिक आदर मिलते देख जल-भुन जाती है और अचानक ही देखा से उनका मूड बिगड जाता है और वह अपने पति या बच्चो पर बेकारण ही झुंझलाने लगती है। यह ठीक बात नही है। इससे उनके मानसिक अस्व-स्थता का पता चलता है। याद रखें मानसिक रूप से अस्थिर पत्नी कभी भी सफल सहचरी नही बन सकती।

१२. यदि तुम साथ हो....

आजकल प्रत्येक शिक्षित पति इस वात की कामना करता है कि उसे पत्नी ऐसी मिले जो उसके सामाजिक जीवन को सफल वनाये, उसके मित्रो के सग मिलजुल सके, उसके परिजनो से हिलमिलकर गृहस्थी की नैया को आसानी से खे सके। उसकी होशियारी और समझदारी से वह लोकप्रिय वन सके। उसके प्रभाव का क्षेत्र वढे और उसकी मुसीवतें हल हो जाये। स्त्रिया भी पति के सामाजिक जीवन मे साझे-दारी चाहती है। पर अपने इस सपने को साकार करने के लिए स्त्रियो को इस क्षेत्र की जिम्मेदारी सभालने की योग्यता होनी चाहिए। घर के तग दायरे का सकुचित दृष्टिकोण यहाँ सफल नही रहेगा। आपकी नाजुक मिजाजी, नखरे, गैरजिम्मेदारी आदि वाते अपने पति की स्थिति को हास्यास्पद वना देगी। सामाजिक क्षेत्र मे पुरुष अधिक अनुभव रखते है। उनके पथप्रदर्शन को स्त्री को स्वीकार करना होगा। मतभेद होने पर पुरुष के हृदय मे सन्देह उत्पन्न हो सकता है। स्वतत्रता की ओट मे यदि नारी मर्यादा तोडती है, तो पुरुष ईर्ष्यालु हो जाता है। कोई-कोई पढे-लिखे समझ-दार पति भी वडे शकालु होते है। पत्नी पर जो उनके स्वामित्व की भावना है वह नही वदलती। वह अपनी किसी दूसरे से तुलना सहन नही कर सकते यदि पत्नी उनके द्वारा लगाई गई पावन्दियो को तोडती है, तो वह उसकी

स्वाधीनता मे रोडे अटकाते है। इससे मनोमालिन्य वढता है और घर मे कलह उत्पन्न होती है। एक घटना का उल्लेख करती हूँ—

मोहनी के पति मिलटरी मे एक उच्च पद पर थे। विवाह के बाद उनके कुछ साल वडे आनन्द मे गुजरे। मोहन नाम का एक नवयुवक रईस कैप्टन साहव का वडा दोस्त था। वह भी वाल-बच्चो वाला था। मोहनी को मोटर चलाना सीखने का शौक हुआ। मोहन ने उसे कार सिखाने का जिम्मा लिया। दिन पर दिन उन दोनो की घनिष्टता बढती गई। मोहन मोहनी को वढिया से वढिया तोहफे लाकर देने लगा। कैप्टन साहब ने एक-दो बार इस घनिष्टता की कडी आलोचना भी की और मोहनी को सावधान भी किया पर मोहनी ने इस ओर ध्यान नही दिया। एक दिन साझ को कार ड्राइव करते हुए दोनो वहुत दूर निकल गये। कार मे पञ्चर हो गया और दोनो रात को लौट नही सके। इस कारण से पति-पत्नी मे काफी कहा-सुनी हुई और मोहनी की वदनामी हुई सो अलग। अगर मोहनी पति की चेतावनी अनसुनी न करती तो, इन सब मुसीबतो से वच जाती।

सोचने-समझने की बात यह है कि पत्नी पति की [illegible] गोर अपने सामने वह सोसायटी की तितलियों का आदर्श न रखे। जैसे घर की तरह बाह्य क्षेत्र मे भी नारी सुलभ गुणो से लोगो को प्रभावित करना चाहिए। अपने पति के प्रभाव क्षेत्र को विकसित करने के लिए उस सहज और स्वस्थ सामाजिक दृष्टिकोण अपनाने से ही उसको सफलता मिल सकती है।

झगडा हो गया। कर्मचारियो ने हडताल कर दी। अगर हडताल चालू रहती तो सामान भेजने की माग पूरी न होने से फर्म को काफी नुकसान उठाना पडता। ज्ञानचन्द ने मैनेजर को आश्वासन दिया और अपनी पत्नी को लेकर वह कर्मचारियो की वस्ती मे गया। लीला ने उन सव को समझाया कि आप लोग हडताल मत करे इससे कपनी को और घाटा होगा फिर आपकी तनखाह की माग भी पूरी न हो सकेगी। ज्ञानचन्द ने भी भरोसा दिया कि डायरेक्टर तक आप की शिकायते व माग लिखकर भेज दी गई है। जवाव आते और निर्णय लेते कुछ समय लग सकता है अतएव आप लोग हडताल न करे। कर्मचारियो के मुखिया ने कहा—'हम वहिन जी के (लीला) अहसान के नीचे है। आप की वात चाहे एक वार न भी मानते, पर वहिन जी का हुक्म तो हमारे सिर माथे है'। इस प्रकार वह हडताल टल गई। ज्ञानचन्द की धाक अफसरो पर जम गई और इससे उसकी तरक्की भी हुई और वह कर्मचारियो के लिए भी कुछ करवाने मे सफल हुआ।

महेन्द्र स्वरूप अपने शहर के एक हाई स्कूल के हेडमास्टर थे, और विवाह से पहले अपने सहयोगियो मे काफी लोकप्रिय थे। उनके पडौस मे ही शिक्षा विभाग के डायरेक्टर रहते थे। किसी कारण से दोनो पडौसियो के वच्चो मे कुछ झगडा हो गया। इस पर महेन्द्र की पत्नी ने डायरेक्टर साहव की पत्नी को खरी-खोटी सुना दी। अन्य लोगो से भी डायरेक्टर साहव हेडमास्टर की पत्नी के वदमिजाजी की चर्चा सुन चुके थे। महेन्द्र ने अपनी पत्नी को समझाया भी—"इस प्रकार से पडौसी व मित्रो से लडाई मोल नही ली जाती। मै अपने मित्रो को घर लेकर आता हूँ तव भी तुम्हे सुहाता, मै किसी के घर जाऊँ तव तुम मुझ से कैफियत तलव करती हो। किसी के घर न्योते पर जाना मुझे इसलिए अच्छा नही लगता क्योकि अपने घर मै उन्हे नही बुला पाता। मै तो तुम्हारी आदतो से परेशान आ गया हूँ।"

पर श्रीमती महेन्द्र अपने सदृश किसी को समझती ही नही। उसी के कारण महेन्द्र शिक्षा-विभाग मे अपनी लोकप्रियता खो बैठा। डायरेक्टर साहव ने उसकी वदली एक छोटे शहर मे कर दी—जहाँ वच्चो की पढाई ठीक से न हो सकी। रिटायर्ड होने तक महेन्द्र के दो लडके वी० ए० पास तो कर चुके थे पर समाजिक जीवन सफल न होने कारण न तो उनकी लडकियो

के लिए अच्छे वर मिल सके, और न ही लडको की नौकरी ही लगाने मे ही उनको किसी ने सहयोग दिया। इस प्रकार श्रीमती महेन्द्र की नासमझी और असहयोग से उनका परिवार पिछडा ही रहा।

सामाजिक जीवन की सफलता के लिए निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना जरूरी है। आप दूसरो से घनिष्ठता और प्रेम इस हद तक रखे जो बराबर निभ सके। स्त्रियाँ इस मर्यादा का प्राय अतिक्रमण कर जाती है। अगर किसी की सगी बनेगी तो अपना सब कुछ उस पर न्यौछावर करने को उतावली रहेगी, और अपने घर का सारा भेद भी बता देगी। पर यदि मन फट गया तो उसके अडौस-पडौस तक से बैर ठान लेगी। देखने मे आता है कि जरा-जरा सी बातो को लेकर दो घरो मे प्राय झगडा हो जाता है। बच्चो की लडाई में बडे भी दलबन्दी मे जुट जाते है। दोनो ओर से कभी-कभी डट कर तू-तू मैं-मैं होती है। स्त्रियो मे तो नोक-झोक चलती ही रहती है, पुरुषो को भी उसमे घसीट लिया जाता है। यह भारी गलती है।

अपने पति से छिप कर किसी से हेल-मेल मत बढायें। किसी पुरुष का सहयोग अपने पति के बिना स्वीकार मत करे। सामाजिक जीवन में आदान-प्रदान का सन्तुलन बनाये रखना चाहिए नही तो मित्रता अधिक दिन नही

निभती। मित्रो के दुख-सुख में शरीक हो, उनका हाथ बटाये, हमदर्दी दिखायें। अडचन पडने पर केवल मौखिक सहानुभूति दिखाकर ही अलग

न हो जाये, जहाँ तक हो सके व्यवहारिक रूप से भी मदद करे। दुख के समय जो मित्र काम आता है उसी पर विश्वास और प्रेम वना रहता है। अडचन पडने पर मित्र परिवार मे वीमार की सेवा, घर या वच्चो की सभाल म सहयोग दे। मित्र की पत्नी वीमार हो या पीहर चली जाय तो मित्र परिवार की सार-सभाल मित्र पत्नी का कर्तव्य है। आप अपने पडौसी मित्रो से मुख और उत्सवो पर मिले, वधाई दे, उपहारो के आदान-प्रदान मे प्रेम वढाएँ। सखी-सहेलियो को पतियो व वच्चो सहित निमत्रण दे। मिलकर पिकनिक के लिए वाहर जाये।

याद रखे पति का सामाजिक जीवन पत्नी के सहयोग के विना कभी भी सफल नही हो सकता। दो परिवारो मे घनिष्ठता और अपनत्व वढाने के लिए यह जरूरी है कि उस परिवार की स्त्रियाँ एक दूसरे के दुख-सुख मे काम आये।

पड़ौसी धर्म—

समाज मे रहते हुए आप समाज से अलग अपनी खिचडी नही पका सकते। एक दूसरे का सहारा ढूंढना ही पडता है। वडी-वडी वातो को तो छोडिये, छोटे-छोटे काम भी पडौसी के सहयोग के विना धरे रह जाते है। आपके पति शाम को चार दोस्तो के सग आ जाते है। और जल्दी मे यह कहकर बैठक मे चले जाते है कि जरा चटपट चार लोगो के लिए चाय सजा कर भेज दो। आप देखती है कि चीनी काफी नही है या दूध फट गया है नौकर कही वाहर गया हुआ है—मुन्ना भी अभी तक खेलकर नही लौटा है—आप परेशान होती है और एक दम से आपको पडौसिन की याद आती है और लपककर एक कटोरी चीनी और पाव भर दूध आप उसके यहाँ से ले आती है। आज बुधवार है आटे की चक्की वन्द है। पर आपको कल आटा पिसाने की याद नही रही अव क्या करें? आपकी नेक पडौसिन झट अपने यहाँ से पतीला भर कर आटा आपको ला देती है और प्रेम भरा उलाहना भी देती है कि "वहन जी, ऐसे आडे-भिडे के समय ही तो पडौसी धर्म पाला जाता है। मै भी तो उस दिन आपके घर से पाव भर घी ले गई थी। इस तरह का लेना-देना तो मित्रो मे वना ही रहता है।"

आपको सयानी पडौसिन ठीक कहती है, अगर आप अपने पडौसी के काम आयेगी तो वह भी आपको सहयोग देने मे पीछे नही रहेगी। यह तो

ऐसा हिसाब है कि जो नेकी आप बोयेगी सो ही काटेंगी। कभी-कभी अपने सगे-सोई काम नही आते पर पडौसी और मित्र हाथ बटा लेते है। मनुष्य की लोक-प्रियता उसके गुणो और सद्व्यवहार पर ही निर्भर है।

मित्र-मडली का सहयोग प्राप्त करें—

मनुष्य के जीवन मे मित्रो का सहयोग बहुत महत्त्व रखता है। बडे होकर बहन-भाइयो का साथ तो छूट जाता है पर मित्र ही समय पर काम आते है। पर मित्र या पडौसी का सहयोग तभी प्राप्त हो सकता है जबकि परिवार की महिलाओ मे परस्पर हेल-मेल हो। अतएव स्त्रियो को यह चाहिए कि अपने पति के मित्र परिवार के दुख-सुख मे शरीक अवश्य हो। अगर आप उनके काम आयेगी तो वे भी समय पर आप का हाथ बटायेगी। तीज-त्यौहार, उत्सव, विवाह-शादियो आदि पर पडौसियो और सहेलियो के सहयोग के महत्व पता चलता है। आपके यहाँ अचानक मेहमान आ गये है, पडौस से खटिया, खाली कमरा या कुछ बर्तन चाहिएँ आप यदि उनको ऐसा सहयोग देती रही है तो मौके पर निसकोच उनसे भी मदद माग लेगी। आपके पति बाहर गये हुए है, मुन्ना अचानक बीमार हो जाता है या घर मे कोई दुर्घटना हो जाती है आप झट पडौसियो को आवाज देती है और वह मिल कर आपकी मुसीबत हल्की कर देते है या दौड-धूप करके आपकी समस्या हल कर देते है। आप चार दिन के लिए पीहर जा रही है पीछे आपका १२ वर्ष का मुन्नू और उसके पिता जी रह जाते है, ऐन मौके पर आपका रसोइया बीमार पड जाता है। पर आपके नेक पडौसी अपके प्रोग्राम को असफल नही होने देते। मुन्नू व उसके पिता जी की भोजन-व्यवस्था उनके यहाँ ही हो जाती है।

आपको किसी ऐसी जगह जाना है कि छोटी मुन्नी को साथ ले जाना वहाँ सुविधाजनक नही है। आप पडौसिन के पास जाकर अपनी कठिनाई बताती है और वह कहती है—"वहन जी, आप मुन्नी को यहाँ झूले मे सुला जाये छोटा भय्या (मुन्ना) उसे वहलाये रखेगा।" आप लौटकर देखती हैं कि मुन्नी और मुन्ना आपसमे मस्त हैं। आप किसी स्कूल मे काम करती हैं आपके बच्चे को खसरा निकल आया है। सात-आठ दिन की आपको छुट्टी मिलनी कठिन है। आपकी अडचन का आपके पति के मित्र की पत्नी को पता चलता है। वह तीन-चार दिन नित्य दोपहर को आपकी गैर हाजरी मे आकर मुन्नू को दवा-पथ्य दे जाती है और कहानी सुनाकर उसका मनोरजन भी करती है।

अडौस-पडौस के व्यवहार का पारिवारिक जीवन तथा आपके बच्चो के चरित्र निर्माण पर वडा प्रभाव पडता है। इसलिए पडौस के बच्चो मे भी आपकी दिलचस्पी कम नही होनी चाहिए। उनके कल्याण और सदाचार पालन के विषय मे आप भी सहयोग दे। कहावत है कि पडौस की शक्ल तो नही पर अक्ल जरूर ही आ जाती है। बच्चो के विषय मे तो यह बात सोलह आने सच है, जो वह अपने पडौसी भाई को करते देखेगे वही खुद भी करेगे। आपका अपने पडौसियो के प्रति कैसा रुख है, कैसा सहयोग और दृष्टिकोण है इस बात से बच्चो के सामाजिक जीवन पर बहुत प्रभाव पडता है। उनको सामाजिक कर्त्तव्य की शिक्षा आपके द्वारा निभाये गये पडौसी धर्म की सफलता और असफलता से मिलती है। अगर आपकी पडौस से अच्छी निभती है, तो बच्चो को अपने समवयस्क मित्रो की कमी नही रहेगी और उनका खाली समय आनन्द से कट जायेगा। आपका पडौसी जीवन जितना अधिक सफल

होगा, आप स्वय को विपत्ति मे उतनी ही अधिक सुरक्षित अनुभव करेगी। देखने मे आता है कि पडौस के असहयोग से बने-बनाये काम बिगड जाते है और उनके सहयोग से आपकी इज्जत बची रहती है।

आप बाल-बच्चो वाली है। कल के दिन लडकियो की शादी होगी, लडके नौकरी पर लगेगे। उस समय सफल सामाजिक जीवन के कारण आपको अनेक सुविधाएँ प्राप्त हो सकेगी यह भी सभव है। कि आपके घर मे रिश्ता करने के इच्छुक परिवारो का परिचय मित्र-मडली के द्वारा ही हो और आपका सुयश मित्र-मडली के द्वारा ही फैले अथवा लडके की नौकरी और पति की तरक्की मे भी मित्र-मडली का भी हाथ हो। आपके विरोधियो का मुँह बद कराने मे भी आपके पारिवारिक मित्र ही काम आये। पर यह सब केवल चाहने मात्र से नही हो सकता, इसके लिए आपको अपने परिवार के सामाजिक जीवन को सब तरह से सफल बनाने की चेष्टा करनी होगी। इन्सान की कद्र करना सीखे, दूसरो से इन्सानियत से पेश आना न भूलें, सान्त्वना के दो मीठे शब्द, हमदर्दी, समय पर थोडा-सा सहयोग, अडे-भिडे मे काम आना, दु ख-सुख

बटा लेना कहने को ये है तो छोटी-छोटी बातें पर मनुष्य को लोकप्रिय

बनाने मे इनका बडा हाथ होता है। किसी की नेकी को कभी मत भूलें। याद रखे यदि आप नेकी बोयेगी नही तो काट भी नही सकती। आप इस बात की हमेशा चेष्टा करे कि अपनी योग्यता से पडौस को फायदा पहुँचा सके। मान ले किसी मुहल्ले मे स्कूल नही है, आपके बच्चो को भी दूर स्कूल जाने में कष्ट होता है, आप एक घटा जिस समय अपने बच्चो को पढाये पडौस के बच्चो को भी इकट्ठा करले, इससे सभी पडौसी आपका अहसान मानेगे और आपकी लोक-प्रियता बढेगी।

याद रखें—

माता-पिता का सफल सामाजिक-जीवन बच्चो के सुखद भविष्य की आधार-शिला बन जाती हैं। मित्र-मडली मे प्रिय-परिजनो की गणना भी है, यथा—जेठ-जिठानी, देवर-देवरानी, नन्द-नन्दोई, बहन-बहनोई, साला-सलहज आदि ऐसे रिश्तेदार हैं जोकि प्रेम और घनिष्ठता हो जाने पर मित्रो के दायरे मे आ जाते हैं। पर यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि गृहिणी का व्यवहार इनके प्रति प्रेमपूर्ण हो। वह इनकी आयु और पद के अनुसार सबको अपने प्रेम व सेवा से जीत कर विश्वास प्राप्त कर सके और प्रेम के आदान-प्रदान मे सन्तुलन बनाये रखे।

इसमे कोई सन्देह नही कि पडौसी-धर्म या रिश्तेदारी तभी निभती है जबकि मित्राचारी भी हो। बिना मित्रता के केवल मुँह-देखी की प्रीति और राम-दुआ का नाता ही रह जाता है। परिजनो मे मित्राचारी तभी निभ सकती है जबकि स्त्रियो मे आपस मे मेल हो, परिवार के बच्चे स्नेह-बन्धन मे बधे हो, परिजन दु ख-सुख मे इकट्ठे हो, केवल लेने की ही कामना न हो, देने की उत्सुकता भी हो। दोषो व न्यूनताओ को भुला कर, अपनत्व बना रहे। परस्पर आर्थिक शोषण और अविश्वास न हो। कोई नाते में बडा है या भाई है इस लिए उसका देने का ही हक है, लेने का नही, ऐसी भावना नही रखनी चाहिए। 'भाई के मिस ले और भतीजे के मिस दे'— बहन को इसी नीति को अपना कर चलना चाहिए तभी वह अपनी भाभी की प्रिय बनी रह सकती है। अब जब कि सामाजिक ढाँचा ही बदल रहा है, बहनो को प्रलोभन वृति को छोडना होगा।

गृह-कलह की तरह पडौस-कलह भी जीवन को नारकीय बना कर रख देती है। बुरा पडौस केले के पास बेर की तरह दुखदाई प्रमाणित होता

है। इसलिए स्त्रियो को अपने मामले आपस मे ही सुलझा लेने चाहिएँ। मर्दों के कान भर कर झगडो को तूल देना मूर्खता है। पडौसी वच्चे आपस मे वहन-भाइयो की तरह लडते रहते है। वच्चो की लडाई मे वडो को जहाँ

तक हो सके नही पडना चाहिए। उन की लडाई तो क्षणिक होती है। वह आज रूठे कल फिर एक हो जाते है। पर वडो की दलवन्दी पडौसी-प्रेम पर करारी चोट करती है। पीढी-दर-पीढी चले आते वैर का कारण कभी-कभी वच्चो की लडाई ही मे पाया गया है। वच्चो की लडाई मे स्त्रियाँ मैदान मे उतर आती है और फिर कटु वाक्य वाणो की वर्षा दोनो ओर से होने लगती है और ऐसी वाते कह दी जाती है, कि कलेजो मे छेद पड जाते है। पारिवारिक कलको को वढा-चढा कर कहा जाता है, व्यग कसे जाते है और गढे मुर्दे खोद कर रख दिये जाते है। परिणाम यह होता है कि जो दो पडौसो भाई कल तक मित्र थे शाम को एक दूसरे से आँख वचा कर निकल जाते है। परिणाम-स्वरूप राम-दुआ भी वन्द हो जाती है।

पीठ पीछे निन्दा और चुगलखोरी भी प्रेम के लिए कतरनी सावित होती है। स्त्रियाँ इस दोष की प्राय अपराधिनी होती है। मौहल्लो मे जहाँ चार औरते खाली होकर वैठी कि पर-निन्दा, स्व-प्रशसा और इधर की उधर लगाई-वुझाई किये विना उन्हे चैन नही पडती। इस नारद-प्रकृति को छोडे

विना कोई भी व्यक्ति समाज मे लोकप्रिय नही हो सकता।

वाज स्त्रियो के पेट मे पानी भी नही पचता। वह नौकरो-चाकरो या वच्चो के मारफत अपने पडौसियो के घर की वातो का पता लगा लेती है। सास-वहू के झगडे, देवरानी-जिठानी की खटपट, पति-पत्नी की कलह कौन आया-कौन गया, क्या खरीद फरोख्त हुई, क्या नई चीज आई, आदि वातो का पता लगाये विना उन्हे चैन नही पडती। फिर जहाँ चार स्त्रिया मे वैठी कि वात को वढा-चढाकर ऐसा सुनाती है कि उसके मूल और छोर का पता लगाना असम्भव हो जाता है। मुंह पर मीठी और पीछे घात करने वाली ये पडौसिने कव किसकी इज्जत पर कीचड उछाल देगी, कहा नही जा सकता। ऐसी स्त्रियाँ पडौसियो के लिए वहुत दुखदाई प्रमाणित होती है। इनके पति को समाज का कोप-भाजन वनना पडता है। स्त्री का गुलाम, 'वाइफा' का हजवैंड कह कर लोग उनका उल्लेख करते है।

गृहस्थी की धुरी है गृहिणी। इसी लिए पारिवारिक और सामाजिक जीवन को सफल बनाने का दायित्व वहुत कुछ उसी पर है। आप इतिहास के पन्ने उलट डालिये तो आप को यह वात स्पष्ट हो जायगी कि ससार म जितने भी महापुरुप, नेता, साहित्यिक, सन्त, वैज्ञानिक, चित्रकार, कलाकार आदि हुए है उन्हे लोकप्रिय वनाने, प्रेरणा देने और उनके जीवन की बाधाओ को दूर करने मे नारी का हाथ रहा है। चाहे वह रगमच पर उसके साथ रही या यवनिका के पीछे, पर इसमे कोई सन्देह नही कि पुरुषो के जीवन नाटक को सफल बनाने मे वह वरावर प्रयत्नशील वनी रही।

१३. दावत और प्रीतिभोजों का आयोजन

सुशीला का पति मदन क्यो लोक-प्रिय है ? उसके दोस्त मित्र दु ख-सुख मे उसकी मदद करने और शरीक होने क्यो पहुँच जाते है ? इसका एक

ही जवाब है—लोगो के साथ उसके सामाजिक सबध अच्छे है। वह अपने पडोसियो के बाल-बच्चो, मित्रो तथा मुलाकातियो की अच्छी आवभगत करता है। मदन की लोकप्रियता का श्रेय उसकी पत्नी को है। वह बच्चो की पार्टियाँ, पिकनिक, आदि का आयोजन इतने सुन्दर ढग मे करती है कि कम खर्चे मे ही उसकी दावतें सफल हो जाती है। अपने इस प्रबन्ध कुशलता के कारण सुशीला और उसके पति इतने प्रसिद्ध हो गये है कि उनके रिश्तेदार व मित्र उनको अपनी प्रत्येक दावत में बुलाते है और सुशीला के सुझावो से भरपूर लाभ उठाते है।

आजकल दावतो के प्रवन्ध में कई एक ऐसे अच्छे सुधार हो गये है कि अतिथि सत्कार का काम सरल और सुविधाजनक वन गया है। कहावत है गर्ज सव सिखा कर रहती है। नौकरो की समस्या, स्थान का अभाव, खाद्य-पदार्थों की किल्लत और नवीनता-पसदी ने प्रीतिभोजो का रूप ही वदल दिया है। आजकल न तो भारतीय ढग से वडे-वडे थाल सजाकर खाना-खिलाना लोग पसन्द करते है और न विलायती ढग से डिनर-पार्टी और गार्डन पार्टी का रिवाज ही रहा है। दावत का असली महत्व है ऐसे मित्रतापूर्ण वातावरण मे मिलना-मिलाना जहाँ घडी, दो-घडी इकट्ठे होकर सव हँस वोल सके, अपना मनोरजन कर सके। यह वात घरेलू वातावरण म ही हो सकती है। होटलो और रेस्टोरेट मे इसका अभाव ही रहता है। आप यदि घर में किसी को निमत्रित करती है तो यह जरूरी नही है कि पन्द्रह किस्म के पकवान वनाये जाये और विशेप तरह की सजावट की जाये। मेहमान निवाजी के लिए आप को परेशान होने की जरूरत नही है। आगे जाकर मै मेज सजाने और विशेप पार्टियो के प्रवन्ध के विपय मे वताऊँगी, पर यहाँ पर कुछ सुझाव देती हूँ जिनका ध्यान अवश्य रखे।

१ जब आप को किसी को भोजन या टी-पार्टी के लिए निमत्रित करना हो, दो-चार दिन पहले ही उसे सूचित कर दे, इससे यह लाभ होगा कि आपके मित्रो को आप के यहाँ आने का प्रोग्राम वनाने मे सहूलियत होगी। साथ ही आपको भी यह मुसीबत नही उठानी होगी कि खाना तो दस के लिए वनाये पर आये कुल पाँच व्यक्ति।

२ अगर आप के पास नौकर नही है तो मित्रो को भोजन पर न वुला कर टी-पार्टी पर ही वुलाये। इस से प्रवन्ध करने और वातचीत करने की आपको सुविधा रहेगी।

३ मेहमानो के आने पर यदि आप रसोई मे वार-वार चक्कर लगायेगी तो आप की परेशानी देख कर मेहमानो को भी असुविधा होगी। याद रखे, यदि आप के मित्र आप के घर आकर सकोच अनुभव करते है तो दावत का ध्येय सफल नही हो सकता।

४ खाने-पीने और वैठने का प्रवध ऐसा करे कि परोसने मे सहूलियत हो। अगर स्थान छोटा है तो कमरे के एक कोने अथवा वरामदे मे टेवल पर सव सामग्री लगा दे। वही पर प्लेटे व चम्मच आदि रखे। मिठाई, केक, विस्कुट

आदि चीजे जो कि एक दिन पहले की वनी हुई हो मेज पर पहले ही से सजा दे। केवल पकौडे या समोसे ही गर्म-गर्म लाने की जरूरत पडेगी।

५ आप खाने-पीने का ऐसा आडवर मत रचाये जो आपसे सभले नही और आप नाहक मे निराश और खिन्न होकर सिर दर्द ले वेठे। दावत वही अच्छी समझी जाती है जिस मे भाग लेकर मेहमान और मेजवान दोनो को प्रसन्नता हो।

६ वर्तनो की सफाई, चम्मचो की पालिश, कमरे की सजावट आदि ऐसे छोटे-मोटे काम सुवह ही कर ले। प्लेटे, फूल, मिठाई, चटनी आदि मेज पर मेहमानो के आने से पहले सजाकर ढक दे। कुछ मिठाई आदि एक दिन पहले भी वनाई या मगाई जा सकती है। सैडविचेज कुछ घटे पहले वनाकर गीले नैपाकिन मे लपेट कर रख छोडे। मेहमानो के आने पर उन्हे मेज पर मजा दे। पकौडे, चिप्स या पापड आदि चीजो को मेहमानो के आने से पहले वनाकर रख दे। परोसते समय एक वार और तल ले, इससे वे अधिक कुरकुरे हो जायेगे। समोसे, छोले, कचौडियाँ आदि परोसने से पहले गर्म की जा सकती है।
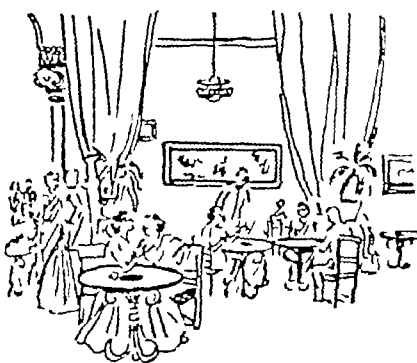
७ यदि आपने किमी को भोजन के लिए निमन्त्रित किया है तो भाजी वनाकर हौटकेम या हौट-टिफिन अथवा कुकर मे रखले इमसे वे गर्म रहेगी। खीर, हलवा, आलू, पुलाव, पूरियाँ, कचौडियाँ या फुलके ये चीजे आप मेहमानो के आने से घटा दो-घटा पहले भी वनाकर रख सकती है। इन्हे हौटकेस या कुकर मे रखने से ये गर्म रहेगी। खीर, हलवा, पुलाव आदि पर वादाम पिम्ते आदि की सजावट उस ममय करे जव कि उन्हे डोगो मे डालकर मेज पर रखने का समय हो। दही-वडे, चटनी आदि मुवह ही वना कर तैयार कर ले। यदि आपके पास फ्रीजिडियर है तव तो दही-वडो को मुवह ही भिगो देने से वे खराव नही होगे। खाते समय अलग मे थोडा दही डालने के लिए तैयार रखे, पर यदि फ्रीजिडियर नही है तो दही-वडे तलकर निकाल ले। दही मे भिगोने से पहले उन्हे गर्म पानी मे नमक डालकर नर्म कर ले, फिर ताजे दही मे डालकर कॉच के वोल मे सजा दें। मब्जी और सलाद शाम

को ताजी ही वनानी चाहिए, नही तो इनका स्वाद अच्छा नही रहता। जो भाजी तली हुई या भुनी हुई वनानी है यथा करेले, घुइयाँ, कटहल, छोले, रवास वे दो घन्टा पहले भी वनाई जा सकती है।

८ मेहमानो के आने से पहले आप का चौका साफ-सुथरा, वर्तन करीने मे लगे हुए दिखे। आम तौर पर देखने मे आता है कि जव हमारे घरो मे किसी का खाना होता है रसोई की गत वन जाती है। चारो ओर छिल्के, वर्तन और पानी विखरा रहता है। घर के सव लोग परेशान से दीखते है। एक अच्छी खासी हाय-तोवा मची रहती है। नौकर को वुरा-भला और गालियाँ सुननी पडती है। वच्चो को डाटा-डपटा जाता है। गृहिणी परेशान होकर भँवीरी की तरह कमरे से रसोई मे और रसोई से आगन मे चक्कर काटती फिरती है। ऐन मौके पर कोई चीज विगड जाती है, कोई तैयार नही हो पाती, कोई गिर पडती है, इस पर गृहिणी नौकर पर झुँझलाती है। नौकर अलग वड-वड करता रहता है। ऐसे दृश्य आप को दावत के समय कई घरो मे देखने को मिलेगे। दावत के वाद गृहिणी की यह आम शिकायत होती है—'हाय आज तो थक कर चूर हो गई। मेरा तो सिर फटा जा रहा है। मुझ से तो कुछ खाया ही नही गया। फलॉ चीज समय पर पहुँची नही, अमुक चीज मे नमक ज्यादा हो गया था। खीर मे वादाम-पिस्ते डालना ही भूल गई। पूरियाँ तो ठढी ही हो गई थी। पापड कच्चे थे, अरे हॉ सलाद तो परोसना ही भूल गई।'

९ उपरोक्त शिकायतो को दूर करने का यही तरीका है कि टी-पार्टी प्रीति-भोज या डिनर पर क्या खाना-खिलाना है इसका मीनू दो दिन पहले वना ले, ताकि वाजार से यदि कोई खास चीज लानी हो तो समय रहते सुविधा से खरीदी जा सकती है। जल्दी-जल्दी मे खराव चीज खरीदनी पडती है। दावत की कुछ तैयारी जैसा कि मै ऊपर वता आई हूँ एक दिन पहले कर ले, कुछ सुवह को कर ले और शेष काम मेहमानो के आने से निवटा ले। भोजन मे नमक, मिर्च अधिक मत डाले। जो अधिक खाने है वे ऊपर से डाल सकते है। कम का तो इलाज भी है अधिक का नही। खाद्य पदार्थों को तैयार करके चख ले, यदि कुछ चीज छूट गई है तो डाली जा सके।

१० मेहमानो के आने के समय आप उनके स्वागत के लिए तैयार रहे।

उस समय आप का गुसलखाने मे होना या घर की सफाई मे लगे रहना शोभा नही देता ।

११ परोसने मे आप अपनी सहेली या उनकी लडकी का सहयोग ले सकती है।
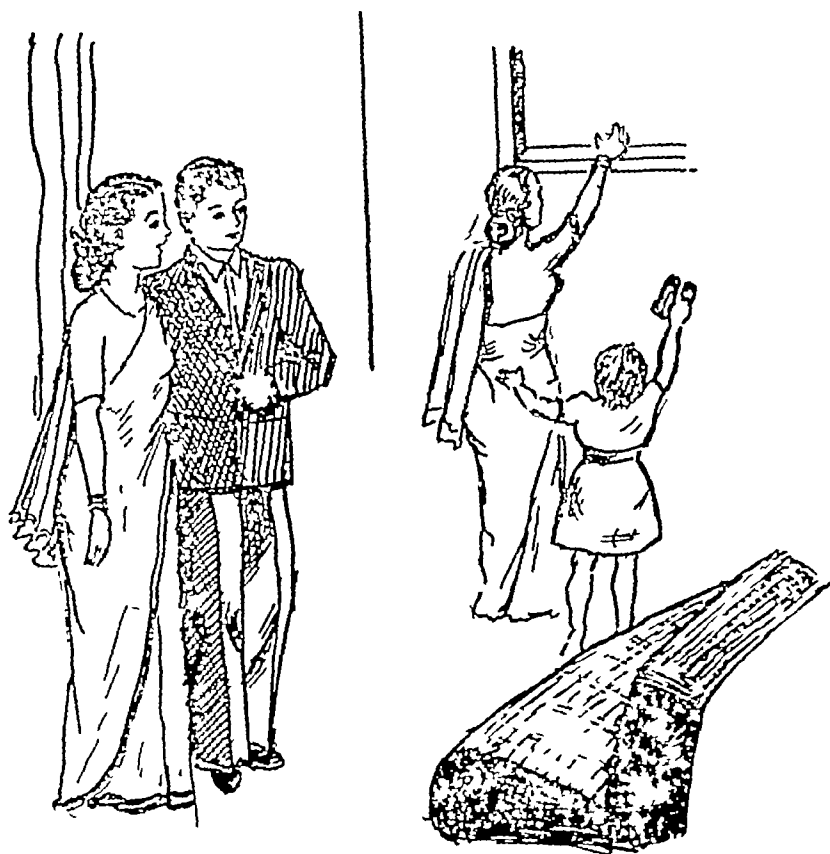
१२ न केवल खिलाना परन्तु वातावरण को प्रसन्न और दिलचस्प बनाये रखना भी गृहिणी का कर्तव्य है। किसी विशेष अतिथि को ही सारी प्रधानता नही देनी चाहिए, अन्य मेहमानो की ओर भी थोडा बहुत ध्यान देना जरूरी है। अगर कोई मेहमान स्वय को उपेक्षित अनुभव करेगा तो वह दावत का आनन्द कभी नही उठा सकेगा।

खाने के कमरे की सजावट—

खाने का कमरा हवादार, साफ-सुथरा और आकर्षक ढग से सजा

होना चाहिए। अगर जाडे के दिन है तो दरवाजे बन्द रखे और कमरे को अगीठी आदि से गर्म रखे। यदि गर्मी के दिन है तो खिडकियाँ, दरवाजे और रोशनदान खोल कर कमरे को ठडा रखे। यदि आपने पाट और आसन पर बिठाकर खिलाने का प्रबन्ध किया है तो फर्श को साफ करके बराबर की दूरी से एक से पाट और आसन लगाये। आने-जाने के लिए दरवाजे का स्थान खुला छोड दे। खाद्य पदार्थ रखने के लिए बीच मे एक छोटी चौकी रखे ताकि एक सिरे से परोसकर बाद मे बर्तन चौकी पर रखे जा सके। रागोली धूपबत्ती, फूल आदि से कमरे को सुन्दर और सुगन्धित बनाये। चटनी, पापड, नमक, नीबू आदि परोसे जाने के पश्चात् मेहमानो को बैठने को

बुलाये। मेहमानो के हाथ धोने के लिए साबुन तौलिया तैयार रखे। भोजन थाली मे जरूरत से अधिक न परोसे।

यदि आपका खाने वाला कमरा पाश्चात्य ढग से सजा है और भोजन

मेज कुर्सी पर बैठकर खाने की व्यवस्था की गई है तो मेज को करीने से सजाये। मेज पर एक मोटी चादर या सफेद खेस विछाकर तब उस पर सफेद चादर बिछाये, इस से चादर जमी रहेगी। यदि आप की खाने की टेवल अच्छी पालिश वाली है तो चादर न बिछाकर टेवल-मैटस् भी काम मे लाये जा सकते है। टेवल 'लिलन' मैच करते हुए होने चाहिएँ, यह न हो कि सेन्टर टेवल क्लाथ एक रग का है और नैपकिन दूसरे रग के। वर्तन व काँटे छुरी व चम्मच भली प्रकार पालिश किये हुए हो। मेज पर वडे या ऊँचे गुलदस्ते मत सजाये। नमकदानी साफ हो ताकि नमक, मिर्च आसानी से छिडका जा सके। मेज पर वीच मे चाँदी के या काँच की सुन्दर गोल प्यालियो मे सूखा मेवा वादाम, पिस्ता आदि सजाकर रख दे। पिछले पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है जिससे आपको अग्रेजी ढग से मेज सजाने का कुछ अन्दाज लग सकेगा कि किस जगह काटा-छुरी, रोटी के लिए प्लेट और नैपकिन आदि मेज पर रखे जाये। यदि आपके यहाँ 'वौय' खाना परोसने के लिए नही है तो खाने-पीने की मुख्य चीजे यथा भाजी, तरकारी तथा चपाती को डोगे और प्लेटो में डाल कर मेज पर ही रख ले। यदि मेज छोटी है तो गृहिणी अपने समीप ही एक छोटी टेवल पर सव चीजे सजाले और मेहमानो को 'पास' करती जाये, वे परोस कर आगे वढा देगे।

भोजन मेहमान के वाये हाथ की ओर से परोसा जाता है। प्लेटे दाई हाथ की ओर से उठाई जाती है। अग्रेजी कायदे के अनुसार विशेष मेहमान मालकिन के दाई ओर और मेहमान की पत्नी गृहस्वामी की दाई ओर की कुर्सी पर विठाई जाती है। अगर मेहमान अधिक हो तो खाना घेरे मे, क्रम मे परोसा जाता है। यदि दो-चार व्यक्ति ही है तो पहले महिलाओ को परोसा जाता है वाद मे पुरुषो को। खाने के कमरे में साइड वोर्ड भी तरीके से सजाये। फालतू प्लेटो और काँटे चमच दाई तरफ रखी जाये। डेजर्ट प्लेटे और फिगर वोल (हाथ धोने के प्याले) वाई ओर रखे जाये। पूरी, पराठे और फुल्के की डिश भी परोसने के वाद साईड वोर्ड पर रखी जा सकती है। रात के भोजन मे अधिक आडम्वर होता है, पर दोपहर के भोजन मे इतनी सजावट की जरूरत नही है।

शाम की चाय—

अगर आपके पास ट्राली टेवल है। तो केक, सेंड विचेज, मिठाई आदि

उसके नीचे की ट्रे मे तथा चाय के वर्तन ऊपर की ट्रे मे सजाये जा सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को एक क्वाटर प्लेट दे दे, वे केक-स्टैड मे से जो चाहिए खा ले लेगे या फिर गृहिणी प्लेटो मे परोस दे। प्रत्येक व्यक्ति की कुर्सी के पास एक छोटी नीची साइड-टेबल रखी हो, ताकि उस पर वह अपनी प्लेट रख सके। मालकिन चाय ट्रौली मे रखे प्यालो मे परोस कर चीनी पूछ कर डाल दे और प्याले मेहमानो को पकडा दिये जाये।

बूफे—

आजकल बुफे ढग से दावत बहुत लोकप्रिय है। उसमे परोसने का खटराग नही होता और गृहिणी को घूमने-फिरने और मेहमानो से बातचीत करने की सुविधा रहती है। मेहमान भी एक दूसरे से अधिक सरलता से मेल-मुलाकात बढा सकते हैं। कमरे के बीच मे या एक ओर मेज लगा उसपर भोजन आकर्षक ढग से सजा कर रख दिया जाता है। वही पर प्लेटे, काटे, नैपकिन आदि भी रखे जाते है। मेहमान प्लेटे उठाकर खुद ही अपनी-अपनी प्लेटो मे इच्छानुसार परोस लेते हैं। कई लोग घूम-फिरकर लोगो मे बातचीत करते हुए खाना पसद करते है, कोई पास पडी कुर्सियो पर बैठ जाते है।

पिकनिक पार्टी—

जब ऋतु अच्छी हो तो इच्छा होती है कि किसी नदी या पहाडी के किनारे अथवा बगीचे मे पिकनिक के लिए बाहर जाया जाये। अगर चार परिवार मिल कर पिकनिक के लिए बाहर जाये तो व्यवस्था करनी आसान होती है। खाने-पीने की चीजे, बर्तन आदि लाने की जिम्मेदारी बाटी जा सकती है। एक के जिम्मे पूरियाँ-पराठे और सूखी भाजी, दूसरे के जिम्मे दही-बडे और चटनी अचार, तीसरे के जिम्मे फल और चौथे के जिम्मे कुछ मिठाई आदि दी जा सकती है। अगर बाहर जाकर केवल चाय-पानी की व्यवस्था करनी है तो साथ मे स्टोव ले जाये और चाय वहीं पर तैयार करे। पिकनिक की तैयारी के लिए निम्नलिखित बातो का ध्यान रखा जाय।

१ बाहर खाने-पीने की ऐसी चीजे ले जाई जाये जो पैकिंग मे बिगडे नही। पतली रसेदार चीज ले जाने में सुविधा नहीं होती।

२ हॉट टिफन मे पूरियाँ और भाजियाँ बन्द की जाये। दही, चटनी अचार सलाद ऐसी चीजे अलग टिफिन कैरियर मे रखी जाये।

३ प्लेटे, चम्मच और चाकू एक गोल टोकरी मे भर ले। फल मिठाई

अलग टोकरी मे।

४ बहुत बडा-सा बडल न बाँधे। चीजो को इस तरह से पैक करे कि मोटर मे रखने मे असुविधा न हो और उठाकर ले चलने मे सुविधा रहे।

५ बैठने के लिए एक-दो दरी और शीतल पाटी, बर्तन, चाय के लिए कुछ नैपकिन, बिछाने के लिए टेबल-क्लाथ, पानी की सुराही, गिलास, खेलने के लिए ताश या अन्य कोई खेल भी ले जाना न भूले।

६ मनोरजन के लिए पोर्टिबल ग्रामोफोन भी ठीक रहेगा। शिकार के शौकीन लोग अपने साथ बन्दूक भी ले जाते है। बाहर जाकर बच्चो को

व्यस्त रखना जरूरी है। नही तो ऊब कर वे 'घर चलो' 'घर चलो' की रट लगा देते है। इसलिए हो सके तो उनके लिए एक फुटबाल या क्रिकेट का बाल-बल्ला साथ ले जाये, या फिर उनको किसी और खेल मे लगा दे।

७ पिकनिक पर चायपार्टी के लिए सैंडविचेज़, केक, बिस्कुट, नमकीन, मिठाई, फल आदि ले जाना ठीक रहेगा। बाहर कुछ भूख भी अधिक लगती है इस लिए भोजन सामग्री इतनी ले जानी चाहिए कि पूरी पड जाये।

८ जो खाद्य पदार्थ बाहर ले जाये उनमें अधिक घी, तेल, मसाला और रसा नही होना चाहिए। कुछ टिन फल के भी ले जाये जा सकते है।

९ कई लोग घर से रसद ले जाते है और नदी के किनारे किसी खेत के पास दाल-बाटी बनाकर खाते है। भारतीय ढग से इस प्रकार की पिकनिक भी ठीक है बशर्तेकि आप प्रबध ठीक से करले और गोबर कडे की आच मे बाटी बनाकर, मिट्टी की हडिया में ही दाल चटा दे और खेत से मूली गाजर, मटर आदि तोड कर सलाद बना ले। चौके-बर्तन का खटराग बाहर

नही होना चाहिए। भोजन पकाने मे उस दिन सभी व्यक्ति हाथ बटा ताकि गृहिणी को आराम मिल सके।

१० पिकनिक पर जब बाहर जाये पीने का पानी घर से ले जाए। सम्भव है कि बाहर आपको साफ पानी न मिले और इधर-उधर का पानी पीकर आप बीमार हो जाये।

बच्चो की पार्टी—

हमारे देश मे कई एक त्यौहार ऐसे आते है जब कि केवल बच्चो को खिलाने पिलने का महत्त्व समझा जाता है। यथा नवरात्रो की अष्टमी को कन्याओ और बालको को दावत दी जाती है। इसी प्रकार बसन्त पचमी गणेश चतुर्थी पर भी बालक-बालिकाओ को विशेष रूप से निमन्त्रित किया जाता है। आजकल बच्चो के सामाजिक जीवन को विकसित करने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। अतएव उनके जन्म दिन या परीक्षा मे पास होने पर बच्चो की पार्टी का आयोजन आम घरो मे किया जाने लगा है।
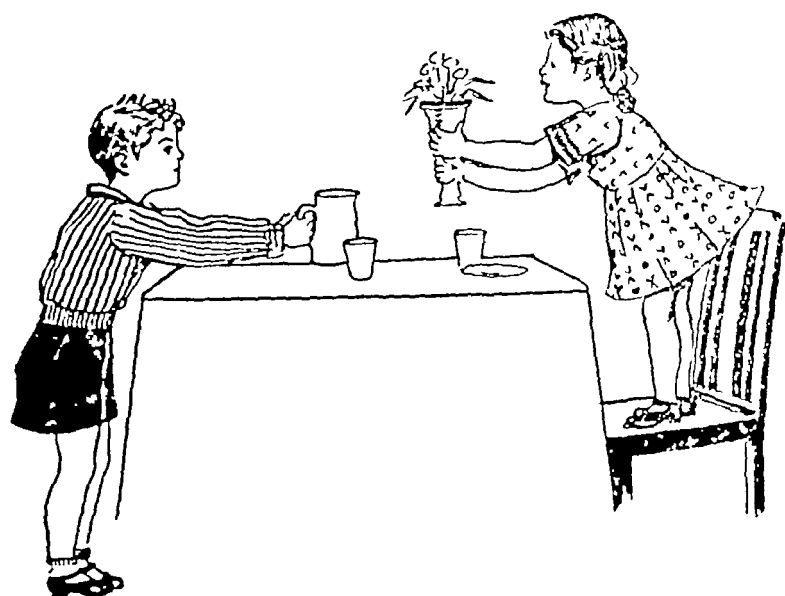
सभी बच्चे रग-बिरगी सजावट को बहुत पसन्द करते है। अतएव विशेष अवसर पर पार्टी वाले कमरे को रगदार कागजो की जजीरो और गुब्बारो आदि से सजाया जा सकता है। भोजन परोसने से पहले बच्चो को कुछ देर बाहर खेलने मे व्यस्त रखे। म्यूजीकल चेयर, तीन पाव की दौड़,

आदि खेल बच्चो को बहुत प्रिय है। बच्चे पार्टियो मे केवल-खाने पीने ही नही आते परन्तु खेलने-कूदने और मनोरजन के लोभ से भी आते है। इस लिए खेल मे जो जीते तथा अन्य बच्चो को भी कुछ न कुछ इनाम दे। आजकल प्लास्टिक के खिलौने काफी सस्ते मिलते है। कुछ उपयोगी उपहार यथा रूमाल, पेसिले, लुडो, गेद आदि भी दिये जा सकते है। प्रत्येक वस्तु पर बच्चे का नाम लिख कर लटका दे। जो इनाम किसी खेल मे जीतने पर देने हो उन्हे अलग रखे।

बच्चो की पार्टी मे खाने-पीने की चीजे सादी पर देखने मे आकर्षक और रग-बिरगी होनी चाहिएँ। अगर बिठा कर खिलाने की सुविधा न हो तो मेज के आस-पास खडे करके सब को खिलाया-पिलाया जा सकता है। बच्चो को खुद परोस दें। उनके लिए गिलास, प्याले, प्लेटे, चम्मच छोटे-छोटे हो ताकि वे सभाल सके। उन्हे अधिक मिर्च मसाले वाला या घी वाला भोजन मत दे। सैंडविचेज, केक, आलू चाप्स, आलू चिप्स, बर्फी, मूग की दाल, ऐसी ही पाँच-छ चीजे काफी है। बच्चे आइसक्रीम के बडे शौकीन होते है। आप बेसन, मैदे या खोये की चीजो को छोटे-छोटे साँचो मे दबाकर भिन्न-भिन्न आकृतियो मे उन्हे सजा सकती है। पीने के लिए बच्चो को कोई कोल्ड ड्रिक या आधी दूध आधी चाय, कोल्ड कौफी व दूध दीजिए। अन्त मे उन्हे दो-दो टौफी, लेमन ड्राप्स या चाकलेट का टुकडा दे। आम, सन्तरे आदि फल जिनका रस टपका कर वे अपने कपडे सान ले, खाने को मत दे। अगर देने भी हो तो काट कर या छील कर दे। फल के छोटे-छोटे टुकडे आइस्क्रीम के साथ मिलाकर भी परोसे जा सकते है।*

* यह लेख लेखिका की पुस्तक 'भारतीय-भोजन-विज्ञान' मे उद्धृत किया गया है।

१४. अब फिर कब दावत उड़ेगी ?

सामाजिक जीवन के क्षेत्र मे प्रीतिभोजो और दावतो का महत्त्व भुलाया नही जा सकता—पर इस महगी के जमाने मे दावते और प्रीतिभोज तो

सपने की बात हो गई है। किसी तरह खीच तान कर सात दिन पूरे होते है, अपना ही पेट नही भरता किसी को खाने पर क्या कोई बुलाये? पर बिना बुलाए काम भी तो नही चलता। तीज-त्योहार है, उत्सव-विवाह आते है, बेटी-बहिन, भाई-भतीजे शहर मे ही रहते है, उन्हे कभी खाने पर न बुलायेगे तो लोग नाम धरेगे। फिर अतिथ्य-सत्कार का तकाजा भी तो है। माना कि कोई घर मे खाने-पीने के लिए ही नही आता, पर कभी-कभी तो चार सगे-सोई, भाई-

न्धु, अडोस-पडोस या सखा-सहेली उत्सव मनाने, हँसने-बोलने, खेलने-कूदने और मौज करने के लिए इकट्ठे होते ही हैं।

खाने-पीने की किल्लत एक अकेली आपको ही तो नही है, सबके सामने यही समस्या है। सुशीला के घर भी वही राशन आता है, जो शान्ति के आता है, पर हम तो यही देखते हैं कि सुशीला महीने मे एक-दो बार सपरिवार जहाँ दावत पार्टियो मे जाती है वहाँ अपने घर भी दूसरो को बुलाती है। इस आदान-प्रदान ने उसे और उसके पति को बडा लोकप्रिय बना दिया है। मित्र-मडली किसी की पार्टी मे चाहे जाय चाहे न जाय पर सुशीला के घर अगर पार्टी है तो सभी कोई समय निकाल कर पहुँच जाते हैं। अनेक बहनो की यह धारणा बनी हुई है कि शायद मित्र-मडली जहाँ खाना खूब स्वादिष्ट मिले वही जाना पसद करती है। परन्तु सुशीला की पार्टी मे जाने को सभी उतावले रहते हैं। आखिरकार कारण क्या है ? शान्ति ने भी खिलाने-पिलाने मे कोर-कसर नही रखी और लीला भी मेहमानो की खातिर-तवाजह मे दो-तीन घण्टे इधर से उधर दौडती ही रही, पर उन दोनो की पार्टी की चर्चा किसी की जबान पर नही है, जिससे सुनो बस सुशीला की पार्टी की ही बडाई करता है।

एक दिन विभा ने सुशीला की सफलता पर धूल उडाते हुए चार सहेलियो के बीच मे कहा—"बहिन ! तुमने सुनी एक बात ? हम तुम सब हैरान थे कि सुशीला के पास इतना राशन कहाँ से आता है जो आये दिन पार्टियाँ होती हैं, आज उसकी पोल पता लगी। उसकी सखी-सहेलियो ने एक सूची बनाई हुई है कि किस के घर मे कौन-कौनसी चीज विशेष स्वादिष्ट बनती है, बस जब सुविधानुसार पार्टी करने का तय हो जाता है, प्रत्येक सहेली अपने-अपने घर से वही एक चीज बना लाती है और सब जने मिल-कर एक जगह इकट्ठे होते हैं और दावत उडती है। खाद्य-पदार्थ सब बीच मे मेज पर रख कर जो जिसे चाहिए उतना अपनी प्लेट मे परस लेता है। इस प्रकार थोडे से भोजन मे ही उनकी दावत हो जाती है। बैठने के लिए कुर्सियो तक का प्रबन्ध भी नही करना पडता। खडे-खडे घूमते-फिरते सब खाते हैं। भला सोचो इस तरह दावत देनी कोई कठिन है ?"

गीता ने हामी भरते हुए कहा—"तीज-त्यौहारो की दावत तो वह और भी सहज ढग से मना लेती है। मुडन हो चाहे नामकरण सस्कार सब

आगंतुको को एक-एक फूलो का वटन और पान देकर छुट्टी मिली। उक्त मित्रमडली ने विवाह तक पर फूल, पान और शरवत का गिलास पिलाकर छुट्टी पाने की रीति निकाली है। परन्तु खेल-कूद और तमाशे का व हुल्लड मचता है कि अधिकाश हो-हो-ही-ही करने ही वहाँ जाते है। कुछ पल्ले तो पडता नही।"

समाज मे वहुत से व्यक्ति ऐसे मिल जावेगे जो स्वय कोई उलझन सुलझाने मे असमर्थ होते है, पर अगर किसी दूसरे को उसमे सफलता होते देखे तो उन्हे वह व्यक्ति या उसका सुनाम सुहाता नही। माफ करे, स्त्रियो मे यह सकुचित वृत्ति अधिक है। आज हमारे समाज मे सुशीला, सु सुगुणा, सुनीता, सुभापणी, सुहासनी आदि वहिनो की कमी नही है जिन कि यथा नाम तथा गुण पाये जाते है, कमी है उन्हे उत्साहित करने की। पुरुष स्त्रियो की प्रगति मे उतने वाधक नही, जितने स्वय स्त्रियाँ है।

जमाने की कठिनाइयो को देखते हुए हमारे प्रीति-भोजो की परिपा मे भी परिवर्तन होना आवश्यक है। एकत्रित होकर खाना-पीना तो उ नही सकता। मनुष्य सामाजिक प्राणी है, अत मिलना-जुलना उसका स्व भाविक गुण है। जीवन मे लोकप्रियता और सफलता प्राप्त करने के लि दावते खाना-खिलाना तो आवश्यक है ही। पर राशन की समस्या और मँहगाई को देखते हुए दावतो को सफल वनाना एक चतुर गृहिणी का ह काम है और इसके लिए सुशीला की नीति अपनाने मे सुविधा रहेगी।

जब चार व्यक्ति एकत्रित होते है, तो केवल खाने की इच्छा से नही आते, जहाँ घटा दो घटा भली प्रकार मनोरजन मे वीत जाएँ, मनु अपनी चिंताएँ भूलकर वच्चे के सदृश खिलखिल-खेला मे डूव जाएँ, अपन दिन भर की थकावट और विपाद को सखी-सहेलियो की गप्प म शरी होकर भुला दे, असल मे वही पार्टी सफल कही जा सकती है।

पार्टी को सफल बनाने के लिए आपको मनोरजन के साधन जुटाने की सरल विधि आनी चाहिये। भोजन की समस्या तो सुशीला के ढग से हल ह सकती है। आप भी अपने सखी-सहेलियो से सलाह कर एक सूची वना कि किस वहिन के लिए कौन-कौन सी चीजे पकाकर लाने की सुविधा है। सारा भोजन पकाना कठिन है पर एक वस्तु बनानी सरल है। खाने वहुत-सी चीजो मे से जो एक चीज जिसे सुविधाजनक लगे वना लाये। जि

पकाने की किसी कारणवशात् सुविधा न हो वह सलाद या फलो का स्टू बनाकर ले आए। एक निश्चित स्थान पर सब अपनी-अपनी चीजे लेकर पहुँच जायँ। अगर कही बाहर पिकनिक के लिए गए है तो घास पर दो शीतल पट्टी बिछाकर बीच मे सब खाद्य-पदार्थ रख लीजिये। जब तक एक दो बहिने प्रबन्ध करने मे लगी है, मनोरजन के लिए कई खेल खेले जा सकते है यथा—

१ म्युजिकल आर्म्स—म्युजिकल चेअर के सदृश ही खेला जाता है। मान ले ११ पुरुष कौर १२ स्त्रियाँ है। सब पुरुष एक लाइन मे खडे होकर अपनी एक बाँह वे कमर पर रख ले। लाइन मे अगर एक का बायाँ हाथ कमर पर है तो दूसरे का सीधा हाथ होगा। इसी क्रम से सब खडे होगे। प्रत्येक पुरुष की कमर पर रखी बाँह के पास ही एक एक स्त्री खडी होगी। सब स्त्रियो का मुँह एक ही ओर को होगा। बाजे पर कोई गत बजने पर स्त्रियाँ लाइन की परिक्रमा करती हुई भागेगी। जैसे ही अचानक बाजा बजना बद हुआ प्रत्येक स्त्री अपने निकटस्थ पुरुष की बाँह के पास खडी हो जायगी। जो स्त्री बिना साथी के रह जायगी वह निकल जाती है और साथ ही एक पुरुष भी कम कर दिया जाता है। आखिर मे जो स्त्री बच जाय वह जीत गई। दूसरी बार मे पुरुष भागेगे और स्त्रियाँ खडी रहेगी।

२ अँगूठी चोर—एक अँगूठी को एक पतली रस्सी मे डालकर घेरा बनाले। सब जने डोरी को पास-पास मुट्ठियाँ सटाकर पकड ले और मुट्ठियो मे जल्दी-जल्दी अँगूठी को छिपाते हुए सरकाते जायँ। एक व्यक्ति जो कि घेरे के बीच मे बैठा होगा अँगूठी किसकी मुट्ठी मे है, यह बताएगा। अगर बताने वाला ठीक बता सकेगा कि अँगूठी अमुक के पास है तो वह मनुष्य जो पकडा गया बीच मे आयेगा और बीच वाला उसके स्थान पर आ जायगा।

३ अँगूठे नचाओ—सब व्यक्ति एक घेरा बनाकर बैठ जाते है। बीच मे एक व्यक्ति खडा होकर उनसे अँगूठो की ड्रिल करवाता है। 'अँगूठा ऊपर', 'अँगूठा नीचे', ये आदेश घुमा-फिराकर जल्दी-जल्दी देता है। जल्दी मे कई अँगूठा ऊपर रखने के बदले नीचे कर देते है उन्हे घेरे मे से बाहर जाना पड़ता है।

भोजन के पश्चात् ऐसे खेल खेलने उपयुक्त होगे जिनमे थकावट कम हो।

१ कुछ कागजो पर प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कवियो की रचनाओ की दो-दो चार-चार लाइने लिखकर बोर्ड पर टाँग दे, और फिर एकत्रित व्यक्तियो को अपने-अपने कागज मे उन कविताओ के रचयिताओ का नाम लिखने को कहे। जिसके नाम सबसे अधिक ठीक हो वह जीता।

सिनेमा-प्रेमी चलचित्रो के नाम लिखकर टागे तथा एकत्रित सज्जन उन चित्रो मे नायक-नायिकाओ का अभिनय करने वाले सितारो की सूची तैयार करे।

२ एक खेल विशपरिग गेम कहलाता है आप एक बात किसी के कान मे धीरे से कहते है। उसने जो कुछ भी सुना है दूसरे को कह देता है, इसी प्रकार कहते-कहते अन्त मे बात कुछ की कुछ बन जाती है।

३ अन्ताक्षरी—मान लो आपने चार अक्षर का एक शब्द शबनम कहा अब दूसरा व्यक्ति तुरन्त शब्द के अन्तिम अक्षर 'म' से कोई चार अक्षर का शब्द कहेगा जैसे मलमल। अब तीसरे व्यक्ति को तुरन्त 'ल' से आरम्भ होने वाला चार अक्षरो का शब्द कहना होगा। इस प्रकार शब्दो की प्रतियोगिता चलती रहेगी। यह खेल दो पार्टियो मे विभाजित होकर भी खेला जा सकता है। इसी प्रकार शब्द के बदले, कोई पद्य कहने की शर्त रखने से गोष्ठी बहुत ही साहित्यिक बन जायगी।

भानमती का पुलिन्दा—एक लिफाफे मे इनाम देने के लिए कुछ उपहार अथवा चाकलेट रखकर एक कागज लपेट दे, उसके ऊपर एक प्रशंसात्मक शब्द अथवा 'मजिल आ गई', 'पाला मार लिया' या 'मुँह मीठा करे' लिख दे। फिर एक कागज लपेट कर कुछ चुटकला या विशेषण लिख कर फिर कागज लपेटे। इस प्रकार लिख-लिखकर कागज लपेटने से पुलिदा बडा हो जायगा। यह पुलिन्दा पहले से तैयार रखा जाय। कागज खोलने पर उसपर लिखा वाक्य सुनाये। बाद मे उसे विशेषण वाक्यो के उपयुक्त अथवा ठीक विरोधी व्यक्ति को यथा 'मै भीम हूँ' यह विशेषण वाक्य आने पर आप किसी दुर्बल व्यक्ति को पुलिन्दा दीजिये, इसी प्रकार 'कघी करते हार गया' यह वाक्य आने पर किसी गजे व्यक्ति को वह पुलिन्दा दिया जा सकता है। कभी-कभी पुलिन्दा उपयुक्त व्यक्ति को भी दिया जाता है। इस खेल मे विनोद प्रियता की भावना रखनी चाहिए। तभी खेल सफल हो सकता है।

जब कभी आप बच्चो की दावत करे उस समय तो सुई धागे की दौड़

तीन टाँग की दौड, चम्मच आलू की दौड, सिर पर मटकी लेकर भागना आदि खेल खिलाएँ। बच्चो को इन खेलो मे खाने से भी अधिक आनन्द

आएगा। जीतने वालो को एक-एक रुमाल या पेंसिल देने से वह आपके यहाँ की पार्टी को सर्वदा याद रखेंगे।

मनोविनोद और मनोरजन से आकर्षित होकर ही व्यक्ति आपकी पार्टी मे न केवल हमेशा आना ही चाहेगे पर आपको बुलायेगे भी, और जाते समय यही कहेगे, अब फिर कब दावत उडेगी ?

सामाजिक भोजो के लिए कोष सग्रह—

बहुत से उत्सव, स्कूलो, कालिजो, सस्थाओ, क्लबो और जाति-बिरादरी तथा मौहल्लो मे सामाजिक रूप मे मनाये जाते है। उनके लिए कोष सग्रह करने के कुछ तरीके ये है—१ कोई नाटक या तमाशे का आयोजन करके चार-चार आने के टिकट बेच दे २ आनन्द-बाजार लगाये, जहाँ पर खाने-पीने, खेल-तमाशे और सजावट की चीजे बेच कर धन इकट्ठा किया जाये। ३ दावत के पहले जब सब लोग खेल तमाशो मे व्यस्त हो हाथ की बनी हुई कुछ चीजो पर दो-दो आने का टिकट बेच दे फिर ताश के पत्तो को उल्टा करके उठाने को कहे। एक लकी (Lucky) पत्ता पहले से निश्चित

कर ले। जिसके पास वह पत्ता चला जाये उसी व्यक्ति को वह चीज दे दी जाये। रुमाल के पैकट, कुशन-कवर, टी-कोजी, टेवल-क्लाथ या वाजार से कुछ चीज खरीद कर उनको वेचा जा सकता है। इस प्रकार पार्टी का खर्च निकल सकता है।

पार्टी को सफल वनाने के लिये यह भी जरूरी है कि मेहमानो को परस्पर घुलने-मिलने के मौके मिलने चाहिये। इसके लिये मेहमानो मे से कुछ सहायक चुन ले। खेल वदल-वदल कर खिलाये। जितने व्यक्ति वहा हो उनकी सख्या के अनुसार खेल का कार्यक्रम वनाये। आनन्द तभी है जब कि जैसे-जैसे समय गुजरे और पार्टी का रग जमता जाये और समाप्त होने पर मेहमानो के मन मे यह अरमान वना रहे कि कार्यक्रम कुछ देर और चलता तो अच्छा था।

१५. आप गृहलक्ष्मी बनें

मितव्ययता नारी का गुण है—

एक कहावत है कि 'घरनी बिन घर भूतका डेरा।' यह कहावत केवल सुघड, चतुर और कर्तव्य-परायणा गृहिणी पर ही चरितार्थ होती है। फूहड, कर्कशा, फिजूलखर्च और आलसी नारी तो घर को नरक बनाकर रख देती है। ऐसे घर से तो गृहस्वामी दूर ही भागता है।

पुरुष मर-मरकर कमाता है। इस कमाई के पीछे उसे अपना खून-पसीना एक करना पडता है। लोगो की गर्म-सर्द बाते सुननी पडती है। अब यदि गृहिणी इस मेहनत की कमाई को सार्थक करना नही जानती तो घर मे अभाव ही अभाव बना रहता है। पुरुष हिम्मत हार जाता है और अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाते ही उसकी जिन्दगी कटती है। देखने मे आता है कि अधिकाश विवाह आर्थिक चट्टान मे टकराकर ही विफल होते है। इसलिए गृहिणी का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह पुरुष की कमाई को सार्थक करने की योग्यता रखे। मासिक व्यय को इस प्रकार सन्तुलित रखे कि जरूरत पूरी होकर कुछ धन आपत्काल या आकस्मिक खर्च के लिए भी बच जाय। घर का बजट ठीक बनाना, जरूरतो पर पहले खर्चना, फिजूल खर्ची से बचना और घर की व्यवस्था सुचारु रूप मे करना ये सब बाते सुगृहिणी कहलाने के लिए आवश्यक है।

पुरुष चाहे जितना कमाकर लाये यदि उसकी पत्नी गृहस्थी की व्यवस्था

ठीक से नही करना जानती, उनके घर मे कभी पूरा ही नही पडता। अनाप शनाप वातो मे पैसा खर्च हो जाता है और आवश्यक वातो के लिए कमी पड़ जाती है। यदि पत्नी अपना वजट सन्तुलित नही रखती तो मुसीवत के समय उसे दूसरो का मुह ताकना पडता है। व्यवहार-कुशल और दूरदेशी नारी हमेशा कल का ध्यान रखकर आज का खर्च चलाती है। दु ख-सुख, दैविक आपत्ति, बीमारी, असमर्थता, घाटे, वेरोजगारी आदि सव का ध्यान रख कर वजट वनाना चाहिए। मितव्ययता स्त्रियो का विशेष गुण होना चाहिए। किसो की देखा-देखी जेवर कपडो की हवस करना, बूते से वाहर खर्च कर देना, उत्सवो पर दिखावे के लिए उधार लेकर धूमधाम करनी, अपने से ऊँचे स्तर के लोगो से मेल-मिलाप वढाकर लेन-देन और दावतो पर पैसा खर्च करना नासमझी है।

स्त्रियाँ कहाँ गलती करती हैं—

आम तौर पर देखने मे आता है देवरानी-जिठानी की नकल करने के लिए अपने बूते से वाहर पैसा खर्च कर वे अपनी हवस पूरी करने से नही चूकती। शर्मा जी के दो लडके थे। वडा लडका जज था, जव कि छोटे लडके श्रीराम को अधिक पढा-लिखा न होने के कारण वाप ने फार्मिग के लिए काफी जमीन ले दी थी। जव तक छोटे लड़के की शादी नही हुई वह अपनी फार्मिग मे वडी दिलचस्पी लेता रहा आराम से खाना-पीना निकल आता था। वडे भाई ने कुछ रुपयो की मदद कर दी थी। वही फार्म पर एक छोटा-सा वँगला भी वना दिया था। जव छोटे लडके का व्याह हुआ तो और वहू ने आकर देखा जेठ-जिठानी शहर मे रहते हैं, उनके घर मे विजली, रेडियो और फिजिडियर है। वस

उसने अपने पति के पीछे पडकर सारी फार्म विकवा दी, मकान भी वेच दिया और शहर मे आकर छोटा-सा घर वनवा लिया। हवस के मारे रेडियो और फिजिडियर भी खरीद लिया। एक साईकिल की दूकान खोल ली। इस प्रकार दो चार साल मे ही सारा पैसा खा-पीकर खतम हो गया। श्रीराम का
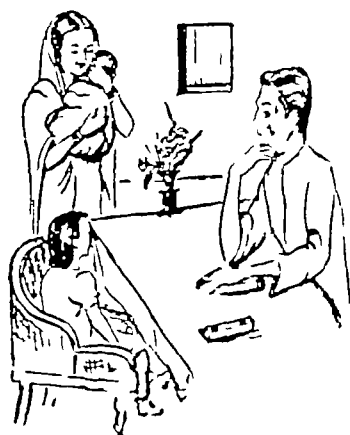
मुँह अब भाई से भी पैसा माँगने का नही रहा। उन्होने फार्म बेचने को मना किया था पर श्रीराम की बहू का कहना था कि जेठ-जिठानी जी कब चाहते है कि हम लोग उनकी तरह मौज करे। वे तो हमे गाँव का किसान ही बना रहने देना चाहते है। शहर मे रहने से श्रीराम की सेहत भी गिर गई। अब वह साफ हवा, खुली जगह, घर का दूध और भाजी की सुविधाएँ भला शहर मे कहाँ ? यहाँ तो खाने-पीने के लिए ही कम से कम दो सौ रुपये चाहिएँ। आज बाबू श्रीराम का जीवन दुखी क्यो है ? क्योकि उसकी पत्नी ने दूरदेशी से काम नही लिया।

इसी प्रकार की भूल श्यामा ने की। उसकी बडी बहन के बच्चे दिल्ली मे मार्डन स्कूल मे पढते है। वे है भी पढने मे बहुत होशियार, क्योकि उनके माँ-बाप बच्चे की पढाई मे बहुत दिलचस्पी लेते है। पर श्यामा के दोनो लडके लाड से बिगडे हुए है। जब वे पढाई मे पिछड गये तो उसके पति ने कहा—"देखो तुम्हारी बहन के बच्चे कितने लायक है। अगर तुम बच्चो की सँभाल ठीक से करो तो ये भी कुछ बन जायेगे।" श्यामा ने अपनी भूल तो समझी नही—उसने यही जिद्द पकड ली कि हम भी अपने दोनो लडको को दिल्ली मार्डन स्कूल मे ही दाखिल करवायेगे। श्यामा के पति ने कहा—"स्कूल बदलने से कुछ विशेष अन्तर नही पडेगा। गाजियाबाद मे सस्ते मे पढाई हो रही है। बाहर भेजेगे तो ३०० रु० महीना खर्च आयेगा।" पर उनकी एक न चली और बच्चो को मार्डन स्कूल मे दाखिल करवा दिया गया। एक तो उनकी नीव कमजोर थी अत एक-एक क्लास नीचे दाखिला मिला, तिस पर उन्होने मेहनत नही की। फेल हो गये। एक साल मे ढाई हजार रुपया अलग खराब हुआ। खर्च से तग आकर श्यामा के पति को अपने बच्चो को घर वापिस लाना पडा।

तारा के पडौस में एक थानेदार रहते है। उनके यहाँ ऊपर की आमदनी के रूप मे आये दिन घर मे नये-नये तोहफे आते रहते है। थानेदार की पत्नी तारा की पक्की सहेली है। वह अपने जेवर-कपडे लाकर तारा को दिखाती है—"देखो बहिन मेरे पति मुझे कितना प्यार करते है—रोज मेरे लिए कोई-न-कोई चीज आती ही रहती है।" तारा की भी इच्छा होती है कि उसके पति भी उसे इसी प्रकार उपहार लाकर दे। आये दिन वह अपने पति से जेवर-कपडे के लिए कहती है। उसका पति एक सेठ की दूकान पर मुनीम

है। वह तारा को समझा कर हार गया कि 'भाग्यवान! दरोगा की औरत की नकल मत कर। उसके यहाँ तो अन्धाधुन्ध मची हुई है। हमें ऐसी कमाई
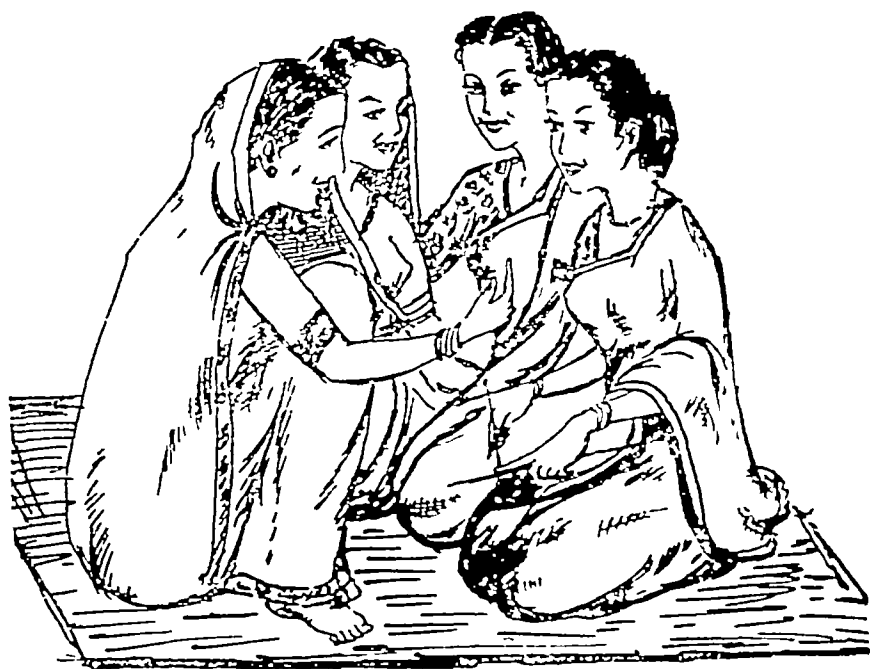
नही चाहिए। दरोगा की पत्नी को क्या पता कि दरोगा जी रात-रात भर कहाँ-कहाँ गुलछर्रे उडाते है।' पर तारा पर इस शिक्षा का कोई प्रभाव नही पडता। वह तो अपने को अभागी और पति से तिरस्कृत समझती है। पति से सीधे मुँह बात नही करती। कई बार बेचारे को भूखे ही काम पर जाना पडता है पर तारा को इस बात की कोई परवाह नही।

राधा को अपना बजट सन्तुलित रखना भी नही आता। महीने के आरम्भ मे ज्यादा खर्च कर देती है और आखिर मे बडी तगी मे गुजारा करना पडता है। जिस दिन त्यौहार होगा या कोई अतिथि घर मे आयेंगे वह बहुत-सी चीजे बना लेगी, फिर बाकी दिन चाहे सूखी रोटी ही खानी पडे। इस असन्तुलित बजट के कारण आपत्काल मे सिर पर कर्जा हो जाता है। एक कर्ज उतरता है तो दूसरा कर्जा चढ जाता है।

चमेली के घर सभी बीमार रहते है। इसका कारण यह है कि उसे सुघडाई और सफाई से खाना ही पकाना नही आता। उसके पकाये भोजन मे न तो रस है न पौष्टिक तत्वो की रक्षा ही हो पाती है। बे-मेल, बे-मौसम

भोजन पका कर धर देती है। खिलाने-पिलाने मे भी बहुत बदपरहेजी करती है। इससे आये दिन उसके घर के लोग बीमार रहते है।

उपरोक्त सभी स्त्रियाँ कुछ ऐसी गलतियाँ करती है जो कि उनके पारिवारिक सुख को कम करती है। आर्थिक चट्टान से उनकी गृहस्थी की गाडी प्रायः टकराती रहती है। ये सुघड गृहिणी के लक्षण नही है। सुघड और समझदार वह है जो अपने पति की कमाई का सद्व्यय करती है। घर की व्यवस्था और सँभाल ठीक से करती है। अपनी आय के अनुसार खर्चती है। कई बहनो का कहना है कि सफेदपोश, मध्यम वर्ग की समाज मे सबसे ज्यादा मुसीबत है। उसे समाज के रीति-रिवाज, लेन-देन, भाईचारा, सभी निभाना है। मेहनत अधिक करनी पडती है पर आराम कम मिलता है। अपने बच्चो को कहाँ से अच्छा खिलाये, पिलाये और पढाये ? आये दिन गृहस्थी मे इसी बात को लेकर चखचख होती है। विवाह से पहले पति-पत्नी के कितने अरमान थे, बूढे माँ-बाप भी आशा लगाये हुए थे। अब अपना ही नही पुरता उनको कहाँ से दे ? जब से बच्चो की जिम्मेदारियाँ बढी है गुजारा होना मुश्किल हो रहा है। अगर पहले पता होता कि गृहस्थ मे इतनी मुसीबते उठानी पडती है तो विवाह ही नही कराते।

जो लोग ऐसा सोचते है वह हारे हुए खिलाडी है। कमर कसकर मुसीबतो से जूझना नही जानते। अगर पति-पत्नी परस्पर ठीक से साझेदारी निभाये और बच्चो का भी सहयोग प्राप्त कर ले तो उनकी गृहस्थी की गाडी मजे से चल सकती है। आगे जाकर मै आपको लक्ष्मी की आदर्श गृहस्थी के विषय मे बताऊँगी। देखिये सुघड, समझदार लक्ष्मी ने अपने परिवार को कितना सुखी बनाया है। आप भी वैसा कर सकती है। स्त्री से पुरुष यह आशा करता है कि वह सच्चे अर्थ मे जीवन-सहचरी प्रमाणित हो। समस्याओं को सुलझाये न कि बढाये। सभ्यता के विकास के साथ जीवन की जरूरते भी बढ गई है अतएव स्त्री का कार्य-क्षेत्र केवल चूल्हे-चक्की तक ही सीमित नही रह गया। उसे भी पुरुष के साथ मिलकर आर्थिक समस्या को हल करना होगा। यह तभी सभव हो सकता है जब कि वह गृह-प्रबन्ध मे चतुर हो, किफायत से—पर कजूसी से नही—गृहस्थी चलाये, बजट और आमदनी मे सतुलन बनाये रखे, गृह-व्यवस्था सुन्दर और व्यवस्थित रखे, जरूरतो को पहले पूरी करे। सब का सहयोग लेकर फिजूल-खर्ची

को रोके और अपने अवकाश के समय का ऐसा सदुपयोग करे कि न केवल धन की बचत ही हो पर कुछ अतिरिक्त आमदनी भी बढ जाये। समझदार स्त्रियाँ चादर देखकर ही पाव पसारती है। अन्धाधुध नकल और दिखाव बाजी से हमेशा नुकसान होता है।

बच्चो की जिम्मेदारी—

घर की व्यवस्था के अतिरिक्त गृहिणी पर ही बच्चो की सार-सम्भाल का भी उत्तरदायित्व है। जब तक बच्चे छोटे है वे माता के अधिक सम्पर्क मे
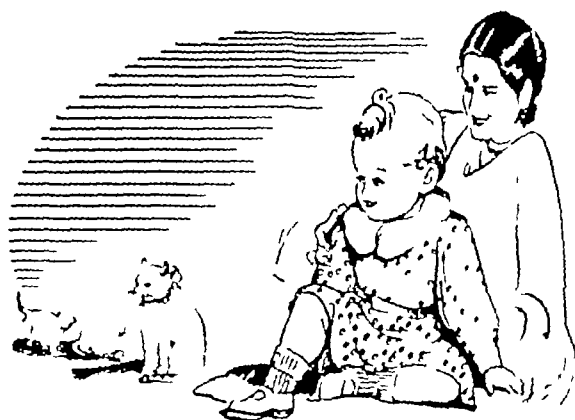
रहते है। गृहिणी पद पर आरूढ होते समय मातृत्व पद की जिम्मेदारियां निभाने की योग्यता भी होनी आवश्यक है। बच्चे परिवार का आवश्यक अग है। वे घर की शोभा है। यदि मा को बच्चे ठीक से पालने नहीं आते तो पारिवारिक चिन्ताए और अडचन बढ जाती है। बीमार बच्चे माँ-बाप की परेशानी को बढाते है, उनके कारण
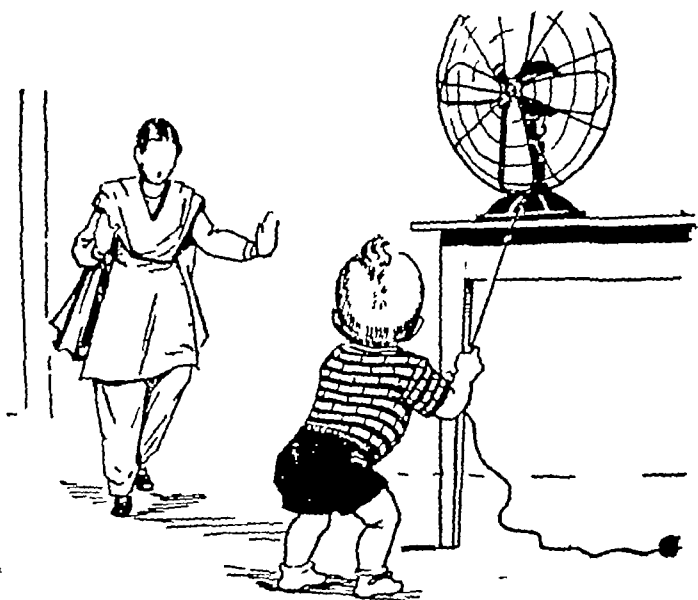
मेहनत की कमाई दवाई और डाक्टरो को भेट चढ जाती है। समस्या-

पूर्ण बच्चे दाम्पत्य-जीवन को कटु बना देते है। उनको लेकर पति-पत्नी मे परस्पर झगडा तक हो जाता है। कुसस्कारी बच्चो के कारण माँ-बाप को परिजनो और अडौस-पडौस मे लज्जित होना पडता है, कुल का नाम डूबता है।

पुरुष दिन भर जीविकोपार्जन मे लगा रहता है। उसे इतना समय नही मिलता कि वह छोटे बच्चो के चरित्र को गढे, उन्हे सदाचार का पाठ पढाये, उनमे अच्छी बातो का चाव पैदा करे, दैनिक जीवन में उनको कर्तव्य निभाना सिखाये। इन सब बातो की जिम्मेदारी माँ पर आती है। वह प्यार से फुसला कर बच्चे की बुरी टेव छुडवा सकती है, उसे सदाचारी और सस्कारी बना सकती है। जो माताएँ अयोग्य होती है, वे बच्चो को गाली-गलौच करती है, मारती-पीटती है और पिता से पिटवाने की धमकी देती है। ऐसी माताएँ अपनी कद्र तो कम करती ही है पर साथ मे पिता को भी बच्चो की दृष्टि मे केवल एक दरोगा बना देती है। सस्कारी माताओ के बच्चे भी सस्कारी और सभ्य होते है। आपका ध्येय केवल यही नही होना चाहिए कि पढ-लिख कर बच्चा कमाने लायक हो जाये, पर साथ ही बच्चे को इस योग्य भी बनाये कि उसका शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास हो सके, वह जीवन सघर्ष से जूझ सके और एक उपयोगी नागरिक की तरह अपना जीवन बिता सके।

बच्चे बुरे क्यो निकलते है—

बच्चो मे बहुत से दुर्गुण स्नेह के अभाव और अधिक दबाव के कारण आ जाते है। बच्चा अपने सगी-साथियो को खाते-पीते और खेल-तमाशो मे जाते देखता है, उसका भी मन होता है कि मै भी खेलूं, अच्छा खाऊँ-पहनूं। पर माता कजूसी के कारण तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से बच्चे को पैसा खर्चने को नही देती। वह डाँट-डपट कर बच्चे की इच्छाओ का दमन करना चाहती है, सो बच्चा चुराकर पैसा खर्चता है, पकडे जाने पर वह झूठ बोलता है, झूठ के खुल जाने पर वह किसी और के सिर अपराध मढ देता है। इस प्रकार वह एक के बाद दूसरा अपराध करता है।

आठ वर्ष का सुभाष गणित मे दो बार फेल हो गया, इस पर 'माँ' ने पिताजी से शिकायत कर दी और उसका जेब खर्च दो रुपया बन्द करवा दिया गया। सुभाष अपनी बहिनो को पैसे खर्चते देखता था, तो उसका भी जी ललचाता था। उसकी बहिने शाम को जब बगीचे मे खेलने जाती,

तो कभी खट्टे छोले या मूँगफली लेकर खाती थी, सुभाष का मन भी खाने को करता था। उसने बहिनो से पैसे माँगे, पर उन्होने यह कह कर देने से इन्कार कर दिया कि 'तू हमारे पैसे कैसे चुकायेगा, तेरा तो जेबखर्च जब तक के लिये बन्द हो गया है जब तक तू गणित मे पास नही होता। गणित तो मुझे आता ही नही, सो जेबखर्च चालू होने की भी कुछ उम्मीद नही है। यह सुनकर सुभाष को एक तरकीब सूझी उसने कहा—'अगर तुम मुझे पैसे खर्चने को नही दोगी, तो मै माताजी से कहूँगा कि इन्होने खट्टे छोले खाये थे, फिर देखो कैसी डाट पडती है। तुम्हारा भी पाकेट मनि बन्द करवाऊँगा।' यह धमकी काम कर गई।

अब सुभाष पर बहिनो का डेढ रुपया उधार चढ गया। पर वह चुकाने से लाचार था, क्योकि उसके पास पैसे नही थे। इधर बहिने अपने पैसो के लिये तकाजा कर रही थी। आखिरकार बहिनो ने माँ से कहा—'माँ, सुभाष ने हमारा डेढ रुपया देना है, क्योकि इसने अपने फाऊँन्टेनपेन मे ट्यूब डलवाई थी, एक मैप ड्राइग लाया था' इस प्रकार के बहाने कर के बहिनो ने अपने पैसे वसूल कर लिये। सुभाष ने भी सोचा पैसे प्राप्त करने का यह अच्छा तरीका है। वह हर आठवे-दसवे कभी पेसिल के बहाने, कभी रबड के बहाने पैसे माँगने लगा। एक दिन उसने अपनी डेढ रुपये की कीमत की पुस्तक आठ आने मे बेच दी। जब उसने पैसे खर्चे, तो बहिनो ने घर पर शिकायत कर दी कि आज इसके पास आठ आने थे, इसने चाकलेट खरीदी है। खोज करने पर सारी बात का जब पता चला, तो माता-पिता को अपनी भूल पर पछतावा हुआ कि अगर हमने इसको ऐसी कठोर सजा न दी होती, तो यह झूठ और बहानेबाजी का आश्रय नही लेता। दूसरी बात बच्चो का अगर कुछ खाने को जी करे तो वह वस्तु या तो घर पर बना दी जाय या खुद ही किसी साफ दूकान से खरीद कर लाई जाय। बच्चो को जेब खर्च उचित ढग से खर्चना सिखाएँ। अगर आप उन्हे कभी भी पैसा खर्चने को नही देगे, तो एक तो वह गलत ढग से पैसा प्राप्त करने की चेष्टा करेगे, साथ ही उसे छिपाकर गलत ढग से खर्च कर डालेगे।

भूल हर एक से हो जाती है। बच्चे के अपराध करने पर इस बात पता लगाएँ कि उसको ऐसा करने की किस बात से प्रेरणा मिली। अगर आप कारण को दूर न करके बच्चे को डाँट-डपट द्वारा सुधारने की चेष्टा

करेगी, तो वह झूठ और फरेब का सहारा लेकर बचने की चेष्टा करेगा। बच्चो की सभी इच्छाएँ तो पूर्ण नही हो सकती, हॉ, उनकी उचित माँगो की पूर्ति अवश्य होनी चाहिये। घर की ग्राथिक कठिनाइयो तथा ग्रभावो को सुलझाने और मुकाबिला करने मे मुन्ना-मुन्नी का भी सहयोग ले, मुसीबतो को सामना करने योग्य उन्हे भी बनाएँ। इस विपय मे बडो का दृष्टान्त बच्चो के लिए प्रेरणात्मक होगा।

प्रेरणाप्रद वातावरण—

१५ वर्ष का मोहन जे एस डब्ल्यू की परीक्षा मे सफल हो गया। परन्तु उसके पिता गरीब थे। कुल दो सौ रुपये उन्हे मासिक तनख्वाह मिलती थी। मोहन का साल के ग्रारम्भ मे ५०० रुपये खर्चा था, बाद मे हर मास लगभग चालीस रुपये खर्चा पडता। माता-पिता ने सोचा अब अगर खर्च के कारण होनहार मोहन को ग्रागे पढने से रोक दिया जायेगा तो बहुत ग्रन्याय होगा। घर मे सब ने सलाह की कि किसी प्रकार इस समस्या को हल किया जाय। मोहन के पिताजी ने कहा कि मैंने साइकिल लेने के लिये ढाई सौ रुपये बचाये थे, अब साईकिल नही लूंगा। दो सौ रुपये माताजी ने वक्त-बे-वक्त के लिये बचाये हुए थे वे निकाल कर दे दिये—मोहन की बहिन सीता ने भी अपने भैया-दूज और राखी ग्रादि के ४० रुपये जोडे थे, वह उसने सहर्ष दे दिये। फिर भला दस वर्प का मुन्नू क्यो पीछे रहने वाला था। अब केवल कुछ रुपयो की कमी और रह गई थी, रुपये जल्द जमा करवाने थे।

यह देख कर मुन्नू अपने कमरे मे गया और लौट कर शरमाते हुए, अपना छोटा बटुआ माँ के हाथ मे चुपके से थमा दिया। जब माँ ने खोल कर देखा तो उसमे पन्द्रह रुपये थे। बच्चे के लिये पन्द्रह रुपयो का त्याग पन्द्रह हजार के बराबर था। यह देख कर मोहन की ग्राँखो मे तो ग्राँसू ग्रा गये। माता ने छोटे मुन्नू को हृदय से लगा लिया और बोली—"बेटे! बडा भैया जब पास होकर नौकरी करेगा, तब तक तू कालेज मे ग्रा जायेगा। तेरी पढाई का सारा खर्च वह देगा।"

घर भर के त्याग से पाच सौ रुपयो की समस्या हल हो गई। मोहन ने भी ग्रागे जाकर कुल ३० रु० महीना मे ही गुजारा कर लिया। इधर उनकी बहिन सीता और मुन्नू ने भी पाकेट मनि के लिये माँ से कभी तकाजा

नही किया। वे जानते थे बिडी मुश्किलो से पिताजी मोहन भैया के लिये ३० रुपये महीना बचा पाते है।

वडो का उदाहरण—

बच्चे जब देखते है कि हमारे पिता-माता भी स्वार्थी है, वे अपने ऊपर तो खूब खर्चते है, हमारे लिये ही उनकी सब नसीहते है, वे स्वय उस पर अमल नही करते, तो बच्चो के चरित्र मे दृढता नही आती। जिनके घर चोर-बाजारी से कमाई आती है, उनके बच्चे तो अवश्य ही फिजूलखर्च, धोखेबाज और फरेबी होते है। धन की अधिकता के कारण वे आरामतलब और सुस्त तथा बेपरवाह भी बन जाते है, उनमे असहनशीलता तथा दम्भ भी पाया जाता है। यही कारण है कि जिनके घर बेईमानी की अधाधुन्ध कमाई आती है उनके बच्चे चरित्रहीन और दुर्गुणी हो जाते है।

बच्चो पर अपने बडो के रोजमर्रा के व्यवहारो का भी बडा प्रभाव पडता है। आपकी छोटी-छोटी भूले उन्हे अपराध करने की प्रेरणा देती है। यथा भाजी बेचने वाला आया, माँ ने तोल के पश्चात् ऊपर से एक-दो आलू चुपके से और डाल लिये, चूडी वाली से चूडियाँ ली, उसे भुलावे मे डालकर चार चूडियाँ अधिक बँधवा ली, मेहमान के लिये पन्द्रह दिन का राशन कार्ड बनवाया पर वे शनिवार को ही चले गये, पर माँ ने नौकर को कहा कि कल इतवार को भी राशन जरूर ले आइयो, अगले हफ्ते के राशन का फायदा हो जायेगा। कोई पूछताछ करेगा तो कह देगे मेहमान इतवार को गये थे। इसी तरह पिताजी घर मे बैठे होते है, पर कोई अनचाहे मित्र या किराये के लिये मकान मालिक के आने पर, मुन्ने से कहला दिया जाता है कि पिताजी घर पर नही है, किसी पडौसी के कोई चीज माँगने पर झूठे बहाने कर दिये जाते है, मुन्ना-मुन्नी अपने बडो के ऐसे व्यवहार ही से झूठ और बहानेबाजी का पाठ पढते है।

समझदार माताएँ मनोवैज्ञानिक ढग से अपने बच्चो की समस्याओ को सुलझाती है। बुरी औलाद सुख से नही जीने देती। बच्चो के पालन-पोषण की जिम्मेदारी माता पर इसलिए अधिक होती है क्योकि वह उनके सम्पर्क मे अधिक रहती है। उसका उदाहरण और आदर्श बच्चो को आज्ञाकारी और कर्तव्यशील बनने की प्रेरणा देते है। पारिवारिक वातावरण से ही उन्हे उपयोगी नागरिक बनने की प्रेरणा मिलती है। माता को चाहिए

कि बच्चे के सामाजिक-जीवन को ठीक से विकसित करे। उसे अपने संगी-साथियो के साथ हेल-मेल से रहना सिखाये। यदि बच्चो का चरित्र बचपन से ही ठीक ढाचे मे ढलता है तभी बडे होकर वे अपने जीवन में सफल हो सकते हैं। इसमे कोई सन्देह नही कि एक आदर्श गृहिणी ही सफल माता बन सकती है।

श्री सम्पूर्णानन्द जी के शब्दो मे—'सच बात तो यह है कि हम पितृत्व और मातृत्व के अर्थ को, उसके दायित्व को समझते ही नही। विवाह यौन-सम्बन्ध को वैध बनाने का साधन-मात्र नही है, वह पवित्र संस्कार है। उसके द्वारा स्त्री-पुरुष केवल पति-पत्नी ही नही बनते वरन् सहधर्मी बनते हैं। सन्तान उत्पन्न करने का धार्मिक उद्देश्य यह है कि ज्ञान का दीपक बुझने न पाये, पुश्त-दर-पुश्त उनकी उपलब्धि और वृद्धि होती रहे। सन्तान को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि वह ज्ञान और धर्म के अभ्युदय और निश्रेयस के तत्वो के प्रसार का काम कर सके'।

श्री राजेन्द्रप्रसाद के विचारो मे—'नारी की परम स्वतन्त्रता, शोभा इसी मे है और होनी चाहिये कि वे भावी पीढी की मानसिक और सांस्कृतिक गुरु बनकर माता के उच्च दर्जे को पहिचाने'।

१६. घर का वजट और सँभाल

वजट को सन्तुलित रखें—

जो नारी सच्चे अर्थ म पति की मित्र है—वह उसके प्रत्येक काम मे हाथ वटायेगी। देखने मे आता है कि अपने अवकाश का समय हमारी देश की
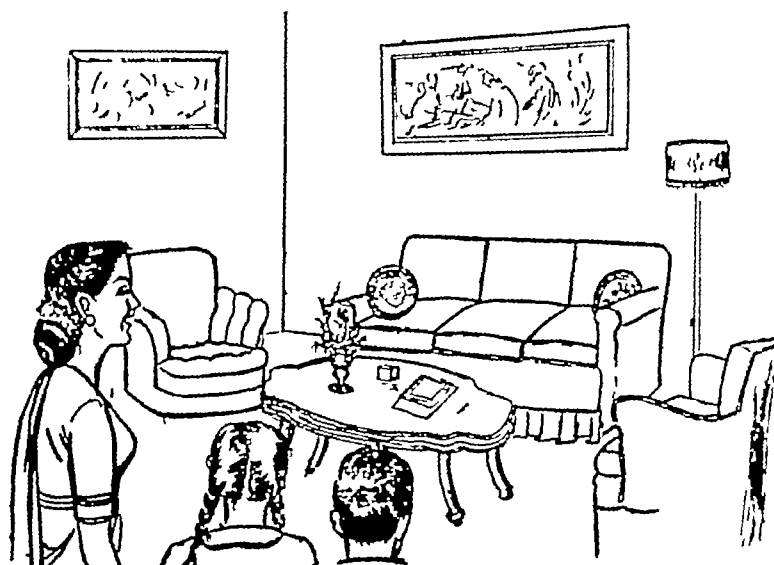
अधिकाश स्त्रियाँ गप्प शप्प मे ही गुजार देती है। जव कि वे उसी समय म कोई उपयोगी गृहोद्योग अपना करके घर की आमदनी वढा सकती है। यह अतिरिक्त आमदनी उनके आडे-भिडे काम आ सकती है। आर्थिक चट्टान से टकरा कर कई वैवाहिक जीवन छिन्न-भिन्न हो जाते है। आजकल वेरोजगारी जिस तेजी से वढ रही है उसको देखते हुए यह आशा करनी ही व्यर्थ है कि सभी पढी-लिखी महिलाएँ केवल नौकरी करके आमदनी वढा सकती है। फिर सारे समय नौकरी उसी महिला के लिए करनी उचित और सम्भव है जिसके छोटे-छोटे वच्चे न हो या फिर कोई वडी-वूढी घर सँभालने वाली हो। नौकर के भरोसे घर छोडकर नौकरी करना महामूर्खता है। नौकर रखने का अर्थ है कि कम से कम ५०) का खर्च। जिस ढग से वह खाना पकायेगा उसमे २५ प्रतिशत वचत हो सकती है, यदि स्त्री खुद खाना पकाये

नौकर कितना बिगाडते और फेंकते हैं यह किसी गृहिणी से छिपा नहीं है। फिर नौकर के पकाये भोजन से न तो आप को सन्तोष होता है न परिजनों को। आप उस पर बिगडती है, खिजती हैं और फिर खीज कर खुद काम करने बैठ जाती हैं। कई बार तो गृहस्वामी को आप से इस झीकने, चिल्लाने पर क्रोध भी आ जाता है और वह तंग आकर यही कहता है कि 'भाग्यवान, नौकरी छोड और अपना घर खुद सँभाल। तुम्हारे १००) महीना कमा कर लाने से यहाँ कुछ बचता नहीं है। उलटा नौकर की तनख्वाह और जो वह बिगाडता है उसी में सौ रुपये खर्च हो जाते हैं। तिस पर न तो तुम रोटी चैन से खाकर काम पर जा पाती हो और न भर पेट मैं ही रोटी खा पाता हूँ। क्या धरा है ऐसी नौकरी में ? घर में रहकर तुम घर का काम भी सँभा-लोगी और साथ में कुछ और भी कर सकती हो।'

आप भी सोचती हैं—'ठीक तो कहते हैं पतिदेव। नौकरी करनी कौन सरल है ? सुबह के समय दफ्तर जाने की दौड-धूप रहती है। दफ्तर में भी डाँट-डपट सहनी पडती है। इधर मुश्किल से १००) कमा पाती हूँ। पर इससे अधिक घर में नुकसान हो जाता है।'

इसी लिए समझदारों ने स्त्रियों के लिए सफलतापूर्वक, चतुराई से गृहस्थी चलाना ही सर्वोत्तम कैरियर माना है। पति की तनख्वाह में कैसे पूरा पड सके, उसके लिए चार सुझाव हैं। (१) घर का बजट आमदनी को मद्दे नजर रख कर बनाया जाये (२) गृह-व्यवस्था सुचारु रूप से की जाय ताकि समय और पैसे की बचत हो सके। (३) फिजूलखर्ची से बचा जाये। जीवन की आवश्यकताओं को पहले पूरा किया जाये, उसके बाद मनो-रंजन पर पैसे खर्चना उचित है। (४) अपने अवकाश के समय में अपनी रुचि और सुविधानुकूल कोई गृहोद्योग अपना कर आमदनी बढाई जाये।

घर का बजट और व्यय—

घर के सब लोग मिलकर सलाह करें कि किस प्रकार आमदनी को खर्चा जाये ताकि उसका अधिक से अधिक लाभ हो सके। सम्मिलित पारिवारिक जीवन का नवनिर्माण किस प्रकार करें, इस विषय में मैंने आगे बताया है। को-ओपरेटिव आधार पर सम्मिलित पारिवारिक-जीवन बिताने से भी काफी बचत हो सकती है। लक्ष्मी ने अपनी गृहस्थी की आमदनी कैसे बढाई इसका वर्णन भी अगले अध्यायों में किया गया है। यदि प्रत्येक गृहिणी इस प्रकार

से अपनी गृहव्यवस्था रखे तो घर की आमदनी भी बढ़ सकती है और खर्च भी सन्तुलित रह सकता है। सबसे अधिक खर्च होता है भोजन के मद पर। पर यह तभी सार्थक हो सकता है जब कि आप समझदारी से ऐसा भोजन पकाये कि शरीर की जरूरतें कम खर्च में ही पूरी हो जायें। यह बात नहीं है कि जिनके यहाँ अधिक पैसा भोजन पर खर्च किया जाता है वे ही अच्छा भोजन प्राप्त कर सकते हैं। देखने में आया है कि कई घरों में अधिक पैसा खर्च करके भी पौष्टिक भोजन प्राप्त नहीं होता। घर चाहे आपका छोटा सा हो पर उसमें अनावश्यक सामान मत भर लें। शहरों में स्थानाभाव के कारण जरूरत भर का ही सामान रखना ठीक है। पैसे-पैसे का हिसाब रखें और कुछ रकम अचानक खर्च के लिए अलग सम्भाल कर रख दें।

फिजूलखर्ची से बचें—

देखने में आता है कि सुचारु रूप से गृहव्यवस्था न कर सकने से घर का खर्च बहुत हो जाता है। यथा—

१ पूरे समय नौकर रखने की जरूरत नहीं है। पाँच-सात रुपये पर बर्तन माँजने के लिए एक महरी रख लें जो कि दिन में दो समय आकर आपके बर्तन माँज जाय और सुबह कमरों में झाड़ू भी दे जाये।

२ जब सुबह भाजी-तरकारी काट लें, तब आग जलाये और घंटे डेढ़ घंटे में एक भाजी, दाल तथा रोटी तैयार करलें। आम तौर पर गृहिणी सुबह से चौका लेकर बैठती है और दोपहर के दो बजे जाकर काम खतम होता है। शाम को फिर पाँच बजे से १२ बजे रात तक चौके का काम चलता है। इस से एक तो ईंधन बहुत जलता है। दूसरा गृहिणी चूल्हा-चक्की के सिवाय किसी काम के लिए अवकाश नहीं निकाल पाती।

३ घर की रसद महीने या सप्ताह में एक बार नकद पैसे देकर खरीदें। रोज-रोज खरीदने या मँगाने से घाटा रहता है और चीज भी अच्छी नहीं मिलती। रसद डिब्बों में बिन-चुन कर भर दें ताकि कीड़े-मकोड़े और चूहे खराब न करें।

४ दफ्तर या स्कूल जाने वाले व्यक्ति भोजन एक समय पर करलें और स्त्रियाँ बाद में ताकि काम जल्द निबट जाये। रात को परिवार के सब लोग इकट्ठे बैठकर खाये तो आनन्द भी आये और पकाने तथा खिलाने की सुविधा भी रहे।

५ हर एक काम का समय बाँध ले ताकि आपको बेफिक्री से दूसरे काम समेटने के लिए अवकाश मिल जाय। सप्ताह मे एक दिन शाम को खाना पकाने से छुट्टी रखे। यथा इतवार के दिन सुबह विशेष रूप से भोजन पका ले। या फिर शाम को जलपान के समय ही भोजन करके घूमने-फिरने के लिए अवकाश निकाल ले।

६ बच्चो के लिये ट्यूशन न लगवाये। माँ-बाप का यह फर्ज है कि बच्चों की पढाई आदि मे दिलचस्पी ले। माँ की शिक्षा किस काम आयेगी यदि वह छोटे बच्चो की पढाई-लिखाई भी नही सभाल पाती? यदि कोई ऐसा विषय है जो आप को नही आता तो अपने पति का सहयोग प्राप्त करे।
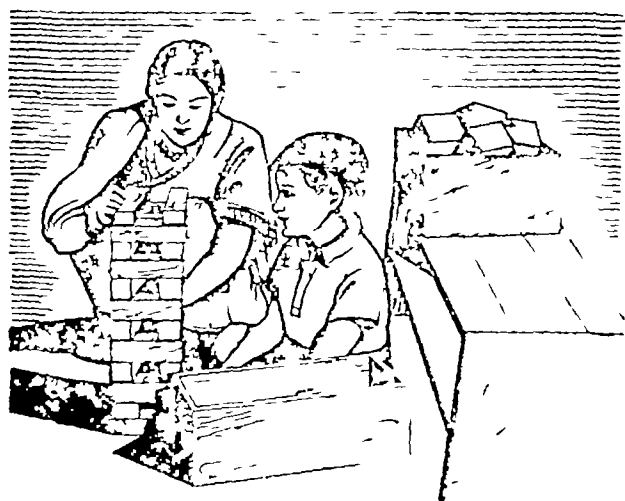
७ जाडो मे अपने पति के पुराने कोट, पतलून तथा स्वेटरो को उधेड़-कर बच्चो के कपडे बना दे। एक जोडा नया और दो जोडे पुराने कपडो से काम चल जायेगा। फटे कपडो की मरम्मत करना न भूले। पुरानी साडियो तथा चादरो से दरवाजे के पर्दे, झाडन-गिलाफ बनाले। बच्चो को नये कपडे तीज-त्योहार और जन्म दिन पर बनवा दे। इनसे दो लाभ होगे, बच्चो की जरूरते भी पूरी हो जायेगी और उपहार देने की समस्या भी हल हो जायेगी। रेशमी और गर्म कपडे रीठे या लक्स से घर पर खुद ही धो ले। धोबी कपडो को पटक कर उनकी आधी जान निकाल देता है। केवल जो कपडा भट्ठी चढाना हो उसे ही धोबी को दे।

८ दिखावे मे आकर अतिथि-सत्कार तथा उत्सवो पर बूते से बाहर खर्चा मत करे।

९ किसी की देखादेखी जेवर-कपडो की हवस मत करे। स्त्री का

सच्चा भूषण है लज्जा। साफ-सुथरी और सुरुचिपूर्ण पोशाक तडक-भडक वाले कपडो से अधिक अच्छी लगती है।

१० कहावत है 'सस्ता रोवे बारबार महँगा रोवे एक बार'। इसलिए ऊपरी-तडक भडक देख कर कोई चीज मत खरीद ले। जरूरत हो तभी चीज खरीदे। पडी-पडी चीज एक तो आउट ऑफ फैशन हो जाती है दूसरी बात वह खराब भी हो सकती है। फिर बेमतलब चीजो की सार-सँभाल करने की मुसीबत क्यो बटोरी जाय? यदि आप अनावश्यक चीजो को खरीदने का लोभ सवरण कर लेगी तो आडे-भिडे समय के लिए आपके पास धन जमा रहेगा। कई स्त्रियो की ऐसी आदत होती है कि सखी-सहेलियो के सग मिलकर घूमने-फिरने के बहाने शापिग को चल देती है। और फिर देखादेखी उनका भी मन कुछ खरीदने को कर आता है। इसी तरह से फिजूलखर्ची की आदत पड जाती है।

११ व्याह-शादियो के लिए भी बरसो पहले से कपडा खरीदकर नही रखना चाहिए। एक तो फैशन बदलते रहते है तथा कपडा पडा-पडा गल जाता है। फिर जो रुपया जेवरो-कपडो मे पहले से लगाया हुआ है वह यदि बैक मे या पोस्टल सार्टिफिकेट मे लगाया होता तो बढता रहता। दूसरी बात यह कि बीमारी या आपत्काल मे चीज काम नही आती, उस समय तो नकद रुपया चाहिए। रुपया पास न होने पर फिर ऊँची व्याज पर उधार लेना पडता है।

आर्थिक कठिनाइयो के अतिरिक्त भी गृहिणी के आगे अन्य कई समस्याएँ ऐसी आ जाती है जिनके कारण गृहस्थी की गाडी चलते-चलते लडखडा जाती है। इनमे से कुछ है—अतिथि सत्कार, उत्सवो का आयोजन, घर की सफाई, सजावट और भोजन तथा नौकरो की समस्या।

बजट का सन्तुलन बना रहे तथा गृहस्थी की दिनचर्या मे खलल न पडे इसलिये उपर्युक्त सभी समस्याओ को मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण रखकर सुलझाना पडेगा।

अतिथि-सत्कार और उत्सव—

कहावत है—जितनी बडी चादर हो उतने ही पाँव पसारे जाए। किसी की देखा-देखी अधिक खर्च करने से फिर महीने के अधिकाश दिन फाके की नौबत आती है। यदि मन मे किसी के प्रति मित्रभाव नही है तो अतिथि-

सत्कार केवल एक दिखावा-मात्र रह जाता है। जो आपका सच्चा मित्र है उसके लिए मीठे शब्द, आदर और प्रेम से परोसी हुई रोटी ही काफी है। त्यौहारो के विषय मे बहुत कुछ सुधार की आवश्यकता है। रूढिवादिता को छोडकर उत्सवो, त्यौहारो और पर्वो का समाज के लिए जो कल्याणकारी रूप हो उसे ही अपनाना चाहिये। पुरानी रूढियाँ अब टूट रही है। उनकी जगह स्त्रियो को अब नयी मर्यादाएँ बाँधनी होगी। त्यौहारो और उत्सवो को इस प्रकार से मनाने की प्रेरणा देनी होगी जो पारिवारिक जीवन को अधिक आनन्दमय और सामाजिक-जीवन को अधिक मनोरजक बना दे।

घर की सफाई और सजावट—

कई एक स्त्रियाँ वैसे तो बडी शौकीन होती है परन्तु घर बडा गन्दा रखती है। ढेर-के-ढेर कपडे पलँगो, सन्दूको पर और गुसलखाने मे पडे रहते है। घरो मे जाला लटकता रहता है। फर्नीचर पर धूल जमी रहती है और कोई चीज ठिकाने पर नही होती। पत्नी की इस गन्दगी और अव्यवस्था पर पति बहुत भुँझलाता है। वह जब जाने की जल्दी मे होता है उसे अपना तौलिया नही मिलता, जूता एक है एक पलँग के नीचे किसी ने पटक दिया है। कमीज बिस्तरो के नीचे दबी हुई है। उसकी जरूरी चिट्ठी या फाइल किसी बच्चे ने इधर-उधर पटक दी है। फाऊन्टेन पैन जो कि श्रीमती जी पत्र लिखने के लिए उठाकर ले गई थी उसका पता ही नहीं चल रहा है। धोबी को कपडे दिये थे तो कमीज मे पति के साइकिल के ताले की चाबी ही चली गई। अब भला बताइये पति देवता को गुस्सा क्यो न आयेगा? वह बच्चो पर बिगडता है, चीजे उठाकर इधर-उधर पटक देता है और पत्नी को बुरी-भली सुनाकर बिना खाना खाये हाँपता हुआ दफ्तर पहुँचता है। मिजाज बिगडा रहने के कारण वहाँ पर भी बडे बाबू से बिना बात के कहा-सुनी हो जाती है। जिसका फल उसे बाद मे भुगतना पडता है। शाम को थका-माँदा जब वह अपने घर की अव्यवस्था पर अफसोस करता हुआ घर पहुचता है तो बैठक मे अपनी सहेलियो को विदा करते-करते पत्नी को दस मिनट और लग जाते है और पति अपने जूते खोल कर जब बैठक मे घुसता है तो एक ओर मूंगफली के छिलके पडे है, दूसरी ओर कपडो की कतरने बिखरी हुई है। ऐशट्रे और फूलदान एक ओर लुढके पडे है शायद पडोसिन का मुन्ना उनसे खेल रहा होगा। पति महाशय किसी मित्र के बच्चे के जन्म दिन पर

देने के लिए एक खिलौना लाये थे, पर आकर देखते है कि आपकी बहन के बच्चे उसे लेकर आपस मे छीना-झपटी कर रहे है और उसका एक पहिया

तोड डाला है। अब आप ही सोचिये घर की इस अव्यवस्था से खीज कर पति का मूड क्यो न विगडेगा ? फलस्वरूप चिढकर पति को पत्नी का शृगार और रूप फीका दीखने लगता है। किसी ने ठीक कहा हे कि 'सुन्दर पत्नी पति का मन केवल कभी-कभी ही आकर्पित कर पाती हे परन्तु सेवा-परायण

पत्नी पर पति हमेशा प्रसन्न रहता है।' घर की व्यवस्था के मामलो मे आप नीचे लिखी बातो का ध्यान रखें—

१ घर को हमेशा साफ-सुथरा रखे। हर आठवे दिन जाले उतारना, दरवाजे और शीशे पोछना न भूले। सुबह या जब पति दफ्तर चले जाये कमरा झाडकर, फर्श और फर्नीचर पोछ दे।

२ हर एक चीज के लिये स्थान निश्चित रखे। नही तो समय पर चीज ढूंढने मे वडी असुविधा होती है। झाड-पोछ करके हर एक चीज को निश्चित स्थान पर रख दे।

३ स्थान थोडा हो तो कमरे मे वहुत-सा फर्नीचर मत रखे। सुवह के समय खटिया वाहर करके एक ओर खडी कर दे और विस्तरो को लपेटकर एक चौकी या पलग पर सजा कर पलँग-पोश से ढक दे। वैठक मे दो कुर्सी, एक टेवुल रखे। एक तखत पर गद्दे विछा करके रगदार अच्छा पलगपोश विछा दे। दो लम्वे गॉव तकिये लगा दे। इस तखत पर रात के समय विस्तरा भी लगाया जा सकता है। अगर कमरे मे दो-तीन खिडकियाँ है तो एक खिडकी मे जिसे आप प्राय वन्द रखती है, आप पर्दा तथा हैंगर लगाने के लिए छड लगवाकर उससे ड्रेसिंग आलमारी का काम ले सकती है। पास की दीवार पर एक शीशा लगवा दे। एक कोने मे छोटी-सी टेवुल सजा कर पति के कागज पत्र उस पर रखे। कुर्सी-मेज इस प्रकार से लगाये कि आने-जाने मे सुविधा हो और ठोकर न लगे। ऋतु अनुसार कमरे की व्यवस्था वदलते रहना चाहिए।
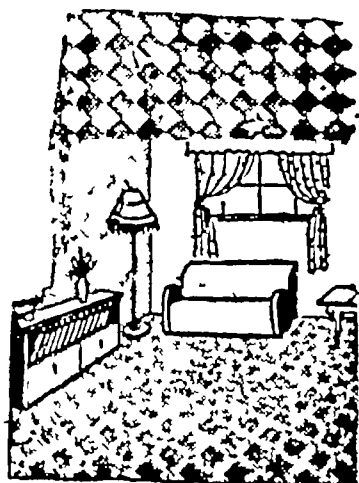
४ सन्दूक सब कमरो मे रखने ठीक नही है। यदि एक से तीन-चार सन्दूक है तो उनमे ऐसा सामान भरे जिन्हे रोज-रोज निकालने की जरूरत न पडे। उन्हे लाइन मे सजाकर ऊपर से दो गद्दे डाल दें और उसे एक सुन्दर पलग पोश से ढक दे। अव यह जगह सोने वैठने के काम आ सकती है। एक छोटी कोठरी मे फालतू सामान भर दे। वही पर विस्तरे भी रखे जा सकते है।

५ दरवाजे या खिडकियो मे पर्दे लगाकर रखे। दो-चार सुरुचिपूर्ण चित्र, एक फूलदान आदि घर की सजावट बढा देते है।

भोजन—

इस विषय मे अगले अध्याय मे विस्तृत रूप से यह बताया गया है कि परिजनो को यदि अच्छा और सन्तुलित भोजन खाने को नही मिलेगा तो उनका स्वास्थ्य अच्छा नही रह सकता। शरीर मे पौष्टिक तत्वो की कमी बनी रहने से व्यक्ति बीमारी का जल्द शिकार हो जाता है। अतएव जो पैसा इलाज पर खर्चना पडता है, उसको यदि अच्छा भोजन प्राप्त करने पर ही खर्चा जाये तो अक्लमदी है। गृहिणी को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भोजन ऋतु, रुचि और स्वास्थ्य अनुकूल होना जरूरी है। भोजन परिजनो को प्रेम और सफाई से कराये। पति की रुचि का ध्यान रखे। ताजी, गर्म और सफाई से बनाई हुई एक-दो चीज मे जो रस है वह बेपरवाही से पकाये हुए पकवानो मे नही है। एक ही चीज रोज-रोज मत बनाये। अदल-बदल कर भोजन पकाये। उन्हे सफाई और सुघडाई से परोसे। वक्त के लिए घर मे रसद हमेशा बना कर रखे। यह न हो कि ऐन मौके पर कह दे कि अमुक चीज खतम हो गई है। पति के मित्रो की आवभगत करनी न भूले। पत्नी यदि सुघड गृहिणी होती है तो पति का सामाजिक-जीवन सफल रहता है। पाक-शास्त्र मे चतुर नारी सब परिजनो की प्यारी होती है। अग्रेजी मे एक कहावत है कि पति के हृदय का रास्ता पेट मे होकर है। अर्थात् जो पत्नी पाक-विज्ञान मे प्रवीण होती है वह अपने पति को पेट-पूजा से हमेशा प्रसन्न रखती है। गेहू तो सब के घर मे आता है पर रोटी बिरले घरो मे ही पकती है। सुघड नारी के हाथ के भोजन मे कुछ और ही रस होता है। एक सफल गृहिणी के लिए यह बहुत जरूरी है कि वह भोजन पकाने मे चतुर हो, बच्चो को भली प्रकार सभाल सके और घर को साफ-सुथरा रखे, साथ ही आमदनी और खर्च का सन्तुलन बनाये रखे।

१७. लक्ष्मी की गृहस्थी

अच्छे भोजन के अभाव मे—

मेडिकल रिपोर्ट से यह पता चला है कि हमारे देश मे अधिकांश लोग अयुक्त आहार करते है इसकी वजह से उनका स्वास्थ्य बहुत गिरा हुआ है और उनमे बीमारी का मुकाबिला करने की शक्ति बहुत कम पाई गई है।

देश के लोगो को खाना अच्छा नही मिलता, इसके निम्नलिखित कारण है—

१ गरीबी।

२ सामाजिक रीति-रिवाज।

३ जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण।

४ मुसीबतो और दुःखो से घिरे रहने के कारण जिन्दादिली और जीवित रहने के लिए उमग की कमी।

५ अज्ञानता।

भारत मे कई एक लोग ऐसे है जिन्हे दिन मे एक बार भी भरपेट भोजन नसीब नही होता। जो पैसा अपने खाने-पीने पर खर्चना उचित है वह व्यसनो मे उडा दिया जाता है और या वे पेट काट-काटकर पैसा जोडते जाते है। घर आकर वही पैसा उधार चुकाने मे खतम हो जाता है।

कई बार ऐसा भी होता है कि खाने-पीने भर को तो पैसा गृहस्वामी कमा लेता है पर उसे खाने-पीने पर खर्चना नही है। लडके के व्याह, माता-पिता के श्राद्ध, सबन्धियो को लेना-देना तथा अन्य सामाजिक आडबरो के लिये अपनी मेहनत की कमाई उसे बचाकर रखनी पडती है। इसी कारण से न तो वह अच्छा खा सकता है, न पहन सकता है। यहाँ तक कि बीमार होने पर भली प्रकार इलाज भी नही करवा सकता। स्वास्थ्य गिरा रहने से उसकी

कमाने की क्षमता भी कम हो जाती है और उसके बच्चे भी स्वस्थ्य पैदा नही होते। इस प्रकार इस दुष्चक्र मे फँस कर उसका जीवन स्तर हमेशा गिरा रहता है।

कई लोग सामर्थ्य होते हुए भी जान बूझकर सासारिक सुखो से स्वय को वचित रखते है। धर्मान्धितावश वे सोचते है कि अगर हम इस जन्म मे शरीर को कष्ट देगे तो हमे अगले जन्म मे सुख प्राप्त होगा या मुक्ति मिल जायेगी। इसलिए वे अच्छा भोजन नही खाते। रूखा-सूखा खाकर अपना पेट भर लेते है। जिस प्रकार से वे उपवास करते है उससे शरीर की शुद्धि तो होती नही, उल्टा पानी के अभाव मे शरीर मे विष इकट्ठा हो जाता है और शक्ति का क्षय होने के कारण उन्हे अनेक रोग घेर लेते है। जब उनकी काया बिगड जाती है, तब उन्हे अपनी भूल मालूम होती है। कई बार ऐसा भी होता है कि एक दम से कोई बुरा फल नजर नही आता, परन्तु अच्छा भोजन न मिलने से उनकी शक्ति धीरे-धीरे क्षय होती जाती है और समय से पहले ही वे बूढे हो जाते है।

कई लोगो को अपने शरीर को कष्ट देने मे आनन्द आता है। लोगो की सहानुभूति पाने के लिए वे ऐसा करते है। 'हाय-हाय भूख से बेचारे का मुँह सूख गया है' 'देखो न शान्ता जैन की माँ कितनी तपस्विनी है। उपवास व व्रत से उसने अपनी काया सुखा ली है।'

मनोवैज्ञानिक चिकित्सक इस मनोवृत्ति को 'मैसोकिज्म' कहते है। हमारे देश मे मैसोकिज्म से पीढित व्यक्तियो का अभाव नही है। ये लोग स्वय को अच्छे भोजन तथा जीवन के अन्य सुखो से वचित रख कर एक प्रकार के सुख का अनुभव करते है। इसके अतिरिक्त कई लोग निराश, असफलता तथा मुसीबतो से तग आकर अपने जीवन के प्रति उदासीन हो जाते है। उनमे उत्साह और कुछ करने की इच्छा का अभाव पाया गया है। ऐसे लोग भी अपने खान-पान की ओर उदासीन रहते है। मिल गया तो खा-लिया नही मिला तो दिन भर चाय की प्यालियाँ पीकर तथा सिगरेट फूककर ही दिन गुजार दिया। ये लोग भी अच्छे भोजन का महत्त्व नही समझते।

गृहिण भी दोषी है--

कई घर ऐसे भी है जिनके घर काफी पैसा है, पर गृहिणी की अज्ञा-

नतावश उन्हे सन्तुलित भोजन ही नही मिल पाता या सामाजिक रिवाजो के कारण वे अपने खान-पान का रिवाज नही बदलना चाहते। यथा पूर्व भारत मे रात को अधिकाश खाते-पीते घरो मे पक्का भोजन व पकवान खाने का रिवाज है। इस कारण से अनेक प्रौढ व्यक्तियो का शरीर स्थूल हो जाता है और उन्हे पेट के अनेक रोग हो जाते हैं।

अब इस अध्याय मे इस बात पर विचार करना है कि जो मध्यम वर्ग के लोग है जिनकी आमदनी दो सौ रुपये से ५००) मासिक तक है वे किस प्रकार से अपना बजट बनाये कि उन्हे अच्छा भोजन मिल सके और उनकी अन्य जरूरते भी पूरी हो सके। मै एक उदाहरण पेश करती हूँ।

लक्ष्मी का पति मनोहर दिल्ली मे एक ऑफिस मे हेड क्लर्क है। उसे लगभग ३००) मासिक मिलते है। परिवार मे दो बच्चे है—एक लडका एक लडकी। लडके का नाम है सुधाशु, इसी साल मैट्रिक पास करके हायर सेकेण्डरी मे आया है। लडकी का नाम है लता। वह आयु मे मुन्ने मे दो साल छोटी है, नौवी कक्षा मे पढती है। घर मे मनोहर बाबू की बूढी माँ जी भी है। लक्ष्मी अपने यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करती है। दोनो पति-पत्नी परस्पर सहयोग से गृहस्थी चलाते है। वे इस बात को भली प्रकार समझते है कि स्वस्थ रहने के लिए अच्छा भोजन बहुत जरूरी है। परिश्रम का महत्व भी वे खूब समझते है। इस कारण उन्होने अपने घर का बजट ऐसा सन्तुलित रखा हुआ है कि उनका काम बडे मजे मे चल रहा है। आप भी जानना चाहेगी कि वे अपनी आमदनी को किस प्रकार खर्चते है। सुनिये—

सन्तुलित बजट—

प्रतिमास ५०) मकान का किराया और बिजली पानी पर खर्च होता है। मनोहर बाबू और उनके मित्र ने मिल कर शहर मे कुछ दूर १००) रुपये महीने पर एक मकान साझे मे ले लिया है। शहर मे इसी मकान के दो सौ रुपया किराया देना पडता। ऑफिस से चाहे तीन मील दूर उनका घर है पर मनोहर बाबू को साइकिल से ऑफिस जाने मे कुछ खास दिक्कत नही होती, ५०) ऊपरी खर्च यथा बच्चो के स्कूल की फीस, धुलाई व ट्यूशन आदि पर खर्च होता है, २०) महीना मनोहर बाबू अपने जीवन-बीमा के लिए कटा देते है, १०) महीना फड मे कटाते है ताकि कन्या के विवाह के लिए रुपया जमा होता जाये, २०) महीना पोस्ट आफिस मे जमा करा देते

है। अब रहे १५०) इसे वे हर मास अपनी गृहिणी को खाने-पीने पर खर्चा चलाने के लिए दे देते है।

इस रकम को लक्ष्मी निम्नलिखित प्रकार से खर्च करती है। २५) महीने का उनके यहाँ गेहूँ और चावल आ जाता है, १५) का घी और ५) का तेल मँगा लेती है, ३०) प्रतिमास दूध पर खर्च हो जाते है। २०) की साग-सब्जी आ जाती है, १०) दालो और मिर्च ममालो पर खर्च किया जाता है, ५) प्रतिमाम अतिथि-सत्कार और तीज-त्यौहार के लिए रख लिये जाते है, १५) का फल, २) का गुड, ६) चीनी और चाय का खर्च है, ५) चोका बर्तन वाली को और २) मेहतरानी को तनखाह है, १०) वे अपनी सास जी को दे देती है ताकि जब भैया दूज या राखी आदि आये या और कोई त्यौहार हो तो अपनी बेटी को तीज-त्यौहार पर देने के लिए या रिश्तेदारी मे कुछ लेने-देने या किसी पर्व पर माँ जी इम रकम को अपना मर्जी और सुविधा के मुताबिक खर्च कर सके।

लक्ष्मी महीने के आरभ मे ही एक दिन बाजार जाकर गेहूँ, दाल, चावल, मसाला आदि अपनी पसन्द का ले आती है। फिर उसे साफ करके छानबीन कर डिब्बो मे भर कर रख देती है। उनके घर के पास ही एक गाँव है, वही से सामने दुहा कर रुपये का दो-ढाई सेर के हिसाब से दूध उन्हे मिल जाता था। जाडो मे दूध की क्रीम सस्ती मिलती है। वह क्रीम लेकर घी खुद ही बना लेती है। गर्मियो के लिए भी फागुन के महीने मे ही बीस सेर घी इकट्ठा बनाकर दो बडे मर्तबानो मे भर लेती है। लक्ष्मी का कहना है कि घर का तपाया हुआ घी सोलह आने खालिस होता ही है, साथ ही गुण और स्वाद मे भी बहुत अच्छा होता है। बाजार के घी मे एक तो मिलावट होती है, दूसरा वह उठता भी ज्यादा है।

मनोहर बाबू प्रात काल जलपान करके अपने दोनो बच्चो के साथ गाँव की ओर खेतो मे घूमने निकल जाते है और वही एक परिचित कुँजडे से साग-भाजी ले आते है। ताजी भाजी मे जो स्वाद और रस होता है वह शहर की दो दिन की बासी और पानी मे भिगोई हुई भाजी मे नही होता।

भोजन की व्यवस्था—

लक्ष्मी इस बात को भली प्रकार समझती है कि घर मे पैसे की बचत तभी हो सकती है जब कि दिनचर्या नियमित रखी जाये। सुबह का जलाया

हुआ चूल्हा अगर दोपहर को दो बजे ठंडा होगा और शाम को ५ बजे जलाया हुआ रात को दस बजे तब तो २५) महीने का ईंधन ही उठ जायेगा

और गृहिणी को चूल्हा-चक्की से ही अवकाश नहीं मिलेगा। इस प्रकार धन और समय दोनों की बरबादी होती है। प्रातःकाल जहाँ लोगों के घर में सब चाय पीते हैं लक्ष्मी चीनी के बड़े जग में पानी भर कर दो नीबू निचोड़ उसमें चार चम्मच चीनी और एक चम्मच नमक डाल कर नीबू-पानी तैयार कर लेती है। जाड़ों में यही चीज वह गर्म पानी में तैयार करती है। लक्ष्मी का कहना है कि खाली पेट नीबू पानी पीने से जिगर ठीक रहता है, पेट साफ रहता है और इससे विटामिन 'सी' प्राप्त होता है, जुकाम से बचाव रहता है और गर्मियों में जब कि अधिक पसीना निकल जाये तो थकावट दूर होती है तथा शरीर में नमक की कमी हो जाती है नीबू पानी पीने से बहुत लाभ होता है। उसका यह भी विचार है कि जिन व्यक्तियों को ६॥ स्कूल या ऑफिस जाना होता है वे यदि सुबह दूध या लस्सी पियें तो ६ बजे वह रुचि से भोजन नहीं खा पाते।

है और आकर तुरन्त दाल चढा देती है। अगर लौकी या कद्दू का रायता डालना होता है तो उसे कद्दूकस मे निकाल एक कटोरे मे रख उसे दाल के पतीले पर रखकर ढक देती है। उसमे पानी डालन की भी जरूरत नही पडती। इस प्रकार उसका विटामिन व्यर्थ नही जाता। दाल पक जाने पर भाजी छौक देती है। जिस दिन आलू की सब्जी बनती है, उस दिन दाल मे ही पालक, सोया, चौलाई, बथुआ आदि डालकर पका लिया जाता है। बस एक दाल, भाजी, रायता, इतना खाना सुबह को उनके यहाँ बनता है। दोनो बच्चे और मनोहर बाबू ९ बजे भोजन कर लेते है। इसके बाद लक्ष्मी उन तीनो के साथ ले जाने के लिए प्रत्येक के डिब्बे मे दो-दो पराठे, नीबू के अचार की फॉक तथा भाजी साथ बाँध देती है। पराठे कभी मूली, आलू या पालक भर के भी बनाये जाते है। कभी-कभी लक्ष्मी दूध मे आटा सान कर गुड डालकर मीठे पराठे बना देती है। भाजी के स्थान पर कभी-कभी अकुरित मूंग या चने की घुंघनियाँ भी होती है।

इन लोगो को बिदा करके दस बजे लक्ष्मी अपनी सास जी को भोजन कराती है। उनके खाने के बाद खुद खाती है। कभी-कभी सास-बहू दोनो साथ बैठकर भी खा लेती है। रोटी पकाने के बाद चूल्हे पर लक्ष्मी पानी का बडा पतीला भर कर चढा देती है, ताकि कहारिन बर्तन सफाई से धो डाले और गर्म पानी से झाडन तथा कपडे भी साफ धुल जाते है।

लक्ष्मी ने घर की आय कैसे बढाई—

खाना खाने के बाद एक घण्टा लक्ष्मी लेट कर अखबार आदि पढती है। इसके बाद १२ बजे वह अपनी सिलाई या बुनाई लेकर बैठती है। सिलाई-बुनाई और कसीदे के काम मे लक्ष्मी बहुत होशियार है। वह अपने घर के सब कपडे तो सीती ही है, साथ ही महिला-कला-केन्द्र से बुनाई और कढाई का काम भी ले आती है। इस प्रकार प्रति मास ५० रुपया वह उपार्जन कर लेती है। इसी तरह रुपये जोडकर उसने दो हजार रुपये के पोस्टल सर्टिफिकेट ले लिये है, जो कि १२ वर्ष मे तीन हजार हो जायँगे। लता भी अपनी माँ की तरह बडी चतुर है। वह भी बुनाई और सिलाई मे अपनी माँ का हाथ बटाती है। सुधाँशु भला क्यो पीछे रहने लगा। वह चित्रकारी बहुत अच्छी करता है। आयल-पेंटिग और वाटर कलर मे उसका हाथ खूब बैठा हुआ है। एक बार उसने सैटिन के कुशन पर शिव-पार्वती का चित्र बनाया।

लक्ष्मी वह चित्र महिला-कला-केन्द्र मे दिखाने ले गई, वहाँ वह दस रुपये मे तुरन्त बिक गया तथा ऐसे कुशनो की और माँग हुई। लक्ष्मी ने सफेद मॅटिन का एक थान खरीद लिया, उसके कुशन और पर्स सीकर उन पर हेंडल और डोरी लगाकर तैयार कर दिये। कुछ पर सुधांशु ने चित्र पेंट किये और कुछ पर लता ने कसीदा काढा। सब चीजे तैयार हो जाने पर लक्ष्मी उन्हे महिला-कला-केन्द्र मे रख आई। वहाँ वे लागत से दुगने दाम मे बिकी। इनसे लक्ष्मी को ५५ रु० लाभ हुआ। इसमे से ५) उसने महिला-कला-केन्द्र के गरीब फंड मे दे दिये। अब लक्ष्मी अपने बच्चो के सहयोग से १००) महीना कमाने लग गई है।

एक साल से मनोहर बाबू को भी सप्ताह मे दो दिन (शनिवार-इत-वार को) ट्यूशन का काम मिल गया है। वे दो घंटा पढाते है, उन्हे ३०) महीना मिल जाते है। इस प्रकार उनके परिवार के सभी व्यक्ति परिश्रमी है। बूढी माँ जी भी दोपहर को चर्खा लेकर बैठ जाती है। इसी साल उन्होने दो खेस बुनवाये है।

अब पिछले महीने लक्ष्मी ने एक गाय ले ली है। माता जी सुबह गाय की सानी कर देती है। साथ मे सुधांशु मदद करता है। गाय ६ सेर दूध देती है। तीन सेर दूध मनोहर बाबू का दोस्त खरीद लेता है। इस प्रकार लगभग गाय का खर्चा निकल आता है। केवल दो रुपये मासिक उसकी चराई के ग्वाले को अवश्य देने पडते है। अब तो मनोहर बाबू के घर पर खाने-पीने की बडी मौज है। हर इतवार को खीर या रबडी बनती है। शाम को ४ बजे जब बच्चे स्कूल से लौट कर आते है तो लक्ष्मी उन्हे दूध की खीर, फिरनी, गेहूँ का दलिया, इसी प्रकार की कुछ न कुछ चीज खाने को देती है।

पहले जो ३०) महीना दूध पर खर्च होता है, उसमे से १५) महीना लक्ष्मी ने फल के लिए और बढा दिए है। अतएव अब उनके यहाँ रोज एक रुपये का फल आता है लक्ष्मी जानती है कि मौसमी फल सस्ते और अच्छे मिलते है। गर्मियो मे ककडी, खीरा, खरबूजे, आम, जामुन अदल-बदल कर मॅगा लेती है। जाडो मे केले, सन्तरे, पपीता तथा सूखा मेवा मॅगा लिया जाता है। गाजर, नीबू, टमाटर व आँवला सस्ता भी होता है और विटामिन की दृष्टि से लाभदायक भी बहुत है। इस लिए इनका प्रयोग लक्ष्मी के घर मे बहुतायत से होता है। ककडी, गाजर, चुकुन्दर तथा प्याज की सलाद से

बिस्तरे आदि ठीक करके दो गिलास पानी ढक कर पास की तिपाई पर रख देती है। इसके बाद रात्रि में साढ़े नौ बजे परिवार के सब लोग इकट्ठे बैठकर भगवान की आरती करते हैं तथा कुछ देर भगवद् चर्चा होती है। दस बजे बच्चे सोने चले जाते हैं तब लक्ष्मी आधा घंटा रामायण पढ़ती है।

इतवार के दिन उनके घर काम की विशेष धूम होती है उस दिन गोदाम की विशेष सफाई होती है। अचार-मुरब्बों को धूप लगाई जाती है। गेहूँ, बेसन या मसाला पिसाया जाता है। घर के जाले उतारे जाते हैं। कांच के तथा पीतल के बर्तन विम से साफ किये जाते हैं। सुधांशु व लता दोपहर को रेशमी कपड़े धोकर शाम को उन्हें इस्त्री कर लेते हैं। लक्ष्मी धोबी को केवल वे ही कपड़े देती है जिन्हें भट्टी चढ़ाने की जरूरत होती है। रेशमी या छींट के कपड़े धोबी खराब कर लाता है। गर्म पानी में लक्स डालकर उसकी झाग से रेशमी कपड़े धोने से उनमें एक विशेष चमक आ जाती है और रंगदार कपड़ों का रंग भी लक्स से निखर जाता है। साबुन की जो झाग बनती है उसमें झाडन आदि धो लिये जाते हैं। चतुर लक्ष्मी इस प्रकार किफायत करके जो धन बचाती है उसे वह अपने बच्चों व पति को अच्छा भोजन देने पर खर्चती है।

लक्ष्मी के घर कुछ भी काम की चीज फेंकी नहीं जाती। भाजी के छिलके व दाल के छिलके, गेहूँ चावल की फटकन, बासी रोटी, चौका जूठन आदि वह अपनी गाय की सानी में डाल देती है। मनोहर बाबू के पड़ोसी मित्र के घर से भी इसी प्रकार की चीजें गाय के कूंड में डाल दी जाती हैं। इससे गाय अपनी सानी बहुत स्वाद से खाती है। तिल का तेल लक्ष्मी छः महीने भर के लिए इकट्ठा ही कोल्हू से निकलवा लेती है। इससे उसे सस्ता व खालिस तेल मिल जाता है। इसी तिल के तेल में से दो-चार बोतल आंवले का तेल सिर में लगाने के लिए वह घर पर ही तैयार कर लेती है। खली कुछ तो उनके उबटन के काम में आती है बाकी गाय को खिला दी जाती है।

लक्ष्मी ने दूध बेचकर २०) रु० महावार करके साल में १२०) रु० बचाये थे। ८०) रु० उसमें और डालकर उन्होंने अपने बैठक के लिए नया फर्नीचर ले लिया। इतवार के दिन मनोहर बाबू और सुधांशु गाय के घर की विशेष सफाई करते हैं। फिनायल के पानी से उसके रहने के स्थान को धोते हैं। गर्मियों में कभी-कभी गाय को मल-मल कर भी नहलाते हैं। सा [illegible]

लक्ष्मी व्यवहार-कुशल है—

लक्ष्मी ने लता को भोजन के पोषक तत्वो की विशेषता समझा दी है। रसोई की सम्भाल, भोजन की रक्षा, पकाने व परोसने मे भी उसे खूब निपुण बना दिया है। लक्ष्मी का कहना है कि जिसके घर मे पाक विद्या मे चतुर तथा घर सँभालने वाली गृहिणी होगी उस घर मे गरीबी तथा रोग कभी आ ही नही सकते। क्योकि मनुष्य जैसा खाता है वैसा ही उसका स्वास्थ्य और बुद्धि होती है।

लक्ष्मी ने अपने पति की कमाई तो सार्थक की ही है साथ ही अपने उद्यम से चार पैसे भी कमा लिए है। मनोहर बाबू लक्ष्मी को अपना साहूकार कहते है, उनको जब भी पैसे की अचानक जरूरत पडती है वह लक्ष्मी से माँग लेते है। माँ जी भी अपनी लक्ष्मी बहू से इतनी खुश है कि उन्होने लाड से उसके कई नाम रखे हुए है। कभी तो लक्ष्मी-बहू कह कर पुकारती है, कभी अन्नपूर्णा रानी। लक्ष्मी भी अपनी विनम्रता दिखाने के लिए कहा करती है—"माँ जी यह सब आपका ही प्रताप है। आप अच्छी थी तो मै भी अच्छी बन गई, अगर आप और सासो की तरह बहू व बेटी मे भेदभाव करने वाली या बहू की पडोसियो से निन्दा करने वाली होती तो मेरे मन मे भी शायद दरार पड जाती। आपके आशीर्वाद व प्रेम से ही गृहस्थी मे बरकत है।"

अपने माँ-बाप के सदृश ही सुधांशु और लता भी नेक और होनहार है। सुधांशु हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आता है। उसे हायर सेकन्डरी मे स्कालरशिप मिलने की पूर्ण आशा है, उसका विचार डाक्टर बनने का है। लता ने इस साल नवी कक्षा मे गृहशास्त्र लिया है। उसे इसमे सबसे अच्छे नम्बर आते है। उसकी अध्यापिका का कहना है कि गृहशास्त्र का ज्ञान केवल उस विषय की किताब पढने से नही आ सकता। लता घर पर हर काम मे मा का हाथ बटाती है। इसी लिए उसे सब काम का व्यावहारिक ज्ञान है। उसे बुनाई, कटाई, सिलाई, कपडा धोने, बीमार की सेवा, भोजन बनाने मे पूरे-पूरे नम्बर मिलते है।

कन्या को सुगृहिणी बनाये—

लक्ष्मी व्यवहार-कुशल है—

लक्ष्मी ने लता को भोजन के पोषक तत्वो की विशेषता समझा दी है। रसोई की सम्भाल, भोजन की रक्षा, पकाने व परोसने मे भी उसे खूब निपुण बना दिया है। लक्ष्मी का कहना है कि जिसके घर मे पाक विद्या मे चतुर तथा घर सँभालने वाली गृहिणी होगी उस घर मे गरीबी तथा रोग कभी आ ही नही सकते। क्योकि मनुष्य जैसा खाता है वैसा ही उसका स्वास्थ्य और बुद्धि होती है।

लक्ष्मी ने अपने पति की कमाई तो सार्थक की ही है साथ ही अपने उद्यम से चार पैसे भी कमा लिए है। मनोहर बाबू लक्ष्मी को अपना साहूकार कहते है, उनको जब भी पैसे की अचानक जरूरत पडती है, वह लक्ष्मी से माँग लेते है। माँ जी भी अपनी लक्ष्मी बहू से इतनी खुश है कि उन्होने लाड मे उसके कई नाम रखे हुए है। कभी तो लक्ष्मी-बहू कह कर पुकारती है, कभी अन्नपूर्णा रानी। लक्ष्मी भी अपनी विनम्रता दिखाने के लिए कहा करती है—"माँ जी यह सब आपका ही प्रताप है। आप अच्छी थी तो मै भी अच्छी बन गई, अगर आप और सासो की तरह बहू व बेटी मे भेदभाव करने वाली या बहू की पडोसियो से निन्दा करने वाली होती तो मेरे मन मे भी शायद दरार पड जाती। आपके आशीर्वाद व प्रेम से ही गृहस्थी मे बरकत है।"

अपने माँ-बाप के सदृश ही सुधांशु और लता भी नेक और होनहार है। सुधांशु हमेशा अपनी कक्षा मे प्रथम आता है। उसे हायर सेकन्डरी मे स्कालरशिप मिलने की पूर्ण आशा है, उसका विचार डाक्टर बनने का है। लता ने इस साल नवी कक्षा मे गृहशास्त्र लिया है। उसे इसमे सबसे अच्छे नम्बर आते है। उसकी अध्यापिका का कहना है कि गृहशास्त्र का ज्ञान केवल उस विषय की किताब पढने से नही आ सकता। लता घर पर हर काम मे माँ का हाथ बटाती है। इसी लिए उसे सब काम का व्यावहारिक ज्ञान है। उसे बुनाई, कढाई, सिलाई, कपडा धोने, बीमार की सेवा, भोजन बनाने मे पूरे-पूरे नम्बर मिलते है।

कन्या को सुगृहिणी बनायें—

उसे सफल गृहिणी वनने की ट्रेनिग दे। यह वात भली प्रकार सिखाये कि गृहस्वामी की ग्रामदनी कम होने पर भी वह किस प्रकार ग्रपनी गृहस्थी को ठीक से चला सकती है ताकि भोजन की समस्या सन्तोपजनक ढग से हल हो सके। माताग्रो की ग्रज्ञानता के कारण ग्रनेक वच्चे पौष्टिक भोजन के विना शक्तिहीन होकर मौत के पजे मे कसे हुए है। मामूली मौसमी वीमा-रियाँ ग्राती है ग्रौर ये वच्चे वीमारियो के कीडे से लड नही सकते, क्योकि वह दुर्वल है, उनके शरीर मे सचित शक्ति नही है, उनके भोजन मे पोपक तत्वों का ग्रभाव है। इस कारण से उनके शरीर के कोप दुर्वल है। इसलिए भोजन की समस्या ठीक से सुलझाने की शिक्षा प्रत्येक कन्या को ग्रवश्य दी जाये। उन्हे यह सीखना चाहिए कि कम ग्रामदनी मे भी ग्रावश्यक जरूरतो को कैसे पूरा किया जा सकता है। केवल पति की ग्रामदनी के भरोसे वैठे रहने से काम नही चलेगा। प्रत्येक गृहिणी का यह फर्ज है कि वह ग्रपने ग्रवकाश के समय का सदुपयोग करे। इसके लिए यह जरूरी नही कि वह वाहर दफ्तरो मे नौकरी करने जाये। ग्राय वढाने के लिए कई उपयोगी गृहोद्योग है जिनका उल्लेख ग्रागे किया गया है।

भोजन के विषय में निम्नलिखित बातो का ध्यान रखें—

ग्रगर ग्राप चाहती है कि ग्राप के वच्चो को भर पेट पौष्टिक भोजन मिले तो इन वातो का ध्यान ग्रवश्य रखे कि शरीर-रक्षा ग्रौर स्वस्थ वने रहने के लिए किस प्रकार के भोजन की ग्रावश्यकता है। ग्रायु व ऋतु ग्रनुकूल भोजन वनाये। ग्रन्य जरूरतो से भोजन की जरुरत सर्वप्रधान ग्रौर महत्वपूर्ण है इसलिए पहले इसको पूरी करके तव ग्रन्य जरूरतो पर पैसा खर्चे। सुगृहिणी के कर्तव्य को भली प्रकार निभाये। लक्ष्मी का उदाहरण ग्राप के सामने है। ग्रापने देखा कि लक्ष्मी ने ग्रपने प्रयत्नो से घर का कितना सुन्दर प्रवन्ध किया। वह ग्रपने वच्चो, पति व माँ जी को सन्तुलित भोजन देती है, उसने खाने-पीने की ग्रच्छी ग्रादते डाली, इससे कम पैसे मे ही शरीर की सव ग्रावश्यकताएँ पूरी हो सकती है। इस के ग्रतिरिक्त लक्ष्मी ने समय ग्रौर घर की सुव्यवस्था का महत्व भी समझा। घर का काम खुद करके उसने नौकरी की तनखाह वचाई, साथ ही ग्रवकाश के समय का सुन्दर सदुपयोग कर सौ रुपया महीना उपार्जन भी कर लिया। साथ ही साथ ग्रपने वच्चो को उसने ग्रादर्श गृहस्थ वनाने की ट्रेनिग भी दी।

स्त्रियों के लिए सबसे बढिया काम है घर की सँभाल। जो स्त्रियाँ (५०) की नौकरी के लोभ मे अपने बच्चों व घर की व्यवस्था को नौकर के भरोसे छोडकर दिन भर बाहर रहती हैं, वे कमाती नही उल्टा गँवाती हैं। कारण नौकर के हाथो दुगुना खर्च होता है, बच्चो की बेपरवाही होती है और घर मे बरकत नही रहती। नौकर के हाथ का भोजन नीरस तथा बे-बरकती होता है। और जो बरबादी होती है सो अलग।

घर की दिनचर्या ऐसी रखी जाये कि सब काम समय पर हो, अव-काश के समय का सदुपयोग हो सके तथा दिन-रात चूल्हा-चक्की मे न लगा रहना पडे। पाश्चात्य देश मे मध्यवर्ग के लोगो के यहाँ नौकर नही है। वहाँ गृहिणी सब काम खुद ही करती है। तिस पर भी उन्हे सामाजिक तीज व आमोद-प्रमोद के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। इसका कारण यह है कि उनके भोजन मे आडम्बर नही है। उनकी दिनचर्या नियमित है और प्रत्येक व्यक्ति गृह प्रबन्ध मे सहयोग देता है।

१८. क्या आप नौकरों से परेशान हैं ?

वह जमाना जल्द आने वाला है जब कि नौकर रखना साधारण गृहस्थ के लिए सम्भव नही होगा। एक तरह से यह होगा भी अच्छा। गृहिणी अपनी जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक निभाने की योग्यता प्राप्त करेगी, परिजनो मे आत्म-निर्भरता आयेगी। पर यदि आप नौकर रख सकती है तो उनके प्रति इसानियत का व्यवहार करे।

नौकर हमारे परिवार का एक अग है, वे हमारी सेवा करते है, अपना घरबार छोडकर अपनी रोजी कमाने के लिये परदेश मे मारे-मारे फिरते है। अगर हम उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार नही करते तो यह मनुष्यता के प्रतिकूल है।

प्राय देखने मे आता है कि नौकरो का रोना घर-घर है। मालिक से पूछो तो वे उन्हे, कामचोर, स्वार्थी, गन्दे, झूठे, दगाबाज तथा अविश्वासी कहते है। अगर नौकर से पूछो तो वे अपने मालिक के हजार दोष गिना देते है। नौकरो की आम शिकायत मालकिन के प्रति होती है। अगर मालकिन घर की निगरानी रखती है, प्रत्येक वस्तु की देखभाल, छानबीन और पूछ-

ताछ करती है तो नौकर ऐसी मालकिन को कभी पसन्द नही करते। आम नौकरो की यह राय है कि नौकरी करने के लिए सबसे अच्छा घर वह है,

जहाँ मालकिन न हो। मालिक या तो कुआँरा हो या विधुर हो। उनकी राय में मालकिन तो सभी किच-किच करने वाली होती है।

परन्तु नौकरों की सुविधा के लिये मालकिन घर तो नही लुटा देगी ? विशेष कर के आजकल के जमाने मे जब कि प्रत्येक वस्तु चौगुनी कीमत देने पर भी नही मिलती। जबकि खाद्य पदार्थों की कीमत छ गुना बढ गयी है। तथा जीवन का मापदण्ड तेजी के साथ ऊपर उठ रहा है। मकान का किराया, कपडों के दाम, बच्चों की शिक्षा सब के दबाव से गृहस्थ कुचला जा रहा है, अगर गृहिणी अपने घर की देखभाल नही करेगी तो घर कैसे चलेगा ? भला नौकर को क्या चिन्ता है, उसे तो भर पेट दो बार रोटी और चाय-पानी मिलना ही है, महीने के अन्त मे ३० रुपये उसके बचे हुए ही हैं। मुसीबत तो गृहस्वामी की है जो कि १० रुपये महीना भी नही बचा पाता।

नौकरों पर निर्भर रहने से—

आजकल वही गृहस्थी नौकर रख सकता है जिसकी आमदनी कम-से-कम ८०० रुपये महीना हो। एक नौकर रखने से हमे निम्नलिखित असुविधाओं का सामना करना पडता है।

१ नौकर की तनख्वाह ३० रुपये, साथ ही उसको साफ रहने की ताकीद करने पर कपडे, तथा साबुन और हजामत का खर्च भी देना पडता है।

२ दिन भर मे एक नौकर कम-से-कम आध सेर अनाज खाता है। फलस्वरूप नौकर की खुराक तथा चाय-पानी का खर्च मिला कर ३० रुपये आपको और पडा।

३ अगर आप भोजन स्वयं पकाती हैं तो ईंधन, घी, अनाज आदि का खर्च किफायत से करेंगी जिससे आसानी से ४० रुपये माहवार बचत हो जायगी, परन्तु जब नौकर खर्च करेगा तो वह ४० रुपये और अधिक ही करेगा। इस प्रकार ८० रुपये का आपको नुकसान उठाना पडेगा। अतएव नौकर को रखने का खर्च आप को १५० रुपये तक पडा।

४ इससे अनिश्चित मन-पसन्द का काम नही होगा, आप नौकर की मोहताज हो जायेगी।

५ पाक-विद्या एक कला है, भोजन सफाई तथा चतुराई से पकाने पर ही इसका पौष्टिक तत्व बच पाता है, परन्तु नौकर भाजी काटते और

पकाते समय इन दोनो ही बातो का ध्यान नही रखता।

६ भोजन परोसते समय भी वह अपने लिये अधिक हिस्सा रखने की कोशिश करेगा। लुका-छिपाकर पतीले मे ही मुँह लगाकर दूध पी लेगा। अपनी रोटी के आटे मे घी गूँधकर पका लेगा। खीर, हलवा या अन्य स्वादिष्ट पदार्थ मे से अपना हिस्सा पहले ही से निकालकर छिपा लेगा।

७ इसके अतिरिक्त आपके लाख तकाजे पर भी नौकर न तो रोज नहाता है न कपडे ही बदलता है। उन्ही कपडो से सो जाता है और उन्ही से जगल-पानी जाता है, तथा उसी तरह आपकी रसोई मे काम करने लगता है।

८ शारीरिक सफाई के अतिरिक्त नौकर मे मानसिक पवित्रता का भी अभाव है। कई बच्चे नौकरो की सगति मे ही दुराचारी हो जाते है। अगर इनका मेडिकल मुआयना कराया जाये तो सौ मे से ६० प्रतिशत नौकरो को छूत की बीमारियाँ निकलेगी। आपकी गैरहाजिरी मे यदि नौकर आपके गुसलखाने का साबुन या तौलिया अथवा कघी का भी दुरुपयोग करता हो तो कोई आश्चर्य नही।

६ आजकल घर छोटे-छोटे है, परिजनो के रहने के लिये भी स्थान नही, फिर भला नौकर को कैसे कोठरी दी जाय ? पर जो नौकर बाहर रहता है, एक तो वह समय पर काम पर हाजिर नही होता, दूसरे घर की बहुत कुछ चोरी करके सामान घर रख आने की उसे सुविधा रहती है।

१० मर्द नौकर के घर मे रहने से स्त्रियो की उठने-बैठने की सुविधाएँ नष्ट हो जाती है।

११ घर की बहुत-सी चोरियाँ भी नौकरो के भेदी बनने से ही होती है। इसके अतिरिक्त घर की बहुत-सी बाते, झगडे तथा आर्थिक स्थिति को नौकर ही ऊजागर करते है।

आत्मावलम्बी बनें—

उपरोक्त असुविधा से बचने के लिए आपको घर के कामो के विषय मे जहाँ तक हो सके आत्मावलम्बी होना चाहिये। इस विषय मे हम पाश्चात्य गृहिणियो की गृह-व्यवस्था से बहुत कुछ सीख सकती है। वहाँ पर किसी भी मध्यम वित्त वाले गृहस्थी के घर नौकर नही होता। उनके यहाँ चूल्हे गैस या बिजली से जलते है। प्रत्येक घर मे आपको फ्रिजिडेयर

मिलेगा। घर के सभी प्राणी भोजन एक साथ निश्चित समय पर ही करते है। अतएव गृहिणी को दिन भर चूल्हे के पास इन्तजार मे नही बैठना पडता है। घर की सफाई तथा बर्तन धोने मे प्रत्येक परिजन हाथ बटाता है। केवल छोटे बच्चो की देखभाल मां पर होती है। उनके बच्चे भी नियमित दिन-चर्या के आदी होते है। पाश्चात्य देश मे कपडे धोना, इस्त्री करना, बाजार हाट आदि का काम भी स्त्रियाँ ही करती है। यह सब करते हुए भी, वे हर शनिवार को परिवार के साथ आमोद-प्रमोद के लिए समय निकाल लेती है।

गृह-व्यवस्था मे सुधार—

नौकर न रखकर आप जो बचत करती है उसी रकम से आप बिजली के चूल्हे, कुकर या फ्रिजिडेयर कुछ सालो मे खरीद सकती है।

सभ्यता के विकास के साथ अब इस बात का तकाजा है कि भारतीय गृहिणियां भी अपनी गृह-व्यवस्था मे सुधार करे। एक नियमित दिनचर्या बनाये। प्रत्येक वस्तु करीने से रखे। भानमती के पिटारे सदृश व्यर्थ की सामग्री से घर न भरे। स्थानाभाव के कारण जहाँ तक हो सके घर मे केवल उपयोगी व आवश्यक वस्तुओ का ही सग्रह करना चाहिए। अभी घर-घर मे गैस के चूल्हो की सुविधा तो नही हो सकती परन्तु इकमिक या आनन्द कुकर तथा प्रेशर कुकर तो अनेक गृहस्थी खरीद सकते है। नौकर की एक मास की तनख्वाह बचाकर कुकर तथा प्लेटे खरीदी जा सकती है। पीतल की थाली और कटोरिया माजना असुविधाजनक होता है, साथ ही उनकी कलई निकल जाने पर वे गन्दे दीखते है। फिर थाल मे तीन-चार कटोरियाँ लगा कर खाना परोसना और खाना दोनो आडम्बरपूर्ण है। इसमे अधिकाश भोजन व्यर्थ जाता है। टेबुल पर कुकर के डिब्बो मे से प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता अनुसार गर्म-गर्म भोजन परोस लेना चाहिये। इस प्रकार एक प्लेट तथा कटोरी या छोटी सूप प्लेट से प्रत्येक व्यक्ति का काम हो जाता है। भोजन भी व्यर्थ नही जाता। प्लेटो को एक तसले मे गर्म पानी और साबुन लगा कर धोना भी सहज है। कुकर के डिब्बे भी साबुन लगाकर भली प्रकार धोये जा सकते है। कुकर मे खाना पकाने से उसके विटामिन भी सुरक्षित रहते है, साथ ही उसमे पका हुआ खाना बहुत साफ और स्वास्थ्य-प्रद होता है। एक बार कुकर चढा देने के पश्चात् गृहिणी निश्चिन्त होकर दूसरी ओर ध्यान दे सकती है। रोटी बनाने तथा चाय बनाने का काम

अँगीठी पर किया जा सकता है। इस प्रकार ईंधन का खर्च आधा रह जाता है। यह बात मैं व्यक्तिगत अनुभव से कहती हूँ कि मैंने जब से कुकर पर खाना बनाना आरम्भ किया है, मेरे ईंधन का खर्च आधा हो गया है और साफ तथा पौष्टिक भोजन पाकर परिजनो का स्वास्थ्य भी उन्नति कर गया है।

अपना पलग बिछाना, नहाने के बाद कपडे धोने, जूते साफ करना ऐसे काम तो प्रत्येक व्यक्ति को स्वय करने चाहिये। अगर परिवार बडा है और काम की अधिकता है तो पार्ट-टाइम नौकर रखा जा सकता है, जो कि बर्तन माँजने तथा झाडू देने का काम कर दे। राशन तथा ईंधन खुद खरीद कर मजदूर से उठवा लाये। ताजी भाजी तरकारी घर के दरवाजे पर नित्य फेरी वालो से ले लेवे। अन्य रसद महीने के आरम्भ मे किसी बडी दूकान से खरीदी जा सकती है।

यदि नौकर रखें—

इतनी व्यवस्था करने पर भी अगर आप को दिन भर के लिए एक नौकर की आवश्यकता महसूस हो तो कोई विश्वासी और भला नौकर रखे, जिसकी कोई जमानत दे सके। आप भोजन पकाने का काम स्वय करे परन्तु मसाला पीसना, भाजी काटना, आग जलाना, झाडू देना आदि काम उसके जिम्मे कर दे। एक बार नौकर को भली प्रकार समझा दे, बार-बार उस पर झुझलाये नही। काम बिगडने पर उसे उसकी भूल ठीक से समझा दे। प्रत्येक नौकर को नये घर मे १०-१५ दिन काम समझने मे लग जाते है। अगर नौकर नेक और आज्ञाकारी है तो उसे धीरे से काम सिखाया जा सकता है। उसे गुलाम या दास के सदृश दुत्कारे नही। उसके दु ख-सुख और कष्ट को समझे। बीमार होने पर उसकी उपेक्षा न करे। परन्तु पथ्य-पानी का प्रबन्ध कर दे। इससे अनुगृहीत होकर वह स्वामीभक्त बन जायगा। अपने फटे-पुराने कपडे मरम्मत करके उसको तथा उसके बच्चो को भी दे। अगर आपने उसके साथ खुराक देनी तय की है तो भर पेट तो उसे देना ही होगा। गेहूँ नही है, तो जवार और चना भी कभी-कभी दिया जा सकता है। अगर घर के सभी लोग कभी-कभी चना और जवार खाये तो नौकर को बुरा नही लगेगा। जब कभी कोई अच्छी चीज पके उसे थोडी-सी जरूर देनी चाहिये, नही तो उसकी भी नीयत लगी रहती है। नौकरो से घर की बात करनी या किसी

की निन्दा करनी अथवा अनचाहे परिजन के प्रति दुर्व्यवहार करने अथवा अविनीत होने के लिये प्रोतसाहन देना भारी मूर्खता है। इन भूलो का कभी-कभी भारी दुष्परिणाम निकलता है।

नौकर को कभी-कभी छुट्टी भी देनी चाहिए। उसे भी खेल-तमाशे मे जाने, मित्रो से मिलने आदि के लिए अवकाश चाहिए। उसका भी सामाजिक जीवन है। पुराना नौकर जो कि आपके घर का एक प्राणी बन गया है, जिसने अपनी सेवा तथा कर्तव्यपरायणता से आपको सन्तुष्ट कर दिया है, उसका महत्व आप भी समझ उसकी तनखाह की तरक्की कर दे। यदा-कदा इनाम भी दे। विश्वासी तथा आज्ञाकारी नौकर को अपनी भूल से खो न दे।

अपने घर की सुव्यवस्था आत्मनिर्भरता तथा नौकर से काम लेने की योग्यता इन तीनो बातो का सुन्दर समन्वय ही नौकरो की समस्या को हल कर सकता है। इसके अतिरिक्त एम्पलायमेंट एक्सचेंज सदृश कुछ प्राइवेट संस्थाये भी होनी चाहिएँ, जिनके द्वारा नौकरो को ट्रेनिन्ङ्ग मिले तथा नौकरी दिलाई जाय। नौकर की जिम्मेदारी भी इसी संस्था पर रहे। नौकर के हको की रक्षा करने का भार भी उन्हीं पर हो। इस प्रकार ट्रेनिन्ङ्ग पाये हुए नौकर अपने काम की जिम्मेदारी समझेंगे और मालिको को भी इन नौकरो को रखने मे सुविधा होगी।

१६. नारी की अर्थ-पराधीनता

नारी की सबसे बड़ी लाचारी—

नारी की सबसे बडी लाचारी उसकी आर्थिक परनिर्भरता है। लाचारी मे किसी के अधीन रहना या एकान्तिक रूप से निर्भर रहना न केवल पुरुष के लिए परन्तु स्त्री के लिए भी सम्मानजनक नही है। स्त्री-पुरुष एक दूसरे के सच्चे मित्र और पूरक तभी हो सकते है जब कि दोनो को लाचारी या दबाव के कारण कर्तव्य न करना पडे। स्वेच्छा से दोनो अपने-अपने क्षेत्र मे सम्मानजनक ढग से फर्ज अदा करते हुए गृहस्थी की उन्नति करे। नारी की लाचारी, दुर्बलता और निर्भरता पुरुष की प्रगति मे बाधा उत्पन्न करती है। वह तेजी के साथ आगे नही बढ पाता। एक बोझा उसे पीछे को खीचता-सा रहता है। जहाँ तक परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियाँ है, पुरुष को प्राय वे अकेले ही ढोनी पडती है।
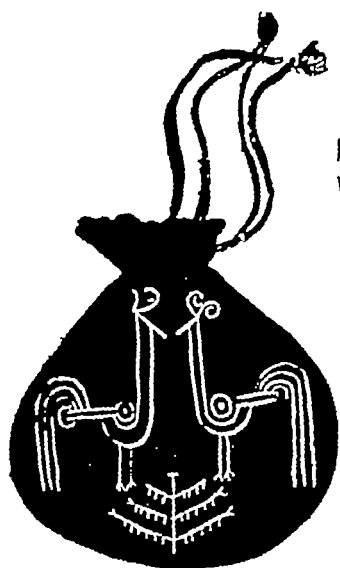
नारी को अपनी इस निर्भरता का मूल्य भी चुकाना पडता है वह खामोश होकर पुरुष का अत्याचार सहती है। छाती पर पति सौत लाकर बिठा देता है, पत्नी कुछ नही कर सकती। पति का घर छोड कर जाये भी तो कहाँ ? पीहर मे कितने दिन गुजर हो सकती है ? जब तक माँ-बाप जीते है—और उनके पास पैसे है—लडकी का गुजारा हो जाता है। परन्तु सारी उम्र तो माँ-बाप नही बैठे रहते। मुकद्दमा करके पति से खर्चा लेना सहज नही है। फिर हर महीने खर्चा वसूल करना भी तो कोई खेल नही है। अब जब कि विशेष विवाह विधेयक तथा तलाक कानून बन गये है, नारी की अर्थ-पराधीनता का दुष्परिणाम और भी नग्नता के साथ सामने आ रहा है। स्त्री को उससे लाभ के बदले हानि ही होगी। पुरुष कमाता है, उसके पास जब

तक धन और बल है अपना घर फिर से बसाने में उसे कोई कठिनाई नही होगी। किसी की परित्यक्ता पत्नी, यदि उसके बाल-बच्चे भी है तब तो उसका परिवार फिर से बसना कठिन ही नही एक तरह से असम्भव ही है। कुँवारी कन्याओ की ही शादी होनी कठिन हो रही है। जब कि इतना दहेज भी दिया जाता है तब भी कमाऊ वरो के सौ नखरे होते है। फिर परित्यक्ता पत्नी वैसे ही 'सेकैन्ड हैंड' कहलायेगी उस पर उसके पीछे यदि बच्चे हुए तो उसे भला कहाँ आश्रय मिल सकता है ?

नारी अर्थोपार्जन की योग्यता प्राप्त करे—

ऐसी सूरत मे अब नारियो को अर्थ-स्वातन्त्र्य प्राप्त करने की भरसक चेष्टा करनी चाहिए। इसके लिए नीचे लिखी बातो का ध्यान रखना पडेगा (१) कन्याओ को उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार ऐसी शिक्षा दी जाय कि वे मौका आने पर कुछ अर्थोपार्जन कर सके। यह जरूरी नही है कि हर एक स्त्री बी० ए०, एम० ए० ही पास करे या डाक्टर, प्रिन्सीपल और टीचर ही बने। इन दोनो क्षेत्रो मे तो स्त्रियाँ काफी छा गई है। फिर इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त करनी हर एक के बूते का काम भी नही है। उपयोगी गृहोद्योग के विषय मे आगे जाकर बताऊँगी, जिनके जरिये कि नारियाँ अपने अवकाश के समय कुछ धन पैदा कर सकती है, यहा पर कुछ अन्य धन्धो का उल्लेख करती हूँ जिन की ट्रेनिंग पाकर स्त्रियाँ धन कमा सकती है (१) होटल का काम—होटल मे मैनेजर से लेकर—परिचारिका (वेट-रस) तक के भिन्न-भिन्न काम है जो कि स्त्रियाँ बहुत सुघडाई से सभाल सकती है। (२) कलाकार—गाना-बजाना, चित्रकारी, अभिनय सजावट का काम करना, विवाह-शादी, उत्सवो मे प्रबन्ध करने का काम। (३) दर्जी का काम—कटाई और सिलाई का काम, मशीन पर मोजे बनियान और दरियां आदि बुनना। (४) नर्स टीचर आया या भोजन पकाने का काम। (५) टेलीफोन गर्ल, स्टेनो, प्रेस-रिपोर्टर टिकट-चेकर, कन्डक्टर टैक्सी ड्राइवर, टाइपिस्ट सेल्स गर्ल रिसैप्सनिस्ट, लेखिका सम्पादिका, इन्स्योरेन्स एजेन्ट, फोटोग्राफर आदि। (६) स्त्रिया ऐसे काम भी आसानी से कर सकती है

जीविका उपार्जन करना सम्मान की बात है—

बहुत से लोगो का ख्याल है कि इस प्रकार का काम करने से स्त्रियो के स्त्रीत्व पर आँच आयेगी। यह धारणा अब दिनो दिन कम हो रही है। जो स्त्रियाँ पैसे-पैसे के लिए लडती-झगडती है, घर की चीजे चोरी-चोरी बेचती है, झूठा हिसाब बना कर पति को ठगती है, ताश और जुआ खेल कर पैसा कमाना बुरा नही समझती, घर मे आये गए की चीजे उठा लेती है, दुकानो पर खरीदने का बहाना करके चीजो पर हाथ साफ करती है या इसी प्रकार के अन्य हथकडो से धन कमाना चाहती है उनमे तो वे स्त्रियाँ लाख दर्जे अच्छी है जो मेहनत-मजदूरी से धन कमाती है। आवश्यकता इस बात की है कि लडकियो को बचपन से ही हम इस बात की शिक्षा दे कि वे जब बाहर जाये सलीके से बात करे, अपनी मानमर्यादा की रक्षा करती हुई लोगो मे मिले-जुले और जरूरत पडने पर अपने सामने एक उच्चादर्श और आत्म-विश्वास रखकर जीवकोपार्जन कर सके।

स्त्रियो की आर्थिक स्थिति को दृढ बनाने के लिए दूसरी बात है कि उन्हे सम्पत्ति अधिकार मिलना चाहिए। उन्हे सम्पत्ति की सम्भाल करनी सिखाई जाये। इस विषय मे उन्हे कानूनी जानकारी भी होनी चाहिए। (पुस्तक के अन्त मे मैने सम्पत्ति-अधिकार कानून का उल्लेख किया है।) मितव्ययता नारी का सबसे बडा गुण है। देखा-देखी जेवर और कपडो की हवस करना ठीक नही। यदि महिलाएँ आर्थिक सुरक्षा चाहती है तो तडक-भडक से बचे, मेहनत करे और धन तथा समय का मूल्य समझे।

ध्यान रखने लायक तीसरी बात यह है कि माता-पिता को चाहिए कि कन्या को दहेज इस रूप मे दे कि मुसीबत के समय उनके काम आ सके। व्याह मे जहाँ तक हो सके फिजूल खर्ची रोकी जाए। धूम-धडाके और दावतो पर अधिक पैसा खर्चना फिजूल है। एक ही बार बहुत से जेवर और कपडे बनाने भी ठीक नही। कपडे छोटे हो जाते है या उनका फैशन बदल जाता है। यही हाल जेवरो का होता है, उनकी सम्भाल की अलग परेशानी रहती है। वक्त पर उन्हे बेचने जाओ तो आधी कीमत नही मिलती। ऐसी सूरत मे व्याह के अवसर पर कन्या को जो कुछ दिया जाये आधे से अधिक नकद के रूप मे दिया जाये और इस रकम से पोस्टल सर्टिफिकेट खरीद दिये जाएँ, जिन्हे कि जहाँ तक हो सके नियमित समय पूरा होने पर ही तुडाया जाए।

गृहिणी के श्रम का मूल्य—

स्त्री अपना खून-पसीना एक करके किफायत से गृहस्थी चलाती है, निस्वार्थ भाव से सब की सेवा करती है, सब के आराम का ध्यान रखती है, पर इसका उसे कुछ मूल्य नही मिलता। कितना अच्छा हो कि अपनी-अपनी औकात के मुताबिक हर एक पति प्रति मास अपनी पत्नी को जेब खर्च दे। उसे जन्मदिवस, उत्सवो तथा तीज-त्यौहारो पर भी पीहर और ससुराल से कुछ मिलता ही रहता है। इस प्रकार उसकी निज की कुछ सम्पति भी हो सकती है। यह सम्पति आपत्काल मे परिवार के ही काम आयेगी। पति के बीमार या बेरोजगार होने पर यह रकम वरदान साबित होगी। इसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी बहुत अच्छा होगा। आम तौर पर जिन स्त्रियो के पति मित्रवत् व्यवहार नही करते या परिवार मे जिनका आदर नही होता, वे नारियाँ अपने गृह प्रबन्ध और पति की ओर से उदास रहने लगती है। उन्हे गृहस्थी मे कुछ विशेष दिलचस्पी नही रहती। उनकी यह धारणा बन जाती है कि मुझे अपने पति की कमाई से क्या लाभ ? जितनी सेवा मै यहाँ करती हूँ उतनी किसी पराये की भी करूँ तो खाने-पहनने भर को तो वहाँ भी मुझे मिल जायेगा। उनके जीवन मे अपनापन, विश्वास, सम्मान और धन की कमी के कारण एक ऐसी कटुता भर जाती है कि गृहस्थी से उसका मन उचटा-उचटा रहता है। इससे गृहस्वामी को आर्थिक लाभ और पारिवारिक आनन्द दोनो बातो का घाटा रहता है। स्त्रियो की प्रसन्नता मे ही गृहस्थी की कुशल है। तभी महानुभावो ने कहा है कि नारी की पूजा होनी चाहिए। उसे धन, आभूषण और उपहारो से प्रसन्न रखना चाहिए। क्यो कि जहा नारी प्रसन्न रहती है वही लक्ष्मी बसती है।

वास्तव मे दाम्पत्य परतन्त्रता नही है वल्कि स्वतन्त्रता के अन्तर्गत ही यह एक प्रकार की प्रवन्ध-व्यवस्था है। व्यक्ति स्वभाव से स्वातन्त्र्य प्रिय है। डोरी को एक सीमा तक खीचा जाय तो ठीक, अन्यथा अधिक खीचने से वह टूटेगी ही। इसी तरह दाम्पत्य अनुचित रूप से मानव-जीवन को बाँधेगा तो स्वतन्त्रता की भावना व वृत्ति विद्रोह करेगी, इसकी प्रतिक्रिया उल्टी ही होगी। अत दाम्पत्य की श्रेष्ठता इसी मे है कि उसके बँधनो मे इतना खिचाव न हो कि पति-पत्नी की स्व-अपेक्षित स्वतन्त्रता ही मिट जाय और व्यक्तित्व का विकास ही वहाँ अवरुद्ध हो जाय, साथ ही उसके बंधनो मे इतनी ढिलाई न हो कि परापेक्षित जीवन मे उच्छृङ्खलता व अव्यवस्था आ जाए। दाम्पत्य परतन्त्रता और व्यक्तित्व की स्वतन्त्रता, इन दोनो के सामजस्य मे ही दम्पति का सच्चा स्वेच्छित सहयोग है और इसी मे दाम्पत्य-प्रेम की निष्पति व दाम्पत्य-जीवन की सफलता है।

स्वावलम्बन और अर्थोपार्जन—

'वस, यही हम नर-नारी-समभाव के सिद्धाँत पर आते है और हमे इस सत्य का साक्षात्कार होता है कि नारी नर पर एकातिक रूप से निर्भर रहे, इससे यह समानता नष्ट होती है, और फिर, आर्थिक दृष्टि से वह पूर्णतया नर की आश्रिता वनकर रहे, इसमे तो वह अपना स्वत्व व व्यक्तित्व ही गँवाती है। भारतीय नारी ऐसा ही करती रही है, वल्कि उससे ऐसा ही कराया जाता रहा है। ऊँची-ऊँची दुहाइयाँ देकर उसे यही सिखाया गया है कि वह वचपन मे पिता के, यौवन मे पति के और वृद्धावस्था मे पुत्र के आधीन रहे, वह कभी स्वतन्त्र न हो। लज्जा उसका भूषण है। परदे की बीवी वनने मे ही उसका शील है। पति ही उसका सर्वस्व व आराध्य देव है, भगवान है। पति के लिए ही जीना और पति के लिए ही मरना उसका परम कर्तव्य है। आत्मसमर्पण व आत्मोत्सर्ग मे ही उसकी महत्ता है। पति से अलग वह कुछ नही है। उसका अपना अलग व्यक्तित्व ही नही है। वह पति के व्यक्तित्व का अर्द्धांश मात्र है या पति के व्यक्तित्व का अर्धांग मात्र है, पति के व्यक्तित्व मे ही उसका व्यक्तित्व समाविष्ट है, अत अलग उसे सम्पत्ति देने मे औचित्य ही क्या हो सकता है ? वस इस तरह सम्पत्ति पर उसे अधिकार नही दिये गए और कुछ दिये भी गए तो वराय नाम और वह भी अहसान या रियायत के तौर पर। फिर धनोपार्जन का अधिकार तो उसे पर

नारी को झूठी रानी या स्वामिनी वनाकर और वृथा सन्तोष देकर बहला रहा है और कहता रहा है कि ऐसी स्थिति मे उसे और चाहिए ही क्या ? प परावलम्बन, पराश्रय और पराधीनता रानी या स्वामिनी होने के मूल मे तो उसमे तथ्य ही क्या हो सकता है ? पति देव या राजा साहव रूठ जाए रानीजी का रानीपन धरा ही रह जाए, वे उसी क्षण भिखारिणी वन जा दासी से भी गई वीती हो जाएँ। दुर्भाग्य से पति देवता कूच कर जाय तो तो यह घर की रानी तुरन्त ही राँड और डायन वन जाए। देवर, जेठ व ससु सास या पुत्र के टुकडो पर पलनेवाली एक नौकरानी ही बनकर रह जाए। निश्चय ही जहाँ वास्तविक अविकार नही है, अधिकार का झूठा दिखावा है, वहाँ कैसी रानी या स्वामिनी ? दासी ही वहाँ हो सकती है, भले ही उ रानी, स्वामिनी, मालकिन कुछ भी कह दिया जाय।

रहा प्रश्न गृह-शान्ति व दाम्पत्य-प्रेम के नष्ट होने का। पर य आशका भी निर्मूल है। जैसा कि हम पहिले कह आये है आदर्श दाम्प पति-पत्नी समभाव या नर नारी-समानता पर ही स्थित होकर टिक सकता है। आज का दाम्पत्य एक मालिक और गुलाम के वीच है, वरावरी के दो मित्रो के बीच नही है, इसलिए उसका नव-सस्करण हो तो वह आवश्यक और उचित ही है। वास्तव मे अधिकारो की यह खीचातानी तभी तक है जब तक विषमता है या जवतक एक पक्ष त्रस्त, शोपित व अधिकार वचित है। समा नता आते ही यह सघर्ष न रहेगा और तभी पति-पत्नी एक प्राण, दो शरीर बन सकेगे। नर और नारी का स्नेहमयी वधन अमिट और अटूट है। आखिर पुरुष उसे छोडकर जायगा कहाँ ? उसे माँ की—नारी की—गोद मे शरण लेनी होगी, उसकी स्नेह-स्निग्ध छाया मे ही उसे आश्रय लेना होगा और नारी भी पुरुष को छोडकर कहाँ जायगी ? फिर, हृदय की व तप्त शरीर के रोम-रोम की भूख कहाँ रहने देगी इन्हे दूर-दूर या एक-दूसरे से खिचे हुए ? वास्तव मे नर-नारी के पारस्परिक नैसर्गिक आकर्पण मे जो अपरिमित शक्ति है, वह दोनो के वीच सघर्प, कलह या अशान्ति के विरुद्ध वडी-से-वडी गारन्टी है। इस आकर्पण मे आज अस्वाभाविकता आ गई है और उसमे ही सघर्ष व विनाश के वीज है। अधिकारो की यह खीचातानी इस अस्वाभाविकता को दूर कर, सघर्प व विनाश के वीजो को नष्टकर, दाम्पत्य को सच्चे और स्वाभा विक अधिकारो पर ही स्थित करने के लिए है। थोडे समय का यह सघ

दीर्घ कालीन दृष्टि से संघर्ष दूर करने के लिए ही है। व्यक्तित्व व परस्पर का संरक्षण व विकास प्रत्येक व्यक्ति का जन्म-सिद्ध अधिकार है। नारी को यह अधिकार मिले, वह अपना नैतिक और मानसिक स्तर ऊँचा उठा सके वह अपनी वास्तविक इच्छाओं अभिलाषाओं व हसरतों का खून करने की मजबूरी में न रहे, वह शोषण अन्याय या अत्याचार की लपटों में झुलसकर भस्मसात् न हो, उसके सुशिक्षित, सुसंस्कृत व सभ्य होने के तथा व्यक्तित्व के विकास के मार्ग में जितनी बाधाएँ हैं वे न रहें वह अपने पैरों पर खड़ी होकर स्वाभिमान व गौरव के साथ अपना मस्तक ऊँचा रख सके तब उसमें नर-नारी का आकर्षण व प्रेम, परावलम्बन, दासता कृतज्ञता असहायता आदि के सभी विकारों से विहीन विशुद्ध ही बनेगा। यही मार्ग ऐसा है जहाँ तो सच्चा स्वेच्छित सहयोग सुलभ और सम्भव है।

कार्यक्षेत्र का बँटवारा--

परोपकार करने की लालसा रखती है। न जाने उसके क्या-क्या स्वप्न
क्या-क्या आदर्श है ? आखिर पुरुष के समान वह भी एक मानव है। उ
पास भी हृदय है और मस्तिष्क है। अनुभूतियाँ व विचारधारायें उसे भी
लित करती है और प्रेरणाये देती है। ऐसी स्थिति मे यह कहाँ का न्या
कि घर की चहारदीवारी मे ही उसका स्वत्व व व्यक्तित्व घुट-घुट
निष्प्राण बन जाये, उसकी उमगो और हसरतो का खून हो जाये, उस
व्यक्तितत्व का प्रस्फुटन व विकास रुक जाये और यह केवल इसलिए कि
के बाहर उनका कार्यक्षेत्र नही है। इतिहास साक्षी है कि अनेक नारिय
साहित्य, समाज व राजनीति के रगमच पर गौरवपूर्ण पार्ट अदा किया है
आज का युग भी ऐसी नारियो से शून्य नही है।'

उपरोक्त विवेचन से लोगो की यह धारणा निर्मूल प्रमाणित हो जा
है कि आर्थिक रूप से स्वतत्र होकर नारी उच्छृखल हो जावेगी। इसमें सन्दे
नही व दाम्पत्य जीवन की सफलता इसी मे है कि बधनो मे इतना
न हो कि व्यक्तिगत स्वतत्रता तथा विकास ही रुक जाये। यदि नारी पुरुष
एक बोझ है तो उसकी समानता और स्वतत्रता नष्ट हो जाती है। स्त्री
आर्थिक रूप से पराधीन रखकर पुरुप ने उसे पगु बना रक्खा है। अज्ञान
अशिक्षा और भीरुता ने उसकी रही-सही अक्ल भी मार दी है। एक सम
था जब कि पर्दे मे रह कर पति परमेश्वर को पूजने मे ही नारी को अ
सतीत्व की सार्थकता प्रतीत होती थी। उसका जीवन का सुख, सौभाग्य औ
ऐशो-आराम पति के जीवन तक ही सीमित थे। पति की मृत्यु के बाद व
परिवार, समाज और देश पर बोझ बन कर, रो-पीट कर जिस-किस तरह
जीकर अपने दिन पूरा करती थी।

परिजनो द्वारा पीडित नारियो के अनेक उदाहरण आपको मि
जायेगे। नारी के इस उत्पीडन से कई समझदार पुरुष दुखी हुए। उन्होंने
उनके हक मे आवाज उठाई। पर पुरुप-समाज अपने सहज प्राप्य अधिकार
को छोडने को तैयार नही हुआ। आज जब कि नारी को पुरुष के बराबर अधि
कार मिल रहे है, उन्हे भी जीविकोपार्जन की सुविधाएँ और सम्पत्ति अधि
कार मिल रहे है तो कई दकियानूसी पुरुप सनातन धर्म रसातल को
जाते प्रतीत हो रहे है। वह नारियो की जागृति को कोस रहे है।
यह बात नागवार प्रतीत होती है कि जिन नारियो को हम गृहलक्ष्मी

की रानी, माता, पूज्या तथा सती-साध्वी कह कर पूजते चले आ रहे हैं उन्हें और किस बात की कमी रह गई है ? सोचिये, यदि पति देवता रूठ जायें तो गृहलक्ष्मी की जो दुर्गति घरों में होती है वह क्या किसी से छिपी है। घर के

इससे देवहूति को वहुत वुरा लगा । उस विचारी को फुमलाकर जा-
कागजो पर दस्तखत करवा लिये और वाद मे उसे फूटी कौडी भी नही दी।
अब बेचारी वही दुलारी भावज दूसरो की मोहताज वनकर मुसीबत म दिन
काट रही है ।

पराधीनतावश यदि नारी दासता को स्वीकार करे हुए है तो इसमे
पुरुष के पौरुषत्व की कोई शान नही है। ऐसी पराधीन नारी सहचरी और
सखी के पद का गौरव नही वढाती। पति-पत्नी का जीवन प्रेम का
सौदा है, स्वेच्छा से स्वीकार किया हुआ वन्धन है। दोनो का क्षेत्र और
योग्यता भिन्न-भिन्न होते हुए भी वे एक-दूसरे से घटकर या वढकर नही है
वल्कि एक-दूसरे के पूरक है। हमारे देश मे पुरुषो की प्रगति इसलिए भी
रुकी हुई है कि उन्हे परिवार का वोझा पीछे को खीचता है। कोई जोखिम
या साहस का काम करने से पुरुष इसलिए भी हिचक जाता है कि एक तो
परिवार की जरूरतो को पूरा करने का ठेका उसका होता है, दूसरे उसके
बिना परिवार की नैया मझधार मे डूब जाती है ।

नारी जब खुद कमायेगी या उसकी अपनी सम्पत्ति होगी तो उसे
पैसा कमाने का कष्ट और अपव्यय करने की मूर्खता दोनो का पता चलेगा।
भारतवर्ष मे मजदूर वर्ग मे तो महिलाये पति के साथ मिलकर कमाती है,
इसलिए उनके वर्ग मे सामाजिक पराधीनता अधिक नही है। अज्ञानता और
सस्कारवश चाहे पुरुष उन पर अपना दबाव रख ले, परन्तु आर्थिक दृष्टि
से वे पुरुष पर निर्भर नही है। इसलिए उन्हे कमाई के कारण कभी दाता
नही पडता। उच्च वर्ग मे जहाँ पुरुष वडी-वडी नौकरियो और व्यवसाय म
दिन भर व्यस्त रहते है उनकी स्त्रियाँ खा-पीकर आलस्य और मुटाई से फूल
कर कुप्पा बनी हुई है। इस वर्ग की विलासी स्त्रियाँ धन की दासता के कारण
अपने जीवन को नष्ट कर रही है। यदि नारी धनोपार्जन की क्षमता पैदा करे
तो उसकी वुद्धि और योग्यता का भी विकास होगा। वह जीवन को सही ढग
से बिताना सीखेगी। परिश्रम का मूल्य आँक सकेगी और परिवार व्यवस्था,
बच्चो की शिक्षा और मनोरजन के आयोजन मे अपने पति के साथ मिलकर,
सहयोग देकर वह गृहस्थी को अधिक सुखद बनाने की क्षमता प्राप्त कर
सकेगी।

की जिम्मेदारी डालनी मूर्खता है। ऐसी सूरत मे पति का कर्तव्य है कि वह हाथ बटाये। पति-पत्नी दोनो मिलकर गृहस्थी की व्यवस्था और बच्चो की देख-भाल करे। कमाऊ स्त्री को भी अपने कमाऊपन की धौंस नही जमानी चाहिए। वह कमाती है तो किसी पर एहसान नही है। अपनी योग्यता का वह सदुपयोग कर रही है, यही अनुभव कर उसे प्रसन्न होना चाहिए। उषा बहन के शब्दो मे—

'आज के विकासवादी युग मे, जब कि स्त्रियाँ प्रगति की ओर कदम बढा रही है, यह एक जटिल प्रश्न हो गया है कि उन्हे नौकरी करनी चाहिए या नही।

मेरा यह विचार कभी नही कि सभी स्त्रियाँ निश्चित रूप मे नौकरी करे। जहाँ स्त्रियो के नौकरी करने मे अधिक असुविधाएँ हो, अथवा जहाँ इसकी कोई आवश्यकता न हो, वहाँ स्त्रियो को घर का काम छोड कर नौकरी नही करनी चाहिए। स्त्री घर मे रह कर ही अनेक ऐसे कार्य कर सकती है, जिनसे उसके पति, बच्चो तथा परिवार के अन्य लोगो को सुख पहुँचे।

पर समस्या यह है कि आज हमारे देश मे ऐसी एक भ्रान्त धारणा फैली हुई है कि नारी को नौकरी करनी ही नही चाहिए, चाहे घर मे खाने के लाले भी क्यो न पड रहे हो। इस मत के समर्थक कहते है कि नौकरी करने से उसकी घर-गृहस्थी को नुकसान पहुँचने की आशका रहती है। पर हम इस भ्रान्त धारणा को तर्क की कसौटी पर कसे बगैर स्वीकार नही कर सकते। सवाल सिर्फ यह है कि नौकरी करके भी स्त्री एक कुशल गृहिणी बनी रह सकती है अथवा नही ? नौकरी करने की ओट मे कही उसका उद्देश्य कुशल-गृहिणीत्व का बाना उतार फेकना तो नही है ?

सर्वप्रथम यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि 'कुशल गृहिणी' से हमारा क्या तात्पर्य है। इस विषय मे मै केवल इतना ही कहना चाहूँगी कि कुशल गृहिणी वही है जिसके गृह मे किसी प्रकार की कलह नही होती और जिसके परिवार के सभी व्यक्ति प्रसन्न रहते है।

जीवन का मेरुदण्ड है—धन या अर्थ। आज के इस भौतिकवादी युग मे, धन के अभाव मे जीना तक कठिन है। ऐसी दशा मे यह कोई बुद्धिमानी नही कि बच्चे भूख से बिलखते रहें और बेकार माँ खडी-खडी आसू बहाती

हैं। दूसरी ओर कुछ विशेष कामो मे पुरुष अधिक दक्ष होते हैं। इस प्रकार होड का तो प्रश्न ही नही उठता। जैसे—चाय के बगान का काम, टेलीफोन ऑपरेटरी, और लडकियो के विद्यालयो एव महाविद्यालयो का काम ऐसे हैं। जिन्हे महिलाएँ ही अधिक कुशलता से कर सकती है। इन कार्यों को करने से स्त्रियाँ स्वावलम्बी हो जाएँगी और हमारे देश की आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी।

आये दिन पैसो के मामले को लेकर मैंने पति-पत्नी मे झगडे होते देखे है। पति की यह शिकायत होती है कि वह कमा कर लाता है, दिन भर काम करता है, स्त्री कुछ नही करती। वह उसे पीटता है, गाली देता है एव नाना प्रकार के वाद-विवाद दोनो के बीच होते है। पत्नी भी अपने मन मे एक प्रकार की हीनता का अनुभव करती है और अपने पति को आश्रित समझने लगती है। इसका प्रभाव आने वाली सन्तान पर बुरा पडता है। मैं तो समझती हूँ कि स्त्रियो का नौकरी करना ही इस समस्या का एकमात्र निवारण है।

और यदि सच पूछा जाए तो आज के इस आर्थिक सघर्ष के युग मे यह सम्भव नही कि कोई हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे। वह वक्त बीत चुका जब एक आदमी कमाता था, और चार-छ आदमी बैठे-बैठे खाते थे। आज के युग मे हर व्यक्ति को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, बूढा हो या जवान—काम करने की आवश्यकता है। ऐसा किये बिना न तो देश का उत्पादन बढ सकता है, न लोगो का जीवन ही सुखी हो सकता है।

आज भारत की जनसख्या पैंतीस करोड है, जिसमे प्राय पचास प्रतिशत स्त्रियाँ है। यदि सभी स्त्रियाँ हाथ-पैर मोड कर चुपचाप घर मे बैठी रहती हैं, तो इसका मतलब है कि देश की आधी आबादी देश के उत्पादन मे कोई हिस्सा नही लेती। पूरे दिन न सही, कुछ ही घण्टे भी यदि स्त्रियाँ काम करे, तो देश का उत्पादन काफी बढ सकता है।

आखिर रूस, चीन, इगलैंड तथा अन्य देशो की स्त्रियाँ भी तो नौकरी करती है। वे भी घर-गृहस्थी का इन्तजाम करती है। फिर हमारे देश की स्त्रियाँ ही क्यो नौकरी नही कर सकती ? क्यो वे राष्ट्र के उत्थान मे अपना सहयोग नही दे सकती ?

कुछ लोग कहते है कि पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण करना हमारे

अवकाश के समय में गृहोद्योग अपनायें—

गृह-उद्योग से हमारा अभिप्राय है ऐसी छोटे-मोटे कामो से जो बिना ही किसी विशेष साधन सुविधा के बिना ही थोडी-सी पूंजी मे ही अवकाश मे सहूलियत से हो सकते है। निश्चय ही ये गृह-उद्योग जीवनोपार्जन के का मे पूरक होते है। भारत मे आदिकाल मे स्वावलम्बन के लिए गाम। म लोग और खास कर महिलाएँ इन उद्योगो मे व्यस्त रही है।

भारतीय समाज मे प्राचीन काल से नारी नर की सहायक मानी ग है। वह गृहिणी और गृहस्वामिनी जैसे अत्यन्त आदरपूर्ण सम्बोधनो म सम्मानित की जाती रही है। हमारे वैदिक और पौराणिक ग्रथ इस बा की पुष्टि करते है कि जिस समाज मे नारी सम्मानित नही की जाती अा सतुष्ट नही रखी जाती उस समाज का पतन अवश्यभावी है।

निश्चय ही प्रत्येक परिवार मे नारी ही गृह की व्यवस्थापक अा सचालक हुआ करती थी। त्यौहारो और समारोहो के अवसर पर उसकी कार्यपटुता वाछनीय थी। इसीलिए कुटुम्ब की ऐसी आवश्यकताओ की पूर्ति नारी ही करती थी। उसे हर तरह से कार्य-कुशल, उद्योग-पटु, व्यावहारिक और कला-कुशल होना पडता था, जिसकी शिक्षा उन्हे अपनी माताओ स ही प्राप्त होती थी।

प्राचीन काल में—

पुराने जमाने से ही अध्ययन अध्यापन के साथ प्रत्येक नारी गृह उद्योगो के रूप मे गो-पालन, पशु-पक्षी पालन, दस्तकारी, वस्त्र-रचना, रम्य खिलौने और अन्य शृङ्गार के उपादानो को तैयार कर तथा मिट्टी के बरतन बनाना, वस्त्र साफ करना, दूध, घी और पकवान आदि तैयार करना गौरव करती थी। चित्र-लेखन, चित्रकारी, नृत्य, सगीत और पुष्प-चयन आदि मे भी वे दक्ष थी। घर को सजाना, मडप बनाना, रगमच की व्यवस्था करना, शहद, फल-फूल और तरकारी का उत्पादन करना और ऐसे ही अन्य छोटे मोटे घरेलू धन्धो मे रुचि रखा करती थी। इससे निश्चय ही परिवार म आर्थिक रूप से वे बोझ न रह कर सहायक सिद्ध हुई। नारियो की इस कला-कुशलता तथा उद्योग-कुशलता का प्रमाण हमे बहुत से पौराणिक कथाओ मे मिलता है। शिशु-पालन, आयुर्वेद तथा सामान्य चिकित्सा की तो बात ही क्या, वे वैशेषिक ज्ञान भी रखती थी। गोपियो का गृह-[illegible]

२१. सास-बहू के झगड़े

देखने-सुनने मे आता है कि सास-बहू के झगडो के कारण अनेक घर तबाह हो जाते है। ब्याह से पहले जो लडका घर भर का प्यारा और मा के कलेजे का टुकडा, बहनो का दुलारा और बाप की आशा-उम्मीदो का केन्द्र-बिन्दु बना होता है, ब्याह के बाद यदि सास-बहू मे न बनी और बेटे ने माँ की तरफ न ली तो वही लडका नालायक, जोरू का गुलाम आदि विशेषणो से विभूषित कर दिया जाता है।

इसमे कोई सन्देह नही कि पारिवारिक कलह ने हमारे घरो की सुख शान्ति और एकता को नष्ट कर रखा है। स्त्रियो की धारणा है कि पुरुषो ने उन्हे कुचला है, पर यदि न्याय की बात कही जाय तो सच्चाई तो यह है कि स्त्रियाँ ही स्त्रियो पर अत्याचार करती है, उनकी प्रगति मे रोडे अट

काती है, एक दूसरे की प्रशसा और सफलता पर कुढती है और साम, दाम दड द्वारा अपने अधीनस्थ नारी को नीचा दिखाने से नही चूकती। समाज कभी उभर नही सकता यदि परिवार मे लोग एक दूसरे को सहयोग नही देगे और दकियानूसी ख्यालात छोड कर नई पौध को पनपाने के लिए अनुकूल पृष्ठभूमि तैयार नही करेगे। अतएव इस बात की बहुत जरूरत है कि आज जो माँ है उसे कल सफल सास बनाने की भी चेष्टा करनी होगी।

समझदार सास—

जो माताएँ यह चाहती है कि उनके परिवार मे हेल-मेल बना रहे और सास-बहू का नाम बदनाम न हो, उन्हे मेरी यह सलाह है कि लडके का विवाह करने से पहले वे अपना मानसिक सन्तुलन को बहू के स्वागत के अनुकूल बना ले तथा कुछ सफल सासो के अनुभव से लाभ उठाये। मै नीचे एक तुलनात्मक दृष्टान्त देती हूँ।

वासन्ती और फूलवन्ती नाम की दो महिलाए देवरानी-जिठानी थी। वासन्ती का पति आढत की दूकान करता था जब कि फूलवन्ती का पति वकील था। वासन्ती के तीन बेटे और एक बेटी थी—फूलवन्ती के दो बेटे और एक बेटी थी। फूलवन्ती ने अपने बेटे का विवाह जब कि लडका एम० ए० मे पढता ही था एक धनाढ्य घराने मे कर दिया। बेटे के ससुराल से दहेज मे भी खूब आया। सास-ससुर दोनो ने सोचा हम [illegible] के रिवाज कुछ नही करेगे, हमारी बहू-पढी लिखी है, उसका पर्दा नही करायेगे। व्याह मे जो लोग आये हुए थे उनमे से कई एक तो फूलवन्ती के भाग्य पर ईर्ष्या भी बढी हुई। बहू का पर्दा उठा दिया गया था इस बात को लेकर भी काफी चर्चा हुई। इधर ससुर को इस बात का बडा चाव था कि हमारी बहू पढी-लिखी सुघड और सुन्दर है। उनके खानदान मे न तो कोई लडकी पढी-लिखी थी न कोई और बहू ही शिक्षित थी। उनकी अपनी लडकी १५ वर्ष की थी पर अभी पाचवी कक्षा मे ही पढती थी। उसे व्याह-शादियो मे सजधज कर जाने, गीत गाने आदतो [illegible] का चाव था। न उसमे कोई गुण था न शऊर। बहू की तुलना मे लडकी बहुत फूहड दिखाई पडने लगी।

तरक्की करने की अपेक्षा, उन्होने यह सोचा कि बहू की निन्दा करके उसे ससुर की नजरो मे गिराया जाये तो ठीक है। बस रात को जब खाना खाकर ससुर छत पर हुक्का पीते उस समय सास ने कान भरने शुरु किये कि 'आपको पता नही है, बहू बहुत चालाक है। लडके को उसने अपने मोह में फँसा लिया है। देख लेना अब लडके का पढाई मे मन नही लगेगा। वह कल ही मुझ से कह रहा था कि इस शुक्रवार को कालिज न जाकर सोमवार को जाऊँ तो क्या हर्जा है ? इसकी पढाई-लिखाई अब सब चौपट ही समझो। हरदम बहू के कमरे मे बैठा रहता है। अब तो अपनी बहन-भाइयो मे भी नही खेलता। कहता था कि बहन को बोर्डिंग मे दाखिल करवा दो, घर पर उसकी पढाई नही होती। मैंने तो कह दिया—न लल्ला हम तो अपनी लडकी को नजरो से दूर नही करेगे। बोर्डिंग मे लडकियो का चाल-चलन ठीक नही रहता। लडकी के घर मे रहने से तेरी औरत को क्या तकलीफ है ? लो भला देखो तो सही, अब बहू के आने पर बहन को देश निकाला देने की सोची है ? अभी तो हम जीते है। वासन्ती की बहुओ को देखो। घर का सारा चौका-बर्तन, पिसना-कूटना करती है। रोटी खुद पकाती है। हमारे लल्ला की बहू तो नाखूनो मे रग पोत कर दिन भर कलम हाथ मे पकडे पेज काले करती रहती है। मैंने लल्ला से पूछा था कि यह क्या लिखा है ? बोला—'माँ, लेख लिखती है।' होगी पढी-लिखी पर हमारी राय मे तो धोबी के कपडे भी ठीक से नही लिख पाती। क्योकि इसके लिखे कपडे कभी पूरे ही नही निकलते।'

बस इसी तरह रोज-रोज कान भर-भर कर गृहस्वामी के मन मे यह धारणा बिठा दी गई कि बहू निकम्मी है, चालाक है, बदमिजाज है, उसे अपनी अमीरी का घमण्ड है पर पीहर से जो जेवर आये, उनमे खोट अधिक है। पोशाक हल्की व सस्ती दी है। मिठाई डालडा मे बनाकर दी थी। देख लेना अब घर मे मेल-मिलाप नही रहेगा। लडके को उसने सम्भाल लिया है। लडके का मन फेर देगी और घर मे फूट पड जायेगी।

धीरे-धीरे ससुर का व्यवहार भी बहू के प्रति कठोर हो गया। और दशहरे की छुट्टियो मे जब लडका घर आया तो माँ-बाप व बहन ने बहू के विरुद्ध शिकायते जडनी शुरू की। लडका हैरान था। रात को उसने अपनी पत्नी से कैफियत तलब की। पत्नी बोली—'मेरी तो समझ मे खुद ही नहीं

आता कि यह मामला क्या है'।

लडके ने अपनी माता को भी समझाया—"अम्मा तुम भोली हो लोगो के सिखाये मे आ जाती हो। देखो चाची को, उनकी किस्मत को तो तुम सराहती हो, पर उसकी नीति क्यो नही अपनाती? उसकी बहुए गरीब घर की है, पढी-लिखी नही है, देखने-सुनने मे भी मामूली है पर चाची हमेशा उनकी बढाई करती रहती है। जरा सी सेवा कोई कर दे सराहती नही थकती। जो कुछ उसे कहना होता है घर के अन्दर बिठाकर प्यार से समझाती है। मजाल है जो नन्दे भावजो से बेअदबी कर जाये। उनके पीहर से सेर चीज आती है तो बाहर सवा सेर कह कर बखानती है। हमारे घर मे भगवान ने सब कुछ दिया पर समझदारी के बिना सब गड़ गोबर हो गया। तुम तो अपनी बहू का सोना, हगना-मूतना सब जाकर पड़ोस मे गा आती हो। सुलोचना (बहन) ने भी तुम्हे खुश करने का अच्छा तरीका ढूंढ निकाला है। तुम्हारे कान भरती रहती है तो तुम खुश रहती हो।

मैंने एक दिन छोटे भय्या को पढाई के पीछे डाट दिया था तो तुम्हारे
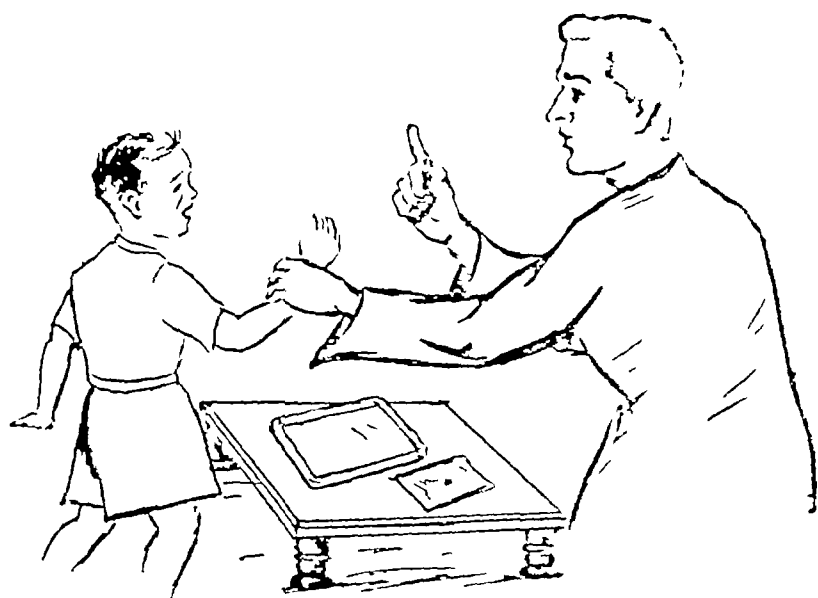
मे किसी के लिए चैन ही नही रहा। मै तो आगे से छुट्टियो मे घर नही आने का।"

लडके की ये सब बाते अपने ढग से बदल कर माँ ने ससुर और अडौस-पडौस मे कही। इससे बहू की और भी बदनामी हुई कि जो लडका व्याह से पहले गऊ था अब अपनी औरत के सिखाये मे आकर माँ से खूब लडने लगा है। इन सब बातो का परिणाम वही हुआ जो होना था। कालिज खुलने पर लडका जब जाने लगा तो बहू को बिठा कर सास-ससुर ने खूब खरी-खोटी सुनाई। पढाई को कोसा गया। जमाने का रोना रोया गया। उसी महीने भाई की शादी थी। इसलिए बहू अपने पीहर चली गई। वहां कुछ दिन बाद जब उसके माँ-बाप को सब बातो का पता चला तो उन्हे अपनी इस गलती पर बडा पछतावा हुआ कि लडका जब तक बसरे रोजगार नही था उससे अपनी लडकी की शादी करके गलती की। खैर शान्ता एम० ए० मे दाखिल हो गई। ससुर ने इसमे अपनी हतक समझी कि हमसे बिना पूछे, हमारी आज्ञा लिये बिना समधी ने बहू को कालिज मे दाखिल क्या करा दिया।

उन्होने अपने लडके को लिखा कि बहू आगे पढेगी, एम० ए० मे प्रथम पास होगी और तू यदि थर्ड डिविजन मे पास हुआ तो तेरी बदनामी होगी। अधिक पढ-लिख कर बहू सिर पर चढेगी। सुना है कि उसका इरादा नौकरी करने का है। फिर भला ऐसी औरत कही मर्द के काबू मे रहती है? देख लेना तुझ से घर का धन्धा करवाया करेगी।

इस पर लडके ने अपने ससुर को शान्ता की पढाई बन्द करने को लिखा। पर ससुर समझदार थे, उन्होने जमाई को लिख भेजा कि अभी आप एम० ए० पास करके विलायत बैरिस्ट्री करने जायेगे। इसमे चार साल लग जायेगे। शान्ता (लडकी) कालिज मे दाखिल तो हो गई है, केवल मन बहलाने के लिए, परीक्षा तो शायद ही दे।

अब सास की शिकायतो की गठरी दिन-पर-दिन भारी होने लगी कि 'जब से बहू का घर मे पाँव पडा है नुकसान-ही-नुकसान हो रहा है। वकील साहब एक बडा मुकद्दमा हार गये। घर मे चोरी हो गई। अकाल वर्षा मे फसल मारी गई। लडकी सीढी पर से गिर पडी उसके पाँव की हड्डी टूट गई। मै तो दो साल से बीमार ही हूँ। हमारी गैया का बछडा मर गया,

मकान की छत बैठ गई। वासन्ती की तीनों बहुओं की गोद भर गई है। वह गोदी में दो-दो पोते खिला रही है और इधर हमारी बहू तो पढ़-पढ़ कर बाँझ हो गई है।"

उसकी ऐसी बातें सुनकर समझदार पड़ोसिनें पीठ पीछे हँसतीं कि चाँद-सी बहू घर आई, पर इन लोगों ने क़द्र न जानी। बहू-बेटे का हँसना-बोलना, पास बैठना, साथ घूमने जाना तो फूटी आँख सुहाना नहीं था और पोता की लालसा करती है। चाची (वासन्ती) के भाग्य को देखकर नाई

बेटे अपने वश मे रहेगे। बहुओ को पहनाने, उढाने का और पोने-पोतियो को खिलाने-पिलाने का लाड करना वासन्ती कभी नही भूलती। अपनी बहुओ की कोई शिकायत उसने गृहस्वामी से कभी नही की। वह भली प्रकार समझती है कि इससे अपनी ही अयोग्यता प्रकट होती है। मौहल्ले की दो चार स्त्रियो ने झगडा कराने के इरादे से वासन्ती के पास उसकी बहुओ की यदि कभी शिकायतें जडी भी तो वासन्ती ने हँसकर यह कहकर सबको चुप करा दिया "भई, मेरी बहुएँ तो हीरा है। अभी उम्र ही क्या है। अनुभव से सब परीक्षाएँ पास हो जायेगी। भूल करके ही दुनिया सीखती है।"

और सचमुच मे आज वासन्ती के घर मे बरकत, एकता और सुख शान्ति है, बहुएँ समझदार है। परस्पर दुख-सुख मे हाथ बटाती है। उनके बच्चे भी हेल-मेल से रहते है। जब कि फूलवन्ती ने अपनी मूर्खता से बहू-बेटे का विश्वास खो दिया। रमेश (लडका) पढ लिख गया पर कई साल उसकी नौकरी नही लगी। घर पर ही

रहता था। बाप के सग मिलकर वकालत चलाने की कोशिश भी उसने की। पर बाप हमेशा बेटे की गलतियाँ निकाला करता। सास को यह गिला था कि बेटा ससुर से लड-झगड कर बहू को विदा करा लावे और तब मैं बहू की गत बनाऊँ। पर रमेश (लडका) एक ही बात पर अडा रहा कि जब मैं खुद कुछ कमाता नही तो परिवार का बोझा क्यो बढाऊँ? मन-ही-मन वह यह बात भली प्रकार समझता था कि शान्ता (पत्नी) के आने से गृह-कलह और बढेगी।

इन्ही दिनो फूलवन्ती का दूर का एक भाँजा उसी शहर मे पुलिस का इस्पेक्टर होकर आया। पहली तनखाह मिली तो मौसी और सुलोचना के लिए पन्द्रह-पन्द्रह रु० की एक-एक साडी ले आया। बस फूलवन्ती की नजर में मनोहर (भाजे) से बढ कर और कोई होनहार नवयुवक ही न रहा। उसकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए बहू के रोने रोया करती। कहती 'अ

की किस्मत ही खोटी है, नहीं तो भला मेरा बेटा एम० ए० पास करके क्या आज डिप्टी कमिश्नर न लगा होता ? ऐसी कुलच्छनी बहू आई कि घर की सुख-शान्ति सब नष्ट हो गई।"
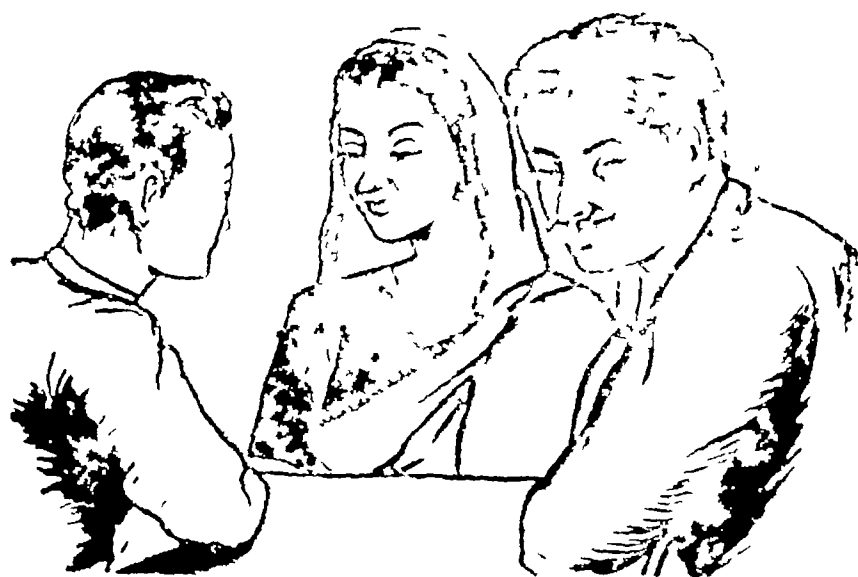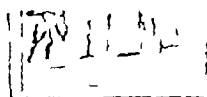
रमेश ने एक दो बार माँ से कहा भी कि 'आप मनोहर के साथ सुलो-

नहाने चली गई। लौट कर आने पर उसे सारी गडवड का पता चला, जबकि सुलोचना ने इस वात की जिद्द पकडी कि वह शादी मनोहर से ही करेगी। सास ने सारा दोप वहू के सिर मढ दिया और ससुर से वोली—"मैं तीर्थ गई हुई थी तभी पीछे से वहू ने सुलोचना को खूव आजादी दे रखी होगी। अपने मियाँ को लेकर दिन भर पडी रहती होगी, लडकी की निगरानी ही नहीं रखी।"

जव मनोहर को सुलोचना से शादी करने के लिए कहा गया तो वह साफ मुकर गया। हारकर दौड-धूप करके किसी तरह गर्भपात कराया गया और लडकी का व्याह एक गरीव तथा अधिक उम्र के व्यक्ति से कर दिया जोकि रेलवे मे सवा सौ रु० पर क्लर्क लगा था। शादी के वाद सुलोचना ने अपनी सास की ऐसी दुर्दशा की कि वेचारी को घर से निकाल दिया। अव वह अपने छोटे वेटे के पास गाँव मे रहती है। इधर पति-पत्नी मे अकसर लडाई रहती है। फूलवन्ती लडकी को दोप न देकर गरीवी को दोप देती है कि दामाद गरीब है इसीलिए लडकी के सव अरमान अधूरे रह गए। अव सुलोचना चार बच्चो की माँ है। मनोहर का आना-जाना फिर शुरू हो गया है। सुलोचना का पति सव देखता व समझता है पर करे क्या, लोक-लाज के मारे चुप है। सुलोचना का छोटा भाई माँ-वहन के सिखाये मे है। भाई की इज्जत नही करता। रमेश और शान्ता दोनो इस समय हरदोई मे स्कूलो म काम कर रहे है। दोनो को चार सौ रु० मिलते है। अव उनके दो बच्चे हैं। पर सास, ससुर नन्द व देवर अभी भी उन्हे चैन से नही रहने देते। सव लोगो के पास निन्दा करते है कि 'दोनो जन कमाते है—हमे कुछ नही देते। वेटे की कमाई हाथ पर धर कर न देखी। हमे किसी वात की कमी तो है नहीं, पर अरमान तो होते ही है। ऐसी चालाक वहू आई कि वेटा भी छीन लिया अब कि छोटे वेटे का व्याह ऐसे घर करूँगी कि घर भर जायेगा। मोटर और हवेली लूंगी दहेज मे।

फूलवन्ती ने अपनी वहू के सँग क्या-क्या दुर्व्यवहार किया यह पूरा किस्सा तो एक उपन्यास है। यहाँ तो इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि फूल-वन्ती ने अपनी गलती से एक अच्छी वहू और आज्ञाकारी पुत्र का विश्वास खो दिया और कुल की वरवादी और वदनामी हुई सो अलग। अपनी लडकी को ऐसी वुरी शिक्षा दी कि उसने अपना मानसिक व चारित्रिक सौन्दर्य

नष्ट कर दिया और अपने पति के जीवन को किरकिरा कर छोड़ा है।

पर समझदार सास वासन्ती ने कभी ऐसी गलती नही की। वह तो अपनी सहेलियो को हमेशा अच्छी सिखावन देती है कि—'यदि अपना मान-सम्मान बनाये रखना चाहती हो तो कान की कच्ची कभी मत बनना। इधर-उधर की सुनकर बहू के प्रति मन मे मैल रखना भूल है। बहू को बेटी की तरह लाड़-दुलार करो। उसे भी गृहस्थी चलाने के तौर-तरीके सिखाओ। अनुभव तथा बड़ो के सहयोग से बहुएँ गृहकार्य मे दक्ष हो जाती है। बहू-बेटे का प्यार व दुलार देखकर सुखी हो। छोटे बच्चो को भाई-भावज का सम्मान करने की ताकीद करो। नवविवाहित बहू-बेटे को साथ खाने-पीने, घूमने-फिरने का मौका दो। माताओ को नवदम्पति के रंगीन सपनो को सजीव बनाने मे सहयोग देना चाहिए। अपने जीवन के कटु अनुभवो की प्रतिक्रिया बहू-बेटे के जीवन मे मत होने दो। इसके विपरीत अपने अधूरे अरमानो को उनके जीवन मे पूरे होते देखकर सन्तुष्टि अनुभव करो। बहू के पीहर वालो का सम्मानजनक ढंग से उल्लेख करो। हास-परिहास करो पर चुभता हुआ व्यंग नही। अपनी बहू की दूसरो से तुलना करके उसकी न्यूनताओ की ओर संकेत मत करो। अगर बेटा बहू के लिए इन्तजार कर रहा है तो उसे काम मे अटका कर जाने मे देरी मत करवाओ।

अभी पढता ही था वहू को सताया होगा, तो अपने राज्य मे कई वहुएँ सास से वदला लेने मे कसर नही उठा छोडनी ।
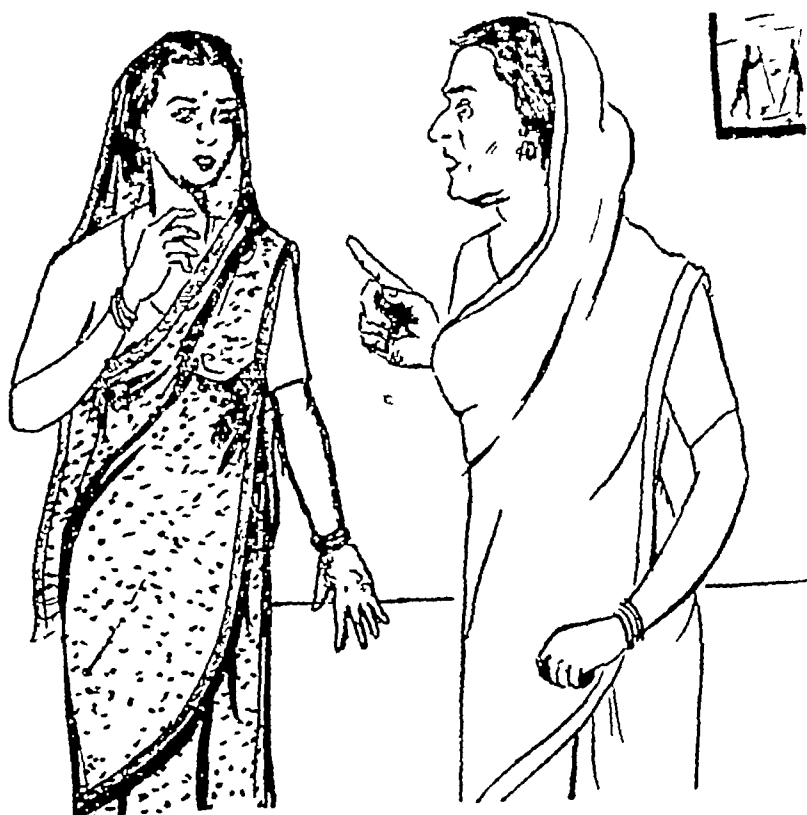
आज की बेटी कल की बहू—

हमारे देश मे कन्याओ को पढना-लिखना सिखाया जाता है। गाना-वजाना, सीना-पिरोना और खाने-पकाने की भी शिक्षा दी जाती है। परन्तु एक बात की भूल माताएँ प्राय. कर जाती हैं, लाड-चाव के मारे वे अपनी वेटी के बराबर किसी को समझती ही नही। घर मे भावज के सग कैसा व्यवहार करना चाहिए, वडे-बूढो का सम्मान, छोटे वच्चो के सग प्रेम, धीरज के साथ पेश आना, अडौस-पडौस के सग मेल-मिलाप से कैसे रहना चाहिए इन जरूरी बातो की कोई विशेप शिक्षा लडकियो को घरो में नही दी जाती। इस विपय मे बहुत हद तक माताएँ ही दोपी हैं। वे क्या-क्या भूले करती हैं, उसका उल्लेख मैंने आगे एक लेख मे किया है। माँ से वढ़ावा पाकर लडकी भावज को सताती है। उसके पीछे सी० आई० डी०

नी लगी रहती है। भाभी किस को पत्र लिख रही है ? भाई ने आज भाभी को क्या लाकर दिया ? भाभी से कौन मिलने आया ? भाभी भाई से आज क्या कह रही थी, आदि बातों की खबर नन्दरानी माँ को नमक-मिर्च लगाकर देती है।

तानकर लेट जायँगी। जब पति महोदय कमरे मे आयँगे तो मुँह लपेटे पड़ी रहेगी। पति हैरान होकर कहता है कि अभी तो तुम अच्छी भली खाना खाकर आई हो। उस समय तो सिर दर्द नही था। अच्छा लाओ सिर दबा दूँ। गोली खा लो। अमृताजन मल दूँ ? यह बाते सुनते ही बहूरानी का पारा चढ़ जाता है—"हाँ हाँ, तुम्हे मेरा दुख-दर्द तो कुछ लगता ही नही। मेरे पास बैठने की कहाँ फुरसत है। ग्यारह बज गये अब सोने की फुरसत मिली है ? हटो छोडो मेरी चादर। मुझे तुम्हारे यह झूठे चोचले अच्छे नही लगते। तुम्हारे यहाँ सब कोई मुझ पर हँसते है, मेरा मजाक बनाते है। मुझे तो मेरे पीहर भिजवा दो।" पत्नी के ये शब्द सुनकर पति तो घबडा जाता है। उसकी समझ मे नही आता कि किसका पक्ष ले किस का नही।

सास-बहुओ के इस झगडे मे पति की जिन्दगी बरबाद हो जाती है। चाहे सास सताई जाय चाहे बहू दोनो ही बाते बुरी है। पूजनीय सासो से हाथ जोडकर मेरा यह कहना है कि वह जिस तरह का व्यवहार अपनी लड़की से खुद करती है और चाहती है कि उनकी सास भी करे, उसी तरह का व्यवहार वे खुद अपनी बहू से करे। सोचिये जो बहू घर मे आती है, भविष्य मे वह आपका स्थान लेने वाली है। आपके पोते-पोतियो की माँ बनेगी, आपकी बेल बढायेगी, आपके पुत्र की सेवा करेगी। ऐसे महत्वपूर्ण प्राणी का उचित स्वागत होना चाहिए। यदि आपकी सास ने आपके साथ दुर्व्यवहार किया है, तो उसका बदला अपनी बहू से लेना क्या उचित है ? आप अनुभवी है, गृहिणी और मातृत्व-पद से गौरवान्वित है, बेटे की माँ है, तभी आपको आज यह दिन देखना नसीब हुआ कि पराये घर की बेटी आपकी सेवा करने, हाथ बटाने, आपके घर आई है। आप उस लक्ष्मी का ठीक से स्वागत करे। उसे अपने प्यार और दुलार से सराबोर कर दे। यौवन मे प्रत्येक प्राणी प्यार का भूखा होता है। आपकी बहू आपका प्यार पाकर गद्गद् हो जायगी और आपका आशीर्वाद पाने की चेष्टा करेगी।

बहू के अनबन होने के कारण—

१ यदि सास लेने-देने के पीछे उसके पीहर को जली-कटी सुनाती है।

२ दहेज मे मिली चीजो की आलोचना करती तथा परखती है।

३ बरातियो के आदर-भाव मे जो कमी रह गई है उसके ताने देती है। बहू को दहेज या ससुराल से मिली हुई चीजो को हथियाने की कोशिश

करती है।

४ ननद और देवर को बहू के साथ दुर्व्यवहार करने या उसकी आलोचना करने को उकसाती है।

२२. अपना-अपना दृष्टिकोण

सास और वहू के झगडो के लिए कौन दोषी है यह कहना तो कठिन है, क्योकि देखने मे तो यह आता है कि वलवान ही दुर्वल को दवाता है। यदि सास के हाथ मे घर की वागडोर और थैली है तो वह अपनी इच्छा और आदर्श के अनुकूल वहू को चलाना चाहेगी, पर यदि वहू गृहस्वामिनी है और सास वेटे की कमाई पर निर्भर है तो वहू अपना दवदवा वनाये रखना चाहेगी। ऐसे भी सौभाग्यशाली विरले परिवार है जहां सास-वहू मेल-मिलाप और परस्पर सहयोग से रहती है। यदि वहू, माता के प्रेमपूर्ण त्याग का महत्व तथा मातृत्व पद के गौरव को समझती और आयु को मान देती है तो मान के प्रति कभी अन्याय हो ही नही सकता। कई सासे अपनी वहुओ से इसलिए रुष्ट रहती है कि जिस तरह की पावन्दियां उन्होने जव कि वे वहू थी सिर झुका कर स्वीकार की थी, आजकल की वहुएँ नही करती है। उन्होने सास के कटुवचन, नन्द की धांधली, देवर के अपशब्द सव चुपचाप सहे, घर से वाहर विना इजाजत के पांव नही रखा, सास को ही सर्वेसर्वा माना। उनकी राय में—आजकल की वहुओ में न तो शर्म है, न सहनशक्ति। पति के साथ घूमने-फिरने का शौक है, दुनिया भर के उनके नखरो का ही अन्त नही है। इनसे भला कैसे निर्वाह हो ? हमने भी वच्चे पाले है, पर इनकी तरह उन्हे पावन्दियो से नही जकडा। 'वच्चा प्यार से विगड जायेगा, उसकी जिद्द पूरी करने से वह सिर पर चढ जायेगा, नानी-दादी वच्चो को विगाड कर रख देती हैं' यह वात तो सासो के लिए असहनीय हो जाती है। वे अपने को अनुभवी माताएँ समझती है। इसलिए वच्चो के कारण भी कभी-कभी वहू-वेटे के संग मां की कहासुनी हो जाती है।

मैं नीचे दो बहनों के विचार लिखती हूँ एक ने सास की पैरवी की है और दूसरे ने बहू की वकालत।

सास का दृष्टिकोण—

'आजकल जन-सामान्य के साथ-ही-साथ समाचारपत्रों में भी बहुओं के प्रति सासों के अत्याचारों की चर्चा बहुत सुनाई पड़ती है। निस्सन्देह ही निरपराध बहुओं के प्रति सासों का अत्याचार अत्यन्त ही घृणास्पद एवं गर्हित है। छोटे-बड़े, ऊँच-नीच सभी वर्गों में इस प्रश्न ने एक विषम समस्या का रूप धारण कर लिया है, एवं इनके समूल नाश के लिए सभी प्रयत्नशील नजर आते हैं। लेकिन समाज के इस एकतरफा विचार का मैं प्रबल विरोध करती हूँ। बात जरा समझाकर कहूँ। बहुओं के प्रति सासों की यातनाएँ ही हम लोगों के लिए अत्यन्त कष्टदायक हो जाती हैं, किन्तु क्या आप इस बात से इनकार करेंगे कि घर-घर में ऐसी बहुत-सी बहुएँ हैं, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए सुखी संयुक्त-परिवार में फूट डालकर उन्हें अलग कर दिया, दुखी बना दिया है। उन्होंने अनेक स्नेही पुत्रों को उनकी [illegible], गर्भधारिणी माताओं से अलग कर दिया है। आज जो लोग सासों की बुराई करने में कुछ भी कसर उठा नहीं रखते, सच पूछा जाए तो वे गलती पर हैं। उन्हें कभी बहुओं की बुराई करते नहीं देखा गया है। उनका यह एकांगी दृष्टिकोण किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। ताली दोनों हाथों से ही बजती है, एक से नहीं।

किन्तु अपने स्वभाव को नही बदलती। वह यह नही समझती कि इसी प्रका का अत्याचार मैं भी किसी की लाडली बेटी पर करती हूँ।

सासे यह भूल जाती है कि जब मैं जवान थी तब किस तरह जीवन व्यतीत करती थी पर बहू के अरमानो की वह उपेक्षा करती है।

सास-बहू के झगडे मे केवल सास और बहू ही नही है इसके अन्दर अभिनय करने वाले, नन्द, देवर, देवरानी, जेठानी, ससुर जी और नन्हे नन्हे बच्चे भी है। कुछ सासे ऐसी भी है जिनको कई बहुएँ है। वे सासे क्या करती है कि उनमे से दो बहुओ को अधिक चाहेगी, उनका बहुत पक्षपात करेगी। ऐसी हालत मे जो और बहुएँ है उनका ईर्ष्या करना स्वाभाविक ही है। इससे आखिर मे यहाँ तक नौबत आ जाती है कि बँटवारा हो जाता है। सास अपनी बेटी को सीख देती है कि तुम बहू का कहना मत करना, यदि वह तुझे कुछ कहे, तुम मुझ से कहना, मै उसे ठीक करूँगी। देवर माँ के कहने से हमेशा सिर पर चढा रहता है। भोजन मिलने मे जरा भी देर हुई कि झट स्कूल भाग जायगा। अब माँ आफत मचा देगी—"लडका बिना खाये स्कूल चला गया, चुडैल बैठी रहती है, लडको को समय पर खाना बना कर नही देती, अब तू अपना पेट भर ले"—आदि बाते कह कर हल्ला मचायेगी।

यदि इस पर बहू कह देगी कि "क्या करूँ अम्मा, बैठी थोडे ही रहती हूँ, काम ही तो करती थी, भोजन मे पाँच ही मिनट की देर थी"।

अब इतना कहना ही उसके लिए घोर अपराध हो जाता है और सास बिगड कर कहती है—"चुडैल जा यहाँ से, जहाँ काम न हो वहाँ चली जा, मेरे घर मे रहेगी तो काम ही करना पडेगा, लडके-लडकियो की डाँट सहनी पडेगी, चली जा अपने बाप के घर वही बैठे-बैठे खाना मिलेगा, बडी धन्ना सेठ की बेटी बनी है"।

देहातो मे कभी-कभी तो सास बहू को बडी मार मारती है। पतिदेव से कह कर भी माँ डँटवाती और मरवाती है। सास की शिकायत पर देहातो के बहुत से ससुर भी बहू को डण्डे से बडी मार मारते है। बेटा सकोच के मारे अपने बाप को कुछ नही कहता है यह हाल है। हमारे निम्न मध्यम वर्ग की बहुओ का।'

यह तो हुई कटु आलोचना या सीरियस वकालत, अब जरा एक

परिहास प्रिय बहू रानी का दृष्टिकोण भी समझने की चेष्टा करे। इस बहन ने व्यंग मिश्रित परिहास मे अपनी नन्दरानी याने सास की मत्राणी और सी आई डी को प्रसन्न करने का एक अनोखा तरीका बताया है। इस मे कोई सन्देह नही कि यदि नन्दरानी आप से प्रसन्न हो जाये तो फिर ससुराल मे आप का कोई बाल भी बांका नही कर सकता। खुशामद से तो भगवान भी प्रसन्न हो जाते है फिर नन्दरानी तो मानवी ठहरी। यदि सास समझदार है तो इस खुशामद को झट रोक देगी, पर नासमझ सास और लाड से बिगड़ी हुई नन्द इसमे अपनी शान समझेगी और आप को एक समझदार विनम्र बहू पाकर अपनी अहभावना और अधिकार प्रियता की सन्तुष्टि अनुभव करेगी।

'तीन साल के करीब हुए जब मैं अपनी भाभी के साथ उनकी एक मारवाडिन सहेली के घर गई थी। भाभी को नमस्ते करने के बाद उसने मेरे पैर छूने की कोशिश की। मै पीछे हट गई। मेरी भाभी बोली—"बहन जी ! यह क्या करती हो यह तो तुम से कई साल छोटी है।"

मारवाडिन बडी हँसमुख थी। पीढे पर बैठते हुए बोली—"अरे बहन जी, छोटी है तो क्या हुआ नन्द तो है 'सांप सास के जायो के छोटो के बडो ?"

"ओहो ! ! तो आप मेरी तुलना सांप के जाये से कर रही है !" मैने भी हँसकर कहा। अप्रतिभ हुए बिना ही उन्होने कहा—

"मेरा मतलब है जो सांप का या सास का जाया हो वह छोटा हो या बडा समान रूप से वन्दनीय होता है।"

दीजिए क्योकि वह सास का कम और आपका अधिक बन चुके है बाकी रहे देवर-जेठ तथा छोटी-बडी नन्दे ! सम्भव तो यही है कि आपका जेठ अपनी गृहस्थी लेकर अलग बस गया होगा। अगर ऐसा नही भी है तो भी आप तो हमेशा उनमे और अपने मे कपडे की दीवार ताने रहती है (मेरा मतलब घूंघट मे है) इस लिए उधर से 'काटना' या 'डसना' असम्भव-सा ही है या यो कह लीजिए कि शका कम ही है। अब आती है बडी नन्दे जिनके ज्यादा से ज्यादा ससुराल चले जाने की सम्भावना है कभी कभार आई भी तो अधिक सम्भावना यही है कि वह आपको काटने या डसने का प्रयत्न कम ही करेंगी क्योकि वह खुद 'सास के जायो' से पीडित है और दुखी को दुःखी से सदा प्यार हो सकता है। रहे देवर सो वे बेचारे तो नाश्ता करके चले गये पढने या किसी और काम पर, शाम को कही खेलने चले गये रात को घर तब आये जब उन्हे नीद सता रही थी। कभी आप से उनकी भेंट हो, ज्यादा से ज्यादा एकाध मजाक कर देगे। अब सास का एकमात्र जाया, जो रह जाता है वह है आपकी छोटी नन्द और उसकी तुलना आप निर्भय हो कर उस 'साँप के जाये' से कर सकती है जो यदि काट ले तो उसका कोई इलाज नही। देखिये ! यह तुलना कही उनके या उनकी माँ के या उनके भाई के सामने निर्भय होकर न कर बैठियेगा नही तो ? परिणाम आप शायद जानती ही होगी। हाँ, अपने दिल के अन्दर यह तुलना आप सौ बार कर सकती है।

क्या आप चाहती है कि आप एक सम्मिलित आदर्श परिवार की सदस्या हो ? आप के परिवार मे हमेशा सुख और शान्ति बनी रहे ?—तो आपको सिर्फ एक काम करना होगा वह यह कि आप हर सम्भव तरीके से अपनी इस अतिप्रिय, सुकुमारी, सुशील नन्द फूलरानी को खुश रक्खे जिससे कि कभी क्रुद्ध होकर वह आपको डसने का ख्याल ही न करे। अगर कहीं उन्होने डस लिया तो समझ लीजिये दुनिया मे प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जायेगा। (आप मरे जग परलै होई)। जरूरी नही कि आपकी नन्द सुकुमारी हो, सुशील हो और आप को प्रिय ही हो। वह लम्बी, तगडी, काली कलूटी, पहलवानो के से हाथ-पाँवो वाली, मुँहफट, राक्षसी का लघु सस्करण भी हो सकती है। परन्तु आप को हमेशा उसे सुकुमारी, सुशीला, कोमलांगी तथा अपनी प्रियतमा ही समझना चाहिए। साँप के जायो को खुश करने के

लिए लोगबाग कई व्रत करते है, बांबी पर श्रद्धा से फूल चढाते है। आपको भी ऐसा सब करना ही पडेगा। आपको अपनी छोटी नन्द रानी से हमेशा इस तरह व्यवहार करना चाहिए कि सब समझे जैसे आपके हृदय मे नन्द-प्रेम का अथाह सागर लहरा रहा है और आप अपने व्यवहार से सिर्फ उसका छोटा-सा प्रदर्शन ही कर पाती है और उस व्यवहार के कुछ ढग मै यहाँ आपको बताना अपना कर्तव्य समझती हूँ।

आप यह कभी न ख्याल कीजिए कि आप की नन्द को रसोई, सिलाई तथा दूसरे घरेलू कामो मे होशियार तथा स्वावलम्बी होना चाहिए। यह आपका कर्तव्य नही है कि आप उसे इस प्रकार की कोई शिक्षा देने का प्रयत्न भी करे। रसोई के पास तो उन्हे कभी भी फटकने न देना चाहिए, (लेकिन जब कभी सर्दियो मे वे आग तापने आये तब न रोकिये) अगर कभी वह बरतन मलने, आटा गूंधने या सब्जी काटने या दाल बीनने के उद्देश्य से रसोई के द्वार तक आये भी तो फौरन उन्हे वापिस कर दीजिए। बडे प्यार से कहिये "न न बीबी जी तुम न हाथ लगाओ हाय हाय तुम्हारे नाखूनो मे राख फँस जायगी तुम्हारे हाथ काले हो जायेगे या तुम्हे स्कूल-कालिज मे देर हो जायगी" इसी तरह का चापलूसी से भरा कोई और वाक्य ।

पढने का और आपकी छोटी नन्द का बहुत गहरा सम्बन्ध है इसलिए आपका कर्तव्य है कि आप उनके स्कूल या कालेज गमन के कम-से-कम आध घण्टा पहले तक, गर्म-गर्म पकौडी—या—पराठे या समोसे—या दूसरी किसी मजेदार चीज के साथ, चाय तैयार रखे। नाश्ता या रोटी तैयार करते समय आप को अपनी छोटी नन्द की रुचि का हमेशा ख्याल रहना चाहिए—नही तो—अब बार-बार क्या बताऊँ की वह रूठ लेगी।

नन्द रानी के स्कूली कोर्स की सारी सिलाई आपको बाखूबी अपने हाथों करके देनी होगी, साथ ही इस बात का प्रमाण देना होगा कि आपने भी अपनी सारी सिलाई अपनी भाभी से बनवायी थी, चाहे आपका आदर्श यह रहा है कि स्कूल का सारा काम छात्रा को खुद ही करना चाहिए।

खुदा न करे आपकी नन्द रानी को सर्दियों के मौसम में बिस्तर से निकलते ही कोई कम्बख्त छींक आ जाय। अगर आ ही गई है तो प्राथमिक

उपचार के तौर पर उसे उसी बिस्तर में लिटाकर ऊपर से लिहाफ उढा दीजिए अच्छी तरह! (देखिए कही साँस न घुट जाय) अब तो जरूर ही श्रीमती नन्द रानी को जुकाम हो जायेगा और साथ-साथ बुखार भी आने लगेगा साथ-साथ सिर-दर्द दाँतो में दर्द नाक में पीडा आदि तमाम बीमारियाँ हो जायेगी। उनकी इस खतरनाक बीमारी के दौरान में आपके निम्नलिखित कर्तव्य है।

(१) जहाँ तक हो सके उन्हे बिस्तर से न उठने दे, अगर कही ठण्ड वगैरा लग गई तो बीमारी और भी खतरनाक हो जा सकती है।

(२) आप घन्टे आध घन्टे के पश्चात् कभी चाय, कभी खशखश का हलवा (अधिकतर उनकी रुचि की चीजे) कभी दाल, कभी जूस लेकर हाजिर रहे (बेशक आप जानती है कि जुकाम के लिए सौ दवाओ की एक दवा है निराहार व्रत लेकिन उसका जिक्र कभी किसी के सामने न करिये) अरी बहू रानी! तुम्हारी नन्द का जुकाम घटना है तो तुम्हारी बला से, तुम्हे देखना तो यह है कि तुम्हारे व्यवहार से तथा सेवा से तुम्हारी सास के दिमाग का टेम्परेचर कितना घटता है।

(३) बेशक घर वालो की ओर से डाक्टर को बुलवाया गया है, थर्मामीटर लगाकर बुखार की जाँच कर ली गई है फिर भी आपका जो कर्तव्य है उससे परे न हटिये बार-बार उनकी नब्ज लेकर हाथ में देखे—नाडी की गति की पहचान न हो तो भी कहिये, हाय! हाय!! नब्ज कितनी तेज चल रही है।

'मोटल्ली' या 'पसेरी', दुबली हो तो 'सलाई', लम्बी हो तो 'सीढ़ी' नाटी हो तो 'चक्की' आदि-आदि। ऐसा करने का फायदा आपको यह रहेगा कि आप की सास तथा नन्द हमेशा आपके वस मे रहेगी। यदि आप यह सब करने म, असमर्थ है तो आपका भला इसी मे है, सास-ननद का अत्याचार चुपचाप सहती रहे, क्योकि सागर मे रह कर मगर से वैर करना मूर्खता है, बाम्बी म रहकर साँपो से वैर करना मूर्खता है ठीक उसी तरह ससुराल मे रहकर सास के जायो से वैर करना मूर्खता है।

लेकिन ऐसा नही होता कि कोई सम्पूर्ण जाति ही बस क्रूर हो, न सारे साँप डस कर प्राण लेने वाले होते है। साँपो की भी कई किस्मे होती हैं जैसे कहते है पनिहारा (पानी मे रहने वाला साँप) अगर डस भी ले तो मृत्यु निश्चित नही होती, बस इसी तरह की कई छोटी नन्दे होती है। यह तो सस्कार का फल है। अगर आपकी सास उदार व सन्तुलित विचार धारा की है तो काटने का गुण छोटी नन्द मे कदापि न होगा। शिक्षा के साथ ही सस्कार भी यदि आप मे है तो आप भी एक अच्छी ही नन्द बनेगी और नही तो (माफ कीजिएगा) अपने दाँव आप भी किसी को डस लेगी क्योकि आखिर आप भी तो हो सकता है किसी की छोटी नन्द हो।'

२३. संयुक्त परिवार में बहूरानी का बर्ताव

कन्याओं के दिल मे बचपन से ही यह बात बिठा दी जाती है कि सास मानो कोई हऊआ है, जो कि उसे मार-मार कर ठीक करेगी, कसूर करने

माता-पिता अपने बच्चो के प्रति प्रदर्शन कर सके तो परिवार मे झगड़े ही न हो।

नारियो को भगवान ने शरीर और मन से कोमल बनाया है। यदि आज कल की शिक्षित बहुएँ अपने कर्तव्य को ठीक से निभाये तो संयुक्त पारिवारिक जीवन का नव-निर्माण हो सकता है। आमतौर पर देखने मे आता है कि बहू की देवर और ससुर तो प्रशसा करते है, पर नन्द और सास उससे रुष्ट-सी रहती है। इसकी शुरूआत होती है जब कि दहेज मे से बहू की प्रिय साडियाँ या और कोई बढिया चीज नन्द हथियाना चाहती है। आजकल तो यह रिवाज प्राय नही रहा, पर यदि नन्द ने एक-आधी चीज ले भी ली तो बहू को गम खा जाना चाहिए। उसी के भाई की कमाई बहू ने सारी उम्र सँभालनी है। थोडा-सा देकर बहुत-कुछ उसे मिलेगा। आरम्भ के कुछ दिन ही बहू का व्यवहार परखा जाता है। इसलिए किसी का हृदय न दुखे, कोई बुरा न माने इस बात की चेष्टा बहू को करनी चाहिए।

यदि पति नौकरी पेशा है और दूसरे शहर मे नौकरी करता है तब तो अधिक असुविधा ही नही होती। यदि सास-नन्द कुछ कहे-सुने तो भी गम खा जाना उचित है। बहू को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहीं जरा-सी भूल पर उम्र भर की बुराई न मिल जाये।

सुबह उठकर सास-ससुर के पाँव छुए, बच्चो से राम-राम करे, बहू की इस शीलता का सब पर बहुत अच्छा प्रभाव पडेगा। घर मे कोई बडे-बूढे मिलने आयँ उनके भी पॉव पडना चाहिए। आजकल जब कि पढी-लिखी लडकियो के मिजाज सात आसमान पर चढे रहते है यदि कोई बहू बडा के पाँव पडती है तो परिजन उसकी बडी प्रशसा करते है। 'देखो हमारी बहू अमीर घर की बेटी है, बी० ए० पास है, पर बडो के पाँव पडती है'। इस बात को देखने-सुनने वाले सभी प्रशसा करते है। इसमे बिगडता कुछ नही है, और ढेरो बढाई मिल जाती है।

बात का बतगड बनाकर अपने पति को न सुनाये। यह माना कि पति आपके दु ख-सुख के साथी है, परन्तु आप उन्हे जरा-जरा सी बात सुना कर परेशान न करे। अपनी सहनशक्ति और चतुराई से खुद ही पारिवारिक झगडे निबटा ले। दो मीठे वचन बोलकर झगडा बढने ही न दे। दिन भर का थका-मॉदा पति घर लौटकर, आप से प्यार, सहयोग आनन्द और जीवन-

स्फूर्ति प्राप्त करने की आशा रखता है। 'मेरा सिर दुखता है, तुम्हारी बहन

माँ ने मुझे सताया है, जिठानी झगडा करती है' आदि उलाहने यदि वह आप से सुनेगा तो इसके दो परिणाम होगे। या तो वह आपको सब झगडो का मूल समझेगा और आपको व्यवहार बुद्धि से हीन मानकर आपकी योग्यता और सहयोग मे सन्देह करने लगेगा अथवा उसका मन अपने माँ-बाप, भाई-बहन और परिजनो से फट जायेगा। फिर आये दिन घर मे कलह मची रहेगी। इससे आपका दाम्पत्य-जीवन भी दुखी हो जायेगा। पति से झगडे की बात उसी समय कहे जबकि उसके सहयोग से पारिवारिक झगडे सुलझने की सम्भावना हो। अपने पक्ष को मजबूत बनाने या परिवार को दो दलो मे बाँटने के लिए पति के कान कभी न भरे।

लव की बातें ससुराल वालों से कही जायँ और न ससुराल की बातें पीहर में सुनाई जायँ। याद रखें पीहर में उसी बेटी का अधिक आदर होता है जिसे कि ससुराल से आदर, प्यार मिला होता है।

बहू को चाहिए कि ससुराल में सब के सम्मान का ध्यान रखे। बच्चों से प्यार से बोले। नौकरों से भी तमीज से बात करे। यही छोटी-छोटी बातें हैं जिनसे बहू के स्वभाव की परख की जाती है।

कई रिश्तेदार ऐसे भी होते हैं कि ऊपर से मीठी-मीठी बातें करके सास बहू का भेद पता लगा लेते हैं और इधर की उधर जढ कर दोनों में लड़ाई करा देते हैं। ऐसे रिश्तेदारों से काम पडने पर विनम्रता से बोले, पर घनिष्ठता न पैदा करे। बहू को इस बात की विशेष चौकसी करनी चाहिए कि सास-नन्द की बुराई किसी से न करे। अगर बहू की गलती नहीं है तो देखने वाले लोग सब उसी की प्रशंसा करेंगे और गलती करने वाला शर्मिन्दा होकर हार मान जायेगा। सचाई ज्यादह देर तक छिपी नहीं रहती। बाहर के लोग आपके परिवार की निन्दा, बुराई सुनकर कुछ खास मदद नहीं कर सकते उल्टा कोई आप को बुरा कहेगा कोई सास को। इससे जग-हँसाई अलग होगी। पारिवारिक झगडे तो सहयोग और धीरज से ही मिटाये जा सकते हैं। इसमें सहिष्णुता और समझदारी की जरूरत है। पति आपके सब से बड़े मित्र और हितैषी हैं। उन्हें अपनी अडचनें बतायें, पर उलाहने के रूप में नहीं, सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से।

अपनी सेवा और शीलता से सबको प्रसन्न रखें। आपने गृहस्थ-जीवन में प्रवेश किया है, घर का काम-काज, पारिवारिक जिम्मेदारियों में हाथ बँटाना आपका धर्म है। यदि आप गृहस्वामिनी का पद सँभालना चाहती हैं तो अपनी सास जी को गृह-भार से मुक्त करें। अधिकार बिना सेवा के नहीं मिलता। परिजनों के खाने-पीने, घर की सफाई, बच्चों की पढाई का भार सँभालें। काम सब को प्यारा है, चाम नहीं। यदि आप चाहें कि ससुराल घर में केवल सजी-धजी गुडिया बनी-बैठी रहें और लोग आपके रूप की प्रशंसा ही करते रहें तो यह तरीका कुछ ही दिनों में आपको परिजनों का अप्रिय बना देगा।

अपनी सास-नन्द को खुश रखें, ससुर का आशीर्वाद लें, देवर का ध्यान रखें। इन सबके मुख से आपकी प्रशंसा सुनकर आपके पति गद्‌गद् हो

जायेंगे और स्वयं को किस्मत वाला समझ आपकी प्रशंसा करते नही अघायेंगे।

यदि घर में आपको किसी की गंदी या बेपरवाही की आदतें पसन्द नही हैं तो उनकी आलोचना मत करें। आपका देवर जब देखेगा कि मैं अपनी चीजें इधर-उधर पटक जाता हूँ पर भाभी रोज आकर उन्हें सँभालती है तो उसे अपनी बेपरवाही पर शर्म जरूर महसूस होगी। यदि इस पर भी वह न माने और केवल आप को धन्यवाद देकर हँसकर चल दे तो आप दुलार से झिड़कती हुई कहें—"भैया यहाँ खाली धन्यवाद देने से तो काम नही चलेगा। तुम्हें अपनी भाभी का भी ध्यान रखना चाहिए। मुझे तुम्हारा कमरा गन्दा अच्छा नही लगता। यदि अपना काम खुद नही सँभालोगेतो फिर अपनी भाभी का काम ही तो बढाओगे। भला, मुझे कष्ट देना क्या तुम्हें अच्छा लगता है?" आपकी ऐसी मीठी झिडकी सुनकर देवर आपकी खुशामद-मिन्नत करेगा—"मेरी अच्छी भाभी, अब की माफ कर दो, कान पकड़ा, आयन्दा से अपनी चीज इधर-उधर नही फेंक कर जाया करूँगा।"

जरा-जरा सी सेवा मन को मोह लेती है। पति नहाने जा रहे हैं उन के पाजामे में बटन लगा दे, गुसलखाने में तौलिया टाँग आये। देवर को हजामत के लिए गर्म पानी दे आयें। उसके धुले कपडे आलमारी मे सजा दे।

गुरुजनो के सामने शील और सकोच के साथ उठना-बैठना और हँसना-बोलना चाहिए। इस से बहू का लिहाज बना रहता है और बड़ो क सम्मान की रक्षा होती है। बडो के सामने वड-वड करना और मुंहजोर करना कुलीनता के लक्षण नही हैं। रुठकर या रो-धोकर सब को परेशान करना मूर्खता है। किसी बात पर हठ करके खाना-पीना छोड देना या पीहर भेज दो कि रट लगा छोडना ठीक नही। इस से आप के सास-ससुर और पीहर वाले दोनो ही परेशान होगे। ऐसी मूर्खता वे ही नवयुतियाँ करती हैं जिनका मानसिक-स्वास्थ्य ठीक नही होता, जिन्हे बचपन में अपने मनोवेगो पर काबू रखना नही सिखाया जाता। मानसिक-स्वास्थ्य नाजुक होने से स्त्रियाँ बडी विचित्र हरकते करने लगती हैं। रोना, चिल्लाना, सिर पीटना हाय-तोबा मचाकर लोगो को इकट्ठा कर लेना, फिर आप भूखे रहना, मुँह लपेटकर पडे रहना, हर दम उदास रहना, स्वय को दुखी, अभागी तथा उपेक्षित अनुभव करना आदि हरकतो से वे अपना तथा परिवार का सुख नष्ट कर देती हैं।

कभी-कभी ऐसा होता भी है कि परिवार पर कोई विपत्ति पडती है, तो अन्धविश्वासी लोग यह कहने की भूल कर बैठते हैं—'इस बहू का पाँव परिवार के लिए कल्याणकारी नही रहा'। ऐसी बात सुनकर बहू को बुरा लगना स्वाभाविक ही है, पर समझदार स्त्री वही है जो इन कटु आलोचनाओ को चुपचाप सह ले। समय आयेगा जब उसे अपनी इस तपस्या का फल मिलेगा। परिवार मे यदि कभी आर्थिक कठिनाई उत्पन्न हो जाये तो बहू को अपने सहयोग और धीरज से उसे सरल करने की कोशिश करनी चाहिए न कि केवल एक आलोचक बनी रहे।

खाना पकाने, सीने-पिरोने, बुनने, घर सजाने तथा अतिथि-सत्कार करने मे बहू को चतुर होना चाहिए। उसे सलीके से बातचीत करना, वेश-भूषा सँवारनी तथा सुघडाई से काम समेटना भी आना चाहिए। इसके बिना वह सफल गृहिणी नही बन सकती।

अपने पीहर के हरदम गीत गाते रहना और घुमा-फिराकर ससुराल वालों की न्यूनताओं को जताना मूर्खता है। निर्लज्जता और वाचालता कुल-वधुओं को शोभा नही देती। आचरण की सभ्यता बहू के सौन्दर्य मे चार चाँद लगा देती है। अपने पति की सच्ची सहचरी और विश्वासपात्र बने। उनकी आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक कठिनाइयो को समझे और हाथ बटाए। फिजूलखर्ची तथा स्वार्थिन पत्नी पति के लिए एक मुसीबत बन जाती है। अपने स्वास्थ्य का सदा ध्यान रखे। धर्मपरायण और सदाचारी बने। प्रत्येक काम समय पर करे ताकि मनोरंजन, आराम और पति के मनबहलाव के लिए आपको समय मिल सके।

यदि परिवार मे सास के अतिरिक्त जिठानियाँ भी है तो उन्हे प्रसन्न करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप उनके बच्चो को प्यार करे,
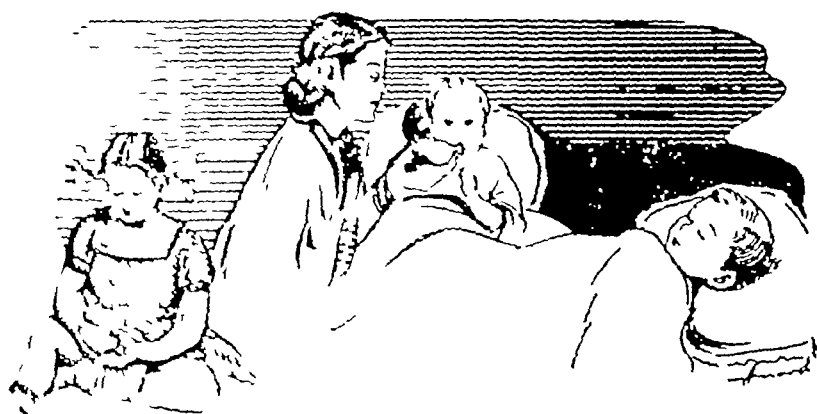
२४. अपना पूत पराया ढींगर

एक कहावत है 'अपना पूत पराया ढींगर'। अपनी सन्तान चाहे कितना भी बुरी हो वह अच्छी और प्यारी लगती है, उसके प्रत्येक अपराध क्षम्य दीखते हैं। परन्तु पराये बच्चे का छोटे-से-छोटा अपराध भी हिमालय सदृश गुरुतर लगता है। अगर इस पक्षपात का प्रत्यक्ष उदाहरण देखना हो तो किसी नासमझ गृहिणी का बेटी और बहू के प्रति व्यवहार देखें। अपनी कन्या को कोई बेकायदा काम करते देख माता तरह देती रहती है। भाई या बाप को
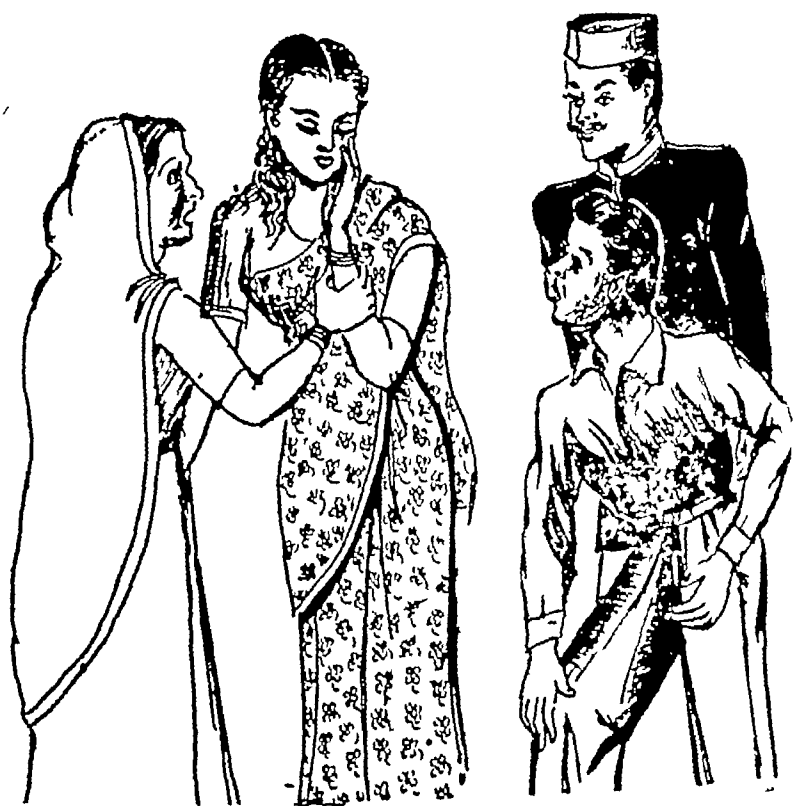
टोकते देख यह कह देगी—क्या करूँ, हर समय कन्या के पीछे लगना ठीक नहीं है। वह भी तो जमाने के साथ ही है, किस-किस बात के लिए हटाऊँ ? और को करते देख उसका भी तो मन कर ही आता है। परन्तु जब वह या प्रश्न

माननीया नन्द सब चीजे पटक कर मुँह फुला कोप धारण कर लेगी। घर मे एक कोहराम मच जायगा। नन्द को नाराज करना पानी मे रह कर मगर से वैर मोल लेने से कम नही है। वहू घर मे गृहस्वामिनी नही अपितु दासी वनाने के लिए लायी जाती है। उसका यह साहस करना कि दिन मे ? ? घन्टा वैठ कर अपने पति से कुछ पढ ले अथवा वातचीत करले, निर्लज्जता की हद समझी जायगी, और नन्दरानी सजधजकर अपने भाई के दोस्तो अथवा सहेलियो के भाइयो आदि के साथ ताश खेलती है। उसका हँसना वोलना एक हद तक मर्यादा को भी तोड देता है। घनिष्टता के साथ-साथ हँसी-ठठोली की नौवत भी आती है। धार्मिक शिक्षा से शून्य ऐसी वेटियाँ कभी-कभी फिसल भी जाती है। परन्तु सलामत रहे मातारूपी ढाल जो कन्याओ के प्रत्येक पाप पर पर्दा डाल देती है और अपनी कन्या को भोली, सीधी, नादान, अवोध आदि कह कर तथा लडके के सिर सारा दोष मढ अपने मन का गुवार निकालकर साँत्वना दे लेती हैं।

कभी भी उन्होने सोचा है कि हमारे नित्य के व्यवहार मे अनुचित पक्षपात, आदि से इन कन्याओ की आत्मिक, शारीरिक, धार्मिक शिक्षा पर कितना कठोराघात होता है ? इनको हम स्वार्थी, दम्भी, अन्यायी, आरामतलब, जिद्दी आदि बनाकर ससार रणस्थली के कितना अयोग्य वना देती हैं !

अब जब यह बिगडी हुई नन्दरानी ससुराल जाती है तो वहा कुछ और ही रगत दिखाती हैं। अपनी आदर्शवादिनी सास इन्हे पसन्द नही आती। देवरानी, जेठानी को यह गँवार समझती है। अपनी भाभी पर जो अत्याचार करती रही, उन्हे ही अपनी विनम्र नन्द भी फूटी आँखो नही सुहाती। निमित्त एक कही कि चार सुनाई। मायके मे नन्दरानी आये दिन अपनी गरीब भावज को यही कह-कह कर धमकियाँ दिया करती थी कि 'खबरदार जो हमारे भाई को सिखाया कि अलग हो जाओ, माँ-बाप ने उसे पालपोस कर इतना लायक वनाया है, कोई तेरे लिए ?' पर जब खुद ससुराल आयी तो सम्मिलित कुटुम्ब मे रहना उन्हे अपनी स्वतन्त्रता मे बाधक लगता है। अब पति से रोज जरा-जरा वात के लिए झगडा है कि अलग हो जाओ। दाल न गली तो लड-भिड कर मायके आ गई। माँ ने सुना तो सारा दोष समधियाने पर धरा।

जमाई के सर---

अगर बाप भाई ने समझाने की चेष्टा की तो उन्हीं को गृहिणी ने डाँट-

यह पूछती हूँ कि कभी किसी सास के मन मे बहू के लाड-चाव करने का, उसे पहिनाने-उढाने का भी शौक हुआ है ? बहू तो यहाँ तक बुरी है कि अपना प्राणो सम प्रिय बेटा यदि उसे जरा भी प्रेम दिखावे या उससे सहानुभूति रखे तो वह भी निकम्मा है और जोरू का गुलाम आदि उपाधियो मे अलंकृत किया जाता है।

घर मे अपनी धाक बनाये रखने के लिए नन्द-देवर, भाई और भावज की ओर से माँ का मन खट्टा करने की सर्वदा चेष्टा करते रहते है। इसका फल यह होता है कि घर मे दो पार्टियाँ हो जाती है। एक ओर ना भाई और भावज, दूसरी ओर विवाहित तथा अविवाहिता कन्याएँ, कुंवारे बेटे और माँ। बाप बिचारा जिस पार्टी से अधिक प्रभावित हुआ उधर ही झुक जाता है। इस दलबन्दी से घर की सगठन-शक्ति नष्ट हो जाती है।

अत ऐसी सासो से मेरा यह अनुरोध है कि अगर वह घर मे मेल और शान्ति चाहती है, पुत्र को आज्ञाकारी और ताबेदार बनाये रखना चाहती है, तो उन्हे चाहिए कि वह बहू को भी प्यार करे, उसके साथ भी हमदर्दी दिखाये और उसके अरमानो को कुचले नही। गरीबी और दु ख काटना कठिन नही है, अगर परिजनो का स्नेह और सहानुभूति मिली हो तो एक ही थाली म दो जने रूखी रोटी भी खाकर तृप्त हो सकते है। परन्तु अगर उसी म एक का हिस्सा तो पूरियाँ हो तथा दूसरे की सूखी रोटियाँ तो वह गले से उतरनी कठिन होती है।

निर्बल को कलपा कर कभी कोई सुखी नही हुआ है। वह चाहे चुप रहे पर उसकी सन्तप्त आत्मा की पुकार भगवान के कानो मे जाती है। किसी ने कहा है—

"निर्बल को न सताइये, वाकी मोटी आह,
मुई खाल की साँस से लोह भस्म हो जाय।"

मैं अनेको ऐसे परिवार को जानती हूँ कि जिन्होने अपनी बहुओं को सताया तो उनके पाप उनकी कन्याओ के आगे आये। धार्मिक और आदर्श भावना से शून्य उनकी कन्याएँ न केवल अपना ही परन्तु अपने परिवार वालो का जीवन भी दुखदायी बना देती है।

स्नेहमयी जननियो से फिर मेरी प्रार्थना है कि वह अपने कर्तव्य को समझे। अपनी सन्तान की प्रथम और आदर्श गुरु वही है उनको सद्‌-शिक्षा,

२५. सम्मिलित-परिवार का नव-निर्माण

भला क्यो--

आजकल वहुत कम नव दम्पत्ति सम्मिलित पारिवारिक जीवन को पसन्द करते है। प्रथम तो नवयुवक विवाह तभी करते है जब कि वे कमाने लगे हो और कन्या के माता-पिता भी अब ऐसा ही वर ढूंढते है जो अपने पावो
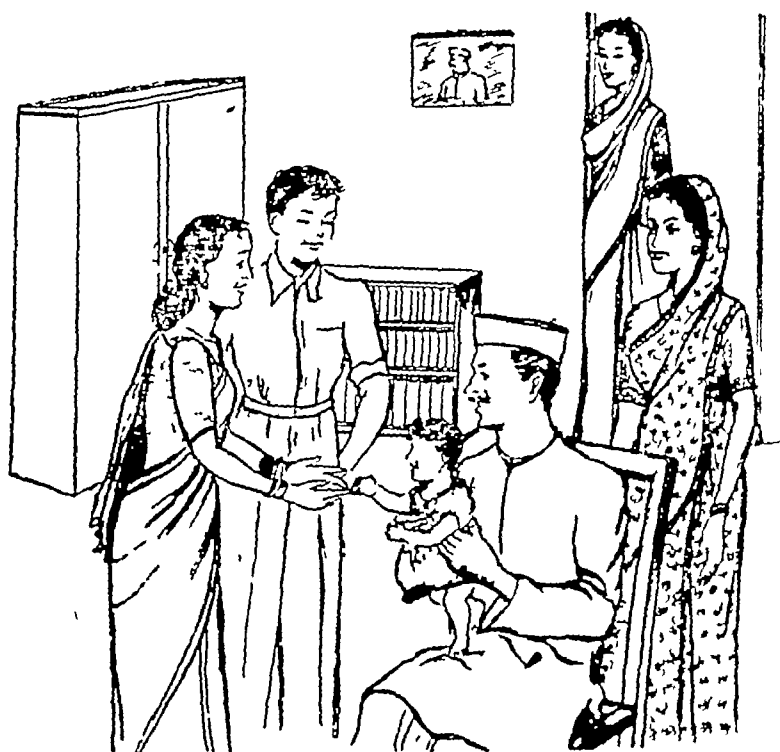
पर खडा हो। यह आम शिकायत है कि सास, नन्दो वाले घर मे यदि वह को जब कि उसका पति पढता हो, उनका मोहताज होकर रहना पडता है, उसका जीवन दूभर हो जाता है। ऐसे उदाहरण देखने मे कम नही मिलेंगे, जहा वहू को अकेले ही घर का सारा धन्धा सम्भालना पडता है। वह सुबह मुंह अंधेरे

छोटे-छोटे वहिन-भाई भी वडी नन्द के सिखाये मे भाभी के पीछे सी० आई० डी० के सदृश लगे रहते है। भाभी ने क्या खाया, आज किसे पत्र लिखा, भैय्या ने भाभी को क्या लाकर दिया आदि रिपोर्ट नोन-मिर्च लगा कर पहुँचानी इन्ही बच्चो का काम है। माँ समझती है मेरे बच्चे बडे चतुर है। क्या उसने कभी यह भी सोचा है कि अपने बच्चो की इस प्रकार की लगाई-बुझाई प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देकर वह उनके चरित्र का कितना पतन कर रही है? वडे होकर भी वे पर-छिद्रान्वेषी बने रहेगे। बचपन की कुटिलता, चुगलखोरी, द्वेष, ईर्ष्या, छल, कपट, पर-पीडन आदि दुर्गुण उनको आगे जाकर कभी भी एक सरल हृदय नागरिक नही बनने देगे? कोई आश्चर्य नही, यही बाल-गोपाल वडे होकर अपनी पत्नी का पक्ष लेकर अपनी कुटिलता प्रिय माता की न केवल उपेक्षा ही करेगे अपितु अपमान तक करने से भी नही चूकेगे।

गृहिणी घर की रानी है। अगर वह वहू और बेटियो के साथ एक-सा व्यवहार करे, तो सम्मिलित परिवार-प्रणाली बहुत कुछ सफल हो सकती है। कहते है कि एक म्यान मे दो तलवारे रखी जा सकती है, पर एक घर मे दो स्त्रियाँ चैन से नही रह सकती। इसके मूल मे स्त्रियो की सहज ईर्ष्यालु प्रवृत्ति कहर मचाती है। गृहस्वामिनी ने अपनी सास के हाथो जो अत्याचार सहे है, उनका बदला वह अपनी वहू पर निकालती है, क्योकि पुरुषो ने स्त्रियो का क्षेत्र केवल घर की सीमा के अन्दर ही रख, उनकी दिलचस्पी और कार्य-क्षेत्र के दायरे को बहुत सकुचित कर दिया है अतएव घर मे प्रधानता प्राप्त करने के लिए उसमे परस्पर द्वन्द्व चलता है। अगर ससुर कमाता है और पुत्र आर्थिक रूप से उसके अधीन है तो वहू की दुर्दशा होती है, अगर पुत्र का राज्य घर में चलता है और वहू घर की कर्ताधर्ता है, तब माता को अधीन होकर रहना पडता है, सास ससुर के कान भरकर अपना जोर जमाती है, जब कि वहू बेटे को सिखाकर माँ-बाप से उसका मन फिराती है।

इकाई को बनाये रखने के लिये—

ये दोनो प्रवृत्तियाँ ही बुरी है, चाहे बूढी माँ सताई गई हो या नवयौवना वहू की उमगे कुचली गई हो। आजकल घरो की तगी और आर्थिक कठिनाइयो को देखते हुए यह वाछनीय है कि सम्मिलित कुटुम्ब-प्रणाली को कायम बनाया जाय। इससे खर्चे की बचत भी बहुत होगी। मान ले तीन परिवार

है, तीनो मिलकर ३००) मासिक किराया देकर एक अच्छा-बडा घर ले सकते है, जबकि दिल्ली जैसे शहर मे १००) मे उन्हे अलग-अलग केवल दो-दो कोठरियो का घर मिलेगा। उन सबके लिए एक रसोई एक ड्राइंग रूम और एक डाइनिग रूम पर्याप्त होगा। अगर घर की तीनो स्त्रियाँ काम बाँट ले, एक ही नौकर रखकर ऊपर के काम का सहारा लिया जा सकता है। इस प्रकार दो नौकरो की तनख्वाह बच जायेगी। यहा तक कि तीनो परिवार एक मोटर का खर्चा भी मिल-जुल कर सम्भाल सकते है। गृह-व्यवस्था मे परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है। एक कोआपरेटिव सस्था के ढँग पर सम्मिलित परिवार का गृह-प्रबन्ध होना चाहिये। मान लो किसी घर मे दो बहू-बेटे, और चार छोटी नन्द-देवर है।

सुविधा दे। सास-बहू के घर के झगडो की चर्चा किसी अडौस-पडौस मे नही करनी चाहिए। इसमे जग-हँसाई होती है। जहाँ तक हो सके आपस मे ही झगडे का निपटारा कर लेना चाहिए। सास यह सोचे कि अभी वह नादान है, अनुभव और परिपक्वता से समझ आजाये। बहुओ को भी यह याद रखना चाहिए कि यह हमारी माता तुल्य है, हमारे पूज्य पति की जननी है, सभ्यता और धर्म के नाते यह हमारी मान्य है। जिस घर मे सास बहू का दुलार करती है और बहू सास का मान करती है, वहाँ कभी झगडा होता ही नही।

बहू-बेटो की पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक स्वाधीनता नष्ट न हो, इस बात का सास-ससुर को विशेप ध्यान रखना चाहिये। जमाना पलटा खा रहा है। साथ ही लोगो के आदर्श और विचार भी बदल रहे है। अनपढ गृहिणी के जमाने मे जो बात निर्लज्ज समझी जाती थी अब वही सभ्यता मानी जाती है। पहले जमाने मे अपने बच्चो को माँ-बाप के सामने गोदी मे लेना निर्लज्जता समझी जाती थी। जो लडका अपनी स्त्री की बीमारी या आराम का ध्यान रखने की चेष्टा करता वह जोरू का गुलाम समझा जाता था, पर अब ये सब दकियानूसी ख्यालात छोडने पडेगे। अगर सास-ससुर जमाने के साथ चलेगे तभी वह बहू-बेटियो के विश्वासपात्र तथा मित्र बन सकेगे।

अब बहू-बेटे पर नादिरशाही शासन करने का ख्याल छोडना होगा। पिछले जमाने की बात और थी। उन दिनो लडके-लडकी के माँ बाप के सहमत हो जाने पर गुड्डे-गुडियाँ सदृश्य उनका विवाह कर दिया जाता था। आजकल आपका बेटा अपनी पसन्द की जीवन सगिनी ढूंढ कर लाता है, आप भी अपनी बेटी को उसके होने वाले पति के रूप, गुण, स्वभाव आदि परखने का मौका देती है। विवाह से पहले लडके-लडकियो को अपनी राय देने का मौका दिया जाता है। फिर विवाह के बाद उनसे वही पुराने आदर्श और रिवाज की पाबन्दी करवाना भूल है।

माँ-बाप का यह कर्तव्य है कि अपने बच्चो को इस योग्य बनाये कि उनका शारीरिक और मानसिक विकास पूर्ण रूप मे हो सके, वे अपने पैरो पर उडना सीखे, बडे होकर अपना बोझा खुद सँभाले। बच्चो के आगे उनका अपना भविष्य है, उसके जिम्मेदार वे खुद बन सके। माँ-बाप के [illegible]

या कर्तव्यपरायणता का यह मतलब नही है कि वे अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर औलाद के लिए अपने बुढापे को दुखदाई बना ले। बुढापे मे सन्तान का मोहताज नही होना चाहिए, सम्मिलित पारिवारिक जीवन की असफलता का एक यह भी बडा भारी कारण है।

जब लडके कमाते हो, और यदि वे माँ-बाप के साथ रहना चाहे उनको चाहिए कि वे घर के किराये, नौकर-चाकर, रसोई का खर्च अपने मेहमान और दोस्तो का आकस्मिक खर्च आदि मे हिस्सा बटाये। अच्छा हो कि घर के खर्च का हर मास हिसाब रखा जाय और अपने-अपने हिस्से का खर्च बेटे अपनी माँ को महीने के आरम्भ मे ही दे दे।

घर-प्रबन्ध मे अगर कोई परिवर्तन करना उपयुक्त समझा जाए शान्ति से बैठकर सब जने राय दे और जिधर बहुमत हो वह फैसला सबको मान्य होना चाहिए।

सन्तान के नवीन दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करते गये, उस परिवार मे परस्पर सहयोग और प्रेम बना रहा है। बचपन मे जो, माँ-बाप पथ प्रदर्शक के रूप मे थे अगर वे ही आगे जाकर बच्चो के हितैषी सलाहकार और मित्र बन जाते है तो इससे अधिक सुन्दर प्राचीन और अर्वाचीन प्रतीको का सगम भला कहाँ हो सकता है।

आज घर-घर मे इसी सुन्दर सगम को सफल बनाने की चेष्टा की जानी चाहिए। इससे पारिवारिक असुविधाएँ बहुत कुछ हल हो जायेंगी। नवयुवक समाज पहले आदर्श सम्मिलित परिवार स्थापित करने मे सफल होने की चेष्टा करे, बाद मे आदर्श नगर और देश बनते देर न लगेगी। देश के नव-निर्माण मे पहले गृहस्थी का नव-निर्माण होना अधिक जरूरी है। वृद्ध और नवयुवको का जब पूर्ण सहयोग होगा, समाज की बहुत-सी कुरीतियाँ भी दूर हो जायेगी। नवयुवको का सहयोग पाकर वृद्ध अपने मे नवजीवन की स्फूर्ति अनुभव करेंगे, जब कि अनुभवी वृद्धो के साए मे रहकर नवयुवक गुमराह होने से बच जायेगे। अतएव आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि गृहस्थी का नव-निर्माण तेजी के साथ किया जाय।

२६. हमारी बालिकाएँ और वयःसन्धिकाल

वय सन्धि का समय बहुत ही नाजुक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। अगर इस काल में माताएँ कन्याओं का ठीक ढंग से मार्ग-प्रदर्शन करने में असफल रहती हैं तो उनका शारीरिक और मानसिक विकास असन्तुलित ही रह जाता है। अधिक प्रेम और बेकायदा लाड़ प्यार कन्याओं को उच्छृङ्खल बना देता है और अधिक रोक-टोक और आलोचना उन्हें कटु, प्रतिक्रियावादी, उदास, सुस्त तथा नीरस बना देती हैं। इस आयु में माताओं

को अपनी कन्याओं के प्रति एक हमदर्द एवं समझदार सखी की तरह व्यवहार करना चाहिए, ताकि अपने हृदय की उथल-पुथल तथा शारीरिक समस्याओं के विषय में वे अपनी माता से निस्संकोच कह सकें। इस प्रकार उनका मन भी हल्का हो जायेगा और स्वयं को एक सच्ची हमदर्द और शुभ-चिन्तिका के हाथों में छोड़कर वे अपने को सुरक्षित अनुभव करेंगी। इस अवस्था में किसी का विश्वास, प्रेम और प्रशंसा पाने की प्रबल उत्कण्ठा जागृत हो जाती है। यह स्वभाविक ही है।
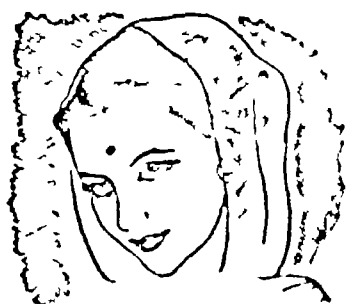
वय सन्धिकाल समझा जाता है। खान-पान, रहन-सहन, घर का वातावरण तथा खानदानी विशेषता इन सब बातो पर कन्या के यौवन का उभार निर्भर होता है। जैसे ही यौवन के कुछ चिह्न शरीर मे दृष्टिगोचर हो। माता का यह कर्तव्य है कि वह कन्या को नारी के शारीरिक धर्मों का ज्ञान करवा दे। मुझे कई एक ऐसी अबोध कन्याओ का पता है जो प्रथम बार ऋतुमती हुई तो इतनी घबडा गई कि घण्टो रोती रही। किसी किसी ने तो यह समझा कि उनके अन्दर कोई फोडा फूट पडा है। कई को यह गलतफहमी हो गई कि वे किसी भयकर बीमारी की शिकार हो गई है।

जिन कन्याओ का १२-१३ वर्ष की आयु मे मासिक धर्म आरम्भ हो जाता है, वे एक दो बार अनियमित रूप से रजस्वला होती है। इस तथ्य का एक कन्या को पता नही था। जब दो-तीन मास उसका मासिक धर्म बन्द रहा तो वह बहुत डर गई, क्योकि उसने सुन रखा था कि गर्भ रहने पर ही मासिक धर्म बन्द होता है। वह एक एग्लो-इडियन बालिका थी। वह अपनी माता के पास गई और उससे अपनी चिंता प्रकट की। उसकी माता बहुत ही शक्की स्वभाव की थी। उसने उसे लॉछन लगाना आरम्भ किया और कहा बता, तूने किस लडके से हेल-मेल बढाया और उससे तेरी कहाँ तक घनिष्ठता है ? असल मे बात कुछ नही थी। कन्या बहुत ही अबोध थी। अपनी मा की डाँट-डपट से उसे इतना दु ख हुआ कि वह पुरुषो की छाया से भी डरने लगी और उसने आजीवन विवाह नही किया।

हमारी अधिकाश बालिकाएँ अज्ञानतावश भी दु ख सहन करती है। अशिक्षित होने के कारण वे उसी को अपना भाग्य तथा विधि का विधान समझ लेती है। इन बालिकाओ के अलावा हमारी अधिकाश शिक्षित बालिकाएँ भी यौवनावस्था के मनोवैज्ञानिक परिवर्तन से बिलकुल ही अनभिज्ञ है। माता के द्वारा यह ज्ञान उन्हे बडी सरलता से प्राप्त हो सकता है जिससे भविष्य मे उन का जीवन सुखमय हो सके। एक षोडशी के जीवन मे यौवनावस्था

को वहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखती है और उनके सम्मुख नीचे से नीचा काम करने मे भी उन्हे गर्व होता है। यह भी प्रेम प्राप्त करने का एक ढग है। उपयु क्त वातो द्वारा हमे यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि उन्हे किसी और उपयोगी कार्य मे लगाना परम आवश्यक है। जिनका जीवन वेकार वँधा हुआ नही है उनके लिए यह इतना कठिन नही, किन्तु जो विचित्र स्वभाव की है वे तो वास्तविकता को भूलकर एक कल्पना का ही संसार अपने लिए रच लेती है।

कुछ काल वाद उन्हे यर्थाथता की अनुभूति होती है और उनका आकर्षण पुरुष की शारीरिक सुन्दरता पर प्राय निर्भर हो जाता है और वही उनका आदर्श वन जाता है। कभी वे अपने से कही वडे वयस वाले व्यक्ति के प्रेम मे दीवानी हो जाती है। मानसिक अनुसन्धान के अनुसार उपर्युक्त वाते विलकुल स्वाभाविक समझी गई है।

मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के द्वारा यह कहा गया है कि प्राय युवती अपना अधिकाँश समय एक काल्पनिक सुन्दर स्वप्न की रचना मे ही व्यतीत करती है। उसीसे उसे सन्तोष प्राप्त होता है। उसके स्वप्न अधिकतर भावुक होते है। यह अवस्था कुछ अधिक वयस के लोगो मे नही पाई जाती और न इसमे कुछ सार ही होता है। इसकी नीव ही निराली है। इस भावना मे एक प्रकार की घवराहट भी रहती है। इस घवराहट का कारण अज्ञानता ही है।

उपर्युक्त वातो के पूर्ण ज्ञान द्वारा हमे यह भली प्रकार विदित हो जाना चाहिए कि यौवनावस्था के विकारो को सावधानी से हटाकर अपनी वालिका का चित्त हम ऐसी दिशा मे आकर्षित करा दे कि वह एक स्वस्थ और होनहार युवती वन सके।

कन्याओं का मानसिक स्वास्थ्य—

ग्रन्थियो के स्राव के कारण वय सन्धिकाल में कन्याओ का मानसिक स्वास्थ्य भी गडवडा जाता है। कन्याएँ सुघड और सुन्दर हो इसी पर उनके जीवन की सफलता निर्भर नही है, पर इस वात की भी वहुत जरूरत है कि उनका मानसिक स्वास्थ्य भी सुन्दर हो। देखने में आता है कि वहुत-सी वहनें अपने शारीरिक रूप-रग की अधिक परवाह करती है, पर उनका मानसिक रूप वहुत कुरूप होता है। शारीरिक स्वास्थ्य का निखार जैसे व्यक्तित्व मे चार चॉद लगा देता है उसी प्रकार मानसिक स्वास्थ्य भी स्वभाव

के आकर्षण को बढा देता है और व्यवहार को सन्तुलित बनाये रखता है। जिन कन्याओं को अपने मनोवेगों पर काबू रखना नहीं आता वह व्यवहार-ज्ञान से शून्य होती है। अवसर देख बिना भोंडे ढंग से वह दूसरों को यातना कर अपना द्वेष, ईर्ष्या, और क्रोध प्रकट कर देती है। उनकी कलह और असहिष्णुता की कमजोरी छिपी नहीं रहती। उनका प्रेम आसक्ति का रूप धारण कर लेता है और उनका मोह उनको हित-अहित का ज्ञान भुला देता है।

मानसिक अस्वस्थता—

वह चाहती थी। पढने-लिखने मे उसका जी नही लगता था। वह मैट्रिक मे तीन बार फेल हुई। हर बार अपनी विफलता का दोप दूसरो पर मढ देती, 'टीचर ने कुछ पढाया ही नही था', 'इस साल कोर्स से वाहर पूछा गया', 'इस साल पेपर बहुत कडाई से जाँचे गये', अन्त मे 'स्कूल खराब है, यहाँ कुछ पढाई नही होती' कहकर मालती ने स्कूल भी छोड दिया।

दो-तीन साल वह वैठी रही। जब शादी की बातचीत चली तो मालती की माँ को अपनी लाडली के लिए एक ऐसे घर की तलाश थी जहाँ उनकी लाडली सब पर हुकूमत कर सके और जहाँ सास का दुखडा न हो। सयोग से ऐसे घर मालती का विवाह हुआ जहाँ उसकी सास मर चुकी थी और दो छोटे भाई और थे। मालती मे इतनी सहनशीलता कहाँ कि वह छोटे देवरो की शैतानियाँ क्षमा कर देती। हार कर बच्चो को उनके मामा के यहाँ भेज दिया गया। फिर आये दिन ससुर की शिकायतें जडी जाने लगी कि 'ये देर से आते है—पूजा-पाठ में वैठे रहते हैं।' फिर पुराने नौकर को बुरा-भला कहना शुरू कर दिया। चौबीस घण्टे की कचकच से तग आकर एक-दो वार पति ने मालती को समझाने की चेष्टा की, पर मालती लगी कर्कशा की तरह लडने। घर में उसके कोई नौकर नही टिका, ससुर किसी आश्रम मे जाकर रहने लगे, पति अधिक समय आफिस मे रहते थे। अडौस-पडौस के लोगो मे मालती की बनती न थी—वस सामाजिक 'बायकाट' किये जाने पर मालती का जीवन दूभर हो गया। वह कुढ-कुढ कर आधी हो गयी। दिन-रात रोती रहती, पति को जली-कटी सुनाती, आत्महत्या की धमकी देती और एक दिन सचमुच मे उसने कुएँ मे गिर कर आत्महत्या कर ली।

राधा को अपने रूप का वडा घमण्ड था। मेरे सामने किसी दूसरे के रूप-गुण की कोई भला कैसे प्रशसा कर सकता है ? उसकी छोटी वहन देखने मे साधारण थी, पर थी वह गुणवती। पढने-लिखने, घर के काम-धन्धे मे चतुर थी। उसका जीवन वडा सफल रहा, पर राधा ने ईर्ष्या और असहन-शीलता के कारण अपना जीवन दु खी बना लिया। जिस-तिस के रूप की आलोचना करने मे वह हिचकती नही। अगर उसका पति अपनी भावज, साली या किसी पडौसिन के गुणो की तारीफ कर देता तो वस उसी दिन घर मे महाभारत मच जाता। पति पर हजार तोहमतें जड दी जाती।

शान्ति जल्दी घबडा जाती है। जरा-सा दु ख पडा नही कि वह अधीर

हो जाती है। एक बार उसके बच्चे को टाइफाइड हो गया। उसके पति की जान आफत मे आ गयी। शान्ति दिन-रात चिन्ता मे डूबी रहती न उसने खाने की परवाह की, न सोने की। जब उसके पति समझाते कि तुम्हारा इस तरह दिन-रात चिन्ता मे घुलने से तो बच्चे का कुछ भला होगा नही उल्टा तुम्हारा उतरा हुआ मुँह, आँखो मे आँसू देख बच्चा घबड़ा जाता है। डर के मारे उसका आत्म-विश्वास कम हो रहा है। मुसीबत के समय धीरज रखना चाहिए ताकि पूरी शक्ति से उसका मुकाबला किया जा सके। पर शान्ति की समझ मे यह बात नही बैठी। एक दिन थकावट से चूर शान्ति को रसोई मे चक्कर आ गया। चौखट पर जाकर उसका सिर टकराया। पन्द्रह दिन तक वह बिस्तर पर पडी रही।

ज्ञानवती बहुत ही नाजुक मिजाज है। यदि उसकी मा [illegible] या सहेलियाँ उसे हँसी-मजाक मे भी कुछ कह दे तो वह दस दस दिन तक मुँह फुलाये फिरती है। वह अपनी गलती कभी नही स्वीकार करती। इसी कारण उसकी किसी से नही बनती।

मे आनन्द आता है। उसका स्वभाव छिद्रान्वेषी है। दूसरो के सुनाम और नेकी पर वह कालिख पोतने की ताक मे रहती है। बच्चो और नौकरो से घर का भेद पूछेगी फिर मौका देखकर लोगो से लडाई छेड देगी और उनको व्यग तथा तानो मे छेदेगी। अडौस-पडौस के सब उससे कतराते है। घर वाले उसे सनकी कहते है। खुशामद से खुश हुई तो अपना सब कुछ दे देगी पर यदि किसी बात से चिढ गयी तो घर वालो को गालियाँ देने लगेगी।

उपर्युक्त सभी बाते मानसिक कुरूपता के चिह्न है। इस कुरूपता ने महिलाओ के बाह्य सौन्दर्य को नष्ट कर दिया है। उनके परिजन उनसे परेशान है। पति या भाई-बाप उन्हे अपने साथ बाहर या मित्रो मे ले जाकर खुश नही, क्योकि उन्हे यही डर लगा रहता है कि न जाने किस समय इनको सनक उठ खडी हो और ये भोडे ढग से अपना क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि प्रकट करने लगे।

इनकी सखियाँ इनसे कतराती है। समाज मे ये अप्रिय है। रूप-रग और हुनर होते हुए भी इनका व्यक्तित्व फीका-फीका है, भला क्यो ? पुष्प की सुन्दरता ही काफी नही उसमे सुगन्ध भी होनी चाहिये। सो मानसिक सुन्दरता या स्वास्थ्य एक ऐसी ही सुगन्ध है जो प्रत्येक नारी के व्यक्तित्व को सुगन्धित बनाती है, उसको व्यावहारिक कुशलता प्रदान करती है और जीवन को सफल तथा आकर्षक बनाती है। मनुष्य समाजिक प्राणी है। जब तक किसी महिला को समाज के सग हिल-मिल कर रहना नही आता उसका कल्याणकारी रूप सामने नही आता। दूसरो को निभाने के लिए प्रेम, सेवा, दया, धीरज और सहनशीलता का होना बहुत जरूरी है। आजकल हमारे पारिवारिक जीवन को असफलता का सबसे बडा मुख्य कारण यह भी है कि कन्याओ को मानसिक स्वस्थता बनाये रखने की शिक्षा नही दी जाती।

करने मे विश्वास करती है। अपने ऊपर माँ की डाँट-डपट बढती देख तथा अकारण ही झिडकियाँ और रोक-टोक होते देख कन्या का मन असन्तोषी हो विद्रोह करने लगता है। फलस्वरूप वह अपनी माँ से दूर-दूर रहने की चेष्टा करती है और उसे अधिकाश समय सखी-सहेलियो के साथ गुजारना अच्छा लगता है। वह भाई और बाप के दो प्रशसा के शब्दो को सुन सहर्ष उनका काम तत्परता से कर देगी, पर माता की डाँट-डपट से उसका मन कुण्ठित हो उठता है। माँ के इस असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार और कन्या की नासमझी से माँ और बेटी के बीच एक अभेद्य दीवार-सी खडी हो जाती है, जिसका परिणाम बहुत बुरा होता है। कन्या या तो माँ की अवहेलना करने लगती है, जिससे माता के दिल मे भी कटुता आ जाती है, अथवा डर और असन्तोष से कन्या का जीवन घुटने लगता है, जो उसकी स्वस्थ बढन और जीवन के स्वाभाविक विकास के लिए हानिकारिक है।

माता की ऐसी भूलो से ही मैने कई घरो मे अशान्ति फैली हुई देखी है। कानपुर मे हमारे पडौस मे एक महिला रहती थी। उनके पति प्रोफेसर थे। परिवार मे २० वर्ष का बडा लडका तथा १६ और १४ वर्ष की दो कन्याएँ थी। बडी लडकी पढने मे अधिक होशियार और समझदार होने के कारण भाई की अधिक दुलारी थी। छोटी बहन सिलाई और गृह-कार्य मे अधिक रुचि रखती थी, अतएव माँ का उसपर अधिक प्रेम था। जब तक बहने छोटी थी, तब तक तो माँ का पक्षपात कुछ अखरता नही था, परन्तु जब बडी लडकी वय सन्धि की अवस्था पर पहुँची, तो माँ अज्ञानवश उस पर अधिक कडाई और डाँट-डपट करने लगी। सहानुभूति के लिए बहन भाई के पास अपना दुःख रोती तथा माँ के पक्षपात की आलोचना करती। इस बात को लेकर माँ-बेटी मे मनोमालिन्य बढ गया। छोटी बहन माँ की अधिक विश्वसनीय बन गई। भाई के बोर्डिंग-हाऊस मे चले जाने पर बडी बहन को अपना दुख-सुख कहने को कोई साथी न रहा। वह माँ से अधिक खिची-खिची रहने लगी। उसे सुधारने के लिए माँ ने एक गलत तरीका पकडा। वह छोटी बहन की अपने पति के पास बढाई और बडी की कडी आलोचना करती। फलस्वरूप बडी लडकी अन्दर-ही-अन्दर घुलने लगी और उसे हिस्टीरिया के फिट आने शुरू हो गए। घर-गृहस्थी तथा माँ-बाप और बहन से उसे एक प्रकार की नफरत-सी हो गई। मिजाज चिडचिडा

उत्साहपूर्वक लगा देना चाहिए।

मनोवैज्ञानिको का कहना है कि युवती प्राय अपना अधिकतर समय एक कल्पनिक सुन्दर स्वप्न की रचना मे ही व्यतीत करती है। इसमे उसे एक प्रकार का सन्तोपप्रद आनन्द मिलता है। उसके वे स्वप्न अधिकतर मनोनीत और भावपूर्ण होते है। इन रगीन स्वप्नो मे छोटी उम्र की युवतियाँ ही डूबी रहती है। इसकी नीव ही निराली है। इस भावना मे एक घबराहट भी मिली होती है। विवाह हो जाने पर मनचाहा साथी पाकर उसका यह प्रेम यथार्थता का अनुभव करता हुआ एक स्थिर धारा मे वह निकलता है। इस अवस्था मे युवतियो का पुरुप के प्रति आकर्पण होना अथवा उनसे अपने रूप और गुणो की प्रशसा सुनने की चाह होना स्वाभाविक ही है। कन्याओ मे अपने सुन्दर भविष्य को सफल बनाने की भावना बडी प्रबल होती है। बुद्धिमती माताएँ उनके भावो के विकारो को दूर करके एक योग्य पथ-प्रदर्शक का कर्त्तव्य करती हुई, इस सुखद स्वप्न को सफल करने मे उन्हे सहयोग दे।

आज से २५ पूर्व माताओ के लिए कन्याओ की समस्या उतनी कठिन नही थी, जैसी अब है। यौवनागमन के पहले ही उनके विवाह का प्रबन्ध कर दिया जाता था। इससे पूर्व कि युवावस्था के शारीरिक परिवर्तन उन्हे उलझनो मे डाले, उनकी सभी समस्याएँ पति द्वारा सुलझा दी जाती थी। चहारदिवारी मे माता-पिता की कडी देखभाल मे पली उन युवतियो को जीवन के प्रलोभनो से सघर्ष करने का अवसर ही नही आता था। पर आजकल यह बात नही है। कन्याओ के विवाह की समस्या उतनी सरल नही रही। अब सामाजिक तथा आर्थिक स्थितिओ के कारण पूर्ण युवती होनेपर ही उनके विवाह की सम्भावना है। पर्दे की प्रथा भी अब हटती जा रही है। कन्याओ को पढने-लिखने, पहनने- ओढने तथा मिलने-जुलने की सुविधा अब अधिक है। अतएव अब उन्हे प्रलोभनो का भी सामना करने का मौका

तथा अपनी चटख-मटख तथा शोखपन से दस अन्य नौजवानो को अपनी ओर आकृष्ट कर अपनी पापुलेरिटी का सिक्का जमा दिया। ऐसी पत्नी से तो मेरी निभने से रही। इन लोगो ने कम पढी-लिखी परन्तु सन्तोषी घरेलू स्त्रियो के जीवन मे भी असन्तोष पैदा कर दिया है। वे सोचने लगी है कि ये रग-विरगी तितलियाँ कितनी आजाद तथा सुखी है! हमारा तो जीवन ही व्यर्थ जा रहा है। इसलिए आये दिन वे भी अपने पतियो से लडती है कि 'खैर मनाओ मै एक सीधी-सी मिल गई हूँ कि जिस करवट विठाते हो वैठती हूँ, अगर कोई नई रोशनी की मिल जाती तो आटे-दाल का भाव मालूम हो जाता।' कुछ पतियो ने तग आकर दखल देना ही छोड दिया है, फलस्वरूप ये अर्वशिक्षित नारियाँ भी विना सोचे-समझे फैशन का रगीन चश्मा लगाकर भेड-चाल का अनुकरण कर रही है। यह सव देखकर मै सोचता हूँ कि अनव्याहा ही अच्छा, व्याह कराकर नाहक की मुसीवत कौन गले वाँधे ?"

शिक्षा का उद्देश्य समझें—

अधिकाश नौजवान इसी प्रकार का अनुभव कर रहे है। कुछ तो विवाह से डरे हुए है, कुछ नई रोशनी की चकाचौध मे आकर पहिले तो वँध गए पर वाद मे जीवन की कडवाहट से घवडा उठे है। आजकल की नवयुवतियाँ अपने लक्ष्य से भटक रही है। इस समय देश के पुनर्निर्माण मे, समाज को सुसगठित करने, सस्कृति का पुनरुत्थान करने तथा वच्चो के चरित्र निर्माण मे माताओ के सहयोग की वडी आवश्यकता है। इसके लिए शिक्षा की प्रणाली मे भी सुधार वाछनीय है। आधुनिक ढग की स्त्री-शिक्षा परिवार, समाज और देश मे कहाँ तक सुख और शान्ति फैलाने तथा स्त्रियो के चरित्र विकास मे कहाँ तक सफल हुई है यही देखना है। सोलह सत्तरह वर्ष की आयु तक कन्याएँ कालिज मे आती है। स्कूलो की शिक्षा भी ऐसी होती है कि कितावी ज्ञान तथा रटाई और सिर खपाई करके वह जिस-किस तरह से मैट्रिक या हायर सैकन्डरी परीक्षा पास
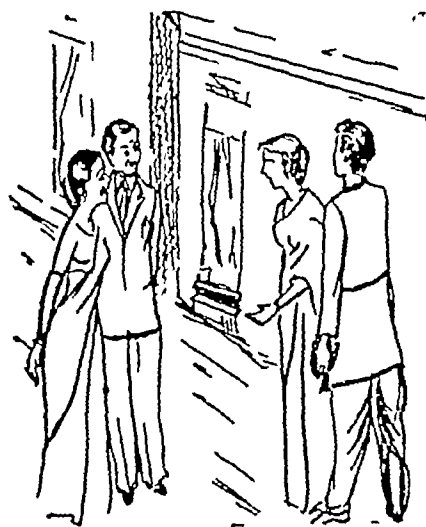
पश्चात् तदनुरूप विषयो का चुनाव होना आवश्यक है। लगभग ८० प्रतिशत कन्याओ का कैरियर विवाह करके जीवन-निर्वाह करना होता है। किसी पुरुष की कमाई पर गुलछर्रे उडाने का किसी भी स्त्री को कोई अधिकार नही है, जब तक कि उसके बदले मे वह भी सुचारु रूप मे गृहस्थी की सँभाल तथा बच्चो का पालन-पोषण ठीक ढग से करती हुई अपने पति का मुसीबतो मे हाथ न बटाये, समाज मे अपने पति को गौरवान्वित न करे तथा इस प्रकार अपनी सेवा-परायणता, प्रेम, सदाचार, सहनशक्ति तथा त्याग का परिचय देती हुई अपने परिवार तथा समाज की उन्नति न करे।

स्कूली शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् कन्याओ की बुद्धि तीव्रता (इन्टैलिजैण्ट टेस्ट) और कार्य-कुशलता की भी परीक्षा होनी चाहिए। जो कन्याएँ अधिक मेधावी हैं वे तो डाक्टरी अथवा उच्च शिक्षा के लिए जा सकती है, परन्तु अधिकाश कन्याएँ, जिन्होने आगे जाकर विवाह करना है, उन्हे कुछ इस प्रकार के गृह-उद्योग सीखने चाहिएँ जिनके द्वारा अपने अवकाश के समय मे वे धनोपार्जन कर सके, तथा निस्सहायावस्था मे अपने बच्चो का भी पेट भर सके यथा—बागवानी, दूध की डेरी चलाने का काम, मुर्गा-मुर्गी तथा अन्य पशु-पक्षी पालकर धनोपार्जन करना, होटल चलाना, या पेयिंग गेस्ट रखकर आमदनी बढानी, कसीदे और कढाई-बुनाई का काम, आचार, चटनी, मुरब्बे, बडी, पापड, मिठाई आदि बनाना, रँगाई-धुलाई का काम, मिट्टी के खिलौने अथवा अन्य इसी प्रकार के गृहोद्योग जिनमे अपने अवकाश का समय लगाया जा सकता है। अपने मौहल्ले के विक्रय केन्द्र मे तैयार माल को बिकवाने का प्रबन्ध किया जाय। इस केन्द्र का भार कुछ ऐसी चतुर स्त्रियो पर हो जो व्यापार सम्बन्धी ज्ञान रखती हो तथा टाइप करना तथा हिसाब-किताब रखना जानती हो। मौहल्ले की योग्य स्त्रियाँ मिल कर अपने इस केन्द्र को सफल बनाने और ग्राहको की माँग को समझकर तदनुसार माल तैयार करवाने का जिम्मा ले। इस प्रकार गृहोद्योग की उन्नति भी होगी, साथ ही सस्ता माल भी मिलेगा। इसके अतिरिक्त जो स्त्रियाँ गाने-बजाने, चित्रकारी, गृह की सजावट, बच्चो की सँभाल, नर्सिंग तथा अन्य इसी प्रकार के कामो मे होशियार है वे भी अपने अवकाश के समय मे अपनी योग्यता के बल पर धन और सुनाम दोनो कमा सकती है।

कुशल गृहिणी बनाने के लिये—

हमारे देश में अधिकांश
गुजारती है। अच्छा हो कि
उन्हें स्कूलों में ही दी जाय।
साथ ही खेल-कूद तथा
व्यायाम द्वारा स्वास्थ्य की
उन्नति की ओर भी विशेष
ध्यान दिया जाय। इनके
अतिरिक्त दूरदेशी, तात्का-
लिक बुद्धि, कार्य-कुशलता,
हाजिर-जवाबी, भाषण देने
की योग्यता आदि की
भी परीक्षा ली जाय।

करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए ऐसे गृहोद्योग-शिक्षा केन्द्र तथा कला-केन्द्रो की अधिक माँग है, जहाँ पर दो साल कन्याएँ इस प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर सके कि उनका जीवन उपयोगी बन जाय, वे अपनी गृहस्थी की जिम्मेदारियो को भली प्रकार सँभाल सके और सच्ची सहचरी, आदर्श माता तथा उपयोगी नागरिक बन कर सफल जीवन व्यतीत करने मे सफल हो सके। विवाह से पूर्व ऐसे केन्द्रो मे दो साल ट्रेनिंग प्राप्त करना प्रत्येक कन्या के लिए अनिवार्य होना चाहिए ताकि प्रत्येक नौजवान को, जो कि इन केन्द्रो मे शिक्षा प्राप्त कन्या से विवाह करे, इस बात का पूरा भरोसा हो कि मेरी पत्नी सच्चे अर्थ मे जीवन-सहचरी प्रमाणित होगी, मेरे परिश्रम की कमाई उसके हाथ मे जाकर सार्थक हो सकेगी। कन्याओ की स्कूली शिक्षा मे सुधार होने पर ही परिवार तथा समाज का नव-निर्माण होना सम्भव होगा, पर इसके लिए माताओ का सहयोग बहुत जरूरी है।

स्त्री शिक्षा के विषय मे बहन सुचेता कृपलानी के विचार उल्लेखनीय है। वह कहती है कि स्त्री और पुरुष को समान राजनीतिक अधिकार है, अब प्रश्न हमारे सामने यह है कि क्या स्त्री के लिए कोई विशेष शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है। मै चाहती हूँ कि स्त्रियो को किसी भी ऐसी शिक्षा से वंचित न किया जाय जिसके लिए उसमे योग्यता और रुचि है। कोई भी स्त्री यदि विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त करने योग्य हो तो उसे वह अवसर अवश्य मिलना चाहिए। मेरा विश्वास है कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद अधिकतर स्त्रियाँ घरेलू जिन्दगी वितायेगी। इसलिए उन्हे ऐसी शिक्षा भी अवश्य दी जानी चाहिये जिससे वे भली-भाँति अपना घर चला सके और अच्छी गृहिणी और माता बन सके। गृह-विज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, शिल्प-कला आदि की पूरी शिक्षा उन्हे मिलनी चाहिये। बचपन से ही ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये जिससे भविष्य मे वे समाज मे अपना उचित स्थान ले सके और अपने कर्तव्य सुन्दरता से निभा सके।

माताओ की जिम्मेदारी—

कन्या की शिक्षा ठीक ढग से हो रही है कि नही, इस विषय मे माता की विशेष जिम्मेदारी है। केवल स्कूली शिक्षा से समस्या हल नही हो सकती। जब तक परिवार मे नव-निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण और उदाहरण पेश नही किया जाता कन्याएँ कसौटी पर खरी नही उतर सकती। जब-

२८. कौन उत्तरदायी है ?

कहावत है—'एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।' इसी प्रकार आजकल कुछ ऐसी पढी-लिखी तितलियाँ भी निकली है, जिन्होंने

शिक्षा तथा शिक्षित बहिनो का नाम कलंकित कर रखा है। यह तितलियाँ सम्मिलित कुटुम्ब मे रहकर खुश नही होती। घर का काम इनसे होता नही। अपने गुरुजनो के प्रति इनके हृदय मे आदर अथवा प्रेम का भाव है ही नही। यही वजह है कि उनकी नसीहत उन्हे कटु लगती है। आदर्श पति से उनका तात्पर्य ऐसे पुरुष से है जो उनकी हाँ में हाँ मिलाकर सब कर्तव्यो की ओर से अपना मुंह फेरकर केवल इनके सुख का साधन बना रहे।

अब इनकी दिनचर्या भी जरा सुन लीजिये। सुबह सात-आठ बजे सो कर उठी। महीन-सी आवाज मे पुकारा—"बैरा, चाय लाओ।" पलग पर ही

देवी जी के लिए चाय आ गई। उसके पश्चात बाथरूम मे घुसी तो दो घण्टे पश्चात् सजधजकर निकली। इन्हे इस रूप मे देखकर तो कोई यही कहेगा कि स्टेज पर अभिनय करने के लिए कोई अभिनेत्री सजी है। मोटर मँगवाई और अपनी जैसी दो-चार सहेलियो के घर चक्कर लगा कर १२ बजे तक लौटी। आते ही खानसामे को हुकुम हुआ—मेम साहिब के लिए टेबल तैयार करो। पति महाशय ऑफिस मे बैठे है, काम-काज के आदमी घेरे हुए है। परन्तु खाने की टेबल पर मेम साहिब की घण्टी की आवाज सुन कर मजाल है कि वह हाजिर न हो। श्रीमती जी की इच्छा के विरुद्ध करना

२८. कौन उत्तरदायी है ?

कहावत है—'एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।' इसी प्रकार आजकल कुछ ऐसी पढी-लिखी तितलियाँ भी निकली है, जिन्होंने शिक्षा तथा शिक्षित बहिनो का नाम कलकित कर रखा है। यह तितलियाँ सम्मिलित कुटुम्ब मे रहकर खुश नही होती। घर का काम इनसे होता नही। अपने गुरुजनो के प्रति इनके हृदय मे आदर अथवा प्रेम का भाव है ही नही। यही वजह है कि उनकी नसीहत उन्हे कटु लगती है। आदर्श पति से उनका तात्पर्य ऐसे पुरुष से है जो उनकी हाँ मे हाँ मिलाकर सब कर्तव्यो की ओर से अपना मुँह फेरकर केवल इनके सुख का साधन बना रहे।

अब इनकी दिनचर्या भी जरा सुन लीजिये। सुबह सात-आठ बजे सो कर उठी। महीन-सी आवाज मे पुकारा—"बैरा, चाय लाओ।" पलग पर ही देवी जी के लिए चाय आ गई। उसके पश्चात बाथरुम मे घुसी तो दो घण्टे पश्चात् सजबजकर निकली। इन्हे इस रूप मे देखकर तो कोई यही कहेगा कि स्टेज पर अभिनय करने के लिए कोई अभिनेत्री सजी है। मोटर मँगवाई और अपनी जैसी दो-चार सहेलियो के घर चक्कर लगा कर १२ बजे तक लौटी। आते ही खानसामे को हुकुम हुआ—मेम साहिब के लिए टेबल तैयार करो। पति महाशय ऑफिस मे बैठे है, काम-काज के आदमी घेरे हुए है। परन्तु खाने की टेबल पर मेम साहिब की घण्टी की आवाज सुन कर मजाल है कि वह हाजिर न हो। श्रीमती जी की इच्छा के विरुद्ध करना

फिजूलखर्ची, आरामतलव, फैशनेवल वनाने के लिए कोई भी विद्यालय अपनी गाँठ से पैसा नही खर्च करता, इन सव वातो के लिए उन्हे घर से ही सुविधाएं मिलती हैं। स्कूल मे वे जो शिक्षा प्राप्त करती है, उसको कार्यरूप मे परिणित करने के लिए उत्तम क्षेत्र उनके लिए घर ही है। उदाहरणार्थ उन्हे स्कूल मे यदि गृहशास्त्र, शिशु-पालन, सिलाई आदि की शिक्षा दी जाती है, तो सप्ताह मे कठिनता से एक वार भोजन पकाने का अवसर आता है, दो वार सिलाई का। ४५ मिनट के घण्टे मे अध्यापिकाओ ने उन्हे उस विषय मे थोडा-सा वता दिया, अव यह माताओ का कर्तव्य है कि वह अपनी कन्याओ की रसोई के कार्य मे कुछ मदद ले, उन्हे घर का हिसाव रखना सिखाये। छोटे वहिन-भाइयो के तथा अपने भी कपडे जो उनसे वन सके सिलवाये। छुट्टी के दिन घर की सफाई करने आदि मे उनका सहयोग ले।

माताओ की यह भी चौकसी होनी चाहिए कि हमारी कन्या अपने भाई, भावज, चाची, ताई आदि गुरुजनो से किस प्रकार व्यवहार करती है? उसकी सखी सहेलियो का आचरण कैसा है? वह अपनी पढाई-लिखाई का सदुपयोग करती है या नही। यह वाते ऐसी है, जो कि माताओ के सुधारे ही सुधर सकती है और इनके लिए एकमात्र वही उत्तरदायी है। माताये अपनी भूल और वेपरवाही को कल के दिन शिक्षा अथवा शिक्षालय पर मढे तो यह उनकी सरासर भूल है। परन्तु अफसोस के साथ कहना पडता है कि माताएँ स्वय ही अपनी कन्याओ को घर के कामो से वचाती है। वे अपनी कन्याओ पर अपना रौव या शासन रख ही नही सकती। जिद्द करके, रो-धोकर कन्याये जो चाहे उनसे करवा लेती है। माताये ही अपनी कन्याओ को फिजूलखर्च और फैशन का पाठ पढाती है। जब कन्याये आये दिन अपनी माता को पिता से खर्च के पीछे लडते देखती है तो भला क्या वह यह सब न सीखेगी?

अपने मन को सान्त्वना देने के लिए लोग स्कूलो को ही दोषी ठहराते है, परन्तु मै तो सबसे अधिक गृहशिक्षा को ही इस विषय मे उत्तरदायी ठहराऊँगी। आप दही को काँसे के वर्तन मे रखे और चाँदी के मे भी। चाँदी के वर्तन वाला दही शुद्ध और विकाररहित रहेगा परन्तु काँसे वाला दूषित होकर हरा हो जायगा। अग्रेजी मे एक कहावत है—जिसका अर्थ है कि हमारी आदते ही हमारा स्वभाव वनाती है। कन्याओ की अच्छी वुरी आदते माता के सहवास मे रहकर पडती है।

इस महगाई के जमाने मे इस वात की और भी अधिक जरूरत है कि कन्याएँ गृह-कार्य मे दक्ष हो। ताकि मेहनत की कमाई इस ढग से खर्च करने की योग्यता उनमें हो कि परिवार के खाने-पीने, बच्चो की पढाई और साफ-सुथरा कपडा पहनने की समस्या हल हो जाये। यह तभी सम्भव है कि जब कि अपने हाथ से काम करने मे पढी-लिखी बहनें हीनता का अनुभव नहीं करेगी। रोटी पकाने, परोसने, वर्तन साफ करने के तरीको मे सुधार करें, ताकि काम करते समय उन्हे गन्दगी या असुविधा अनुभव न हो। पर घर का काम नौकरो पर छोड देना गृह-कर्त्तव्य की उपेक्षा करना और मेहनत की कमाई का अपव्यय है।

मैंने देखा है वडे-वडे अफसरो की स्त्रियाँ दिन भर खटिया तोडा करती है। उन्हे अपने घर की चाबियो का भी पता नही होता। आधी रात के समय आँधी-पानी मे जव वे अपने पति और वच्चे के साथ घर पहुँचती है तो वाहर के ताले की चावी को गुच्छे मे ढूंढ निकालना एक समस्या हो जाती है। उतनी देर वर्षा मे भीगते हुए पति और वच्चा गृहिणी की योग्यता पर आश्चर्य करते हुए चुपचाप खडे रहते है। और जव पता चलता है कि असली गुच्छा कमरे के अदर मेज पर ही रह गया और ताला दवा कर वद कर दिया गया था तव तो आप उनकी परेशानी की, कल्पना कर सकते है।

ऐसी पत्नी अपने पति के जीवन मे केवल एक रगी-पुती गुडिया मात्र वनकर रह जाती है। पति की मुसीवत को वह वटा सकेगी, ऐसी आशा करनी ही व्यर्थ है। उल्टा उन्हे असुविधा न हो इसी चिता मे पति महोदय परेशान रहते है।

पूर्ण सहानुभूति है। पर वे यह वात भूल जाते है कि भगवान ने नारी को एक स्वाभाविक आकर्पण और मोहकता प्रदान की है। यदि वचपन मे कन्याओ के व्यक्तित्व का वरावर ठीक से विकास किया जाये, यदि माताएँ कन्या के पालन-पोपण, खान-पान, दिनचर्या आदि मे भूल न करे, यदि वे उनके शील, सकोच और सुरुचि को वनाये रखे तो प्रत्येक कन्या एक विशेप प्रकार का स्वाभाविक आकर्पण लेकर खिले। पर अधिकाश माताएँ इस ओर अपने कर्तव्य की उपेक्षा कर जाती है। आपने देखा होगा कि माली नन्हे पौधे के थाले को सँवारता है, सीचता है, उसे तीव्र गर्मी-सर्दी से ओट मे रखता है तव जाकर वरसो परिश्रम व निगरानी के वाद वह पौवा एक सुन्दर पेड के रूप मे फल और फूलो से सजकर वगीचे की शोभा वढाने योग्य होता है। जव एक निर्मूक पौधे को पूर्ण रूप से खिलाने के लिए इतना परिश्रम करना अनिवार्य है फिर भला एक कन्या के व्यक्तित्व को उभारने मे माता की कितनी जिम्मेदारी होनी चाहिए, यह समझने-सोचने की वात है।

कमी किधर है ?—

मै आते-जाते वस मे कन्याओ को गौर से देखती हूँ। उनके चेहरो का अध्ययन करती हूँ, उनकी वेशभूपा को परखती हूँ। नित्य ही इस प्रकार इन सजीव अधखिली कलियो को परखने, समझने और उनके विकास सवन्धी गलतियो का अध्ययन करने का मुझे मौका प्राय मिलता है। मुझे यह देखकर दुख होता है कि अधिकाश कन्याएँ सच्चे अर्थ मे कली की तरह आकर्पक रूप से नही खिल रही है। कारण जो देखने मे सुन्दर है भी उनका रूप रग भी गलत ढग की वेशभूपा और वनाव-शृङ्गार के कारण फीका पडा प्रतीत होता है। यथा अधिक चटख रग वाले कपडे या विपरीत रग की बेमेल पोशाक ने उनके आकर्षण को दबा रखा है। किसी लडकी के वाल वनाने का ढग गलत होता है, कोई अपने चेहरे के अनुरूप माँग नही निकालने से आकर्षण खो बैठी है, कोई मुँह विचका कर वात करती है, किसी के बैठने-खडे होने का ढग दोपपूर्ण है, कोई हँसते समय अधिक मुँह खोलती है, किसी के हावभाव हास्यस्पद है। किसी कन्या का मुँह तो सुन्दर होता है पर मुटापे के कारण वह वेडौल और आकर्पणहीन प्रतीत होने लगती है। तग पोशाक उनके मुटापे को और भी प्रकट करती है। ऐसा लगता है मानो गोल तकिये पर तग गिलाफ चढा हो। कुछ कन्याएँ जिनका रग उतना गोरा

श्रीमती सिंह के तीन लडकियाँ और दो लडके है। मिस्टर सिंह एक रिटायर्ड सिविल सर्जन है। उनके परिवार मे सभी जन लम्बे और तगडे है। लडको के लिए लम्बा, चौडा व तगडा होना तो ठीक ही है तिस पर दोनो लडके अच्छे कमाऊ है और दोनो अपने लिए सुन्दर पत्नियाँ ढूंढने मे सफल हुए है। पर जब लडकियो के विवाह का सवाल आया तो बाप व भाइयो की पोजीशन अच्छी होने और दहेज अच्छा मिलने की सभावना होने पर भी कोई सुन्दर, कमाऊ नवयुवक उन कन्याओ से विवाह करने को राजी नही हुआ। डील-डौल मे लम्बी होने के बावजूद भी वे मोटी थी। दो-चार लडको से नकारात्मक उत्तर सुनकर बडी कन्या ने तो विवाह का इरादा ही छोड दिया और उसने डाक्टरी पास करके अपना क्लिनिक खोल लिया। बीच वाली लडकी के नयन-नक्श अच्छे थे। सम्भव है विवाह से पहले वह कुछ पतली हो, पर अब तो दो बच्चो की माँ बन कर वह पूरी बेबे लगती है। उसका पति कद मे उसके बराबर, रग का साँवला और सिर से गजा है। ससुर की मेहरबानी से उसी शहर मे केमिस्ट की एक दूकान खोलकर अपनी रोजी कमा रहा है।

पर उनकी तीसरी लडकी का विवाह कही जमता ही नही। वैसे रग में यह लडकी अपनी दोनो बहनो से गोरी है पर मोटाई के कारण वह भद्दी दिखने लगी है। एक बार मेरी सहेली के एक देवर से उसकी बात-चीत चली। देवर आर्मी मे कैप्टन था। देखने मे सजीला नौजवान। कसा हुआ, सुता हुआ बदन, मझोला कद-काठ, गोरा रग घुंघराले बाल। लडके को लडकी के पिता, भाई भावज, आदि से मिलकर बडी प्रसन्नता हुई। उसने सोचा घरबार अच्छा है, लडकी देख ली जाये। एक रेस्टोरेन्ट मे चाय के समय सब इकट्ठे हुए। लडके को देखकर तो लडकी प्रसन्न हो गई, पर लडके ने जब लडकी देखी तो उसकी सारी उमगो पर पानी फिर गया। वैसे हम लोग भी वहाँ

थे। मुझे पहली बार उस लडकी को देखने का मौका मिला था। एक ओर
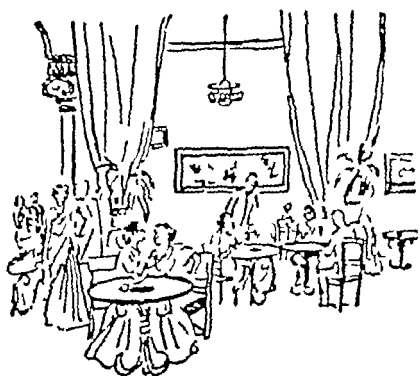
कर सकती है। पर इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि वह स्वय भी चतुर व्यवहार कुशल और सौन्दर्य की रक्षा करना जानती हो। उसे रूप को निखारने, गुणो को विकसित करने, वेशभूषा और ठीक से सजने-सँवरने की जानकारी हो। किस समय, किस कद-काठ और रग पर कैसी वेशभूषा सजेगी, किस समय कितना बनाव-शृङ्गार करना उचित होगा इसकी जानकारी यदि माताओ को नही है तो भला वह अपनी कन्या को क्या सिखायेगी ? जमाना तेजी के साथ बदल रहा है। तद्नुसार ही सामाजिक रीति-रिवाज और रुचि मे भी परिवर्तन आ रहा है, अतएव माताओ को रूढिवादिता छोड कर अपनी कन्याओ मे ऐसे सस्कार, रुचि और आदते पैदा करनी है जो आधुनिक हो, पर साथ ही कल्याणकारी और सुरुचिपूर्ण भी हो। ऐसी बातो की जानकारी के लिए तद्विषयक साहित्य पढे, अनुभवी बहनो की सूझ-बूझ और जानकारी से लाभ उठाये। माँ बन जाना एक बात है पर उस कर्तव्य को निभाने के लिए योग्यता प्राप्त करना दूसरी बात है। हमारे यहाँ अधिकाश गृहिणियो का पढना-लिखना, अध्ययन और कुछ सीखते रहने का शौक विवाह के बाद मानो समाप्त ही हो जाता है। यही कारण है कि वे अपनी कन्याओ को जो चाहिए सिखा नही पाती। जमाने के साथ चलने मे वे स्वय भी पिछडी रहती है। इसका परिणाम यह होता है कि अधिकाश प्रौढ महिलाओ का सामाजिक और दाम्पत्य-जीवन अधूरा रह जाता है। उनकी अज्ञानता, फूहडपन और असुन्दरता परिवार की प्रगति मे बाधक प्रमाणित होती है। गृहस्वामी जब देखता है कि उनकी कन्या अपने स्वाभाविक आकर्षण, सुडौलता और सुघडाई के अभाव मे योग्य वर पाने मे असफल रहती है तो उसे अपनी पत्नी पर कुढन आती है। वह सोचता है यदि मेरी पत्नी समझदार होती तो क्या वह लडकी को आकर्षक और सुघड बनाने मे असफल रहती ? मै नीचे स्वलिखित "नारी का रूप शृङ्गार" पुस्तक से एक उद्धरण देती हूँ, उससे इस विषय मे माताओ के कर्तव्य का स्पष्टीकरण होगा—

कौन से मौके पर कैसी वेश-भूषा धारण करनी, किस हद तक सजना सवरना इसका ज्ञान माताओ को अपनी बच्चियो को अवश्य देना चाहिए। छोटी आयु की कन्याएँ फूल की तरह सजी हुई अच्छी लगती है पर किशोरी आयु की कन्याओ की वेश-भूषा साफ-सुथरी और सादी ही अच्छी लगती है। युवतियो की तरह सजना-सवरना उन्हे शोभा नही देता। उनकी पोशाक

पडती है, और जिनके माँ-बाप के लिए उनका विवाह सम्बन्ध एक समस्या बना हुआ है, उनकी सख्या मे काफी कमी हो सकती है। यह सच है कि पर सुन्दरी तो लाखो मे एक ही होती है, परन्तु सुहावनी जिसे अग्रेजी मे 'प्लेजेंट' कहते हैं अधिकाश कन्याएँ प्रतीत हो सकती है यदि उनकी माताएँ उनके व्यक्तित्व का ठीक से विकास करने मे सफल हो सके।

बालिकाओ के रूप और आकर्षण की रक्षा करने और उसे निखारने के लिये माताओ को आरम्भ से ही चेष्टाशील होना चाहिये। यदि शिशु-बालिका को एक ही करवट अथवा उसे ढीली खटिया पर सुलाया जायेगा तो उसके अगो को बनावट एकसी, सुडौल नही बनी रहेगी। त्वचा, दाँतो और केशो की सार-सँभाल भी छुटपन से करने से ही वे सुन्दर और दोपरहित बने रह सकते है। काया को सुडौल और व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिये कन्याओ का भोजन, दिनचर्या और वेशभूपा, बातचीत, चालढाल सभी निर्दोष होनी बहुत जरूरी है।*

---

* इस विपय में विशेप जानकारी प्राप्त करने के लिये लेखिका की पुस्तक "नारी का रूप-शृङ्गार" अवश्य पढें।

३०. बेचारे ये बच्चे!

इस अध्याय में यह तो सम्भव नही है कि शिशु-पालन पर विस्तारपूर्वक लिखा जा सके। पर ऐसी विषय परिस्थितियो का उल्लेख संक्षेप मे किया

जायगा जिनके प्रस्तुत होने पर बच्चो की पालन-पोषण विषयक समस्याएं जटिल हो जाती है। यदि माता या पिता ऐसी परिस्थितियो मे समझदारी से काम न ले तो बच्चो की बहुत बरबादी होती है। वे असन्तोषग्रस्त बन जाते है। उनका स्वभाविक विकास रुक जाता है। परिस्थितियो से लाचार होकर वे या तो दब्बू बन जाते है अथवा प्रतिक्रियावादी। मनोवैज्ञानिको का कहना है कि ऐसे बच्चे ही बाद मे सामाजिक जीवन की व्यवस्था और शान्ति को नष्ट कर देते है जिससे सामाजिक वातावरण गदला बन जाता है।

समर्थवान और बुद्धिमान है, परन्तु घरेलू मामलो मे उसकी नकेल स्त्री के हाथ मे होती है। स्त्री जिन सगे-सम्बन्धियो की ओर कृपालु होती है, उसी ओर पति का मन भी पसीजा रहता है। अपने छल-कपट तथा प्रपच से वह सगे माँ-बाप बहिन-भाई की ओर से भी पति का मन फेर देती है। घर-घर मिट्टी के चूल्हे है, इस प्रकार के उदाहरण अडौस मे नही तो पडौस मे मिल जायेंगे। इस के लिए पुरुष भी एक हद तक दोषी है। वे अपनी नकेल स्त्रियो के हाथ आँख मीचकर क्यो पकडा देते है ?

ससार मे माता का स्नेह बच्चो के लिए वरदान रूप है। किसी ने ठीक कहा है, 'माता बिन आदर कौन करे ! बादल बिन सागर कौन भरे ?' जिन बच्चो को बचपन मे ही माता के स्नेह से वचित होना पडता है उनकी सी दैन्य दशा और किनकी हो सकती है ? माँ का सूखा हाथ फिरने मात्र मे बच्चा हरा-भरा हो जाता है। कसूर पर माँ चाहे कितनी सजा दे ले, परन्तु उसकी मार की जितनी चोट बच्चे पर पडती है, उससे कुछ अधिक ही वेदना माँ भी अनुभव करती है। बच्चे को मार कर वह स्वय सन्ताप से भर उठती है। मार खाकर भी बच्चा परे नही होता। उसके मन मे दरार नही आती। एक मूक भाषा मे दोनो एक दूसरे के प्रेम की सत्यता को समझते है और स्वीकार करते है। पजाबियो के कथनानुसार 'अपनी अम्मडी लावे खल्लडी, फेर अम्मड़ी दी अम्मडी' अर्थात् अपनी माँ चाहे खाल उतार ले परन्तु फिर भी उसकी ममता मिट नही जाती। सन्तान की वेदना से वह तडप उठती है। माँ सदृश कल्याण कामना करने वाली भला और कौन होगी ! मानव के रोम-रोम में माँ का कल्याण रूप समाया हुआ है। तभी तो दुःख पडने पर उसके मुख से निकल पडता है—'हाय माँ !'

ये बे माँ के—

माँ के मरने के पश्चात् बच्चे की दशा एक कवचहीन सैनिक के सदृश हो जाती है। मातृहीन बालक ससार मे अपने को अकेला तथा निस्सहाय समझने लगता है। उसका तो मानो नीड ही उजड गया, अब किसके गर्म-नर्म सीने के नीचे दबकर वह बेफिक्री से सोयेगा ? अब किस का ममता-भरा हाथ उसके सिर पर फिरेगा ? असफल होने पर कौन उसकी पीठ पर हाथ फेरकर आगे बढने की हिम्मत बँधायेगा ? माता के स्नेह से वचित होकर बच्चे के विकास का सन्तुलन ही बिगड जाता है। पर बहुत कम पिता बच्चे

के इस अभाव को इस तीव्रता के साथ यथार्थ रूप मे समझने का दिल रखते हैं। वच्चे के खाने-पीने, रहने और सोने की व्यवस्था हो जाने पर तथा उसे अपनी सगी-साथियो मे खेलते देख वाप समझता है कि यह तो अपनी माँ
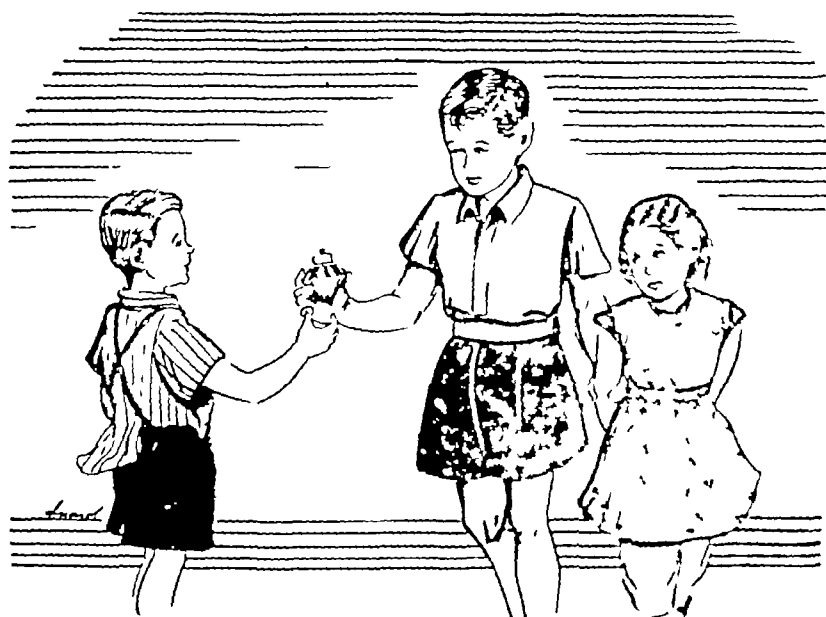
को भूल गया है, और जैसे-जैसे समय गुजरेगा इसका यह घाव विल्कुल मिट जायगा। परन्तु उसका इस प्रकार सोचना गलत है। माँ का अभाव जीवन भर नही मिटता। वचपन मे उसके स्नेहामृत से वचित होकर, वडे होकर भी मनुष्य की आत्मा एक अभाव का अनुभव करती रहती है। वह अपनी स्त्री की सेवा और स्नेह मे भी माँ की ममता को खोजता है, अगर उसकी पत्नी कर्तव्यपरायण तथा प्रेमालु हुई तव तो उसके वचपन के घाव के निशान वहुत कुछ मिट जाते है, अन्यथा यह घाव एक नैष्टिक फोडे के सदृश जीवन भर असन्तोष का मवाद वहाता रहता है।

है कि जब माँ बीमार थी और मुन्ना हल्ला करता था तो माँ खीज कर कहती थी—'क्यो मेरा सिर खा रहा है ? मै तो दर्द के मारे मरी जा रही हूँ, तूने तो मुझे सता दिया, मर जाऊँ तो जान छूटे, तब तुझे पता चलेगा !'

बेचारा बच्चा रात के अँधेरे मे तकिये मे मुँह छिपाकर सुबक-सुबक कर रोता है, वह समझता है शायद मुझ से नाराज होकर ही माँ मुझे छोडकर चली गई है। इसी बीच मे कुछ दिन बाद वह देखता है कि दूसरी माँ आ गई है। पर वह इस माँ को अपनी माता के रूप-रग स्वभाव से बिल्कुल भिन्न पाता है। कुछ साल बाद वह देखता है कि माँ के सिखाये मे आ-कर उसका प्यारा पिता भी उसके प्रति दिन-पर-दिन कठोर होता जाता है। मुन्नी (सौतेली बहन) को पिता-जी दुलारते है पर उसे दुतकारते है। बेचारा मुन्ना स्वय को असहाय पाकर जीवन के प्रति उदास-सा हो जाता है। प्रेम, प्रोत्साहन, ममता तथा मित्रता
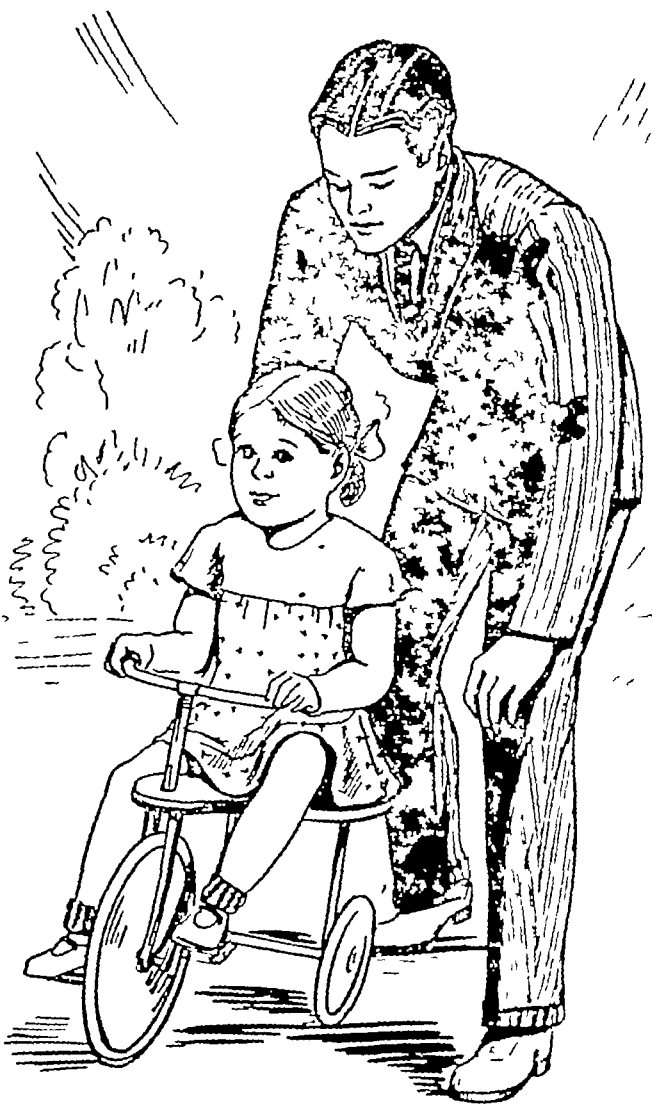
के अभाव मे उसकी शक्तियाँ मद पड जाती है। अबतक जो मुन्ना होशियार हँसमुख तथा तेज और स्वस्थ समझा जाता था, वही भोदू मुन्न, चिड-चिडा और रोगी दीखने लगता है। घर के प्रतिकूल वातावरण ने उसके जीवन वृक्ष की हरियाली को नष्ट कर दिया है । उसका हृदय फोडे के सदृश दुखता रहता है, पहले जिन बातो की वह परवाह भी नही करता था अब उन्ही बातो मे उसे व्यथा होती है ।

वह स्कूल से अपने सहपाठी चुन्नू के सग आता है। मार्ग म चुन्नू का घर पडता है उसकी माता दरवाजे पर खडी चुन्नू की राह देखती रहती है। चुन्नू लपक कर माँ की ओर बढ जाता है ।

सरल प्रतीत होता है, मानो एक पुरानी जूती के टूट जाने पर दूसरी बढ़िया जूती कुछ अधिक पैसे देकर खरीदना। और इस अमानुषिक व्यवहार को वह एक ही दलील देकर पुष्ट करना चाहते है—'क्या करता? ब्याह करना ही पडा, आखिर बच्चो को कौन सम्भालता?' ऐसे भी उदाहरण आपको मिल जायँगे जहाँ तेरहवी के बाद ही विवाह की चर्चा शुरु हो जाती है। मनुष्य को पालतू कुत्ते के मरने का अरमान होता है पर जिस स्त्री के साथ कुछ वर्ष गुजरे, जिसने अपने तन, मन और पैतृक धन, सभी को पति पर न्यौछावर कर दिया, भला उसके लिए क्या पुरुष के हृदय मे इतनी भी इज्जत नही कि उसके प्रेम का स्वाँग कुछ दिन तो रच सकता? तभी तो स्त्रियाँ कहती है, 'अरे मर्द की जात का एतबार ही क्या, आज मेरी आँख बन्द हुई और कल दूसरी माँ इस घर मे आजायेगी और उसके आते ही बाप तीसरा बन जायेगा। ये चाची-ताई ही कह उठेगी कि ब्याह करो, लडकियो का क्या घाटा है, अभी उम्र ही क्या है? अगर बडी बहिने और माँ-बाप हुए तब तो फिक्र करने की कोई बात ही नही, वे ही सब प्रबन्ध कर देंगे। क्योकि उन्हे चिन्ता है कि कही हमारा बेटा या भाई कही बहक न जाय, किसी को घर मे न बिठा ले, बिरादरी मे नाक कटेगी। लडके-लडकियाँ ब्याहने से रह जायँगे। पुरुष कितना दुर्बल चरित्र और वासना का दास है!'

बस हिन्दू-समाज मे किसी की बीबी मर जाय, तो काहे की चिन्ता। सलामत रहे रिश्तेदार तथा गरीब लडकियो के माँ-बाप, अपने पास रुपया-पैसा हो तो लडकी वाले घेरे रहते है। उन्हे तो पूरा विश्वास है कि हमारी लडकी तो लाडली बनकर रहेगी। ऐश करेगी। पहली के बच्चो का अव्वल तो उन्हे पता नही दिया जाता है, अगर एक-आधे के होने का पता भी चला तो उसे कुछ दिनो के लिए नानी, दादी के जिम्मे कर दिया जाता है। अब भला सोचिए माँ से वंचित होकर बच्चा, बाप और अपने घर से भी वंचित कर दिया जाता है। बाप यह नही सोचता कि माँ के मरने के बाद उसका यह फर्ज है कि अपने दुलार, प्यार तथा सहानुभूति और देख-भाल से मातृ-प्रेम के अभाव की भी पूर्ति करे। बच्चे का विश्वास और सुरक्षा की भावना बनाये रखे। उल्टा अपने दूसरे विवाह मे उसे बाधा रूप समझ, वह उसकी अपेक्षा करने लगता है। आज अनेको घरो मे विमाता के अत्याचार मे बाप का सहयोग अथवा अनुमोदन या मचलापन देखकर यह स्वीकार करना पडता है कि पुरुष के

हृदय मे बच्चो के प्रति ममता नाम की कोई सरसता ही नही है, वह तो स्त्री

को प्रसन्न करने के लिए, उसका अनुराग प्राप्त करने के लिए ही बच्चो को दुलारता है। आगे जाकर सन्तान को सुयोग्य देख, कुल का नाम उजागर करने का हेतु समझ, वह चाहे उनकी कद्र करने लगे परन्तु नालायक औलाद को माँ के अभाव मे बाप घर से प्राय धक्का ही दे देता है।

एक तो पत्नी व्रत पुरुष बहुत कम मिलेंगे। अतएव यह सुझाव रखना कि स्त्री के मरने पर विवाह ही न किया जाय व्यर्थ ही है। परन्तु निम्नलिखित स्थितियो मे विवाह करना मूर्खता है—

यह गलती न करें—

विवाह के जजाल मे कभी भूलकर भी न पडे। अच्छा हो कि गृहस्थी को देख-भाल रिश्ते की कोई वृद्ध स्त्री, विधवा वहिन-भौजाई, चाची-ताई अथवा कोई और गरीव विश्वासी स्त्री के सुपर्द करके, वच्चो को स्कूलो मे भर्ती करवा दे। वडी लडकी छोटे वच्चो को सँभाल ले। ऐसे अवसर पर घर का सवसे छोटा वच्चा, नानी, दादी, वुआ या मौसी के जिम्मे भी किया जा सकता है। वच्चो का प्रवन्ध करने मे आरम्भ मे चाहे कुछ असुविधा हो, परन्तु दूसरा विवाह करके नई गृहस्थी की जिम्मेदारियो की तुलना मे वह मुसीवत वहुत कम होगी।

३ जिस पुरुप का अवेड उम्र मे ही स्वास्थ्य ठीक न हो, उसे विवाह करने का कोई अधिकार नही है।

४ जो पुरुप अपने धधे मे इतना अधिक उलझा रहे कि उसे पत्नी की दिलजोई के लिए पर्याप्त समय का अभाव हो, उसे भी दूसरा विवाह नही करना चाहिए। पहली पत्नी तो वर्पो से साथ रहकर, आदत और स्थिति मे परिचित होकर, तद्नुसार व्यवहार करने की अभ्यस्त हो जाती है, परन्तु दूसरी पत्नी उपेक्षा के लिए तैयार होकर नही आती। प्रौढावस्था मे विवाह करने पर पुरुष को अपनी जवानी की कमी अधिक समय तथा धन देकर तथा स्त्री के नाज़ोनखरे उठाकर और दिखावटी दिलजोई तक करके पूरी करनी पडती है। ऐसी दशा मे जिनके पास धन अथवा समय का अभाव होगा, वे दूसरी पत्नी की वफादारी को अधिक दिनो तक कायम रख सकेंगे, इस विपय मे सन्देह ही है।

५ जिस व्यक्ति के तीन-चार वच्चे हो, तथा सम्मिलित पारिवारिक जीवन हो, उन्हे भी विवाह करने की आवश्यकता नही। उन्हे जीवन मे सूना-पन या गृहस्थी की सँभाल की समस्या भी परेशान नही करती।

६ जिसने अपना जीवन समाज तथा देश की सेवा अथवा किसी विशेष ध्येय की प्राप्ति मे लगाया हो, उसे भी दुबारा गृहस्थी के जजाल मे फँसने की आवश्यकता नही। वे अपने जीवन का एकाकीपन, मित्रमडली, कलव तथा अन्य मनोरजको द्वारा दूर कर सकते है। सच्चरित्र आदर्शवादी पुरुषो को वहिन, माँ, भाभी तथा सखी के रूप मे भी महिलाओ की मित्रता और प्रेम प्राप्य है। नारी के इस प्रकार के स्वस्थ प्रेम और मित्रता की होड वासनामय आसक्ति नही कर सकती। यह आत्मा को आनन्दविभोर करने वाला होती है और यह केवल शरीर तक ही सीमित है।

विधुर ध्यान रखे—

जिस पुरुष के आगे उपरोक्त कोई भी असुविधा न हो और वह विवाह करने की प्रबल आवश्यकता अनुभव करता हो, उसे भी विवाह से पहले निम्न-लिखित बातो का ध्यान अवश्य रखना चाहिए—

१ विवाह मे जल्दबाजी कभी न करे। प्राय देखने मे आता है कि जिन पुरुषो की पहली पत्नी अनपढ, कुरूप अथवा फूहड या बीमार होती है, वे महीने दो महीने के अन्दर ही दूसरा विवाह कर लेते है। अपनी पूर्व पत्नी के प्रति उनकी यह उपेक्षा और दूसरे विवाह का चाव इतना स्पष्ट होता है कि समाज पुरुषो की बेवफाई की चर्चा किये बिना नही रहता।

२ एक विधुर को विधवा से ही विवाह करना शोभा देता है। क्वारी कन्या से विवाह करने का उसे अधिकार नही होना चाहिए। विवाह की इच्छुक कई विधवाएँ, उपयुक्त पति के अभाव मे पुनर्विवाह नही कर पाती। अगर विवाह के इच्छुक विधुर उस ओर ध्यान दे तो दोनो की समस्या सर-लता से हल हो सकती है।

३ दूसरी पत्नी की आयु मे अधिक-से-अधिक ७ या ८ वर्ष का अन्तर हो, साथ ही स्वास्थ्य और रूप मे भी अधिक अन्तर न हो, अन्यथा घर मे बुढापे के व्याह का तमाशा बन जायेगा।

४ अच्छा हो कि अपने परिचितो या रिश्तेदारो मे से ही इस प्रकार की कोई स्त्री मिल जाय, जो कि बच्चो के प्रति सहज ही प्रेमालु हो। साथ ही विमाता के कर्तव्य से भली प्रकार परिचित हो। उसमे सहनशक्ति तथा उदारता भी हो। चचल और चिडचिडे स्वभाव की आदर्शहीना ईर्ष्यालू स्त्री विमाता बनकर बहुत सताती है।

अवस्था मे दूसरी माँ को ही सब बदनामी आती है। परन्तु अधिकांश अपराध पिता का ही होता है । अगर बाप समझदार है तो वह दूसरी पत्नी तथा बच्चो

से एक-दूसरे के प्रति केवल सद्व्यवहार की आशा करेगा, अगर बच्चे बड़े है तो मित्रतापूर्ण शिष्ट व्यवहार बना रहे, यही वाछनीय है । माँ और बच्चे मे प्रेम का झूठा अभिनय करवाकर गृह-स्वामी स्वय को ठगाता है । विमाता जहाँ अति उदारचेता होती है, वह अपने मन के भेदभाव को दबाकर परिजनो को प्रेम डोरी में बाँध रखने की कोशिश करती है, अगर सौतेले बच्चे समझदार और सुयोग्य हुए तो वे विमाता के इस सद्व्यवहार से प्रभावित होकर परिवार के अवश्य ही सच्चे मित्र और हितैषी बने रहेगे ।

६ अपनी दूसरी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए पहली पत्नी की बुराई या मजाक कभी भूलकर भी न करे, और न ही अपने बच्चो की बुराई करने का विमाता को प्रोत्साहन दे । गृहपति स्वय ही निरपेक्ष होकर विमाता और बच्चो के व्यवहार को परखे तथा दोनो को अलग-अलग समझाये ।

७ अगर दूसरी पत्नी से भी एक-दो बच्चे हो जायँ तो इस बात की यथाशक्ति चेष्टा की जाय कि सौतले बहिन-भाइयो मे परस्पर स्नेह तथा मान-सम्मान बना रहे । अगर बहिन-भाई एक होगे तो आगे जाकर विमाता घर की एकता नष्ट नही कर सकती । प्राय. देखने मे आता है कि कई मूर्ख

स्त्रियाँ अपने बच्चों के मन में पहले भाई-बहिनों के प्रति इतना मल भर देती हैं कि पिता को भविष्य अन्धकारमय दीखने लगता है। इस विष-वमन के साथ ही साथ वे अपने बच्चों के चरित्र-विकास का इतना अहित करती हैं कि वे भी छली, प्रपंची, चुगलखोर, झूठे तथा फरेबी बन जाते हैं। घर में दलबन्दी जोर पकड़ जाती है। जिसमें विमाता के पीहर वाले और भी मजबूती पैदा करते रहते हैं। गृहस्वामी अपने पहले बच्चों से तो बुरा बन ही जाता है दूसरे बच्चे तथा पत्नी भी उसे केवल धन कमाने की मशीन मात्र समझ प्रेम का अभिनय रचते हैं। इस दलदल में फँसा हुआ पुरुष जीवन की किचकिच से ऊब जाता है। जैसे-जैसे उसकी उम्र बीतती है वह अपने को अकेला पाता है। पत्नी उसकी सेवा करती है, प्रेम दिखाती है किस लिए? क्योंकि उससे उसे धन प्राप्ति होती है। जायदाद और धन हथियाने के लिए वह पहली पत्नी की

विडम्बना से पुरुष तभी मुकाविला कर सकता है जब कि पहली पत्नी की सन्तान का विश्वास और सहयोग वह अपने प्रति बनाये रखे।

विवाह के बाद पत्नी और सन्तान दोनो के प्रति पुरुष सच्चाई और समदृष्टिकोण रखे। युवती पत्नी के रूप और यौवन पर मुग्ध होकर न तो अपनी नकेल उसके हाथ मे पकडा दे और न ही उसके व्यवहार को सन्देह की दृष्टि से ही देखे। पत्नी और बच्चो को एक-दूसरे के प्रति आकृष्ट

होने दे। इस प्रकार की प्रेरणा दे कि वे एक दूसरे को सहज रूप मे स्वीकार कर ले। आपका वार-वार उनके बीच दखल देना दोनो के मन मे एक-दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष पैदा कर देगा। आप उन दोनो को उसी प्रकार मन-

झाये जैसा कि पहली माँ के सामने समझाते थे ।

पहली पत्नी की सन्तान के प्रति अगर गृहस्वामी कर्तव्यनिष्ठ रहेगा तो समाज में उसको यश तो मिलेगा ही, साथ-ही-साथ उसकी न्यायपरायणता तथा सत्यनिष्ठा की छाप उसकी दूसरी पत्नी पर भी पड़ेगी और वह घर में फूट नही डाल सकेगी। मातृहीन बच्चे अपने पिता के इस त्याग और अनुग्रह से प्रभावित होकर स्वयं दब जाएँगे, और अपने पिता के जीवन को सुखी बनाने के लिए सर्वदा सहयोग देंगे। मुसीबत तो तब असहनीय है जब मनुष्य अपनों को भी परायों सदृश व्यवहार करते देखता है।

इस विषय मे एक अनुभवी भाई का कहना है कि—

'दूसरी माँ वास्तव मे बुरी नही होती बल्कि पति, घर वालों एवं मौहल्ले वालों का व्यवहार उसे बुरा बना देता है। बात-बात में सौतेली माँ का ताना देना अथवा लम्बी साँस खींचकर पड़ोस वालों का यह कहना कि 'राम राम, इसकी माँ यदि जिन्दा होती तो बेचारे की यह दशा क्यों होती!' उस इस बात को सोचने पर मजबूर कर देता है कि वह सौतेली माँ है, और यह दाग उसके माथे पर से कभी नहीं मिटता। [illegible] शत्रु बना देते है। वह सोचने लगती है कि यदि [illegible] तो क्यों उसे ताने सुनने को मिलते?

विडम्बना से पुरुष तभी मुकाबिला कर सकता है जब कि पत्नी तथा सन्तान का विश्वास और सहयोग वह अपने पति बनाये रखे।

विवाह के बाद पत्नी और सन्तान दोनो के पति पुरुष समान समदृष्टिकोण रखे। युवती पत्नी के रूप और यौवन पर मुग्ध न तो अपनी नकेल उसके हाथ मे पकडा दे और न ही उसके सदा सन्देह की दृष्टि से ही देखे। पत्नी और बच्चो को एक-दूसरे के प्रति

होने दें। इस प्रकार की प्रेरणा दे कि वे एक दूसरे को सहा कर ले। आपका बार-बार उनके बीच दखल देना दोनो मे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष पैदा कर देगा। आप उन दोनो को

आप कभी भी उनके मध्यस्थ बनने की कोशिश मत कीजिए। यदि बनना ही पडे तो पक्षपातरहित हो कर व्यवहार कीजिए, ठीक उसी प्रकार जैसे आप उन बच्चो की पहली माँ के सामने करते थे।'

इसमे कोई सन्देह नही है कि यदि पिता अपनी पूर्व पत्नी के बच्चो का हित व सम्मान की रक्षा करने मे सफल हो सके, तो विमाता के प्रति बच्चो की सद्भावनाएँ बनी रह सकती है और वृद्धावस्था मे ये ही बडे बच्चे अपने छोटे भाई-बहिनो के अभिभावक और पथ-प्रदर्शक सहर्ष बने रहेगे तथा पिता के स्वर्गवास होने पर अपनी माता की मदद करने को तत्पर रहेगे। जो विमाताएँ अपने बच्चो को सौतेले बहन-भाईयो के प्रति द्वेष रखना सिखाती है वह अपने परिवार का बहुत अहित करती है। एक सच्ची कहानी आपको सक्षेप मे सुनाती हूँ—

हमारे पडौस मे एक जज साहब रहते थे। उनके एक लडका और दो लडकी पहली पत्नी से थी और दूसरी पत्नी से दो लडके और एक लडकी थी। बडे बच्चे तो अच्छे पढ-लिख गये। वे यह भली प्रकार समझ गए थे कि अगर भविष्य अच्छा बनाना है तो पढ-लिखकर योग्य बने। पर विमाता ने अपने बच्चो को अधिक लाड-दुलार मे ऐसा बिगाडा कि उनका पढने म मन ही नही लगा। उनकी बुराइयो को वह झूठ बोलकर छिपाती रही। झूठी प्रशसा और ईर्ष्या ने उसके बच्चो को आलसी, दम्भी और फिजूलखर्ची बना दिया। जब उसके दोनो लडके बडे हुए और उन्हे यह पता चला कि इन्कम टैक्स आदि से बचने के लिए पिता ने पचास-पचास हजार रुपये तथा एक-एक कोठी हम दोनो भाईयो के नाम कर दी है और शेप सम्पत्ति सब हमारी माँ के ही नाम है, तो उन्होने पढना छोड दिया। विमाता ने पहली के बच्चो को सम्पत्ति मे से कुछ भी नही देने दिया। उसका यह कहना था कि 'बडा लडका तो पढ-लिखकर कमा रहा है—लडकियो का विवाह हो गया, अब इन्हे क्यो कुछ दिया जाये?' इस प्रकार वह अपने बडे बच्चो की सद्भावना भी खो बैठी।

कुछ साल बाद जब उसके अपने दोनो लडको का विवाह हो गया तो उनकी बहुओ ने सास का सारा जेवर ही दबा लिया। इसमे सास बहुओ म परस्पर मनोमालिन्य बढ गया। बहुओ ने अपने-अपने पति के कान भरने शुरू किये। अब लडके धन-सम्पत्ति के मद मे माँ-बाप से लडने को उतारू हो गये।

वे दोनो हाथो से पैसा लुटाने लगे । बाप अपनी मेहनत की कमाई को इस प्रकार लुटते देख, कुढ़-कुढ़ कर बीमार पड़ गया । बेटे और मा मे मुकदमेबाजी छिड़ गई । इससे परिवार की जो बदनामी हुई सो अलग और धन की बरबादी ऐसी हुई कि किसी के पास कुछ भी नहीं रहा । मकान बिक गये । छोटी बहन का व्याह की जिम्मेदारी सिर पर थी । ऐसे समय मे पहली पत्नी के बच्चे
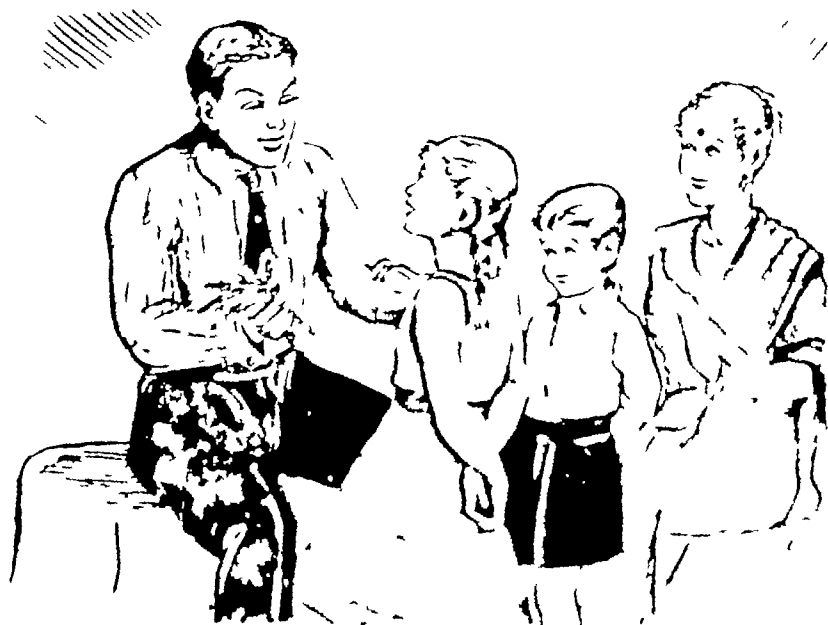
बुढापा बिगड जाता है, पारिवारिक शान्ति नष्ट हो जाती है और कलप-कलप कर उनके दिन गुजरते है। वह यह भूल जाते है कि ये काँटे तो उनके गुरु के बोये हुए है। ममता-मोह से अन्धे होकर वह कर्तव्य भूल बैठे थे, वे माँ के बच्चो को उन्होने जाने-अनजाने मे सताया था, उसका पश्चाताप तो करना ही पडेगा।

विषम परिस्थितियो में—

बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए न केवल माँ का बल्कि पिता का भी सहयोग वाछनीय है, घर और वाहर का वातावरण यदि अनुकूल हो और बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो, तो उसका विकास स्वाभाविक रूप से होता है। पर कभी-कभी ऐसी विपम परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो जाती है कि बच्चे को कई सुविधाओ से वचित होना पडता है। धनाभाव के कारण यदि माँ को भी जीविका उपार्जन के लिए वाहर जाना पडे, या माता-पिता दोनो मे से किसी एक का देहान्त हो जाए, अथवा पिता अधिक समय के लिए परदेश चला जाए, या माता-पिता का सम्बन्ध-विच्छेद हो जाए, तो ऐसी सूरत मे बच्चे के पालन-पोपण विपयक कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती है। इनके अतिरिक्त अगहीन या दत्तक सन्तान की भी अपनी कुछ समस्याएँ होती है। ऐसी विपम परिस्थितियो मे बच्चे के अभिभावको को विशेप साव-धानी बरतने की जरूरत है। अगर इसमे चूक हो जाए तो बच्चे का विकास अधूरा रह जाता है या वह समस्यापर्ण वन कर परिवार और समाज दोनो के सिर दर्द का कारण वन जाता है। विपम परिस्थितियो मे माँ पर विशेप जिम्मे-दारी आ पडती है, देखने मे आता है कि माँ के सहयोग से कभी-कभी कठिन परिस्थितियाँ भी वच्चे के चरित्र को निखारने मे सफल होती है।

यदि माँ नौकरी करती हो—

अगर आर्थिक कारणो से माँ को नौकरी करनी पडी हो, तो कम-से-कम जब तक वच्चा छ महीने का न हो जाए छुट्टी लेनी उचित है, इसी बीच किसी पडौसिन अथवा आया से वच्चे को धीरे-धीरे हिला देना ठीक होगा। वच्चे की दिनचर्या ऐसी वना दी जाए कि जब माँ काम पर जाए उससे पहले वच्चे का नहलाना-धुलाना और एक वार दूध पिलाना हो जाए, ताकि माँ की अनुपस्थिति मे वह दो-तीन घटे आराम से सोया रहे। वच्चे को रोने-चिल्लाते या वीमार छोड कर जाने से न तो माँ का काम मे मन लगेगा और न ही बच्चे

को चैन पड़ेगा। अगर बच्चे के कल्याण के लिए थोड़े से धन की हानि भी उठानी पड़े, तो अफसोस की बात नहीं है। इसलिए जो माताएँ नौकरी करने की इच्छा रखती हैं, उन्हें बच्चे की सुविधा का पहले ध्यान रखना चाहिए। आर्थिक अभाव को वे गृहोद्योग अथवा पार्ट टाइम कार्य द्वारा भी पूरा कर सकती हैं।

अगर आया या नर्स रखने की गुंजाइश है तो ऐसी स्त्री रखी जाए जो बच्चे के प्रति प्रेमालु हो। तभी वह अपना कर्त्तव्य उसके प्रति ठीक से निभा सकती है। तुनकमिजाज, असहनशील स्त्री चाहे वह बाल मनोविज्ञान की कितनी भी बातें जानती हो, बच्चे को कभी भी ठीक से नहीं सँभाल सकती। ऐसी स्त्री से बच्चा भी घुल-मिल नहीं सकता। बच्चों को पालने के लिए सहज बुद्धि, स्नेह, समझदारी और बाल मनोविज्ञान—इन चारों बातों की आवश्यकता है।

अगर माँ शिक्षा अथवा पालन-पोषण विषयक कुछ आवश्यक सुधार करे तो उससे भी पिता को परिचित रखा जाए। कही ऐसा न हो कि बाप जब लौट कर आए तो माँ की प्रणाली को रद्द करके अकस्मात् परिवर्तन करने का तकाजा करे। इस प्रकार के अकस्मात् परिवर्तन से बच्चे पर अच्छा प्रभाव नही पडेगा और वह पिता से कतराने लगेगा।

अगर किसी बच्चे का पिता मर गया है तो माता को चाहिए कि उस पर अपने जीवन के सूनेपन की छाप न पडने दे। पिता का अभाव बाबा, नाना, चाचा, मामा आदि के प्रेम तथा सहयोग से पूरा हो सके, इसकी चेष्टा की जाए। 'हाय, हमारा तो बाप नही! हमे कौन पूछने वाला है!'—यह विचार अगर बच्चे के हृदय मे घर कर जाता है तो उसके स्वस्थ विकास म रुकावट पैदा हो जाती है। मुसीबतो से बच्चे को लडना सिखाया जाए। परन्तु पिता के अभाव के कारण उस के हृदय मे हीनता की भावना नही आनी चाहिए। अगर बच्चा कभी ऐसे उद्गार प्रकट भी करे, तो माता को चाहिए कि उसे साहस बँधाए और कहे कि 'घबराने की क्या बात है? मैं हूँ, तेरे चाचा और मामा भी तुझे सहारा देगे। ससार मे अनेक व्यक्ति अपने प्रयत्नो से ही महान हो गए हैं।'

आज से पन्द्रह-बीस साल पहले यह सवाल ही नही उठता था कि मा बाप के अलग होने पर बच्चो का पालन-पोषण किस प्रकार हो। परन्तु आज सामाजिक रीति-रिवाजो मे परिवर्तन होने तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और अधिकारो को अधिक महत्त्व मिलने पर यह मान लिया गया है कि रोज-रोज की किटकिट से सम्बन्ध-विच्छेद करके सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना अधिक श्रेष्ठ है। सम्बन्ध-विच्छेद का अधिकार समाज के लिए कल्याणकर है या नहीं, यह विचार करना हमारा विषय नही है, परन्तु बच्चो के विकास की दृष्टि से रोजमर्रा की किट-किट से अलग घर करके रहना अधिक बुरा नही है। ऐसी स्थिति मे छोटे बच्चो का माँ के पास ही रहना उचित है और बडे बच्चे बोर्डिंग हाऊस मे पढने भेजे जा सकते है।

परस्पर मनोमालिन्य होने पर भी माता-पिता को चाहिए कि एक-दूसरे के प्रति बच्चो को न भडकाएँ। बच्चो के लिए इतनी जानकारी ही काफी है कि जिस प्रकार लडाई झगडा होने पर उनकी अपने दोस्तो से कुट्टी हो जाती है, उसी प्रकार माता-पिता के परस्पर मनभेद हो जाने से वे अलग

हो गए हैं। परन्तु अलग होने पर भी वे बच्चों के माँ और बाप हैं। अपने माँ-बाप के प्रति उन का व्यवहार और स्नेह वैसा ही रहना चाहिए जैसा कि पहले था, वे जब चाहें अपने पिता से जाकर मिल सकते हैं। अलग हो जाने पर भी माता-पिता को बच्चों के कान भर कर उनको अपनी-अपनी ओर करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार उनके हृदय में दोनों के प्रति सम्मान नहीं रहेगा और वे प्रतिक्रियावादी हो जाएँगे। बड़े होकर बच्चे स्वयं नहीं निर्णय कर लेते हैं कि माँ-बाप में से कौन अधिक दोषी था ?

अंगहीन बच्चे—

माता-पिता दोनो के लिए एक-दूसरे को अपनाना सरल हो जाता है। जब बच्चा कुछ बडा हो जाए, तो उससे यह बात विशेष रूप मे गुप्त रखने की आवश्यकता नही है कि वह उनकी गोद ली गई सन्तान है। आखिरकार इधर-उधर से सुन कर उसे पता चल ही जाता है। अगर वह इसके बारे मे पूछे, तो यह कह कर उसका समाधान करे—'हाँ, बेटा, मुझे एक सुन्दर सा प्यारा सा बच्चा चाहिए था। मै बहुत दिनो से उसकी खोज मे थी। बस, जब मैंने तुम्हे देखा तो मेरा मन खुश हो गया और मै तुम्हे ले आई।' यह सुन कर बच्चे को भी आनन्द और सन्तोष होगा कि मै अपनी धर्म मा का चहेता और मन पसन्द बच्चा हूँ।

इस विषय मे एक घटना मुझे याद है कि एक गोद लिए हुए बच्चे को एक दूसरे बच्चे ने चिढा कर कहा—"अरे श्याम, तू अपने इन माँ-बाप का बेटा नही है, इन्होने तो तुझे गोद लिया है।" बुद्धिमान श्याम यह सुन कर बोला—"हाँ मुझे तो मेरे माता-पिता ने अपनी खुशी से स्वीकार किया है। मै तो उनका मन पसन्द बेटा हूँ। पर तुम तो अपने माता-पिता पर जबरदस्ती लाद दिये गए हो। तभी तो तुम से तग आ कर तुम्हारी माँ रोज चिल्लाती रहती है—दूर हट, कमबख्त !"

यह विज्ञान का युग है। लोगो के दृष्टिकोण बदल रहे है, समाज अधिक सहनशील हो रहा है, बच्चो के अधिकार और सम्मान को महत्त्व देने की आवश्यकता अनेक माता-पिता और गुरु महसूस करने लगे है। उनकी समस्याओ को सहजबुद्धि और विज्ञान का सहारा लेकर धैर्य के साथ सुलझाने की चेष्टा की जा रही है। जमाना करवट बदल रहा है, और बहुत जल्दी ही ऐसा युग आने वाला है जब बच्चो की प्रधानता रहेगी। देश, समाज और घरो मे जो कुछ भी कार्य किया जाएगा बच्चो की सुविधा का ध्यान रख कर किया जाएगा। फलस्वरूप मनुष्य मात्र की अनेक शारीरिक और मानसिक समस्याएँ बचपन मे ही सुलझ जाएँगी और आगे जाकर उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन अधिक सुलझा हुआ तथा आनन्दप्रद होगा—इसमे कोई सन्देह नही।

बच्चो के प्रति उत्तरदायित्व—

हमारे देश मे अधिकाँश घरो मे बच्चो के पालन-पोषण का स्तर बहुत निम्न कोटि का है। इसके लिए परिवार की आर्थिक कठिनाइयाँ ज़ाती

दोषी नहीं है, जितनी कि बच्चों के प्रति माता-पिता की उपेक्षा, उनके प्रति अपने कर्तव्य की अज्ञानता तथा बाल मनोविज्ञान में अनभिज्ञता। बच्चे का

एक खिलौना मात्र है। जिससे वे अपने ढग से खेलते हैं। अधिकाश माता शारीरिक और मानसिक रूप से इस गौरवशील भार को सभालने मे असमर्थ और अयोग्य होती हैं कि वे माँ वन जाती है। ऐसी स्थिति मे शिशु-पालन का कार्य एक आनन्द का हेतु न होकर गले पडा ढोल वन जाता है। फलस्वरूप वच्चे की शारीरिक और मानसिक शक्तियो का विकास सुचारु रूप से नही हो पाता। पौधा पनपने से पहले ही अपने थाले मे ही मुरझा जाता है या फिर उसकी शक्तियाँ बहुमुखी होकर विकसित नही हो पाती। उदाहरणार्थ सेठ-महाजनो के वच्चो अथवा सोसाइटी की तितली कहलाने वालियो के 'डार्लिंग वेबी' को देखिये। एक ओर जहाँ सेठ-महाजनो के वच्चे केवल सहज वुद्धि और परम्परागत रीति-रिवाजो के अनुसार पाले गये हैं तथा माताओ के आलस और मोह वश वे हर तरह से एक समस्या वने हुए है, दूसरी ओर इससे विपरीत तितली माताओ के वच्चे आया और नौकरो की देखभाल मे अथवा माता के अत्यधिक सावधानी के कारण, स्वाभाविक सुविधाओ से वचित, जन्म ही से डाक्टरो के मरीज वने हुए है। वच्चो के लिए ये दोनो परिस्थितियाँ हानिकारक और अप्राकृतिक है।

बच्चे के व्यक्तित्व को समझें—

पशुओ और पक्षियो के वच्चो का पालन-पोपण मनुष्य के वच्चो से अधिक सन्तोषजनक ढग से होता है। यही कारण है कि उनके वच्चो मे अपनी जाति के स्वाभाविक गुण और सस्कार प्राकृत रूप मे चले आ रहे है। परन्तु मनुष्य का वच्चा अपने माता-पिता के आडम्वर, आलस्य, स्वार्थ तथा अज्ञान का शिकार बन जाता है। वहुत कम माता-पिता वच्चे की शक्ति, रुचि और योग्यता का अध्ययन करके उसके अनुरूप प्रेरणा देने और वातावरण पैदा करने की चेष्टा करते हैं। अधिकाश माता-पिता तो वच्चे को अपनी सुविधा और रुचि तथा जरूरत के अनुसार ही ढालने का प्रयत्न करते हैं, यही कारण है कि वच्चा प्रतिक्रियावादी वन जाता है। माता-पिता को यह वात भूल नही जानी चाहिए कि जिस प्रकार क्यारी का प्रत्येक पौधा विकास सम्बन्धी अपनी विशेपता रखता है, उसी प्रकार प्रत्येक वच्चा अपनी शारी-रिक और मानसिक शक्ति मे एक-दूसरे से भिन्न हो सकता है। यही कारण है कि कोई विशेप वस्तु या तरीका किसी वच्चे को माफिक वैठ जाता है और किसी को नही। कोई वच्चा जल्द दाँत निकाल लेता है, छ महीने की आयु

करती है। मातृ-विज्ञान या शिशु-मनोविज्ञान का उन्हे कोई शिक्षा ही नही मिलती है। एक दो बच्चो को खोकर, अपना स्वास्थ्य बिगाड कर न जाने कई, वह दो-चार बच्चो की माँ बन पाती है। और तब तक अपने कटु अनुभ तथा बच्चे की समस्याओ की इतनी आदी हो जाती है कि उसे सुलझाने की चेष्टा भी नही करती। इसी प्रकार पुरुष भी बाप बनने के बाद परेशान हो जाता है। बच्चे के कारण माँ को अस्वस्थ तथा चिन्तित पाकर उसे बच्चे का जन्म वैवाहिक जीवन की खिलखिल खेला मे व्यवधान डालने वाला लगता है। उसकी बीमारियाँ, समय बे समय रोना, अपनी माँ पर अधिकार जमाने की चेष्टा बाप को बिल्कुल नही भाती। वह बच्चे पर झुझलाता है, उो अपनी सुविधानुसार ढालने की कोशिश करता है इसमे एक प्रकार की कटुता उत्पन्न होती।

अधिकाश घरो मे बच्चो की अनसुलझाई हुई समस्याएँ, पारिवारिक सुख-शान्ति को नष्ट कर देती है। माँ-बाप मे परस्पर गलतफहमी पैदा हो जाती है। वे एक-दूसरे को दोष देकर खुद बरी होना चाहते है। अधिकाश बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ ही जन्मते है, पर माँ-बाप की भूले, बेपरवाही, अधिक लाड-प्यार तथा अधीरता उन्हे बिगाड देती है। वे समस्या पूर्ण बन जाते है। केवल धन ही पारिवारिक जीवन को सुखी नही बनाता। असल मे धन है सुसन्तान। आप कल्पना करे किसी धनी माँ-बाप की परेशानियो की जोकि अपने कपूतो के कारण चिन्ता सागर मे गोते खाते रहते है। अच्छे बच्चे घर के रत्न है। पर उन रत्नो

को घडने और बनाने का श्रेय माता-पिता रूपी जौहरी को ही जाता है। बच्चो के प्रति अपने कर्तव्यो को समझने पर प्रत्येक माता-पिता अपने ज

३१. ये भूले भटके !

'विवाहित जीवन की सफलता योग्य साथी के चुनाव पर उतनी नही जितनी कि स्वय को सफल जीवन-साथी बनाने की योग्यता पर निर्भर करती है। साथी कैसा है, इस पर नही, बल्कि हम कैसे है इस प्रश्न के उत्तर पर। लोग प्राय सारी शक्ति चुनाव पर लगा देते है। वे ये भूल जाते है कि विवाह दो साथियो का सम्बन्ध है, जिनमे से एक वे स्वय है।'

उपरोक्त कथन कितना सत्य और सुन्दर है! कभी-कभी जरा जरा सी भूलें, बेपरवाही, उपेक्षा, असावधानी, गैर-जिम्मेदारी, असहनशक्ति, ना समझी आदि भूले दम्पति को ऐसे मोड पर लाकर खडा कर देती है, मन म ऐसी कडुवाहट उत्पन्न कर देती है कि सारी जिन्दगी का सुख नष्ट हो जाता है। जीवन साथी कोई जड सम्पत्ति नही है कि जो एक बार अपना हो गया तो उसकी चाहे जो गत बनाई जाय। शरीर के स्वामी होकर भी बहुत से पुरुष अपनी पत्नी के प्रेम को पाने मे असफल रहते है। उसी तरह अनेक स्त्रियाँ भी गृहस्वा-मिनी बन कर भी पति के मन को नही जीत पाती। कई दम्पतियो की प्रौढावस्था तक तो ठीक से निभ जाती है पर वृद्धावस्था मे वे

एक-दूसरे से बहुत दूर जा पडते है। दिलो की दूरी बढ जाती है। वे परस्पर दिलचस्पी लेना छोड देते है, इससे वृद्धावस्था मे उन्हे जीवन मे अकेलापन अनुभव होने लगता है। इस बढती हुई दूरी को रोकने के लिए यह आवश्यक है पति-पत्नी की 'कॉमन हौबीज' हो। इतने दिन साथ रह कर वे एक दूसरे की रुचि और दिलचस्पी के विषयो मे परिचित हो जाते है। उस उम्र मे एक दूसरे की प्रशसा, प्रेरणा, सहयोग और हमदर्दी की माँग अधिक बढ जाती है।

हुई कि शायद मेरी शादी की उम्र बीत गई है। इसी मनोस्थिति मे एक मित्र के घर एक इजीनियर की लडकी से वह परिचित हुआ। लडकी बी० ए० पास थी, पर रूप रग मे बिल्कुल साधारण। दवाव पडने पर लडके ने शादी कर ली। लडका समझदार था, उसने शादी को यथा शक्ति सफल बनाने की कोशिश की। यहाँ तक कि घर गृहस्थी के काम मे हाथ बटाने, बच्चे को सँभालने तक मे उसने जरूरत से अधिक सहयोग दिया। पर उसकी पत्नी का मिजाज अजीब ही था। वह ईर्ष्यालु प्रकृति की थी। और मानसिक प्रौढत्व का उसमे अभाव था। मनमोहन की पूर्व परिचित जितनी भी मित्रो की पत्नियाँ, बहने, भावजे थी उसे उन सब से ईर्ष्या थी। हर एक की नुक्से निकाला करती। इस आदत से उसका पति बडा खिजता था। एक तो पत्नी सुन्दर न थी, ऊपर से हर दम माथे पर त्योडियाँ चढाए रखती, उसमे मनमोहन के लिए घर मे समय काटना मुश्किल हो गया। वह गमगीन रहने लगा। और अधिकाश समय घर से बाहर रहा करता।

अब यह हाल है कि यद्यपि पति-पत्नी परस्पर दिखावटी व्यवहार करते है, पर मन-ही-मन मे दोनो असन्तुष्ट है। यदि पत्नी ने पति के सहयोग की सराहना की होती, उसकी विनोद प्रियता की दाद दी होती और उसके सामाजिक जीवन को सफल बनाया होता तो आज दोनो के जीवन मे यह असन्तुष्टि और उदासी न छाई रहती। अब तो किस्सा ही दूसरा है, पति इस बात को महसूस करता है कि यह स्त्री मुझसे कई बातो मे कम है, फिर भी अपनी पत्नी और अपने बच्चे की माँ समझ कर मै इसका मान करता हूँ, इसको प्रसन्न करने के लिए मैने क्लब में आना-जाना भी कम कर दिया है, बहुत-सी बाते मैने इसे समझाई भी पर यह बहुत ही सकुचित हृदय की है। मुझे किसी स्त्री से हँसते-बोलते देखकर इसके दिमाग मे सन्देह का विष घुलने लगता है। मुझसे तो मुँह फुला कर बैठा नही जाता। स्त्री का कहना है कि मेरे सग भारी अन्याय हुआ। मै इसकी रसिक प्रियता व लोकप्रियता से तग आ गई हूँ।

मनोरमा का पति शशाक स्वभाव से बहुत भोला-भाला सीधा-सादा हँसमुख व्यक्ति है, पर उसके स्वभाव मे एक बात बहुत खटकने वाली है। वह गलती करके भी गलती नही मानता, न अपनी भूल को सुधारना चाहता है। उसके मित्र तथा जान-पहिचान वाले उसके सीधेपन की मजाक उडाते

खैर, हार कर कमला को भी लखनऊ आना पडा। उसने यहाँ भी काफी जान पहिचान पैदा कर ली और साल भर मे उसकी प्रैक्टिस [illegible] दोई से भी अच्छी हो गई। पर श्यामलाल ने अपना काम चलाने का प्र-यत्न नही किया अतएव वह यहाँ भी असफल रहा। यद्यपि कमला की कमाई से गृहस्थी चलती थी, इसकी प्रशसा करने या एहसान मानने के बदले श्याम-लाल कमला से चिढने लगा। बात-बात पर उसे लथाडता, सन्देह करता, उसकी गृह-व्यवस्था मे दोप निकालता। कमला ने बहुतेरा चाहा कि श्याम-लाल समाज सेवा मे दिलचस्पी लेने लगे, इससे धन न सही पर लोकप्रियता यश और सन्तोप तो मिलेगा। पर श्यामलाल ने कुछ यत्न करने के बजाय दिल की धडकन की बीमारी का स्वॉग रचा और अब वह दिन भर पलग पर पडा रहता है। उसकी इस नासमझी और असहिष्णुता के कारण पारिवारिक जीवन की शान्ति नष्ट हो गई।

चन्द्रा अपने माँ-बाप की इकलौती लडकी है। उसने लेना अधिक पर देना कम सीखा है। माँ-बाप के घर से काफी दान-दहेज मिला, इस नाते भी उसे बडा घमड है। वह अपनी सास-नन्द की भी परवाह नही करती। पति के खान-पान या आराम सुविधा की ओर उसने कभी ध्यान ही नही दिया। नौकरो पर सब काम छोड रखा है। उसका पति सुभाष एक कवि है। दाम्पत्य जीवन के विपय मे उसकी कल्पना बहुत ही सुन्दर और कोमल है। वह बहुत ही भावुक है, जब कि चन्द्रा अपनी बातचीत और व्यव-

हार मे बहुत ही कोरी और शुष्क है। वह उसकी कविता और कल्पना की मजाक उडाती है, इससे सुभाप को बहुत चोट पहुँचती है। वह खोया खोया सा रहता है। सब सुख-साधन होते हुए भी उसे अपना जीवन अधूरा अधूरा सा प्रतीत होता है।

सेठ पूनममल अपने शहर के नामी रईस है। उनकी पत्नी [illegible] एक धर्म भीरु समझदार और नेक स्त्री है। पति की विलासिता और अर्थ-प्रधान दृष्टिकोण से वह बहुत परेशान है। चोर बाजार, [illegible], [illegible]

नही देते तो वे एक-दूसरे से दूर-दूर होते जाते है। देखने मे आता है कि [illegible] नौकरी से अवकाश ग्रहण कर परिवार मे दिलचस्पी लेना छोड देता है [illegible] फिर आलोचक बन कर परिजनो के प्रत्येक कार्य मे मीन-मेख निका[illegible] रहता है, जब कि पत्नी अपने नाती-पोतो तथा गृहस्थी के कामो म [illegible] रहती है। इससे उसकी प्रधानता रहती है, पति का व्यक्तित्व गौण [illegible] जाता है। रास्ते भिन्न हो जाने से पति-पत्नी का साथ छूट जाता है [illegible] भी बुढापा बीतना कठिन हो जाता है।

बाज पुरुष यह समझते है कि ५५ वर्ष की उम्र तक कमा लिया [illegible] आराम करने का वक्त है। बस वह ठाले-निट्ठले बैठे रहते है। [illegible] यदि इस आयु मे कार्यशक्ति बनी हुई है तो निठल्ले बैठना उचित नही है। गृहस्थी की जिम्मेदारियाँ बढी होने के कारण पत्नी घबडाती है। [illegible] स्वय दिन भर काम मे लगी रहती है तो उसे पुरुष के आलसी जीवन पर [illegible] उठती है।

हरीराम वैसे तो दिन भर शतरज बिछाए रहते है, बैठक म [illegible] का जमघट लगा रहता है। उनकी पत्नी देवकी को भोजन की [illegible] दोपहर के तीन और रात के ग्यारह बजते है। उसे अपने पति के [illegible] से बडी चिढ है, जब वह रोकती-टोकती है तो जवाब मिलता है—"[illegible] सरकार ने भी पेशन दे दी, फिर तुम हमे छुट्टी क्यो नही [illegible] देती ? अब क्या सारी [illegible] मे ही जुता रहूँ ?"

देवकी का कहना है—"अवकाश के समय का [illegible] प्रयोग करो। [illegible] पढाने-लिखाने के [illegible] पास बिठा लिया [illegible] सामाजिक सेवा करो, [illegible] अच्छी पुस्तके पढो, [illegible] बाँचो। बडो-बडो ने [illegible] नही कही कि 'ताश करे नाश, शतरज करे रज'। तुम्हारे देखा [illegible]

अपने रूप-रंग की ओर से वेपरवाह हो गई। भुवन ने इस ओर उसका ध्यान कई बार आकृष्ट किया पर उसका एक ही जवाब था—'क्या यौवन हमेशा बना रहेगा ? इस उम्र मे भी तुम्हारी आँखे रूप ढूंढती है।'

भुवन का कहना था—'पति-पत्नी के जीवन भर परस्पर आकर्षण बनाए रखना चाहिए। वे बच्चो के माँ-बाप के अतिरिक्त एक-दूसरे के लिए प्रेमी-प्रेमिका का रिश्ता भी तो रखते है।' पर नीरस गौरी रसिक भुवन के मन की बात नही समझ सकी। भु... अपने ख्यालो की दुनियाँ मे खोया रहता है। वह ... सुन्दरी को साकार करने की चेष्टा करता है, परन्तु ... वह अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाली अपनी श्रीहीन पत्नी को देखता है ... मसोस कर रह जाता है।

इस प्रकार अनेक दम्पति कराहते, सिसकते, शिकायतें करते, ... को कुचल कर उसाँसे भरते हुए अपनी जिन्दगी काट रहे है। सब कुछ ... हुए भी वे सुखी और सन्तुष्ट नही है। जो खटकने वाला अभाव है ... की कसक की तरह स्वस्थ जीवन को भार रूप बनाता रहता है। ... दम्पति अपनी भूल समझते, गलतियो को सुधारते, परस्पर समझौता ... सकते तो इनका जीवन भी रगीन और सरस होता, इसमे सन्देह नही।

कुछ अन्य समस्यायें—

यह तो हुई पति-पत्नी के भूलो की राम-कहानी। इसके अ... कुछ अन्य ऐसी भूले है जिनसे बच्चो और अन्य परिजनो का सम्बन्ध है। ... कम माँ-बाप इस सत्य को स्वीकार करते है कि उनके जमाने से ... जमाना काफी बदल गया है अतएव रीति-रिवाज, समाज का दृष्टि... परख और फैशन का भी उसी रफ्तार से बदलना बिल्कुल स्वाभावि...

अलका देखने मे सुन्दर है, पढने मे भी तेज है, उसकी इच्छा ... कि आगे कॉलिज मे पढूं, पर माँ-बाप पुराने ख्याल के है, ... कन्या को आगे नही पढाया। भाई ने उसके विवाह की ...

अपने रूप-रंग की ओर से वेपरवाह हो गई। भुवन ने इस ओर उसका ध्यान कई वार आकृष्ट किया पर उसका एक ही जवाव था—'क्या यौवन हमेशा वना रहेगा? इस उम्र मे भी तुम्हारी आँखे रूप ढूंढती है।'

भुवन का कहना था—'पति-पत्नी के जीवन भर परस्पर आकर्षण वनाए रखना चाहिए। वे वच्चो के माँ-वाप के अतिरिक्त एक-दूसरे के लिए प्रेमी-प्रेमिका का रिश्ता भी तो रखते है।' पर नीरस गौरी रसिक भुवन के मन की वात नही समझ सकी। भुवन अपने ख्यालो की दुनियाँ मे खोया रहता है। वह आँख मीच कर कल्पना सुन्दरी को साकार करने की चेष्टा करता है, परन्तु आँख खुलने पर जव वह अस्त-व्यस्त वेशभूषा वाली अपनी श्रीहीन पत्नी को देखता है तो मन मसोस कर रह जाता है।
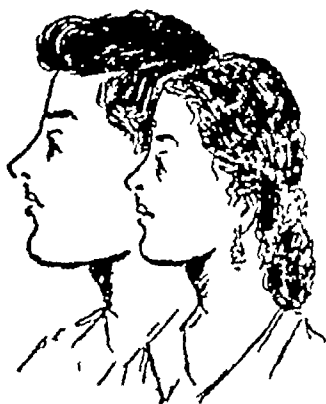
इस प्रकार अनेक दम्पति कराहते, सिसकते, शिकायते करते, अरमानो को कुचल कर उसाँसे भरते हुए अपनी जिन्दगी काट रहे है। सव कुछ होते हुए भी वे सुखी और सन्तुष्ट नही है। जो खटकने वाला अभाव है वह काँटे की कसक की तरह स्वस्थ जीवन को भार रूप वनाता रहता है। काशकर ये दम्पति अपनी भूल समझते, गलतियो को सुधारते, परस्पर समझौता कर सकते तो इनका जीवन भी रगीन और सरस होता, इसमे सन्देह नही।

कुछ अन्य समस्यायें—

यह तो हुई पति-पत्नी के भूलो की राम-कहानी। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य ऐसी भूले है जिनसे वच्चो और अन्य परिजनो का सम्वन्ध है। वहुत कम माँ-वाप इस सत्य को स्वीकार करते है कि उनके जमाने से वच्चो का जमाना काफी वदल गया है अतएव रीति-रिवाज, समाज का दृष्टिकोण परख और फैशन का भी उसी रफ्तार से वदलना विलकुल स्वाभाविक है।

अलका देखने मे सुन्दर है, पढने मे भी तेज है, उसकी वडी इच्छा थी कि आगे कॉलिज मे पढूं, पर माँ-वाप पुराने ख्याल के है, इस कारण उन्होंने कन्या को आगे नही पढाया। भाई ने उसके विवाह की दो-एक जगह वात

रहने की सुविधा रहेगी।"

खैर फ्लैट ले लिया गया। अब मुरारी अधिकाश समय वही रहता। वह चाहता था कि पत्नी को भी वही ले जाऊँ। एक दिन उसने अपनी माताजी से इस बात की चर्चा की। माँ चिढ कर बोली—"मालूम पडता है वह तुझे अलग रहने का सबक रटा रही है। तू रहना चाहे तो रहे, पर वह यही रहेगी।"

खैर दो-एक साल इसी तरह बीत गए। एक बार बहू को मोतीझरा निकल आया। सास हकीमी इलाज मे ही विश्वास करती थी। बेपरवाही से बीमारी बढ गई। अन्त मे मुरारी ने जिद्द करके उसे नर्सिग होम मे दाखिल करवा दिया। डाक्टर ने मुरारी से कहा कि यदि तुम अपनी पत्नी को स्वस्थ रखना चाहते हो तो उसे शहर से बाहर अपने पास रखो, नियमित रूप मे उसे टानिक और पूरा आराम दो। मुरारी जानता था कि अम्माँ के घर म यह सब हो सकना असभव है। अतएव वह बहू को नई दिल्ली के फ्लेट मे ले आया। अपने पिता जी से भी उसने एक दिन सब बात खोल कर कह दी कि वहाँ अम्माँ के कारण मै उसे शहर वाले घर मे नही भेजूंगा।

अम्माँ ने जब यह सुना तो जल-भुन गई। बाप के कान भरे और लडके का खर्चा बन्द करवा दिया। लाचार होकर मुरारी ने दूकान के हिसाब मे उलट-फेर कर अपना खर्चा निकालना शुरू किया। जब बाप को यह पता चला तो उसने नई दिल्ली की दूकान बन्द करवा दी। बेटे ने जब अपना हिस्सा माँगा तो बोले—"तूने क्या कमाया है। पूंजी तो मेरी लगी थी। मेरी साख से दूकान चलती थी, तुझे कौन पूछता है ? टके की तो औकात नही तेरी।" मुरारी बिगडा कि क्या सात-आठ साल से मैने जो मेहनत की उसका हिस्सा मुझे नही मिलेगा ?

कुछ समझौता न हो सकने पर बाप-बेटो मे मुकदमा छिड गया। परिणामस्वरूप बाप का सारा व्यवसाय चौपट हो गया। कुछ लोग बाप को बुरा कहते है कुछ बहू-बेटे को दोष देते। पर बरबादी व बदनामी दोनो कुलो की हुई। यदि माता-पिता ने स्वेच्छा से बहू-बेटे को आत्मनिर्भर बनने मे सहयोग दिया होता तो यह नौबत न आती।

लोग बच्चो की कामना भी करते है और जब हो जाते है तो उनको सभाल सकने मे असमर्थ होने के कारण उन्हे कोसना शुरू करते है, अपनी

पालन-पोषण और शिक्षा के साधन अधिक बच्चों में बँट जाने से एक से साथ भी न्याय नही हो पाता। अधिक बच्चे अभाव तो पैदा करते ही है, उनके कारण माता के स्वास्थ्य और पिता की कार्यशक्ति पर भी जरूरत से अधिक दबाव पड जाता है। वृद्धावस्था तक उनके पालन-पोषण, शिक्षा व व्याह आदि के लिए दम्पति को जुता रहना पडता है।

वृद्धावस्था मे जब कि कार्य व उपार्जन शक्ति कम हो जाती है, इस बात की और भी अधिक जरूरत होती है कि मनुष्य चैन से, बेफिक्री से रह सके। अपने स्वास्थ्य सुधारने और आराम करने के लिए उसके पास अवकाश होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब कि आपको अनावश्यक पारिवारिक चिन्ताओ से छुटकारा मिल जाए, आर्थिक रूप से आप सुरक्षित हो और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ आपको दबोचे न रहे। इसके लिए यह जरूरी है कि आपके बच्चो की सख्या सीमित हो और वे आपके अवकाश ग्रहण करने से पूर्व अपने पाँवो पर खडे हो जाये।

आपका यह कर्त्तव्य है कि बच्चो को आत्मनिर्भर होने मे मदद दे। पर उनकी पढाई के लिए या व्याह-शादी के लिए कर्जा निकालकर या अपने बुढापे के लिए सुरक्षित रकम को खर्च कर अपने को मुसीबत मे कभी मत डाले। यथा-शक्ति योग्य करने का यह अभिप्राय कभी नही है कि अपना बुढापा असुरक्षित बना लेना। सब बच्चो के साथ एक-सा व्यवहार करे। अधिक

सुन्दर या कमाऊ बच्चे पर अधिक अनुग्रह रखने से अन्य बच्चो के मन

मे द्वेष उत्पन्न होता है, उनका मन माता-पिता से विरक्त हो जाता है और वह परस्पर सहयोग करना छोड देते है। कई माता-पिता अपना मतलव साधने के लिए एक भाई को दूसरे से भिडा देते है इससे भाइयो-भाइयो मे लडाई-झगडा होता है।

रायवहादुर रासबिहारी जी के चार वेटे व एक वेटी है जिस-जिस वेटे का भी व्याह हुआ, एक साल के अन्दर ही श्रीमती रायवहादुर ने उस वेटे व वहू के नाम ऐसी-ऐसी कहानियाँ रटाई कि उनको नालायक, मनहूस और जोरू का गुलाम आदि प्रमाणित करने मे कोई कोर-कसर नही छोडी। यहाँ तक कि समधियाने तक से लड आई, उन्हे बुरा-भला कहा। विवाहित लडको के विरुद्ध अपने कुआरे बेटो व बेटी को गवाह वनाया, उन्हे भाभी भावज से लडने को उभारा। अन्त मे जब चारो वेटे व्याहे गए तो उन्हे अपनी कर्कशा माँ की चाल का ज्ञान हुआ, अब वे सव अलग-अलग है। इस ट्रेनिङ्ग का वेटी पर वहुत बुरा प्रभाव पडा। वह महा कर्कशा और छल-प्रपचप्रिया निकली। ससुराल जाकर उसने बडे-वडे तूफान खडे किए, सास-ससुर के नाम झूठी-झूठी कहानियाँ गढी। आज ऐसी बहू के कारण उसका सारा कुनवा दुखी हो रहा है।

वहुत से पारिवारिक झगडे वसीयतनामे को लेकर होते है। यदि गृहस्वामी समय रहते वसीयतनामा नही करते या वसीयतनामे मे अपनी सम्पत्ति के वँटवारे के विषय मे स्पष्ट रूप से नही लिख जाते, तव वाद मे भाई-भाई, भाई-वहनो, माँ-वेटे और देवर-भावज मे काफी झगडा खडा हो जाता है। स्त्रियो को कानून-कायदे का अधिक पता नही होता, विधवा को असहाय पाकर देवर, भाई, वेटे, या साझेदार नोचते-खसोटते है। इससे पारिवारिक एकता छिन्न-भिन्न हो जाती है।

मृत्यु कर से वचने के लिए या कन्याओ को सम्पत्ति न चली जाए इसलिए कई पिता अपनी सम्पत्ति दिखावे के लिए लडको के नाम 'गिफ्ट' (gift) कर देते है। नालायक लडके उस 'गिफ्ट' का नाजायज़ फायदा उठा, उस रकम या मकान को खर्च कर या वेच कर खतम कर देते है। ऐसी वातो से भी पारिवारिक कलह वढती है और मेहनत से अर्जित सम्पत्ति को वुढापे में इस तरह वरवाद होते देख माता-पिता को वहुत क्लेश होता है। सोचने-समझने की वात तो यह है कि वच्चो का दृष्टिकोण धर्म-प्रधान वना कर

उन्हे अच्छे नागरिक बनाया जाये। धन जीवन का साध्य नही अपितु साधन समझा जाना चाहिए। जीवन को सुखी बनाना एक कला है। अपनी नानाविध से मनुष्य को समझौता करना आना चाहिए। यदि मनुष्य अपने तई सन्ना है तो उसका जीवन सन्तोष से कट जाता है।

इसमे कोई सन्देह नही कि—'मनुष्य अपूर्ण है, अपनी प्रवृत्तियो की तृप्ति चाहता है, उसके लिये प्रयत्न करता है, यही तो मनुष्य जीवन है। इस तलाश मे, अतृप्ति मे और अनवरत प्रयत्न मे ही मनुष्य का जीवन व्यतीत होता है। विवेक द्वारा इस प्रयत्न को सार्थक और सुविधा पूर्ण बनाना ही मनुष्य के अधीन है। पूर्णता न तो मनुष्य का आदर्श है और न ही सम्भव है।'

सम्मिलित परिवार की समस्याएँ—

देखने मे आता है कि पुरातन ढङ्ग के सम्मिलित पारिवारिक जीवन प्रणाली जिन घरानो मे है, वहाँ नवीन विचारधाराओ के दम्पति की गुजर होनी कठिन होती है। विरोधी विचारो और आदर्शो के होने के कारण भी गृह-कलह होती रहती है।

एक विद्वान लेखक ने भारतीय सम्मिलित पारिवारिक जीवन की जो प्राचीन पद्धति है, उसके थोथेपन का विवेचन करते हुए कहा है कि—'भारतीय समाज मे विवाह एक प्रश्न है—एक समस्या है। आज के हमारे सम्पूर्ण मानसिक असन्तोष का कारण भी यही है, माँ-बाप पिछली-पीढी की मनोवृत्तियो के अनुसार आनेवाली सन्तान के लिए उसका जीवन साथी खोजते है, जब कि आने वाली पीढी नये विचारो के साथ, जमाने के साथ चलने की हामी भरती है। मै इससे पूर्ण सहमत हूँ कि माँ-बाप बच्चे के मनोविज्ञान मे भली-भाँति परिचित होते है, पर अपने ही बच्चे के विकास से, न कि दूसरे के बच्चो की प्रगति एवं मनोविज्ञान से। कौन जानता है कि लडका और लडकी के व्यक्तिगत विचार एव मूल्याँकन के मापदण्डो मे कितने का अन्तर है। पर पुरानी पीढी की विचारधारा मे पले हुए हमारे अग्रज बीच मे खडे होकर दो जिन्दगी का सौदा दहेज के रूप मे करते है। दो व्यक्तियो की भिन्न-भिन्न परिस्थितियो में पली हुई मनोवृत्तियाँ खुले आम नीलाम कर दी जाती है और परिणाम यह होता है कि नवदम्पति मे ही असन्तोष का विस्फोट होता है, जिसे दबाते-दबाते भी वे हार जाते है और जिन्दगी का अधिकाँश भाग सिसक-सिसक कर काट देते है। हो सकता है, आज से ५० वर्षो पूर्व नारी की अन्ध भक्ति एवं समझौता करने

की विशेष प्रवृत्ति के कारण इस प्रकार का वैवाहिक सम्बन्ध सफल रहा हो, पर आज के ऐसे विवाहो मे तो बहुधा रस्सा-कसी ही हुआ करती है। प्रेम क्या वस्तु है इसे अन्त तक दोनो नही जान पाते और नारी पुरुषो के लिए शारीरिक आवश्यकता एव मनोरजन का साधन बन जाने के सिवाय और आगे नही आ पाती ! रूढियो एव बन्धनो मे जकडे हुए समाज के इन सतर्क नागरिको को जानबूझ कर अपने व्यक्तित्व की हत्या करनी पडती है।

आदर्श परिवार—

'नये प्रकार की परिवार-व्यवस्था से सचमुच अनेक लाभ भी है जिन पर भारत को ध्यान देना चाहिए। सबसे पहले तो माँ-बाप अपने उत्तरदायित्व से अलग रहते है और दूसरे, दोनो व्यक्तियो मे मानसिक असन्तोष नही आने पाता। इस प्रथा का सबसे स्पष्ट प्रभाव देश के आर्थिक सन्तुलन पर पडता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है। पति-पत्नी, अधिकांशत जब तक कोई सन्तान न होगी, दोनो कार्य करते रहेगे और कन्धे-से-कन्धे मिलाकर अपने भविष्य का निर्माण करेगे जिसे अपना कहने का उन्हे पूर्ण अधिकार है। भारतीय सम्मिलित परिवार प्रणाली मे यही सबसे बडा दोष है कि घर के प्रधान पर ही सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सौप दिया जाता है। कमानेवाले एक या दो होते है, खाने वाले कम-से-कम सामान्यत ८ से १५ तक होते है। ऐसी दशा मे देश का आर्थिक स्तर एव परिवार का रहन-सहन किसी भी भाँति ऊपर नही उठ सकता। इस प्रकार के एकाकी परिवार एव व्यक्तिगत चयन से भारतीय दहेज प्रथा का सौदा प्रत्येक व्यक्ति की क्रियाशीलता एव रोजगार, तथा व्यक्तिगत विवाह प्रथा सम्मिलित परिवार प्रणाली मे भी सम्भव हो सकता है। पर इसकी सम्भावना १० प्रतिशत ही की जा सकती है। साथ ही, आज की परिस्थिति एव समाज में एक बात का और ध्यान देना है कि कभी भी दो व्यक्ति एक ही समय और परिस्थिति मे होने पर भी एक प्रकार नही सोच सकते और जहाँ १०-१२ व्यक्ति होगे वहाँ उसकी कल्पना भी नही की जा सकती। फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि वे दो व्यक्ति जिन्हे अपनी जिन्दगी अपने आप देखनी है किसी न किसी प्रकार समझौता कर ही लेगे, अपेक्षाकृत १० या १२ व्यक्तियो के। दूसरी बात एकाकी परिवार प्रणाली के विषय मे यह कही जा सकती है कि इन स्वत विभाजित पारिवार मे पारस्परिक

प्रेम भी उससे कही अधिक बना रहता है जितना कि हमारे यहाँ के विभा-जित परिवार मे विभाजन के बाद ही द्वेष का प्रसार होता है। योरोप मे प्रत्येक पिता के बच्चे वहाँ के सामाजिक एव पारिवारिक पर्वो पर उनके यहाँ एकत्र होते है और पर्व को हमारे पर्वो से कही दस गुने उत्साह के साथ सफल बनाते है। एक दूसरे की आवश्यकता मे सहायतार्थ खडे होते है और भाई-बहन का पारस्परिक सम्बन्ध भली भाँति निभा सकने मे एक आदर्श प्रस्तुत करते है। निष्पक्ष होकर हमे अपनी कमी को स्वीकार करना ही पडेगा कि हमारे सम्मिलित परिवार मे हम एक होकर भी अपनी-अपनी विचारधाराओ, आवश्यकताओ एव रुचि के अनुसार अलग-अलग होते है और वे अलग-अलग होकर भी मन से एक होते है।'

इस मे कोई सन्देह नही कि बदली हुई सामाजिक परिस्थिति और विचारधारा भी सयुक्त परिवार की हिलती हुई दीवारो को चोट पहुंचा रही है। एक समूचे परिवार की जिम्मेदारी परिवार का मुखिया भला कैसे सँभाल सकता है ? आय कम और व्यय अधिक होने तथा बेरोजगारो की सख्या परिवार मे बढ जाने से परिवार मे असन्तोष और मनमुटाव पैदा हो जाता है। रोज की तू-तू मैं-मैं से परिजनो का पारस्परिक प्रेम, बडो का अदब कायदा टूट जाता है। बच्चो के विकास मे भी ऐसा असन्तुष्ट वाता-वरण हानिकारक प्रमाणित होता है। पहले व्यक्ति से अधिक प्रमुखता समाज को दी जाती थी—पर अब व्यक्ति समाज से ऊपर उठ रहा है। उस के उन्मुख विकास की आवश्यकता को भुलाया नही जा सकता। स्वतन्त्र वातावरण और स्वतन्त्रता के लिए प्रत्येक दम्पति लालायित है। सामाजिक उत्तरदायित्व निभाना कठिन प्रतीत हो रहा है। पारिवारिक कलह को कम करने के लिए भी छोटे परिवारो को मान्यता देनी जरूरी है। एक अनुभवी बहन का कहना है कि—

स्त्रियो की सामाजिक स्थिति मे जो कुछ क्रॉतिकारी परिवर्तन जन्म ले रहे है उनके कारण भी इस प्रथा का मूल्य घटता जा रहा है। स्त्री-पुरुष की समानता के कारण यह बहुत कठिन हो गया है कि अब बडे परिवार सगठित रीति से चलते रहे। स्त्रियो को आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो रही है, वे भी जीवन के सभी क्षेत्रो मे अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने की अभिलाषिणी है। तो फिर यह नही सम्भव है कि एक बडे परिवार मे सब अपनी अपना-

अलग राह पर चलते जायँ और साथ ही घर के दैनिक कार्यों मे भी उतना ही योग दे। एक छोटे परिवार मे यह समानता निभ सकती है, वडे सयुक्त परिवारो मे तो इसके आधार पर नित्य नयी झझटे ही खडी होगी। वडे घर मे तो स्त्रियो-स्त्रियो मे ही इस तरह आपसी शान्ति नही रह पाती। उस का मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि प्रतिभा-सपन्न सदस्याएँ अपना जो योग परिवार को देती है उसे प्राय अन्य अपेक्षाकृत कम योग्य स्त्रियाँ मान्यता नही देना चाहती। पग-पग पर गृह-कार्यों को लेकर एक झगडा खडा हो जाता है क्योकि जो स्त्रियाँ बाहर के कामो मे अधिक लगी होगी स्पष्ट हे वे उतनी सक्रियता से गार्हस्थिक बोझ नही उठा सकेगी, इस लिए छोटी-छोटी बातो पर भावनात्मक विस्फोट हो जाता है। इस तरह प्रतिभाएँ भी कुठित होती है, मन भी दुखते है। इस प्रकार के सघर्ष को बचाये रहने का सबसे सरल तरीका है, समर्थ सदस्यो का पृथक होकर रहना।

२२. इनकी भी जानकारी रखें

हो सकता है कि भविष्य मे हिन्दू कोड बिल या सम्पत्ति अधिकार के कारण कुछ और नई पारिवारिक समस्याएँ पैदा हो। ऐसी सूरत म यह
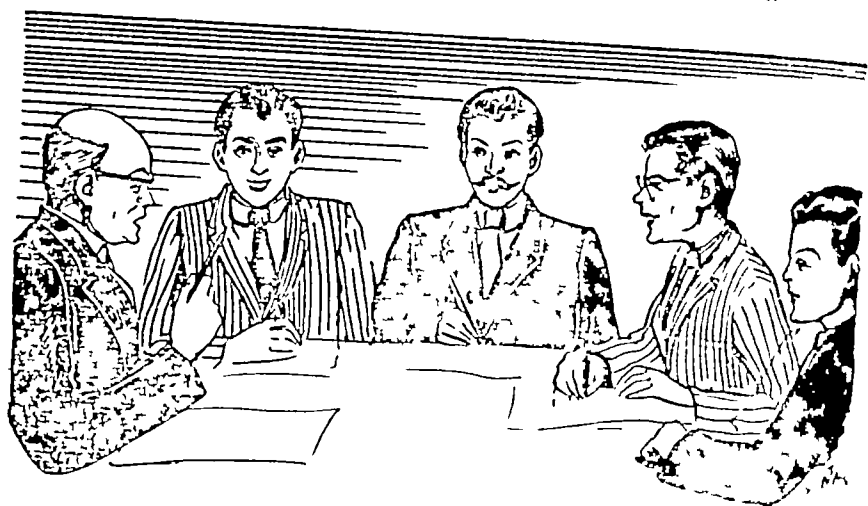
आवश्यक है कि स्त्री-पुरुष इस के व्यवहारिक रूप को समझ ले। इससे वह उलझनो मे पडने से बच सकेगे।

मै नीचे श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल जी की पुस्तक 'स्त्रियो की स्थिति मे हिन्दू कोड बिल' और सम्पति अधिकार के विषय मे सार पूर्ण अश सधन्यवाद उद्धृत करती हूँ—

१. इनकी आवश्यकता क्यो ?—

हमारे सामाजिक-विधान मे पिछले एक-डेढ हजार साल से कोई परिवर्तन नही हुआ। आज की और हजार साल पहले की दुनिया मे जमीन आसमान का अन्तर हो गया है। फिर भी वही पुरानी सामाजिक व्यवस्था जो अब से हजार साल पहले थी, आज भी प्रचलित है। परिस्थितियाँ बदल गयी, किन्तु कानून नही बदला। यही कारण है कि वर्तमान कानून हमारे समाज की ज्वलन्त समस्याओ को हल करने मे असमर्थ सिद्ध हो गया है। उदाहरणार्थ, उस स्त्री के सम्मुख, जिसका पति उसके जीते-जी दूसरा विवाह

कर लेता है, परित्यक्ता के रूप मे दु खी तथा अपमान पूर्ण जीवन विताने के अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय नही। वह स्त्री जिसका पल्ला एक वार किसी व्यक्ति से वँध गया, चाहे वह पागल या हद्द दर्जे का मूर्ख ही क्यो न हो, उससे आजन्म छूट नही सकता। एक लखपति की कन्या यदि विधि के विधान से किसी गरीव घर मे व्याह कर चली गई तो अपने पिता की सम्पत्ति से उसे कोई हिस्सा नही मिल सकता, क्योकि कानून के अनुसार केवल पुत्र ही सम्पत्ति का मालिक हो सकता है, पुत्री नही। एक विधवा पत्नी को अपने पति की कमाई पर भी पूरा अधिकार नही मिलता। इस प्रकार हमारी वर्तमान व्यवस्था ने हमारे समाज की नयी समस्याये खडी कर दी है। ये समस्याये पिछले सौ डेढ-सौ सालो से तो इतनी उग्र हो चुकी है कि लगभग सभी समाज शास्त्रियो का ध्यान अपने-अपने समय मे इनकी ओर जाता रहा है। पिछले तीस सालो मे तो हमारे विधान निर्माताओ ने नयी परि-स्थितियो के अनुकूल एक नया हिन्दू कोड बनाने के अनेक सगठित प्रयत्न किये। वर्तमान हिन्दू कोड विधेयक इन्ही प्रयत्नो का परिणाम है। यह कोड समाज की अधिकाश ज्वलन्त समस्याओ को, जिनमे से कुछ की ओर ऊपर सकेत किया गया है, हल करने का प्रयत्न करता है। इसके द्वारा हमारे सामाजिक प्रश्नो को किस प्रकार सुलझाया जायेगा तथा हमारे जीवन पर इसका व्यावहारिक रूप मे क्या प्रभाव पडेगा। इस सम्वन्ध मे विचार करने का हम यहाँ कुछ प्रयत्न करेंगे।

हिन्दू कोड विल को छ भागो मे वाटा गया है। जो इस प्रकार है—१—विवाह तथा तलाक, २—उत्तराधिकार, ३—अभिभावकता, ४—गोद लेना, ५—निर्वाह, ६—सयुक्त परिवार। इनमे पहले दो पर कानून वन चुके है और वास्तव मे 'विवाह' तथा 'उत्तराधिकार' ही हिन्दू कोड के महत्व-पूर्ण भाग है। इनका हमारे क्रियात्मक जीवन पर गहरा प्रभाव पडने वाला है। अत इनकी समाज पर व्यावहारिक रूप मे प्रतिक्रिया की दृष्टि से हम उपरोक्त दोनो कानूनो पर यहाँ कुछ विस्तार से विचार करेगे।

२ विवाह—

विवाह सामाजिक जीवन का आधार है। विवाह ही पारिवारिक जीवन की सुख तथा शान्ति का वास्तविक स्रोत है। प्राचीन काल मे हमारे यहाँ विवाह की एक आदर्श प्रथा का जन्म हुआ था, जिनके अनुसार स्त्री

और पुरुष को विकास की समान सुविधाएँ प्राप्त थी, दोनो के लिए समान नियम, समान कर्त्तव्य तथा समान अधिकार थे। इसलिए उस समय का समाज अत्यन्त उन्नत अवस्था मे था। कालान्तर मे हमारी विवाह की प्रथा विकृत तथा दूषित हो गयी। स्त्री तथा पुरुष दोनो के लिए भिन्न-भिन्न नियम बनाये गये। दोनो को एक ही मापदण्ड मापने के स्थान मे भिन्न भिन्न पैमाने से मापा जाने लगा। स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध मे प्रचलित इस दोहरे मापदण्ड ने समाज मे अनेक गम्भीर बुराइयाँ उत्पन्न कर दी जिनका निरा-करण इस विवाह-अधिनियम का उद्देश्य है।

(क) एक विवाह—

सबसे बडी बुराई जो पैदा हुई वह थी पुरुष के लिए बहु-विवाह की छूट। अब तक इस अधिनियम के बनने से पूर्व यह अवस्था थी कि पुरुष पत्नी के जीते-जी दूसरी शादी कर सकता था। पुरुष चाहता तो अनेक विवाह करता चला जा सकता था। और अनेक स्त्रियो को अकारण घोर नारकीय जीवन बिताने के लिए बाध्य कर सकता था। कौन नही जानता कि किसी भी स्त्री के लिए अपनी आँखो के सामने अपने पति को दूसरा विवाह करते देखना विष पी लेने से भी अधिक दुखदायी है? सहपत्नी के घर मे आते ही पहली पत्नी को घोर अपमानजनक जीवन बिताना पडता है। पुरुष के दूसरे विवाह का प्रभाव पहली पत्नी के बच्चो पर भी इतना बुरा पडता है कि उनका सारा जीवन ही विशृङ्खलित और कुण्ठित हो जाता है। समस्त पारि-वारिक जीवन को अव्यवस्थित तथा कडुवा बना देने वाली बहु-विवाह की प्रथा दो वर्ष पूर्व मई, १९५४ मे विवाह विधेयक के स्वीकृत हो जाने के साथ समाप्त हो गई। इसके अनुसार पुरुष के ऊपर भी वही प्रतिबन्ध लग गया जो स्त्री पर था। जिस प्रकार स्त्री के लिये पति के जीवित रहते दूसरा विवाह अमान्य माना जाता था उसी प्रकार पुरुष के लिए भी पहली पत्नी के जीवित रहते दूसरा विवाह करना त्याज्य हो गया। अब एक पत्नी के रहते यदि दूसरी शादी करेगा तो वह कानून की दृष्टि मे अपराधी और दण्डनीय माना जायेगा। इस प्रकार यह कानून स्त्री और पुरुष दोनो के लिये एक विवाह की अनिवार्यता को राजकीय नियम का रूप दे देता है। बहु-विवाह की प्रथा समाप्त होने से समाज मे स्त्री और पुरुष के बीच जो विषमता थी और उस विषमता के कारण स्त्री को जिन कठिनाइयो का सामना करना

पडता था, उन सवका अव अन्त हो गया। स्त्री के वैवाहिक जीवन मे एक सुरक्षा की भावना पैदा होगी और उसका जीवन पहिले से अधिक महत्वपूर्ण और सुखी वनेगा। इस नियम का परिणाम यह भी होगा कि हमारे समाज मे अव तक जो अनमेल विवाह होते थे वे बहुत हद तक रुक जायेगे। पुरुप को क्योकि अनेक शादियाँ करने का अधिकार था, उसे छोटी आयु की कुमारी कन्याओ से भी शादी कर लेने की भी छूट थी, जो अव भी है, इसलिए अक्सर साठ वर्प के बूढे अठारह वर्प की कुमारी लडकियो से विवाह करते पाये जाते थे। इन अनमेल विवाहो से भी समाज के अन्दर भापण वुराइयाँ पैदा होती थी। अव इस एक विवाह सम्वन्धी कानून का परिणाम यह होगा कि समाज बहुत से दोषो से मुक्त होकर उन्नति के मार्ग पर तीव्र गति से वढ सकेगा।

(ख) अन्तर्जातीय विवाह--

विवाह अधिनियम के द्वारा अन्य जो सुधार हुए उनमे से एक यह है कि अव हिन्दुओ के अन्तर्गत एक जाति के लोगो को दूसरी जाति मे विवाह करना अधिक सुविधापूर्ण हो जायेगा। अभी तक कानून 'अनुलोम' विवाहो को तो मान्यता देता था 'प्रतिलोम' विवाहो को नही। व्राह्मण का लडका यदि क्षत्रिय की लडकी से शादी कर लेता तो वह वैधानिक तथा शास्त्र सम्मत माना जाता था, किन्तु यदि व्राह्मण की लडकी क्षत्रिय या वैश्य के लडके से विवाह कर लेती तो कानून उसे अवैध मानता था। इस प्रकार के 'प्रतिलोम' विवाह जव होते थे तो उन्हे वैधानिक रूप देने के लिए सिविल मैरिज ऐक्ट की शरण लेनी पडती थी। अव जो परिवर्तन हुआ है उससे 'प्रतिलोम' विवाह भी वैधानिक माने जायेगे, अर्थात् यदि व्राह्मण जाति की लडकी का विवाह क्षत्रिय के साथ या क्षत्रिय कन्या का विवाह वैश्य लडके के माथ हो जाये तो ऐसे विवाह की सन्तान को सम्पत्ति सम्वन्धी सभी अधिकार प्राप्त होगे। इससे अन्तर्जातीय विवाहो को प्रोत्साहन मिलेगा और जाति-प्रथा के, जो राष्ट्र की एकता मे आज सवसे अधिक वाधक है, उन्मूलन का मार्ग खुल जायेगा।

(ग) वाल विवाह पर रोक---

वाल विवाहो को रोकने के लिए अव तक शारदा ऐक्ट सवसे प्रगतिशील कानून माना जाता था। शारदा ऐक्ट के अनुमार विवाह की न्यूनतम

सीमा लडकी के लिए १४ वर्ष और लडके के लिए १६ वर्ष थी। किन्तु वर्त-मान विवाह अधिनियम के अनुसार यह सीमा लडकी के लिए १५ और लडके के लिए १८ कर दी गई है। इसके अनुसार १५ वर्ष से कम आयु की कन्या या १८ वर्ष से कम आयु के लडके की शादी होती है तो वह दण्डनीय समझी जायगी और ऐसी शादी के कराने वाले अभिभावक अपराधी माने जायेंगे। हमारी दृष्टि मे तो आयु की यह सीमा भी कम ही रक्खी गयी है। विवाह की न्यूनतम आयु लडकी की १८ वर्ष से और लडके की २५ वर्ष से कम नही होनी चाहिए। विवाह की आयु जितनी ऊँची होगी शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से हमारी भावी सन्तति उतनी ही स्वस्थ तथा विकसित होगी। इसके अतिरिक्त आजकल की दिनोदिन बढती जनसख्या पर भी वह प्रतिबन्ध का काम करेगी। हमे आशा है, हमारे विधान-निर्माता इस अधि-नियम द्वारा निर्धारित विवाह की उपरोक्त न्यूनतम आयु से ही सन्तुष्ट न हो जायेंगे, अपितु शीघ्र ही इसमे उचित परिवर्तन करने के लिए उपयुक्त कदम उठायेंगे।

इस प्रकार वर्तमान 'विवाह अधिनियम' विवाह के क्षेत्र मे उठती हुई अनमेल तथा बाल विवाह जैसी अनेक ज्वलन्त समस्याओ का समाधान कर सकेगा। किन्तु फिर भी यह नही कहा जा सकता कि इस क्षेत्र मे जिन सुधारो की आवश्यकता थी वे सभी इस कानून से पूरे हो जायेंगे। इसके उपरान्त भी हमारी दृष्टि मे अभी सुधार की काफी गुंजाइश है। उदाहरणार्थ, विधुर के कुमारी कन्या मे विवाह की प्रथा जो इस समय शिक्षित समाज तक मे प्रचलित है, समाज के अन्दर कई जटिलताएँ उत्पन्न कर देती है, इस समय ४०-५० वर्ष का विधुर यदि चाहे तो १८-२० वर्ष की कुमारी कन्या से विवाह कर सकता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसका परिणाम न तो कुमारी कन्या पर ही अच्छा पडता है और न ही विधुर के बच्चो पर। इसके अतिरिक्त समाज मे जो विधवाएँ है उनके लिए पुनर्विवाह करना एक विषम समस्या बन जाती है, क्योकि विधुर को जब कुमारी कन्या सरलता से मिल जाती है तो वे विधवा से विवाह करना नही चाहते। इन सब विषम परिणामो का निराकरण करने का यही उपाय था कि कानून द्वारा विधुर के कुमारी कन्या से विवाह पर कोई प्रतिबन्ध लगा दिया जाता। जिस समय विवाह विधेयक पर ससद् मे विचार हो रहा था तब हमने इस आशय का एक सशोधन प्रस्तुत

भी किया था जिसका अभिप्राय यह था कि विधुर केवल विधवा से और विधवा केवल विधुर से ही विवाह कर सके। ऐसी एक शर्त और विवाह की शर्तो मे जोड दी जाये। किन्तु इस प्रकार की शर्त व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर कडा प्रतिबन्ध होगा। ऐसा कह कर सदन मे यह सशोधन गिरा दिया गया। यदि उपरोक्त सशोधन मान लिया जाता तो इस अधिनियम मे जो अधूरापन रह जाता है वह न रहता। हमे विश्वास है कि निकट भविष्य मे ही वह समय आयेगा जब कि विवाह कानून के इस दोष को निकाल दिया जायेगा।

३ सम्बन्ध-विच्छेद (तलाक)—

विवाह एक अटूट और धार्मिक सम्बन्ध है यह विचार परम्परा हमारे समाज मे बहुत दिनो से चली आ रही है। इसमे सन्देह नही कि यह एक सुन्दर और ऊँची कल्पना है, किन्तु अपने समाज मे इस सिद्धान्त का पालन गत कई शताब्दियो से एक पक्ष की ओर से ही हुआ, दूसरा पक्ष तो निरन्तर उल्लघन ही करता रहा। जहाँ तक स्त्री का सम्बन्ध रहा वहाँ तक तो विवाह एक पवित्र सम्बन्ध माना जाता रहा, किन्तु पुरुष ने चाहा तो एक के बाद एक विवाह करता रहा और एक नही अनेक बार विवाह के 'अटूट' कहे जाने वाले सम्बन्ध को तोडता रहा। इसके विपरीत स्त्री को किसी भी भयकर-से-भयकर परिस्थिति मे हमारा कानून पुनर्विवाह की आज्ञा नही देता रहा। इस एकपक्षीय आदर्शवादिता का परिणाम समाज के लिए अत्यन्त हानिकारक हुआ। एक ओर पुरुष की इस स्वेच्छाचारिता से तथा दूसरी ओर स्त्री पर कठोर प्रतिबन्धो के लगाने से समाज का शान्त वातावरण विक्षुब्ध तथा दूषित हो उठा। इस सारी परिस्थिति मे विवाह सम्बन्ध की पवित्रता की रक्षा के हेतु ही यह आवश्यक हो गया कि विवाह के कानून मे समयानुकूल परिवर्तन और सशोधन किये जाये। यह वह पृष्ठभूमि है जिनमे 'विवाह अधिनियम' सम्बन्ध-विच्छेद या तलाक की व्यवस्था करता है।

तलाक सम्बन्धी धारा इस अधिनियम की सबसे अधिक विवादास्पद धारा है, किन्तु जितना भी विवाद है वह भ्रम के कारण है। यह समझा जाता है कि तलाक की छूट मिलते ही हर कोई अपने जीवन साथी को तलाक देने चल पडेगा। ऐसी स्थिति मे विवाह की सस्था का नाश हो जायेगा। समाज मे अव्यवस्था छा जायेगी, धर्म का लोप हो जायेगा। किन्तु यह सब भ्रम है क्योकि इस अधिनियम के अनुसार किन्ही विशेष ही परि-

स्थितियो मे और कठोर प्रवन्धो के अन्दर तलाक का अधिकार दिया गया है। सर्वसाधारण की जानकारी के लिए यहाँ उन अवस्थाओ तथा परिस्थितियो का वर्णन कर देना उचित प्रतीत होता है जिनमे इस कानून के अनुसार सम्वन्ध-विच्छेद की व्यवस्था की गयी है। वे अवस्थाएँ निम्न है :—

क—यदि पति-पत्नी दोनो मे से कोई व्यभिचारपूर्ण जीवन विता रहा हो, तो दूसरा उसे तलाक दे सकता है।

ख—दोनो मे से एक यदि हिन्दू धर्म छोड कर अन्य धर्मावलम्वी हो जाये, तो दूसरे को उससे सम्वन्ध-विच्छेद करने का अधिकार होगा।

ग—यदि पति या पत्नी दोनो मे से कोई एक तलाक की अर्जी देने के समय पिछले तीन साल से असाध्य रूप से पागल रहा हो, तव भी दूसरे पक्ष को तलाक की आज्ञा मिल सकती है।

घ—यदि पति या पत्नी मे से कोई भयकर और असाध्य कुष्ट रोग से अथवा सक्रामक यौनि रोग से पीडित हो और लगातार तीन वर्ष तक इलाज करने पर भी ठीक न हुआ हो, तो दूसरे पक्ष को तलाक का अधिकार होगा।

ङ—यदि दोनो पक्षो मे से कोई एक सासारिक जीवन छोड कर वैरागी हो गया हो, तो दूसरे पक्ष को तलाक माँगने का अधिकार होगा।

च—दोनो पक्षो मे से यदि एक कोई सात साल तक लापता रहे, तो उस स्थिति मे दूसरा पक्ष तलाक का प्रस्ताव कर सकेगा।

छ—इस अधिनियम के लागू होने से पूर्व यदि किसी पुरुप ने दूसरी शादी कर ली है और उसकी पहिली स्त्री जीवित है तो पहिली स्त्री को अधिकार होगा कि वह अपने पति को तलाक देकर अपने दुखी जीवन से मुक्त हो जाये।

ज—विवाह हो चुकने के तीन साल वाद ही तलाक के लिए आवेदन-पत्र दिया जायेगा। इससे पूर्व नही। तलाक मिल जाने के भी एक साल वाद तक कोई पुनर्विवाह न कर सकेगा।

उक्त अवस्थाओ को देखते हुए यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि तलाक की जो शर्ते रखी गयी है वे काफी कठोर है और इनके रहते सम्बन्ध-विच्छेद करना कोई हँसी-खेल न होगा, स्त्री-पुरुष वहुत विवशता की हालत मे ही इस अधिकार का प्रयोग करेगे, क्योकि जो लोग विवाह करते है वे एक साथ रह कर सुखमय जीवन विताने के विचार से ही इस वन्धन मे

बधते है। विवाह की संस्था को तलाक से किसी प्रकार का खतरा नही है, क्योकि विवाह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति पर आधारित है और इसलिए वह किन्ही बाह्य साधनो से नष्ट नही हो सकता।

तलाक की प्रथा अपने देश के लिए बिल्कुल नयी चीज भी नही है, इस समय भी ७५ प्रतिशत जनता मे यह प्रचलित है। यह बात दूसरी है कि इस समय यह अधिकतर वर्ण रहित जातियो तक ही सीमित है। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्यो मे इस प्रथा का समावेश प्रथम बार इस अधिनियम द्वारा ही होगा। इस समय निम्न जातियो के अन्दर तलाक भिन्न-भिन्न रूपो मे प्रचलित है। कही "छूट" की शकल मे और कही दूसरे किसी रूप मे। वर्तमान कानून तलाक के भिन्न रूपो मे एकरूपता लायेगा, उन्हे एक दृढ सुव्यवस्था मे बाँध देगा और जहाँ अब छोटी जातियो मे मामूली-सी बातो पर तलाक हो जाता है, वैसा न होकर ऊपर वर्णित की हुई कठोर अवस्थाओ मे ही छोटी तथा बडी जातियो मे तलाक हो सकेगा।

सम्बन्ध-विच्छेद को कानूनी स्वीकृति मिल जाने का प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर स्वास्थ्यकर पडेगा, अब स्त्री को व्यभिचारी, पागल, घृणित रोगो से पीडित पति के साथ इच्छा के विरुद्ध रहने को मजबूर न होना पडेगा। आत्मनिर्णय का मानवोचित अधिकार स्त्री को प्राप्त हो जाने पर उसके अन्दर मानवीय गुणो का विकास हो सकेगा। स्त्री और पुरुष के बीच विषमता की खाई को पाटने मे भी यह अधिक सहायक सिद्ध होगा। अभी तक तराजू का एक पलडा ऊँचा और एक नीचा था, अब यह दोनो पलडे बराबर के स्तर पर आ जायेगे। समाज मे विषमता का लोप होने से सुख तथा शान्ति का उदय होगा।

४. उत्तराधिकार—

उत्तराधिकार का कानून विवाह कानून से भी अधिक महत्वपूर्ण है, स्त्री 'विवाह अधिनियम' द्वारा प्रदान की गई सुविधाओ का लाभ आर्थिक अधिकारो को प्राप्त करके ही उठा सकती है। 'उत्तराधिकार अधिनियम' स्त्री को सम्पत्ति-सम्बन्धी कई महत्वपूर्ण अधिकार देता है, अभी तक स्त्री को सम्पत्ति में किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नही था। वह आर्थिक दृष्टि से पूर्णतया पराधीन थी। जीवन के हर क्षेत्र मे उसे अपने भरण-पोषण के लिए पुरुष का आश्रय लेना पडता था। "पिता रक्षति कौमार्ये, भर्ता रक्षति यौवने,

पुत्रा रक्षति वार्धक्ये न स्त्री स्वातन्त्र्य मर्हति"। अर्थात् स्त्री को स्वतन्त्र नहीं रहना है, उसे सदा पिता, पति तथा पुत्र के अधीन ही रहना उचित है। इस शास्त्र-वाक्य पर ही हमारा अब तक का उत्तराधिकार कानून आधारित था। इस पराधीनता से स्त्री की परिवार तथा समाज मे स्थिति बहुत नीचे गिर गई, उसका सामाजिक ही नही नैतिक अध पतन भी हुआ। अध पतन के इस गर्त से स्त्री को निकालने का एक ही मुख्य उपाय था। वह उपाय यही था कि स्त्री को आर्थिक स्वतन्त्रता मिले। यह उत्तराधिकार कानून सम्पत्ति सम्बन्धी इस आवश्यक अधिकार को स्त्री को प्रदान करके उसकी बहुमुखी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके अनुसार स्त्री को पुत्री, पत्नी तथा माता के रूप मे सम्पत्ति विषयक जो अधिकार मिले है वे निम्न है —

(क) पत्नी के रूप में—

स्त्री को उसके पति की सम्पत्ति मे अधिकार देने का पहला कानून १९३७ मे बना जिसके अनुसार पति की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र और पुत्रियो के साथ उसकी विधवा स्त्री को भी बराबर का हिस्सा मिलता था किन्तु इस कानून के अनुसार विधवा का अपने हिस्से पर पूर्ण स्वत्व नहीं था। वह इस प्रकार प्राप्त की हुई अपनी जायदाद को अपनी इच्छानुसार नही बर्त सकती थी, दान मे या उपहार मे उसे नही दे सकती थी। इस सम्पत्ति को बेचने का भी उसे अधिकार न था। अब यह उत्तराधिकार कानून विधवा स्त्री को अपनी जायदाद पर सीमित नही, पूर्ण अधिकार प्रदान करता है, अब वह जिस प्रकार चाहेगी अपने हिस्से की जायदाद का उपयोग कर सकेगी। सन्तान न होने की दशा मे वह पूर्ण जायदाद की मालिक होगी, अगर वह पुनर्विवाह कर लेगी तो वह सम्पत्ति उसकी न रह कर यदि सम्पत्ति पति से मिली थी तो पति के परिवार को और अगर पिता से मिली थी तो पिता के परिवार को लौट जायेगी।

(ख) माता के रूप में—

भारत के दक्षिण-पश्चिम भाग मे प्रचलित मरूमकटय्यम कानून को छोडकर भारत की अन्य किसी भी दाय प्रणाली के अनुसार माता का पुत्र की सम्पत्ति मे अब तक कोई भाग नही था। पुत्र की मृत्यु के बाद माता को अपनी पुत्रवधू की दया पर आश्रित रहना पडता था। सास-बहू के सम्बन्ध थोडे ही परिवारो मे स्नेहपूर्ण होते है। परिस्थिति मे उसका जीवन बहुधा

दु खमय वन जाता है। माता को पुत्रवधू और पौत्र-पौत्रियो की दृष्टि मे एक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करने की दृष्टि से माता को भी पुत्र की सम्पत्ति मे उसके पुत्र-पौत्रियो तथा पत्नी के समान एक भाग यह अधिनियम देता है।

(ग) पुत्री के रूप में—

इस समय भारत मे मुख्यतया दो दाय प्रणाली प्रचलित हैं। 'दाय भाग' वगाल मे तथा पजाव के कुछ हिस्सो मे चलता है और भारत के शेप लगभग दो-तिहाई भाग मे 'मिताक्षरा' प्रचलित है। किन्तु इन दोनो मे से किसी में भी पिता की सम्पत्ति मे पुत्री का अधिकार नही माना जाता है। हाँ, भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर ट्रावनकोर-कोचीन आदि मे जहाँ 'मरूमकटय्यम' का कानून प्रचलित है वहाँ पुत्री को पिता की सम्पत्ति मे पुत्र के बरावर ही हिस्सा मिलता है, किन्तु देश के शेप भागो मे जहाँ 'दाय भाग' तथा 'मिताक्षरा' प्रणाली प्रचलित है, अभी तक पिता की सम्पत्ति मे पुत्री का अधिकार कानून नही मानता। अव यह अधिनियम मिताक्षरा तथा दाय भाग प्रणाली के क्षेत्रो में भी पुत्री को पिता की 'पुश्तैनी' तथा 'स्वार्जित' दोनो प्रकार की सम्पत्ति मे हिस्सा देता है। पिता की स्वार्जित सम्पत्ति मे तो लडकी को लडके के वरावर हिस्सा मिलेगा। लेकिन पुश्तैनी जायदाद मे लडकी को अपने पिता के हिस्से मे से ही एक हिस्सा मिलेगा। कुल जायदाद मे से नही, यह हिस्सा जो उसे पुश्तैनी जायदाद मे अपने पिता के भाग मे से मिलेगा, लडके के वरावर ही होगा। फिर भी मिताक्षरा के अनुसार कुल मिलाकर पैत्रिक सम्पत्ति मे लडकी को लडके की अपेक्षा वहुत कम मिलेगा। हाँ, दाय भाग मे जहाँ पुश्तैनी तथा स्वार्जित जायदाद का कोई भेद नही किया जाता लडकी को लडके के वरावर ही हिस्सा मिलेगा, परन्तु ध्यान रखने की वात यह है कि 'दाय भाग' की प्रणाली मुश्किल मे देश के एक-चौथाई हिस्से मे प्रचलित है।

वर्तमान उत्तराधिकार अधिनियम के अनुमार मिताक्षरा तथा दाय-भाग प्रणाली के अन्तर्गत लडकी, लडके, विधवा पत्नी तथा माता को किम प्रकार हिस्सा मिलेगा यह नीचे के उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगा —

(१) मिताक्षरा के अनुसार—

मान लीजिये 'क' कुल २०,००० रु० की मम्पत्ति छोडकर मरता है। इसमें १५,००० रु० की पैतृक (पुश्तैनी) मम्पत्ति है और ५,००० रु० उमकी

अपनी कमाई या स्वार्जित सम्पत्ति है। उसके दो पुत्र 'ख' और 'ग' हैं, एक पुत्री 'च' है, जीवित विधवा पत्नी 'प' है और जीवित माता 'म' है। अब मृत व्यक्ति 'क' की जो अपनी कमाई हुई स्वार्जित सम्पत्ति ५,००० रु० है, वह तो 'ख' 'ग' 'च' 'प' और 'म' पाँचो मे बराबर बँट जायेगी और दोनो लडको, लडकी, विधवा तथा माता को प्रत्येक को १,००० रु० मिल जायगा। लेकिन मृत व्यक्ति 'क' की पैतृक पुश्तैनी जायदाद मे ऐसा नही होगा। १५,००० रु० की जो पुश्तैनी जायदाद है वह पहिले केवल लडको और पिता मे बँटेगी अर्थात् उसके तीन हिस्से होगे, क्योकि अपने अलावा उसके दो पुत्र है इस प्रकार 'क' 'ख' 'ग' मे से हरेक को ५,००० रु० मिलेगे। अब मृत पिता 'क' के हिस्से जो ५,००० रु० पडा उसमे से लडकी, उसकी पत्नी और उसकी माता को हिस्सा मिलेगा, परन्तु स्मरण रखने की बात यह है कि उसके दोनो लडको को यदि वे पिता से अलग नही हो चुके है तो पिता के इस ५,००० रु० मे से दूसरो के बराबर का हिस्सा इन्हे और मिलेगा, इस प्रकार इस पुश्तैनी १५,००० रु० मे से दोनो पुत्रो 'ख' और 'ग' को ६,००० रु०, पुत्री 'च' को १,००० रु० जीवित विधवा 'प' को १,००० रु० तथा जीवित माता 'म' को १,००० रु० मिलेगा। यह भी ध्यान रखने की बात है कि यदि 'ख' या 'ग' पिता से अलग हो चुका है तो विभक्त हुए 'ख' या 'ग' को मृतक पिता 'क' के हिस्से में से दुबारा कोई भाग न मिलेगा।

(२) **दायभाग के अनुसार—**

दाय भाग मे जहाँ पैतृक और स्वार्जित सम्पत्ति दोनो मे एक ही नियम लगता है, मृतक पिता 'क' की १५,००० रु० पुश्तैनी तथा ५,००० रु० स्वार्जित जायदाद को एक साथ मिलाकर 'ख' 'ग' 'च' 'प' तथा 'म' मे बराबर बाँट दिया जायेगा अर्थात् दाय भाग मे लडके, लडकी, विधवा और माँ सबको बराबर-बराबर ४,००० रु० मिल जायेगा।

उपरोक्त उदाहरण से ज्ञात होगा कि मिताक्षरा के अन्तर्गत पुश्तैनी जायदाद मे लडकी को लडके से काफी कम हिस्सा मिलता है। इसके अतिरिक्त मिताक्षरा मे लडकी के हिस्से पर कुछ और भी प्रतिबन्ध लगाये गए है, जिनका आशय यह है कि पुश्तैनी जायदाद का अनावश्यक विभाजन न हो पाये। उदाहरणार्थ लडकी अपनी ओर से जायदाद के अपने हिस्से का प्रश्न नही उठा सकती। लडके जायदाद का बँटवारा करेगे, तभी उसको

अपना हिस्सा अलग मिल सकेगा। वह अपना हिस्सा किराये पर नही उठा सकेगी, उसे वेच नही सकेगी, सिर्फ स्वय रह भर सकेगी। यहाँ यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि पुत्री को पैतृक सम्पत्ति मे जो अधिकार मिला है वह केवल उस सम्पत्ति मे मिला है, जिसको उसका पिता विना वसीयत किये छोड गया है। पिता वसीयत द्वारा पुत्री को कुछ भी हिस्सा न दे यह भी उसे अधिकार है। पिता की सम्पत्ति मे पुत्री के अधिकार पर जो प्रतिवन्ध लगाये है, उनका मुख्य अभिप्राय सयुक्त परिवार प्रथा की रक्षा करना है, परन्तु मिताक्षरा परिवार रूपी भवन मे आज जगह-जगह तरेड आ चुकी है, उसे अव वचाया नही जा सकता। आज से सौ साल पहिले जो आर्थिक और सामाजिक अवस्थाएँ थी, वे आज वदल चुकी है। १०० साल पहिले "परिवार" समाज की इकाई था आज 'परिवार' नही 'व्यक्ति' समाज की इकाई है। आज यदि कोई भी प्रथा व्यक्ति के विकास को रोकती है तो उस प्रथा को व्यक्ति के हित की रक्षा के लिए खतम कर देना होगा। आज की हमारी परिस्थितियो मे मिताक्षरा प्रणाली जो स्त्री-पुरुप के भेद पर खडी है मेल नही खाती। इसी कारण अधिकाश विधान-निर्माताओ के विचार से दाय-भाग-प्रणाली ही अपने देश के लिए अधिक उपयुक्त है। इसलिए हिन्दू कोड-विल जव प्रथम वार सविधान सभा मे पेश हुआ था, तो उसमे मिताक्षरा को समाप्त ही कर दिया गया था और समस्त देश मे दाय-भाग-प्रणाली को प्रचलित कर देने की सिफारिश की गई थी। दुर्भाग्य से यह वात स्वीकृत न हो सकी। हमे आशा है कि शीघ्र ही हमारे विधान निर्माता इस अधिनियम मे या दूसरा कोई विधेयक लाकर स्त्री तथा पुरुप के उत्तराधिकार सम्वन्धी इस भेद को मिटाने का सफल प्रयत्न करेगे।

५ उपसहार—

हिन्दू कोड का मुख्य उद्देश्य स्त्री को सामाजिक तथा आर्थिक अधिकार देकर उसकी सम्पूर्ण अवस्था को समुन्नत करना है। यद्यपि इस समय स्त्री को राजनीतिक क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त हो चुके है तथापि जव तक उसे सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुप के समान अधिकार नहीं मिल जाते, तव तक वह पूर्ण रूप से विकास तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर नही हो सकती और जव तक स्त्रियो के रूप मे देश की आधी जनता पिछडी और पराधीन रहती है तव तक हमारे नेताओ का समाजवादी समाज को

स्थापित करने का प्रश्न मूर्तरूप नही ले सकता। इसी भूमिका मे विवाह तथा उत्तराधिकार अधिनियमो का असली महत्व है, क्योकि ये इस समय तक पिछडी हुई अत्याचारो से पीडित तथा अधिकार शून्य स्त्री को शक्ति सम्पन्न बनाने की दिशा मे एक बडा कदम उठाते है। विवाह कानून मे स्त्रियो के पारिवारिक जीवन मे एक सुरक्षितता की भावना आयेगी। और साथ ही स्त्रियो को भी विशेष अवस्थाओ मे सम्बन्ध-विच्छेद की सुविधा मिल जाने से वे भी पुरुषो के साथ समान स्तर पर आ खडी होगी। वैवाहिक जीवन की सफलता जीवन क्षेत्र मे दोनो के समकक्ष होकर प्रवेश करने मे है। विवाह कानून स्त्री को जो स्वतन्त्रता सामाजिक क्षेत्र मे प्रदान करता है, वही स्वतन्त्रता उत्तराधिकार कानून स्त्री को आर्थिक क्षेत्र मे देता है। आज हजारो सालो बाद इस कानून के द्वारा प्रथम बार स्त्री के सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकारो को मान्यता मिली है। इन अधिकारो को प्राप्त करने के साथ स्त्री इतिहास के एक सुनहरे युग में प्रवेश करती है। इन अधिकारो के सीमित रहते हुए भी इन्हे "स्त्री के अधिकारो का घोषणा-पत्र" कहा जा सकता है।